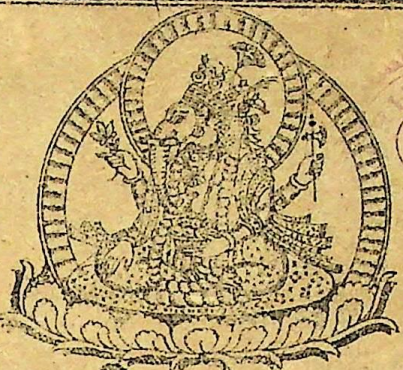

BANBIR
No 312
JAIN

बिहारीसतसई

Acc no 6525

अर्थात्

बिहारी लाल रचित सातसौ दोहे पिङ्गल मात्रा वर्ण और कविताई सहित

जिसको

बिहद्वन्द शिरोमणि कवीन्द्र कल्प द्वन श्री पण्डित कृष्णदत्त कविने

सात सौ दोहे में प्रति दोहे पीछे उत्तम २ कवित्त और पिङ्गल शास्त्रा

नुसार दो २ कवित्त की दीर्घ लघु मात्रा वर्णादि संख्या अंतीव विचारपू

पूर्वक वर्णन किया है

वही दूसरी बार

सकल गुण ग्राहकों और विद्यानुरागियों के

निमित्त

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

नवम्बर सन् १८८९ ई०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

G5-25-

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् नवम्बर सन १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये मैं
यार हूं वे इस प्रकार लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफायत से धरा क
लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होगी जिस को व्यापार की इच्छा
हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का नि-
र्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	५ उद्योग पर्व	सातोंकाण्ड	प्रेमसागर
महाभारत	६ भीष्म पर्व	१ बालकाण्ड	ब्रजविलास
१ हिस्सा में आदिपर्व	७ द्रोण पर्व	२ अयोध्याकाण्ड	ब्रजविलास थोड़ा
सभा पर्व वनपर्व	८ कर्ण पर्व	३ आरण्यकाण्ड	कृष्णप्रिया
२ हिस्सा में विराट पर्व	९ शल्य पर्व, गदा पर्व,	४ किष्किन्धाकाण्ड	विजयमुक्तावली
उद्योग पर्व भीष्म पर्व	सौप्तिक पर्व मय यो-	५ सुन्दरकाण्ड	अनेकार्थ
द्रोण पर्व	षिक व विशोक व स्त्री	६ लंकाकाण्ड	छन्दोर्णवपिङ्गल
३ हिस्सा में कर्ण पर्व,	पर्व	७ उत्तरकाण्ड	कविकुलकल्पतरु
शल्य पर्व गदा पर्व	१० शान्ति पर्व राजध	रामायण शब्दार्थको	रसराज
सौप्तिक पर्व, मोषिक	र्म व आपद धर्म व मोक्ष	श	सतसई सविहारीलाल
पर्व, विशोक पर्व, स्त्री	धर्म व दान धर्म	रामायण का इतिहास	सतसई
पर्व, शान्ति पर्व राज	११ अश्वमेध, आश्रम	रामायण मानसदीपिका	सभाविलास
धर्म आपद धर्म मोक्ष	वासक, मशल पर्व,	रामायण कवितावली	तुलसी शब्दार्थ
धर्म	महाप्रस्थान स्वर्ग	रामायण गीतावली	भजनावली
४ हिस्सा में शान्ति	रोहन	रामायण गीतावली	प्रेमरत्न
पर्व दान धर्म, अश्व मे	१२ हरिवंश पर्व	विनयपत्रिका व गी-	युगलविलास
ध, आश्रम वासक पर्व	रामायण रामविलास	विनयपत्रिका अ- र्थ	चित्रसंदेहका
मुशल पर्व महाप्रस्था	रामायण तुलसी कृत	पुराण	बारहमासा बलदेव
न स्वर्ग रोहन पर्व हरि	रामायण स-मयमान-	देवीभागवत	मनोहर लहरी
वंश पर्व	सदीपिका कोशादि	वेदान्त	गंगा लहरी
मूल भारत पर्व अ-	तथा मये तसवीर	योग वाशिष्ठ	यमुना लहरी
न्तरहा २ भी हैं	तथा जिल्दबन्दी	प्रबोध चन्द्रोदयना-	जगद्विनोद
१ आदिपर्व	तथा मोटे अक्षरोंकी	काव्य	राग
२ सभापर्व	मय तमबीर	सूरसागर	राग अलापी
३ वनपर्व	तथा मयक्षेपक	कृष्णसागर	स्वादनी
४ विराटपर्व	रामायण तुलसीकृत	विश्रामसागर	रागावली

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6525. Price Rs/2/-

अथबिहारीसतसईसटीक ॥

उदाहरण सहित लिख्यते

RANBIR LIBRARY
No
JAMMOO

करभ अच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मेरी भव बाधा हरो राधा नागरिसोय ।
जातनकीझाईंपरे श्यामहरितदुतिहोय ॥ १ ॥

यह मंगला चरण है तहाँ ग्रन्थ कर्ता कवि श्री राधिका जी की स्तुति करता है राधा और हू है यातें जातन की झाईं परै श्याम हरित दुति होय या पदतें वृषभानु सुताकी प्रतीति भई ॥ सवैया ॥ जाकी प्रभा अवलोकतही निहूं लोक की सुंदरता गहि वारी ॥ कृष्ण कहैं सरसीरुह नैन को नाम महा मुद मंगलकारी ॥ जातन की झल-कैं झलकैं हरितद्युति श्याम की द्वीत निहारी ॥ श्री वृषभान कुमारि कृपा कै सुराधा हरौ भव बाधा हमारी ॥ १ ॥ स्वकीया वर्णनं । नर अच्छर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० राति द्यौस हों मैं रहै मानन ठिक ठहराय ।
जेतो औगुन ढूंढ़िये गुनै हाथ पर जाय ॥ २ ॥

स्वकीया नायका है नायका को बचन सखी प्रति है नायक के औगुन हूं याको गुन भासत है ॥ सवैया ॥ जो हूं झकौं तौ खरोही लटूहै करै मनुहार अनूठी अनूठी ॥ औगुन ढूंढे हूं हाथ न आवत सौगुन की रहै सिदुसी टूठी ॥ सील सुभाव सदा निबहै हंसि बोले अमी बरषामनु बूठी ॥ हौं सहिये निस द्यौसरहै मन मोहन सों कब-हूं नहीं रूठी ॥ २ ॥ मुगधा पयोधर अच्छर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नहिंपरागनहिंमधुरमधुनहिंबिकासयहकाल।
अलीकली हीसों बंध्योआगेकौनहवाल ॥ ३ ॥

यह दोहा यह नायका के तन में यौबन अबहीं आयो नाहीं अरु नायकको आकृति पहलेही अधिक देखीसो सखीसखीसों भ्रम को प्रसंग करि कहत है ॥ सवैया ॥ नाहिं पराग नहीं मकरंद अजौं प्रकटी नसु-बास विकासर ॥ जाने को अगे बाहूं है कहा गति ऐसो पग्यो अब-ही इकआसर ॥ फूलीघनी फुलवारी रमाल पैं काहूको मानत नेक न तासर । रीझरली मतिकंज कली पैं अली मंडरानो रहैनिस बासर ॥

दो० लालअलोलकलरकईलखिलखिसखीसिहाति ।
आजकल्हिमेंदेखियतुउरउकसौंहींभांति ॥ ४ ॥

यह नायका को योबन अंकुरित है सो सखी नायक सों निवेदन करतु है नायका अंकुरित योबना ॥ सवैया ॥ कैसी सुहाई लला लरकाई में योबन द्योति ले सौंहीं भई है ॥ बाल बिनोदनते उचटो रुचि काम कला सुरसोंही भई है । वाही बिलोकि सिहात सखी बतियान की खान हसोंही भईहै ॥ आजु ही कान्हिमें बाल बधूको कछू छतियां उक सौंहीं भई है ॥ ४ । नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० हेरिहिंडोरेगगनतेंपरीपरीसीटूटि ।
धरीधायपियबीचहीकरीखरीरसलूटि ॥५ ॥

यह नायका मुग्धा है हिंडोरे तें नायकको देखि केलाजके आधिक्य तें भाजिबे को भई सो टूटिपरी सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बाल छबीली सखीन के संग बनी ठनी झूलति रंग हिंडोरे । नंदलला लखि ऊंचे तें टूट परी ज्यों परी अति लाजनि होरे ॥ चाले की चूंदरी चारु कसुंभी सुगंध सनी दमकै तनगोरे ॥ प्राण पियारे ने बीचही धाय करीरस लूटि भई भरि कोरे ॥ ५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु ११ लघु २४ ॥

दो० भावकउभरोहोभयोकछुकपर्योभरुआय ।
सीपहराकेमिसहियोनिसदिनहेरबजाय ॥ ६ ॥

यह नायका मुग्धा ज्ञातयौबना सखी नायक सों कहतहै सखी को बचन सखीसों है ॥ कवित्त ॥ प्यारे नंदलाल वह बाल अलबेली नव योवन की जोति दिन दूनते भरति है। दंपति चरित्र चित्र दुरचित बन लागी कामकी कहानी कछू कानन धरति है ॥ रंचक उरोजन को कोर उकसोंही भई नै सकल ज्यौं ही सी चितौ निहूढरति है। सब को बचाय दीठि निज छाती बारबार गुंजहार मिसकरि हेरबो करति है ॥ ६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तियतिथितरुणकिशोरबयपुन्निकालसमदोनु ॥
काहूपुन्निनपाइयतुबैससंधिसंक्रोनु ॥ ७॥

यह नायका लरकाई अरु तरुणाई बैसकी संधि है सो सखी नायक सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ उत सूरज राशितजै जबलौं नहीं दूसरी राशि दबावत है। तबलौं वह अंतर को समयो अति उत्तम वेद बतावतुहै ॥ इतहू जब बैस किशोर दिने अहुहू वय अंतर आवतु है। सूकृती कोउ पूरब पुन्निन ते बिबिसंक्रम को छनु पावत है ॥ ७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटी न शिशुताको झलक झलक्यौ यौबन अंग ॥
दीपति देह दुहून मिलि दिपति ताफतारंग ॥ ८ ॥

यह दोऊ बैस को संगम है सखी सखी सों कहति अथवा नायक सों सखी निवेदन करतु है ॥ सवैया ॥ वानि वहै वतियान के है पै कछूक हरैं मुसकान ढरी है। सुधी चितौन बिलोकति है पर लोलता रंचक जानि परीहै ॥ छूटी नहीं शिशुता की प्रभा नव यौबन की दुति आनि धरी है। संग दुहून के ताफता रंग दिपैतन की दुति रंग भरी है ॥ ८ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अपनेअंगकेजानिकैयौबननृपतिप्रवीन ॥
स्तनमननैननितंबकौबड़ोइजाफाकीन ॥ ९

यह नायका नव यौबन भूषिता मुग्धा सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ यौबन भूपमहा परवीन विचक्षण ताइ हरी तटई है। राज

CC-0. Prabhu Dayalu Collection. Digitized by eGangotri

लह्यो नवेला तन को लूटि शत्रु की संपति लूटि लई है। ढूरि किये धिठुता के सहायक चातुरता चित चाह भई है॥ नैन उरोज नितंबन को अपने गनिकै बढ़वारि दई है। ९ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अरतेटरतनबरपरेदईमरकमनुमैन॥
होडाहोडीबढ़िचलेौचितचतुराईनैन॥ १०॥

यह नायका को योवन आयो है॥ सु चतु राई नेत्र बढ़न लागे॥ सखी सखी सों कहतिहै। सवैया॥ नैननि की बढ़वारि लखें चित चातुरी की उमगी अधिकाई। चातुरी की अधिकाई लखीतब नैनन और गही सरसाई। कृष्ण कहैं वर बांध्यो दुजन इते परधौस मनोज की पाई। होड़ीये होड़ा चली बढ़ मानो बिलोचन औ चितकी चतुराई॥ १०॥ पयोधर अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० निरखिनवोढ़ानारितनछुटतिलरकईलेस॥
भौप्यारोप्रीतममनोचहतचलनपरदेश॥ ११॥

यह नायका नवोढ़ा है या को योवन देखि सौति निराश भई है सखी सखी सों कहति है॥ सवैया॥ कुंदनसी दिपै देहको दीपति मैनु मनी निज मोहनी घालनु। छूटतसी लरिकाई कछू तरुणापन रंगतरंग उछालनु॥ बाल वधू तन योवन आवत सौतिन के उरझूलसो सालनु। प्राणन ते अतिप्यारो लग्यो पति मानु कहो परदेश को चालनु॥ ११॥ मरज अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० गाढ़ेठाढ़ेकुचनुठिलिकोपियहियठहराय॥
उकसौहैंईतोहियेदईसबैउकसाय॥ १२॥

यह नायका नवोढ़ा है नायक को वाही सों बहुत आशक्ति है सो सखी नायक सों कहति है॥ सवैया॥ पीन पयोधर भूधर सी तिय तो उरहै परई है जबै। को बसि है पिय के हिय भामिनि सुंदर रूप अनूप तबै। नेक बिलोचन लोल भये नव योबन ज्योतजगीन अबै॥ तेउकसे उरजातनुही पियके हियते उकसाय सबै॥ १२॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० बाढ़ततोउरउरजभरुभरतरुणईबिकास ॥
बोझनसौंतिनकोहियेआवतरुधीउसास ॥ १३ ॥

यह नायका नवयै बनी भाषिता है याको देखिकै सौतिनके दुख होत है सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ तोसी तुही रमणीकमनीय भये अति तो बस प्यारे बिहारी ॥ वैस बिलास जग्यो जबते तबते यह अद्भुत बात निहारी ॥ बाढ़तुहै नवनागरि तो उरमें उरजातनु को भर भारी । ताभरि सौतिनसाम उसासति पेरहि सो हियहोत दुधारी ॥ १३ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० मानहुमुखदिखरावनीदुलहिनिकरिअनुराग ॥
सासभवनमनललनहूंसौतिनदयोसोहाग ॥ १४ ॥

यह नायका नवोढ़ा याको जोबन देखि नायक बस भयो अरु सौतिन हूं को सुहाग इन लीनो सो सखीसखी सों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ गौन आई दुलहनि लीने तब नवरी भानु जगर मगर होत भवन को भागु है ॥ विधिनै सुधारी गुन चातुरी को सींव जाकेरूप आगेरूप रतिको रतो कहून लागुहै ॥ मेरोजान मुख दिखरावनी को नेगुजानि आपहीने सोंप दीनीकीनो अनुरागहै ॥ सासुभवन दीनो प्यारेलाल मनदीनो अरु प्रीति मनदीनो सौतिन सुहागुहै ॥ १४ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देहदुलहियाकीबढ़ैज्योंज्योंयोबनज्योति ॥
त्योंत्योंलखिसौतिनसबैबदनमलिनदुतिहोति ॥ १५

यह नायका नव योवना प्रोषितानबोढ़ा है याको योबन बढ़त देखि सौतिन को मोह फीको होत है सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ मंथर गौनगहै पदपंकज मतगयंदन दूखन लागे ॥ मैनके टोने सैबैन भये तिन के सम ऊख मयूखन लागे ॥ ज्यों वृषभानु ललीतनयोबन ज्योति के लक्षण से अब लागे ॥ त्योंत्यों बिलोकि भईमलिन द्युति सौतिनके मुख सूखन लागे ॥ १५ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० ज्योंज्योंयोबनजेठदिनकुचमतिअतिआधिकाति ॥
त्योंत्योंछिनाछिनकटिछिपाछीनपरतानितजाति ॥ १६ ॥

Digitized by eGangotri

यह नायका आरूढ़ यौवना है याको यौवन बढ़त है तैसे कुचबढ़त हैं तैसे कटि घटति है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैसक बोध भौकंज हिये जड़ता अलिनी मति रामन भागी ॥ चंचलता तम शेष रह्यौ अरुणोदय लाज कलाचित जागी ॥ तारक जोति घटी नवला कटि चातुरता चकई अनुरागी ॥ यौबन भानुकी आमदनी शुभता रजनी तनु बीतन लागी ॥ १६ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ ॥ गुरु ६ लघु ३०

दो० नवनागरितनपुलकलहियौबनआमिलजोर ॥
घटिबढ़तेंबढ़िघटिरकमकरीऔरकीऔर ॥ १७

या नायका के तनमें यौबन आयो अंग बढ़ि हैं सो घटिभये अंग घटि हैं सो बढ़ि भये यह आमिल को परसंग करि सखी सखी सों कहति है अरु नायक को बचन सुन सखी सो संभव है ॥ सवैया ॥ सोर परयो जु शरीर बिषे निकसी सिरकारगई लरकाई ॥ ठौरहि ठौर भयो कछु और फिरी अंगअंग अनंग दुहाई ॥ आयगयो अफतालो दोऊ कुच छ.य धरे सिर श्याम दुहाई ॥ आलमें लाल रसाल की सों सिक-दार भई तनमें तरुणाई ॥ १० कछअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० भेटतबनतनभावतोचिततरसतअतिप्यार ॥
धरतलगायलगायउरभूषणबसनहथ्यार ॥ १८ ॥

यह नायका मध्यालाज कामदोऊ समानहैं सखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्यारीको नेह लग्योहरि प्यारेसों ध्यानमें प्राणरहे दिन-राती ॥ भेटवे कोन उपाय बनै गुरु लोगनके उपहास सकाती ॥ जानके प्रीतमके तनके मिलके मिलवेको हिये उकलाती ॥ भूषणबास अवासके कोनमें बारहिबार लगावतछाती ॥ १८ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटीनलाजनलालचौप्योलखिनेहगिरेह ॥
सटपटातलोचनखरेभरेसकोचसनेह ॥ १९ ॥

यह नायका मध्यालाज कामसमान है सखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ माइके मैं मनभावन को लखिप्यारी निशंक ह्वै देखि सकैना । देखि वेकी तरसे हियरा दिख साध लगी चित चैन लहैना ॥ छूटै न

CC-0. In Public Domain. Digitized by

लाज अछूटै न लालच लोक की लीक उलंघ परैना॥ तातें सकोच सनेह भरे अकुलात खरे जल जात से नैना॥ १६॥ बिल अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२

दो० समरससमरसकोचबसविवसनठिकठहराय।
फिरिफिरिउझकतफिरिदुरतदुरिदुरिउझकतजाय२०

यह नायका मध्या है पूर्ववत्॥ **सवैया**॥ आनन मांझ बसी प्रिय मूरति नैनन मांझ सकोचवे कौ। झांकि झरोखा दुरै फिर झांकै दुरै बहुरौं इहरात न एकौ॥ त्रासइते गुर लोगन को उत लालच मोहन के लखिवे को। लाज औ काम के बीचहु बीच परीयौं चलाचलहाल हिये को॥ २०॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० नईलगनिकुलकीसकुचिविकलभईअकुलाइ।
दुहूंओरऐंचीफिरैफिरकीलौंदिनजाइ॥ २१॥

यह नायका मध्या है परकियाहू कहिये। नई लगनि कुच की सकुच यापद तें सखी सखी सों कहति है॥ अरु नायक हू सों सखी को बचन है॥ **कवित्त**॥ नई लगी लगन रसिक मन मोहन सों उर अभिलाषन की उमंग भरति है। कुल की सम्हार की सुरति आये मोरी होत अति ही विकल जिय कल न धरत है॥ देखिवे कौं ढरति डरति मनहीं मन मैं भरत उसास पै प्रकासन करति है॥ चाह कुल कानें बीचि फिर कीलों बाल बधू इतउत ऐंची ऐंची फिरिवो करति है॥ २२॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० छलाछबीलेलालकोनवलनेहलहिनारि।
चाहतचूमतलायउरपहिरतिधरतिउतारि॥२२॥

यह नायका को सनेह नायक मैं अधिक है सुवा के छला को पति मिलै को सो सुख मानत है लाजत मिले को भी प्रयास नाहीं करत। नायका मध्या परकीया हू होय सखी सखी सों कहति है॥ **सवैया**। नागर सों नव नेह लग्यो नव नागरआलिन हूं सों दुरावै। देखिबे को उकलात हिये अतिलाजन सों बन पै नहीं आवै॥ नंद

Digitized by eGangotri

लला की छला लहिकै तकि ताहि रही न निमेष लगावे ॥ चूमति छावति आंखिन सों कबहूं पहिरै कबहूं उर लावै ॥ २२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चालेकीबातेंचलींसुनतसखिनकेटोल ।
गोयेहूलोयनहरतिबिहसतिजातकपोल ॥ २३ ॥

यह नायका मध्या सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ रूवैया ॥ सोहै सखीन समाज में राधिका जाहिलखे रति रूप लजायो ॥ एक हैं बैस सबे गुन आगरि चौपरि खेल भलो बनि आयो ॥ चाले की बात चली तबही सुनिके मुंह आंचर झीनेटुरायो नैननि लाज कपोलनहांसी टुहूमिलकै अतिरंग दिखायो ॥२३॥ मदकल अक्षर३५गुरु १३लघु २२ ॥

दो० वरउरझ्योचितचारसोंगुरगुरजनकीलाज ।
बढ्योहिंडोरेसेहियेकियेबनैगृहकाज ॥ २४ ॥

नायका मध्या सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ हरि मुख जोवत जरूरन सौं भय भीति नौल कंठ मैन को मरूरनि मरति हैं । बसन की बासनकी सुध परि हरी पुनिहरै हरैदीरघ उसासनि भरत है ॥ सुरछित होति परछितिपै परत नाहीं सरलों सम्हारि फेरि धीरज धरति है । बैठि बह राय रोकि जिय तहराय फिर लाजहि बुलाय गृह काजहि करत है ॥ २४ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० सटपटातसीशशिमुखीमुखघूंघटपटढांकि ।
पावकझरसिझमाकिकैगईझरोखेझांकि ॥ २५ ॥

यह नायका मध्या लाज काम दोऊ समान नायक सखी सों जैसो भांति देखि है तैसी अवस्था निवेदन करत है सखी सखी सों बचन कहति है ॥ कवित्त ॥ मोहनीमीमुरलीकी धुनि सुनि श्रवणनु ललकति आई शशि मुखी सट पट सों ॥ नैस कब झांकिआनि अबलोकवेकों उर दाब लीनो आनन लजाय पटपट सों । कहै कविकृष्ण बाल जानि कौं निकाई देखिवेकूं दृग आकुल मदन कि झरोखा झट पट सों ॥ २५ ॥ प्रौढ़ा वर्णनं । चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by

दो० बिहंसिबुलायविलोकिअतिप्रौढ़पयारसघूमि।
पुलकिपसीजतिपूतकोपियचूम्योमुंहचूमि ॥ २६ ॥

यह प्रौढ़ा नायका है सुसनेह की अधिकाई सों पिय ने चूम्यो वही पूत को मुंह चूमि आनंद मानत है ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेम उमाहतें प्यारी फिरै सब मांझ हिये हुलसातो। पूत को आनन चूम्यो पिया तिय चूमत ताहि महा रस मातो ॥ चाहि उते मुसकाय बुलाय हिये सुख पाय लगावत छातो। गात पसीज रोमांचित होति भई अनुराग के रंग में रातो ॥ २६ ॥ नर अक्षर ३० गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कोटिजतनकीजैतऊतनकीतपतिनजाय ॥
जौलौंभीजेचीरज्यौंरहैनप्यौलपटाय ॥२७॥

यह नायका प्रौढ़ा है काम की अधिक है नायका को बचन सखी सौं सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ किये कोटि जतन न तन की तपत जाय अनत की पीर अति बरस रसाति है। दूरतें बिलोकै चित चौगुनौ उमंगै चावढिग आये भेटवे को मति अकुलाति है ॥ लीजिये भुजानि भर कीजिये न न्यारा कहूं जीवन सफल जौलौं योंही बिन राति है। आले पट की सी भांति प्राण प्रति आठौं याम रहै लपटानो छाती तोही लौं सिराति है ॥ २७ ॥ मराल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० छिनकुउघारतछिनछुवतराखतछिनकुछिपाय ॥
सबदिनुपियखंडितअधरदरपनदेखतजाय ॥ २८

यह नायका प्रौढ़ा है नायक सों सनेह अधिक है या नायक रति सुरति के चिन्ह को मन लगावत है सखी को बचनसखी सौं कहति है ॥ कबित्त ॥ रात रति रंग हरि संग मिल कीनो अंग अंग मनमथ की तरंग सरसै। भोर भये बाल सजनी गण में बैठिवे निसाकी बातैं सुमिर सुमिर जिय तरसै ॥ प्यारे को गदन कों अधर पर चिन्ह ताहि आरसी लै बार२देखे रस बरसै। कबहूंक उघारैं कबहूंक ढांकि राखैं अनुराग मैं उमंग पान पल्लव सों परसै ॥ २८ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० दुखहायनुचरचानहींआननआननआन ॥
लगीरहतिटूकादियेकाननकाननकान ॥ २९

यह नायका प्रौढ़ा ॥ प्रौढ़ा नायका को बचन सखी सों परकीया हू है य ॥ **कवित्त** ॥लाल मिलि भावन सों मिलि कर आपरस के लेक मनोरथ बिबिधि बिधि मानहीं। कृष्ण प्राण प्यारो मेरो बीर टरोता कूंच हरु मेरेई चवाइन को ठानहीं ॥ कुंज बन बीथी मांया खिरकी किवार द्वार लागो रहै निस दिन ढूका दिये कान हो। देखा माई इन दुख हाइन के उलटि जुआनन आनन प्रति आन चरचा नहीं ॥ ३० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पहुंचतिझटिरनसुभटलैंगेकिसकैसबनाहि ॥
लाखनहूंकीभीरमैंआंखयहींचालिजाहि ॥ ३०

यह नायका प्रौढ़ा है परकीया नायका को चितवनि देखि सखी सखी सों कहति है ॥ **सवैया** ॥ मान कियो तिय मानैन कैमेहूं आली रही बहु भांति मनाय कै। मोइ गई रिसही जिय में धरि सोय रह्यो दिग मोहन आयकै ॥ रोस हूं मैं सरसायो रहै कहतै न बनै जु रही छवि छायकै। इंदु मुखी सुपने कै सुभाय रही पियकै हिय सों लपटायकै ॥ ३१ ॥ करभ अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

दो० अपनीगरजनबोलियतिकहानिहोरोतोहि ॥
तूप्यारोमोजीयकोमोजियप्यारोमोहि ॥ ३१

यह नायका प्रौढ़ा है सो नायक सों अपने जीवकी विवस्था कहति है कि तेरे बिना देखे मेरो जीव रहत नाहीं यातें अपनोउ राखिबे को तोसे बोलत हूं नायका को बचन नायक सों ॥ **कवित्त** ॥ अपने अपने प्राण सबही को प्यारे होत जात भांति राखिबो सबहि चहियतु है। ऐसो कछू बानि आनि परी मेरे प्राणन कूं तोहि देखो जौलौं तौलौं चैन लहियतु है ॥ करत उपाव हौं तो तिनहों के राखिबे कों कृष्ण प्राण प्यारे कित न्यारे रहियतु है ॥ तातें लाल बोलियत आपनोये गरजन तोको कछू तुम सों निहोरो कहियतु है ३२ ॥ नर अक्षर ३३ ॥ गुरु १५ लघु १८ ॥

CC-0. In Public Domain

दो० जातसयान अयानहवै बैठगकाहि ठगौन।
कोललचायनलालकेलखिललचौहैंनैन॥ ३२ ॥

यह नायका प्रौढ़ा है ॥ सखी शिक्षा देतहै ताको उत्तर कहत हैं॥ कि वे नेत्र देखिकै को तू ललचात नाहीं स्नेह को आधिक्य नायका को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ को नर है ठग मूरसी खाय के भूलत को न विवेक कलैं ॥ काहि न वे बिसरावैं सबै सुधि मोहन वे कहिका अबलैं ॥ होत सयान अयानसबै चतुराय अनेक न एक चलैं॥ आलोरी मोहन लाल के लोल बिलोचन देखत को न छलैं ॥ ३२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० इहि कांटैमो पाय नाहिं लीनी मरत जिवाय।
प्रीतिजनावतभीतसेमीतजुकाढ्यौआय ॥ ३३ ॥

सवैया ॥ जा दिन तैं मिलि मैनकी मूरसी डारि गयो वह छैल सुहायो। ता दिन तैं अकुलात हैं लोचन देखिबे कौं कछू दाव न पायो ॥ मो पग मैं मग मैं लगि कै इह कांटेने आज अमी बरसायो ॥ प्रेम जनावत पै भय भीत सों मोहन मीत जु काढ़न आयो ॥ ३३ ॥ नर अक्षर ३३ ॥ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कीनेऊं कोटिक जतन अबकहि काढ़ै कौन।
भौमनमोहन रूप मिलि पानी में कौलौन॥ ३४ ॥

यह नायका परकीया नवोढ़ा ॥ अपने मनकी आशंकि सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ जा दिन से बर बानिक सों निरख्यौ बल वीर कलिंदी के तीर मैं ॥ ता दिन तें न सुहात कछू सुधि को लवलेश रह्यो न शरीर मैं ॥ नैनन माझि बसी वह मूरति जाय परयो मन तो छवि भीर मैं ॥ कोटि उपाय किये कढ़ै कैसे बिलाय गयो सखी लौन ज्यों नीर मैं ॥ ३४ ॥ चल अक्षर ३० गुरु११ लघु २६ परकीया गुप्ता ॥

दो० केसरकेसरिकुसुमकेरहेअंगलपटाय।
लगैजाननिखअनखुलीकृतबोलतअनखाय॥३५॥

यह नायका परकीया भूत सुरत गुप्ता ॥ नायका को बचन सखी

Digitized by eGangotri

दो० दुखहायनुचरचानहींआननआननआन ॥
लगीरहतिटूकादियेकाननकाननकान ॥ २९

यह नायका प्रौढ़ा ॥ प्रौढ़ा नायका को बचन सखी सों परकीया हू हिय ॥ कवित्त ॥ लाल मिलि भावन सों मिलि कर आपस के लेक मनोरथ बिबिधि बिधि मानहीं। कृष्ण प्राण प्यारो मेरो बीर टरोता कूंच हरु मेरेई चवाइन को ठानहीं ॥ कुंज बन बीथी मोंया खिरकी किवार द्वार लागो रहै निस दिन ढूका दिये कान हो। देखा माई इन दुख हाइन के उलटि जुआनन आनन प्रति आन चरचा नहीं ॥ ३० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पहुंचतिझटिरनसुभटलौंरोकिसकैसबनाहि ॥
लाखनहूंकीभीरमैंआंखवहींचालिजाहि ॥ ३०

यह नायका प्रौढ़ा है परकीया नायका की चितवनि देखि सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मान कियो तिय मानैन कैमेहूं आली रही बहु भांति मनाय कै। मोइ गई रिसही जिय में धरि सोय रह्यो हिग मोहन आयकै ॥ रोस हूं मैं सरसायो रहै कहतै न बनै जु रही छवि छायकै। इंदु मुखी सुपने कै सुभाय रही पियकै हिय सों लपटायकै ॥ ३१ ॥ करभ अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

दो० अपनीगरजनबोलियतिकहानिहोरोतोहि ॥
तूप्यारोमोजीयकोमोजियप्यारोमोहि ॥ ३१

यह नायका प्रौढ़ा है सो नायक सो अपने जीवकी विवस्था कहति है कि तेरे बिना देखे मेरो जीव रहत नाहीं यातें अपनोउ राखिबे को तोसों बोलत हूं नायका को बचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ अपने अपने प्राण सबही को प्यारे होत जात भांति राखिवो सबहि चहियतु है। ऐसी कछू बानि आनि परी मेरे प्राणन कूं तोहि देखों जौलौं तौलौं चैन लहियतु है ॥ करत उपाव हौं तो तिनहीं के राखिबे कों कृष्ण प्राण प्यारे कित न्यारे रहियतु है ॥ तातें लाल बोलियत आपनोये गरजन तातो कछु तुम सों निहोरो कहियतु है ३२ ॥ नर अक्षर ३३ ॥ गुरु १५ लघु १८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by

दो० जातसयान अयानहवै बैठगकाहि ठगैन।
कोललचायनलालकेलखिललचौहैंनैन॥ ३२ ॥

यह नायका प्रौढ़ा है ॥ सखी शिक्षा देतहै ताको उत्तर कहत हैं॥ कि वे नेत्र देखिकै को तू ललचात नाहीं स्नेह को आधिक्य नायका को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ को नर है ठग मूरसी खाय के भूलत को न विवेक कलै ॥ काहि न वे बिसरावैं सबै सुधि मोहन वे कहिका अबलैं ॥ होत सयान अयानसबै चतुराय अनेक न एक चलैं॥ आलीरी मोहन लाल के लोल बिलोचन देखत को न छलैं ॥ ३२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० इहि कांटैमो पाय नाहिं लीनी मरत जिवाय।
प्रीतिजनावतभीतसेमीतजुकाढ्यौआय ॥ ३३ ॥

सवैया ॥ जा दिन तैं मिलि मैनको मूरसो डारि गयो वह छैल सुहायो। ता दिन तैं अकुलात हैं लोचन देखिबे कौं कछू दाव न पायो ॥ मो पग मैं मग मैं लगि कै इह कांटेने आज अमी बरसायो ॥ प्रेम जनावत पै भय भीत सों मोहन मीत जु काढ़न आयो ॥ ३३ ॥ नर अक्षर ३३ ॥ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कीनेऊं कोटिक जतन अबकहि काढ़ै कौन।
भौमनमोहन रूप मिलि पानी में को लौन॥ ३४ ॥

यह नायका परकीया नवोढ़ा ॥ अपने मनकी आशंकि सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ जा दिन से बर बानिक सों निरख्यौ बल वीर कलिंदी के तीर मैं ॥ ता दिन तें न सुहात कछू सुधि को लवलेश रह्यो न शरीर मैं ॥ नैनन मांझि बसी वह मूरति जाय परयो मन तो छवि भीर मैं ॥ कोटि उपाय किये कढ़ै कैसे बिलाय गयो सखी लौन ज्यों नीर मैं ॥ ३४ ॥ चल अक्षर ३० गुरु११ लघु २६ परकीया गुप्ता ॥

दो० केसरकेसरिकुसुमकेरहेअंगलपटाय।
लगैजाननिखअनखुलीकृतबोलतअनखाय॥३५॥

यह नायका परकीया भूत सुरत गुप्ता ॥ नायका को बचन सखी

Public Domain. Digitized by eGangotri

सों जो नायक के प्रत्यक्ष सखी नायका सों कहै तो खंडिता हू संभवै है ॥ सवैया ॥ तोहि तो बान परी अनखैबे को ऐसे ही क्यों सतरा हठ ठानै ॥ कीजिये तौ निरधार कछू कियो भौंह चढ़ाय कौं बोल बखानै ॥ केसर सों उबटौ तनु सों कहु केसर ह्वैकर ह्वै लपटानै ॥ आवरी तोहि दिखाऊं नजीक ह्वै बावरी तैं वे नख छूत जानै ॥ ३५ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कारेबरनडरावनेकितआवतइहिगेह ।
कैलालयौंसखिलखैलागेथरहरदेह ॥ ३६ ॥

यह नायका परकीया हेत गुप्त नायककों देखि सात्विक भयेहैं ॥ तिनकौं सखी सों दुरायवे कौं कहति है ॥ कबित्त ॥ आपु कारे रंग रंगे छिरामि को छराधरैं ओढ़िबेकौं कारी एक कामरियाही बिराति ॥ सीस पर फेंटा एक पीरोसो अमैठि बांध्यो तापै एक बिरही की पखीया फहराति ॥ मटक चलत डर पावनो सो स्वांगु किये जब जब यहि वीर आवत अहीर जाति ॥ तबतब देखि सखीकेऊ वेर देख्यौ याहि देखैं उरलागैं देह पुलकि थरहराति ॥ ३६ ॥ परकीया बाक् विदग्धा शार्दूल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रह्यौमोहुमिलनौरह्यौयौंकहिगहेमरोर ।
उतदैअलिहिउराहनौइतचितईमोवोर ३७ ॥

नायका परकीया वाक्विदग्धा जुक्रय करि गई है सुनायक कौं सखी सों सखी कहति है ॥ सवैया ॥ ता दिनकी वहबालि गली में मिली हुती काल्हि गई चितचोरि कै ॥ एकहि ठौरकरी इकठौरीमनो विधिरूप की राशि बटोरि कै ॥ छाड़ो मया करिवो मिलिबोउ परोसनी सों कह्यो भौंह मिरोरि कै ॥ यों सजनी सों उराहनौ दै परिमो तन हेरि गई मुंह मोरि कै ॥ ३७ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ।

दो० करि मूंदरकी आरसी प्रति बिंब्योप्यो आय ।
पीठदियोनिधरकलखैइकटकडीठलगाय ३८॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० पौषमाससुनिसखिनपैसांईचलतसवार ॥
लैकरबीनप्रबीणतियगायोरागमलार ॥ ३९ ॥

नायका क्रिया बिदग्धा मुख्य तौ परकीया को भेद है स्वकीयाहू होय तौ होय ॥ सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्रीति समय परदेश कौ पीय पयान सुन्यौ वह रोवन लागी ॥ यातु मैं हर क्यों हूं रहै घर देवता पूज मनावन लागी ॥ और उपाव तक्यो न कछू तब साजिकै बीन बजावन लागी ॥ प्यारी प्रबीणभरे सुरमेघ मलार अलापिकै गावन लागी ॥ ३९ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मंजनकरि खंजन नयन बैठी व्यौरतबार ।
कचअंगुरीबिचदीठदैचितवतनंदकुमार ॥ ४० ॥

यह नायका क्रिया बिदग्धा जात वर्णन होत है सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मंजु मुखीकरि मंजनु चंदन चौकी पै बैठी सनेह संचारति ॥ पंकज पांखुरी सी अंगुरीन सों व्यौरत वार हियेरसिया रति ॥ कुंतल औ कर पल्लव रंध्रनि बीच तैं दीठ इतौ तन टारति ॥ सुंदर श्री नन्द नन्दन को मुख खंजन नैन निशंक निहारति ॥ ४० ॥ बगज अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० न्हाइपहिरि पटुझटकियो बेंदीमिसिपरनाम ।
दृगचलायघरकोचलताबिदाकियेघनश्याम ॥ ४१ ॥

यह नायका परकीया बिदग्धा सखीको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ न्हाय पटु पहरि मृग मछी चारु चातुरी सौं झटि मन भावन कौं मुडि मुसकानी है ॥ कृष्ण कहैं बेंदीके सुधारिवे कौं मिस करि कीनौ प्राण पति अहि हित सुख सानी है ॥ कहा कहौं आली कछु कहत बनै न क्यौं हूं जैसी वह सस्सनेही रीति ठानी है ॥ घर कौ चलतु चारुलोचन चला चल कैं चातुरी सौं चाहि बिदा कीनौं दधि दानी है ॥ ४१ ललिता मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पूछेक्योंरूखीपरातिसगिबगिरहीसनेह ।
मनमोहनछबिपरगटी कहैकट्यानीदेह ४२ ॥

Digitized by eGangotri

यह नायका लक्षिता है रुखाई करकै सखीसों दुरावति है पै रोमांच देखि परगट करति है सखी को बचन नायका सों कहति है ॥ सवैया ॥ पूछत क्यों बहरावत बात कहां तैं अनोखो रुखाई तै ठानी ॥ प्यारे के प्रेम पै पागि रही अब होत कहा मुकरे हम जानी ॥ क्यों बर अंतर को दुरै प्रीत सनेह की रीत रही नहीं छानी ॥ तू मन मोहन की छबिपै जुकटीसुक है यह देहकटानी ॥४२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २८

दो० औरेओपकनीनिकनिगनीघनीसिरताज।
मनीधनीकेनेहकीबनीछनीपटलाज ॥ ४३ ॥

यह नायका लक्षिता सखी को बचन नायका सोंनायक को सनेह यासों अधिकहै सोनेत्रनकी शोभा और भई है यामेद तें प्रेम गर्बिगता होय ॥ सवैया ॥ बेल किलोलके रंग मैं सुंदरि प्रीतम संगरमी रजनी है ॥ नेह सनेदरसाति भट्ट अरसात प्रभा सरसाति घनी है ॥ और इसोभयगंति ओप अनंतनि की सिर मोर गनी है ॥ कान्हके प्रेमकी सौहैं मनी पट लाज मैं चारु छनी सी घनी है ॥ ४३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

दो० प्रेमअडोलैंडुलैनहिंमुहबोलेअनखाय।
चितवनकीमूरतिवसीचितवनमाहिंलखाय॥४४॥

॥ यह नायका परकीया स्नेह लक्षिता है सखी को बचन नायका सों है ॥ सवैया ॥ बोले तू क्योंन कितो अनखाय कहो तू कहा अब साधे रुखाई ॥ तेरे हिये थिर प्रेमकी बानि सुजानि परी री दुरैनदुराई ॥ तू हरि के हिय मांझि रही खुभि तेरोई नाम रटै सुख दाई ॥ प्यारे की मूरति तो चित मांझ बसी सुचि तौन मैं देत दिखाई ॥ ४४ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ।

दो० रुखरूखीमिसरोखमुखकहतरुखौंहेवैन।
रूखेकैसेहोतयेनेहचीकनेनैन ॥ ४५ ॥

यहनायका लक्षिता है परकीया रुखाईकरि सखीसों दुरावति है पैप्रीतकेनेत्रदेखि सखीनायकासों कहति है ॥ कवित्त ॥ भृकुटीमरोर मुहमोर

रोसमिस करिऊपर रुखाईसाधि कहैरूखेबैनहै। आलिन कोयहै पनप्रीत ही कोधरे तनुकैसेजुदुरावों कछुइनसों दुरैनहै। हरिकेसनेह सानिकैसे धोरहतिछानी कहैदेत प्रगटछबीली छबिऐनहै। रूखोरुखकरि रुखीबानठानिबैठी पारूखेकैसे होतनेहचीकने येनैनहैं॥ ४५॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० वहकेसबाजियकीकहातिठौरकुठौरलखैन।
छिनऔरौछिनऔरसेयेछबिछाकेनैन ४६॥

यह नायका लक्षिता सखी नायका सों कहति है॥ जोनायक सों कहै तो थिर ताहूहोय॥ सवैया॥ देखत नाहिं नैं ठौर कुठौर रहैं जितहीतित चाहचके हैं। औरघरी पल औरही दीसत झूमतआरस मैं बिथकेहैं॥ लाज तजैं सिथलाई गहैअपने बसनाहिंन यों बहकेहैं। देत कहै जियकी सबबात बिलोचनये छबिछाकछकेहैं॥ ४६॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० नांवसुनतहीहवैगयौतनऔरैमनऔर।
दबैनहींचितचढ़िरह्योअबैचढ़ोहैत्यौर ४७॥

यह नायका सखीसों रिसके मिस करिकै स्नेह दुरावति है। येनाव सुनैतैं चितकी रीति अरुक्रिया औरहोभांति भईयातैं सखीनें नीकै करि जानी। नायका लक्षिता सखीको बचन नायक सों॥ सवैया॥ नाव सुनेही भयोमन औरही और भयोतनू चेतन नैरैं। नेहकी रीतियहै नव नागरि नेकलगै निवैरन निबैरैं॥ क्यों हमते सतराय बिलोकति हेत कहाअब त्यौ रीतरैरैं॥ ऐसोकयो कहि कैसैदुरहरि प्यारेको प्रेम चढ़यो चित तैरैं॥ ४७॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० राहिमुहफेरकिहेरइताहितसमुहौंचितनारि।
झीठिपरसउठिपीठिकेपुलकेकहैंपुकारि ४८॥

यह नायका परकीया है सखीदेखत पीठिदै बैठीदुरायबे कौं रोमांच पीठपै भये ते देखि सखी कहति नायका लक्षिता॥ कवित्त॥ हितकौं निरखि यतु हरषैं हितूको मनुहमतो धरवैई तनु प्रेमकी प्रतीति कौं।

Digitized by eGangotri

तिन्हैंतू भूरावंत है बात वह रावति है काहे कौं दुरावत नवेली नेह नीति कौं ॥ भावै इत हेर भावै रहि मुंह फेरि तेरेचित सनमुख बीस बिसे रसरीतिकौं ॥ डीठिके परमहेते उठीयह पीठिपै पुलकि पात प्रगट कहत तेरी प्रीतिकौं ॥ ४८ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० लखिलोनेलोइननुकेकोपनुहोयनआजु ।
कौनगरीबानिबाजवोकितुतूठ्योरितुराजु ४९ ॥

यह नायका कुटिला को नागरी बनिवाजिवो यापदतें बहुत नायकनुकी प्रतीति भई । सखी को वचन नायका सों जो नायका को सखी नायक सों कहत हू वनै । सवैया ॥ सरसी कह खंजन मीन कुरंग प्रभाइनको सहजै हरिवो । इतनैं परचाह के चापनुसों चहुं वोर चला चल को करिबो । चित धोरति नाथ सनाथभयो वहको सुकृतो जिह पैं ढरिबो । इसुंदर लोचन कोरनिसों लखि कौन पैं आजुमया करिवो ॥ ४९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फिरफिरदौरतिदेखियैनिचलेनैकरहैन ।
येकजरारेहौनपरिकरतकजाकीनैन ॥ ५० ॥

यह नायका परकीया कुलटा कौनपैं करत कजाकी इतैंबहु नायकनसों प्रीत जानो सखी को वचन नायका सों ॥ कवित्त ॥ कानन के निकट निसंक ह्वै बिहारकरैं काहूतैनडरैं चितवितु हरि लैनये । नृपत मनोजके प्रबल असि वाह कहैं घायल करत वर धर मधुरेनये । घूंघट कौ ओट गहैं घाट हेरि फेरि फेरि दौरतहो देखियत निचले रहैं नये । चंचल ढरारे अनियारे रतनारे कारकौनपरकरत कजाकी तेरे नैनये ।१ ॥ कवित्त ॥ यथा ॥ कजरा कव चहिये वरुनी केसर लीये भौहैं धनु कीये जेत वार जंग ऐन हैं । इन की कजाकी आगे कजाकी कछु न चलै बहू मलैं हाथ येतो बाहू दुख देन हैं । वाकी सूधो चितवनि दोऊ तरवारि सांधे करैं आधे आधे कहूं मारत डरैं न हैं । कहैं ऊधो राम सजे बजे रहैं आठौं जाम मैन बादशाही के सिपाही दोऊ नैन हैं । ५० । मद काल अक्षर ६५ गुरु १३ लघु २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० खेलनसिखयेअलिभलेचतुरअहेरीमार ।
काननचारीनैनमृगनागरनरनुशिकार ॥ ५१ ॥

यह नायका परकीया कुलटा सखी को बचन नायका सों है। नागर नरनु सिकारया पदतैं बहुत नायकन को प्रतीति भई। सवैया। कानन चारी कहावै इते पर दौर करै पुर में मृगया ये। ओट अमेडि अचूक हनैं मुनि आगर नागर मारि गिराये। घायल कौं फिरि लेत सुध्यै न पलो न थकै अति कौतुक छाये। नीके मनोज प्रबीन करो लये खेलनि नैन कुरंग सिखाये। ५१। मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चलतुदेतआभारसुनिवहीपरोसहिनाहिं ।
लसीतमाशेकोदृगनिहांसीआसुनमाहिं॥ ५२ ॥

यह नायका परकीया मुदिता है चाहयतो बात भई जानि प्रसमता की हांसी भई सखी को बचन सखी सों। सवैया। देखि परोसी की चीकनी चाहिनिप्यारीहिये परप्रेमकीफांसी। त्योंपिय जातबिदेशलख्यो बिलखो बिरहातुर सासबसांसी। बाहो परोसीसों बोलिकही पति हैं इत तोसौं हमारी निसांसी। त्यौंलसी अंबुज नैनीके नैनन आंसुनमाँझत माहे कीहांसी। ५२। अनुष्टयना मदकल अक्षर३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सनसूरत्यौवीत्यौबनौईखोलईउरवारि ।
अरीहरीअरहरअजौंधरिधरहरिजियनारि॥५३॥

यह नायका अनुसयानी संकेत को ठौरजाति जानिश्चाच करति है सोसखी समाधान करतहै प्रत्युत्तर। सवैय। बीननफूल सहेलीकेसङ्ग चली मृग लोचन मोद भरी हैं। कोशिल जोबजरी अवलोकि कसांस भरी अलि सौंब चरीहैं। बीत गये बन सूख्यो सनौं अरु ऊखौं उसारी लईसगरीहैं। योंहहरी मतिधीर धरौअब होतौ अराहर प्यरीहरी हैं॥ ५३ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० फिरफिरविलखीहैलखतिफिरफिरलेतउसास।
सांईसिरकचस्वेतज्योंवीत्यौचुनातिकपास॥५४॥

Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका अनुशयना सहेट की ठौर बीते जानि बिलखति है सो सखी सखी सौं कहति हैं ॥ कवित्त ॥ बालम के सिरके सिरोरुह ज्यौंप्रेतऐसे लेत चुनिचुनि शिरधुनि मुरझाति है। बीरनि है तूलऐ पै शूलमेसलत हिये मानि दुख मूलफूल जिमि कुम्हिलाति है ॥ बारबार कहत अलो सौं कैसो भलो रति केलके बिलासथल लियो चलि जाति है। बिलखि बिलखि के उसासैं लेतबालबधू लखिबन बीत्यो मन अति अकुलाति है॥ ५४ ॥ नायका अनुकूला॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरू १२लघु २४॥

दो० नहिंहरिलौंहियराधरौनहिंहरलौंअरधंग ।
एकतहीकरराखियेअंगअंगप्रतिअंग ॥ ५५ ॥

यह नायका अनुकूला है ॥ सुनायक के मन को विचार जानिये॥ सवैया ॥ जोअबके मिलिपै तो रहो मलि की भरै बादि वियोग वृथा हौं । न्यारोन कीजिये ताहि कहू पलु लीजै छिपाय मिलै छतियांहौं ॥ बारही बार विचारतहूं चित और कछू जिय आवत नाहीं । राखियैकै हरलौं अरधंगकि राखियै ले हरिलौं हियमाहीं॥ ५५ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरू ८ लघु ३२ ॥

दो० गोपिनसंगनिशिशरदकोरमतरसिकररास ।
लहाछेहअतिगतिनुकीसबनुलखेसबपास ॥ ५६॥

यह नायका कुदक्षिणा है सुरास मंडल मैं अपनीचतुराई करिकेसब की प्रसन्न राखिएक के आधीन काहू नैन जान्यो सखीको बचन सखी सौं ॥ कवित्त ॥ यमुना की पुलनि सुहाई छवि छाई तैसीशरद रैनि जोन्ह विमदविलास हैं । गोपिका निसंग रस रंग की उमंग रमैं रसिक मनमोहनु रमतरसरासहैं॥ अबला अनेकन में कीन्हीं नंदलाल कछू अद्भुत चातुरी की कलायौं प्रकास हैं । सबही की बांह गहि सबही के संग नाच्यौ सबनु विलोक्यो कान्ह सबहीके पासहैं । ५६ । नर अक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० वेईगडिगाडैंपरीउबट्योहारहियैन ॥
आन्यैंमोरिमतंगमनुमारगुरेरनमैन ॥ ५७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by

यह नायक सठ है। बिनु गुनहार के बिहन मीठीबात कहि दुरावत है नायकको बचन नायकासों कहे तो खंडिता हू होय॥ कबित्त॥ आज मनमोहन मयंक कैसेरे आये लालन सोहतु सिंगार चारु मेरे मन मान्यो है। आलिस बलित दृग घूंमत ललित गति शिथिल कलितरूप मोहनी सो मान्यो है॥ कृष्ण प्राणप्यारे उरमैं उबट रहयो यह बिन गुनहार प्रगट जात जान्यो है। बेई गड़िगाड़ैं परी सुमनमतंग मानोमदन गुरेरनतैं मारिमोर आन्योहै॥ ५०॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० बालकाहिलालीभईलोयनकीयनुमांह॥
लालतिहारेदृगनकीपरीदृगनमैंछांह॥ ५८॥

यह प्रत्युत्तर नायक सठ नायका खंडिता॥ सवैया॥ चारु निकाई लखे जिनकी रटलागत ओ परतो पलकीहै। प्राण पियारी कहा इन नैननु आजु ललाई इती ललकीहै॥ लोचन लाल तिहारे लखैं तिनकी इत आनि प्रभा झलकीहै॥ ५८॥ यथा सवैया॥ रुचि पंकज चंदन चंदन कंचन रंचन रोचन हूं कबची। कहिये केहि कारण कोप ते लायक कापर भामिनि भौंह नची॥ बन मानत हो अंखिया लखि लाल येनाहिंनै रातिके रोखरची। तनु रे बियोग तचबौतरुणीतिन मानहुमो हियमांहितची॥ ५८ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० सकतनतुबतातेबचनमोरसकोरसखोय॥
खिनाखिनओटैखीरत्योंखरोसवादिलहोय॥ ५९॥

यह नायक सठ सापराध आयो है॥ नायका क्रोध तें कटु बचन कहतिहै। ताकों मीठी बात कहि कोप निवारण करत है नायका अधीरा जानिये। नायक को बचन नायका सों॥ कबित्त॥ मोते तो कछु न अपराध परयो प्राणप्यारी मानकर रही योंही काहे को अरसतैं। लोचन चकोर मेरे हेतहैं सतल तेरे तरुण उदित मुख चंदके दरशतैं॥ कहैं मतिराम उठ लागि कंठ मेरे कत करति कठोर मनु आनंद बरसतैं। कोपे तें कटुक बोल बोलतहै तऊ मोकों मीठे हेत अधर सुधारस सरसतैं॥ ५९॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

CC-0. Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० मारोमनुहारनभरीगारयौखरीमिठाहि ॥
वाकौअतिअनखाहटौमुसकाहटबिनुनांहि ॥ ६० ॥

यह नायका धृष्ट है नायक को बचन सखी सों है याते गुण कथनमें नीके संभवतु है। वाको यामदतैं परोक्षकी प्रतीत भई ॥ सवैया ॥ मारेतौ फूलन की छटिकासों तऊ मनुहार अनेक जतावै। गारिजोदेय कहा कहिये मधुराई इतेक सुधाकित पावै ॥ बारति मूरतिको सतराहटु मैं रहिये अतिमोद बढ़ावै। श्रीलसुभाय सुहागल को रसहू रिझहू हसिहो हसिआवै ॥ ६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० ढरिकालेवेकेमिसनुलंगरमोढिगआय ॥
गयोअचानकआंगुरीछातीछैलछुवाय ॥ ६१ ॥

यह नायक धृष्ट नायक की करतव्यता नायका सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ गोरस के मिस रोक रहैं बन गैल न छांड़त छैल चवाई। भौनभरे मैं कहाकहौं जैसीकरी यशुदा के लला लंगराई ॥ मो ढिगआय हरैंईहरैं कछू कीनी सनेह सनी चतुराई। छोहरोलेयबे कैं उटिलानि अचानक आंगुरी छाती छुवाई। ६१ ॥ यथा सवैया ॥ खेलत में बृषभानु सुता कहूं धाय धसी वनकुंजन मैंहू। डारसों हारतहीं उरझौ सुरझाय रही कवि देव सखीहू ॥ तौलगि आय कह्यू उततैं सुनजीकि परयौचित बीच परीहू। छोहर बाहर बाहर बायदै छेरिदियेछलसौंछाति-यां छूवै। ६१। चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६। यत बय यति ॥

दो० कुंजभवनतजिभवनकौंचलियेनंदकिशोर ॥
फूलतकलीगुलाबकीचटकाहटचहुंओर ॥ ६२ ॥

यह नायकास्वकीयाहू हैयनायका कोबचन नायक सौं॥ कवित्त मुकलित कली जलजात की कछूक भई भौरन की गुंज मंजु श्रवणन धारिये ॥ पुलित गुलाब कलिकान की सुगंध पौन चिटका सबद मृदु मोद बर धारिये ॥ कलि धुनि करत अनंदखग वृंदनि अनंतछवि लसत बिहारीयौं बिहारिये ॥ आगम बिभास को बिलोकिये छबीले लालसुंदर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निकुंजतजि सदनु सिधारिये ॥ ६२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ अथ रूप निवेदन नायका को नायका सों ॥

दो० रहीलटूहवैलालहौंलखिवहबालअनूप ॥
कितौंमिठासदयौदईइतेसलोनेरूप ॥ ६३ ॥

यह नायकाको रूपसखी नायका सों निवेदन करत है सलौने रूप में मिठास यह अद्भुत है ॥ कवित्त ॥ जैसो जहां चाहियत तैसीतहां बनीविधि हूंपैधुनि आखरके न्याय बनिआईहै ॥ सुखद सुहाई कापैबरनि बताई जातिरतिहू नेजाकी तिलु समतानपाईहै ॥ बालछबि छाय तामें कैर अधिकाई दई टई यालुनाई मांझ कितनो मिठाईहै। सुंदर कन्हाई होतो निरखि बिकाई वहरूपको निकाई मानोदेहधरि आईहै ॥ ६३ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥ यह नायकाको रूप निवेदन नायक सों॥

दो० मोहिभरोसोरीझिहैंउझकिझांकिइकबार ॥
रूपरिझावनहारवहयहनैनारिझवार ॥ ६४ ॥

यह नायकको रूप सखी नायकासों निवेदन करतु है सखीको प्रयोजनप्रीति करायबो ॥ सवैया ॥ सुंदरजो कहियेतो तिहूंपुरमेंइक नंद दुलारोइ है। यामैं कहा कहनावतिहै कछूप्रेमको पंथ निरारोइ है। नेक झरोखा ह्वै झांकी बुलायल्यों मोहिं भरो सो तिहारोइ है ॥ रिझबार हैंतो दृग रीझेइंगे वहरूप परिझावन हारोइ है ॥ ६४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २० गात वर्णनम् ॥

दो० होरीझीलखिरीझिहोछबिहिछबीलेलाल ॥
सौंनजुहीसीहोतदुतिमिलतिमालतीमाल ॥ ६५ ॥

यहगात वर्णन नायकाके अंगकी छबि नायक सों निवेदन करति है **सवैया** ॥ नीकीलसैं वृषभानललीं नवयौबन ज्योति जगीअंग अंगहि। ताहि विलोकिलला मनमेरो भोइ रह्यो अति रीझ तरंगहि ॥ छैलछबीले लखैं छबि रीझिहैं क्यौंन हिये रसभाव उमंगहि ॥ मालती माल तनू दुति सों मिलि सोंनजुहीके प्रकाश तरंगहि ॥ ६५ ॥ **यथा सवैया** ॥

CC-0. Public Domain. Digitized by eGangotri

चौंसर चारु चमेलीके फूलनि को सखियानि संवारिके आन्यौ ॥ पो पहिरौ गुन गौरि धुरंधर कंचन सेतनमें मन मान्यौ ॥ ह्वैगई सौनजुही कीसी माल सुअंगके रंगमें भेद नजान्यौ ॥ दंतनकी दुतिसों मुसिकाय कै फेरचंबेलिहीकोंठहरान्यौ ॥ ६५ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० अंगअनंगनजगमगातिदीपसिखासीदेह ॥
दियाबड़ायेहूंरहैबड़ोउजारोगेह ॥ ६६ ॥

यह नायकाकी छवि देहकी दीपतिसखी नायक सों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ दीपकीसी लोयऐसी दूसरी नकोई रही दृगनि समोय मानो मोहनी लसति है ॥ जटित जवाहरके भूषण ललित अंगअंगन मिलत जगा जोतिसी जगति है ॥ दीपक बड़ौहू भयेदेहके उजास होत बड़ाई प्रकाशक चौंधिसी लगति है ॥ दीपतिकी दुति भरिभवन अखिल जाल रंध्रनिहूंवे बाहिरकी वीरबहलति है ॥ ६६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० वाहिलखैलोयनुलगैकौनजुवतिकीजोति ॥
जाकेतनकीछांहाढिगजोन्हछांहसीहोति ॥ ६७ ॥

यह नायकाकी दीप्ति सखी नायक सों करति है जो नायक सखी सोंकै तो गुणकथन हूं संभवतु है ॥ कवित्त ॥ जोवनकी जोति जगै तनकी बनक कीनी हीरन कनक छबि महल बिलंद की ॥ ललित विलास कोटि मंद मृदुहास मति राम अंग बासु मृगमद बासु मंदकी ॥ मदके मदनबन मद नैनमन्दिर से गति गरवीली मदमोकल गयंदकी ॥ अधिक अंध्यारी मैं उजारी होति चंदकी त्यों चंदकी उजारी में उजारी मुख चंदकी ॥ ६७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भईजुतनछबिबसनमिलिबरनसकैसुनिबैन ।
अंगओपआंगीदुरीआंगीअंगदुरैन ॥ ६८ ॥

यह नायकाको शोभा सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ सवैया । हरि कंचन बेलीसी बालकी देहकी दीपति को बरनै कबिहै ॥ अरुताहि मिली दुति कंचुकी की अनूपम वोपरही फबि है ॥ कछुजात कही न हं अंग प्रभा अरचीर मिलैं जुभई छबिहै ॥ वह आंगी गई दबिअंग को

6525.

CC-0. In Public Domain. Digitized by

ओप में आंगीमें अंग कहा दबिहै ॥ ६८ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० देखी सौनजुही फिरति सौनजुहीसेअंग।
दुति लपटनु पटसेतहूं करतबनोटी रंग॥ ६९ ॥

यह नायकाके अंगकी गुराई सखी नायक सों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ सहज सिंगार दुति लसति अपार लखि मुनिहूंके मन भाव उपजै अनंगको ॥ अति सुकुमार यातें लचकत लांकुभार सहिन सकत बिबि उरज उतंगको ॥ रूपकी रसाल तुम देखी सो नवाल लाल कहा कहौं बनक बरनु वाके अंगको ॥ चारु तन सुखपट पहिरत नखवाहि तनदुति मिलि होतुकेसरिया रंगको ॥ ७१ ॥ कछु अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

दो० दीठिनपरतुसमानदुति कनकुकनकसेगात।
भूषणकरकरसकलगतपरसपिछानेजात॥ ७२ ॥

यह नायकाके अंगकी दीप्ति सखी नायका सों कहति है। नायकहू सखी सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ ओप अनूपम आननको अरु अंबुज नैननु अंजनु आनै॥ देखतही मनही मनसों चित आजु कहा जनु भूषण ठानै ॥ ऐसेमें आयगयो रिझवार सुडीठ परे तब घूंघट तानै ॥ भूषण जानि परै न सखी ब्रज भूषण देखत भूषण जानै ॥ ७२ ॥ दल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करतुमालिनआछीछवहिहरतजुसहजबिकासु ॥
अंगरागुअंगनलगोज्योंआरसीबसासु ॥ ७३ ॥

यह नायकके अंगमें केसर लगी है नायकको इतनोहू अंतराय सुहातु नाहीं यह जानिसखी नायकसों कहति है जोनायक नायका सों कहै तो रूप गर्बिता होय ॥ सवैया ॥ मैनकी मोहनी सीलखि न्याय ही मोहन रीझि रहे रसपागैं ॥ योबन रूप सुहाग मनी लखि सोतिनु के उरदाहनि दागैं ॥ ऊजरो लागैन और कछू नवनागरि तेरी गुराईके आगैं ॥ केसरि लागैं तै अंग लखात ज्यों आरसि देखैं बसासके लागैं ॥ ७३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० पहिरनभूषनकनककेकाहे आवतुयाहिहेत।
दरपनकेसे मोरचे देहदिखाई देत ॥ ७४ ॥

यह सखी नायकाके अंगकी निकाई कहतहै जोभूषणहूंको अंतराय जानि नायकासों कहैं तो बनतु है ॥ कवित्त ॥ हितकी तोबात हित हुसौं कहि आवैतिहि तातें तोसों कहत छबीलो प्रेम पागि कै ॥ तेरी समता कोरति रंभा उरबसी है न तेरे अनुराग प्यारो रह्यो अनुरागि कै। लौनो तेरो तन तामें सोनेके गहने तूलो पहिरति इन्हें अबही दे त्यागि कै। नीके नीके तनपर फीके फीके लागतहैं मेचा रहै हैमानों सुकर में लागिकै ॥ ७४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३ ॥

दो० कंचनतनधनबरनबररह्योरंगमिलिरंग।
जानीजातसुबासही केसरि लाई अंग ७५ ॥

यह नायकाके अंगकी गुराई सखी नायकासों कहतिहै अथवा लेचलबे कीउतावल करिअंगरागुकोनिवारनुकरतु है अंतराय जानि नायकनायकासोंकहतु है ॥ सवैय। ॥ जोकछु तो तनमें तरुणी सुरतीन लहै रतिरूप मिकाई। तापर योबन जोतिजगै कविको बरनैछबिकी सरसाई ॥ रंगमें रंग समोयगयो जब कंचनसे तनमें घसलाई। अंगसुगंधनिकीनलहै सरकेसरि बासुही तें लखिपाई ॥ ७५ ॥ बरन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० ह्वैकपूरमनमेंरहीमिलितनदुतिमुकतालि।
छिनछिनखरीबिचच्छनौंलहतिछायतिनुआलि॥७६॥

यहअंगदीप्ति कोनिकाई सखी नायक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ कुंदनसे गात जलजातसे नयन जाकी दीपति सुन्हाई सोभवन मांझवै रही। कंचनकी चौकीपर बैठि बरबाल साजैसकल सिंगारज्योति जगमग ह्वैरही ॥ मोतिनकी मालमजनी तै पहराई सुतोतन दुतिमिलित कपूर कीसीह्वैरही। एकअली चतुरजकी सीचकि रहीएक करिबेकों निहचे तिनूकी हाथलेरही ॥ ७६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० केसरिकैसरिक्योंसकैंचंपककिताकिअनूप।
गातरूपलखिजातदुरिजातरूपकोरूप ॥ ७७ ॥

यह नायकाके अंगकी दीप्तिसखी नायक सों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ चंपकचमकचारु कुंदनमें कहाओजु केसरीकुसमको जुसेंधकरैं गातकी। कोकिलाकी कूकहूंतेपाँव पियूषहूतें मधुर मयूष हूतें मधुराई बातकी ॥ मैनकाहूं मैनछबि मैनदुति रहीदबि मैन गिरधर ऐसी नैन बनितातकी ॥देखिदृग भासमृगजात पछितात मन जलजात लजिजात जलिजात जातकी ॥ ७७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २२ ॥

दो० बरनबाससुकुमारतासबबिधिरहीसमाय।
परबुरीलगीगुलाबकीगातनजानीजाय ॥ ७८ ॥

यह नायकाकी सहज सुगंधयोबनकी अरुनाई सुकुमारता सखी नायक सों निवेदन करत है जो नायक के सेजके पांखुरी जानि सखी नायकासों कहैतो लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ बानतिफूल भरेवर फल प्रभातसमैसुख सेजतेजागी। आयोतहां मनमोहनप्यारो प्रभा लखिरीझि रह्यो अनुरागी ॥ बैसोई रंगसुगंधहै बैसोई बैसोही कोमलता रसपागी। कौनहूं भांति सों जानि परोन गुलाबकी पांखुरीगात सोंलागी ॥ ७८ ॥ मदकल अक्षर ३५ लघु २२ गुरु १३ ॥

दो० सोहतधोतीसेतमेंकनकबरनतनबाल।
सारदबीरदबीजुरीभारतकीजतिलाल ॥ ७९ ॥

यह नायकाकी गुराई सखीकहतिहै नायकसों ॥ कबित्त ॥ कंचन बरनतन बनक अनूप मानों रूपकी अवधि मनमथकी रसालहैं । एक धोतीसेतमें अनेकछबिदेती बाल मानोंहंस मंडलोमें चंपककीमालहैं ॥ सरदघटानि मांधदामनो लसति किधौं क्षीर सिंधुमांझ बड़वानल की ज्वाल हैं। सुरसरि सोतमें सुधानिधिकी कला किधौं शंकरके अंगलसैं पारबती बालहैं ॥ ७९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० कहाकुसुमकोकौमुदीकितकआरसीजोति।
जाकीउजराईलखैंआंखऊजरीहोति ॥ ८० ॥

यह नायकाकी उजराई सखी नायकसों कहत है नायकहू कहैतो संभवहै ॥ कबित्त ॥ देखीसुनी होतकहूं रेसम रसमकोऊकरा कैसीयो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कमाईमदु मूजरी। इंदुहेाहु बदितन कहाहेाहु वदितकहाऊ ऊजरी पैन पून्योंकी सीपूरण प्रकाशपावै दूजरी॥ उबटि अन्हाय औ अगोछनि अंगोछो तनरहेाउ अछन अछवाई आछी गूजरी। लाखकरो कोऊपट तरवाकी पूजतिन जाकी उजराई देखेंआँख हेातऊजरी॥ ८०॥ मद कल अक्षर ३५ गुरू १२ लघु २२॥

दो० रंचकलखिपतिपहरियोंकंचनसेतनबाल।
कुम्हिलानीजानीपरतिउरचंपेकीमाल॥ ८१॥

यह नायकाकेअंगकी गुराईऐसीहै जुचंपेकी मालाजानिनाहीं जाति सुसखी नायकसोंकहतिहै॥ सवैया॥लाईबनाय प्रवीनअलीनवचंपकमाल सुगंधभरीहै। लैअपनेकरमें नवनागरिकृष्णकहैं उरमेंपहरीहै॥ कंचनसे तनकीछबि मांझगईमिलि रंचनहींउघरी है चाहिरही सजनी चकसी कुम्हिलायगई तबजानिपरी है॥ ८१॥ चलअक्षर ३० गुरू २२ लघु२६॥

दो० सघनकुंजघनघनातिमिरुअधिकअंधेरीरात॥
तऊनदुरिहैश्यामयहदीपसिखासीजाति॥ ८२॥

यहनायका के अंगकोप्रकाश सखीनायक सों कहति है जो संयेाग समेगुरूसखी कहै तेा शिक्षाहू संभव है परकीया॥ सवैया॥ याके समीपन हेाउदुरैलखि लेतवै दूरहीते बपहांसी। कीजे कहाअबतो कहि जोबिधि याबिध दीपति ही परकासी॥ काहूकि आंखिनमूंदन जानि तहौंबलिजाउं नहूंजिवदासी। ल्याऊं सकेसें जुरातिअंधेरी उजेरी जुना गरि दीपशिखासी॥ ८२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरू१२ लघु २४॥

दो० लिखिनबैठिजाकीसखीगहिगहिगरबगरूर॥
भयेनकेतेजगतकेचतुराचितेरेकूर॥ ८३॥

यहनायका की निकाई सखीनायक सों कहत है कि वाहि देखें शांतिकभावहेात है याते चितेरेऊपर क्योंलिखत बनैनाहीं॥ कबित्त॥ रूपकीअनेकविधि ऐसी औरनव नाई विधि जाको लिखिवे कों लालदेवता मनाइबो। ताकीशोभा लिखिवेको बैठतिगरब करिआनतही मनहेात धूमधननायबो॥ ऐसीभांति आपआप कूरकहवायगये चतुरचितेरेतिन्हैं

कहालौंगिनायबो। कृष्णप्राणप्यारे वहिचित्रनो बिचित्रगति काहूपैंन बान्योंवाके चित्रको बनायबो ॥ ८३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

दो० अंगअंगछबिकोलपटउपटतिजातअछेह।
खरीपातरीहूतऊलगेभरीसीदेह ॥ ८४ ॥

यहनायका की नाजुकताई अरुदीप्ति सखीनायका सों कहति है ॥ सवैया ॥ कंचनकंज कुरंग कलानिधि कंचुकीसोभा सुभायरहोसी। ता नबनागरि की निशिद्यौसरहैं नितिनैननि मांझधरीसी ॥ अंगनि अंग उमंगअछेह प्रभाकी तरंगसुरंग खरीसी। प्रातरि वाकी अंगेठतऊ छबि पुंजनलागति देहभरीसी ॥ ८४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० अंगअंगप्रतिबिंबपरिदरपनसेसबगात ॥
दुहरेतिहरेचौहरेभूषणजानेजात ॥ ८५ ॥

यहनायका के अंगकी उजराई सखीनाय सौं कहैहै सखीसों नायक कहै अरुनायका सों कहैसो सबभांति संभवतहै अरुनायका सखीसोंकहै तो रूपगरबिताहोय ॥ कबित्त ॥ बदनबिलोकिशशिसमतालहैनक्यों हूं लोचनबिलोकि जलजातहू लजातहै ॥ नागर नवेली नखसिखलौं निकाई भरी बानकबिचित्र लखि लोचन सिरात है। कृष्णप्राण प्यारे अति उज्जललसतवाके मुकरसेगात महा शोभा सरसात है ॥ अंग अंग प्रति प्रतिबिंब परिकेऊ ठौर एक एक भूषण अनेक जाने जात है ॥ ८५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

दो० बालछबीलीतियनुमेंबैठीआपुछिपाय ॥
अरगटहीफानूससीपरगटहोतलखाय ॥ ८६ ॥

यहनायकके अंगकी दीप्ति सखीनायकसों निबेदन करत है नायक हूं कहै तोसंभव है ॥ कबित्त ॥ चंदकी कलासी चपलासीतिय सेना पति बालमके बरबोज आनंदिके बोति है। जाकेआगैकंचनमें रंचकनपैयेदुति मानौंमनमोती लालमाल आगैपोति है। देखीप्रीति गाढ़ीपहिने तनसुख ठाढ़ी जोरजोबन की बाढ़ीछिनछिन औरैहोति है ॥ गोरीदेह झीने बसनमें झलकत मानों फानुस के अंदरदिपति दीप जोतिहै ८६ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२

Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० मानहुंबिधितनअच्छछबिस्वच्छराखिबेकाज ॥
दृगपगपोछनकोकियेभूषणपायंदाज ॥ ८७ ॥

यहनायका के तनकीछबि सखीनायकसों कहति है। अरुसखीको बचन नायका सों होत है ॥ कबित्त ॥ तूहीतीनों लोक की लुनाई लूटन्याई देखैरूपकी निकाई नंदलाल ललचायेहैं ॥ तेरीदुति आगेआली कंचनके गहने ये फीके फीके लागैं ऐसे गात छबि छाये हैं ॥ दीठि के परसहीते मैले होत अंग ऐसी उज्जलता सहित बिरंचि ने बनाये हैं ॥ तिनकी निकाई स्वच्छ राखिबे के हेत येतो दृगनकों मानो पग पोछना बिछायेहैं ॥ ८७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लीनैऊंसाहससहसकीनेजतनहजार ।
लोयनुलोयनुसिंधुतनपैरिनपावतपार ॥ ८८ ॥

यह नायका के अंग अंगकी सुंदरता देखिकै तहां नायकके नेत्र तहाईं थकितह्वै रहतहैं शोभा एकसखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ जातनको छबिको कवि कोविद केतेकि तीर प्रमाण बतावत ॥ तातनकी छबि देखिबेको तब नैनजगे व्रत ध्यान लगावत ॥ साहसकी रसपान बहु भांति अनेक उपाय बनावत ॥ शोभाके सागर मांझपरे अब पैरत कैसहू पार न पावत ॥ ८८ ॥ स्वपनदर्शन नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु २८ ॥

दो० देखौजागितबैसखीसांकरलगीकपाट ।
कितहूंवेआवतजातभजिकोजानेकिहबाट ॥ ८९ ॥

यह स्वप्नदर्शन नायका सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ रंचक नींद परै जबही तबही हिग आलिटिकै खगिकै ॥ हेरि हसैं रसको बरसैं बतरात महाहित सों पगि कै ॥ जागी तो डीठ परैनकछू अरु त्यौंहीं कपाट रहे लगि कै ॥ इह जानै को आवत धौंकितह्वै पुनि जातकवै कित ह्वै भगिकै ॥ ८९ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६

दो० सोवतसुपनेश्यामघनाहीलिमिलेहरतवियोग ।
तबहींटारिकितहूंगईनींदौनींदनयोग ॥ ९० ॥

यह स्वप्नदर्शन नायका सखीसों कहतिहै नींदकी निंदा करति है ॥ सवैया ॥ आलीबिछोहुभयो तबते जबते छतियांबहुभांतिबियोग बईरी । आजुलला मन मोहनसों सपनेमें अचानक भेंट भईरी ॥ मेलुबिद्याबहरायवेको हिलिकै मिलिकै रसकेलि ठईरी ॥ नींदहूं नींद बिलोयक ह्वै तबहीं कहुं भाजि गई सुगईरी ॥ ६० ॥ यथासवैया ॥ आवतमें हरि को सपने लखि नेस कुवाट सकोचनिछोड़ी। आगेहूं आड़ेभये मतिराम औलीने चितै चखिलालची वोड़ी । वोढ़नुको रस लैनको मेरो गहीकर कंज निकंपत ठोढ़ी ॥ और भटून कछू भइ बातगई इतनेहीमें नींद निगोड़ी ॥ ६० ॥ अहिवर अक्षर ३४ गुरु ५ लघु २६ ॥ साक्षात् दर्शन नायकको नायकाको ॥

दो० लटकिलटकिलटकतुचलतझटतमुकटकीछांह ।
चटकभरयौनटुमिलिगयौअटकभटकबटमांह॥९१

यह साक्षात दर्शन जैसो छविसों देखो है नायक तैसे नायका सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ लटकि लटकि चलि निरखतु बार बार फेरि फेरि ग्रीव छाह मंजुल मुकट की ॥ केसर की खोरपरि कलित रुचिर भाल कुंडल ललित सोहै बनमाला टटकी ॥ ह्वै गई बिपन मग अटक भटक भेट तबहींते नैनन में खुभी सोभा नटकी ॥ भूली सुधि घटकी री लोक लाज सटकीरी अटकी हिये में पहरानि पीर पटकी ॥ ६१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ साक्षात् दर्शन नायकको नायका को ॥

दो० चुनरीश्यामसतारनभमुखशशिकीउनहारि ॥
नेहदबावतनींदलौंनिरखिनिशासीनारि ॥ ९२ ॥

यह साक्षात दर्शन जैसे नायका देखो है तैसेहो नायक सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ उन्नत पीन उरोजन कौंजुगु कोकनुकी छबि पावतहै ॥ मुख सोहत सोमुजुह्वै याहसो दुति दीप कुमोद बढ़ावतु है ॥ यह जामिनिसी गजगामिनि देखत नींद ज्यौं नेह दबावत है ॥ ६२ ॥ दृष्टानुराग नायक को त्रिकाल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० सनिकंजालचखञ्जखलगनउपज्यौसुदिनसनेह ।
क्योंननृपतिहवैभोगवैलहिसुदेशसबदेह ॥ ९३ ॥

यह दृष्टानुराग है नायका के नेत्र अंजन सहित देख नायक के अनुरागउपज्यो सोसखी नायका सों कहति है नायका परकीया ॥ कबित्त देखो एक बनिता बिचित्र वर बानिक सौं जाकी जोतिही सौं जग मगि रह्यौ गेहु है ॥ बिह सिख हंसि मृदु बोलत सरस बानी बरसत अमी मानौं बूंदनको मेहुहै ॥ कहैं कबि कृष्ण क्योंन भूपति हूं भोगकरैं रजधानी सकल सुदेश पाय देहुहै ॥ नैनमीन लगतपै अंजन लसतु सनी ऐसेशुभयोग समे उपज्यौ सुनेहुहै ॥ ९३ ॥ दृष्टानुराग नायकको॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोहूसौंताजिमोहदृगचलेलागवाहिगैल ।
छिनकुछायछबिगुरुडरीछलेछबीलेछैल॥ ९४ ॥

यहदृष्टानुराग है नायकको देख नायकामें अनुराग उपज्यौ है सोनायका सखीसों कहति है ॥ नायका परकीया प्रौढ़ा॥ कवित्त ॥ जाघरी ते मोहनीको मंत्र डारि दीनों उन रूपकी मिठाई ताघरीते कलमले हैं॥ ज्यों ज्यों हठि करि रोकरही बाट अंचलमें त्यों त्यों अतिबल करिउतहीको हले हैं ॥ मोहूसोजहूतो नतौ पलकमें करि हातौ छोड़ि सवतातो वाकी गैल लाग चले हैं ॥ नंदको कुंवर आलीवीस बिसु ठगुदैरी देखतही देखि मेरे दोऊ नैन छले हैं ॥ ९४॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० फेरिकछूकरिपीरितैं फिरचितईमुसकाय ।
आईजामनिलैनजियनेहेगईजमाय ॥ ९५ ॥

यह नायका परकीया जुचेष्टा याकी देखी है सुनायक सखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ केसरि बरन सुबरनहू बरन जोत्यौ बरनी नजातिअबरन बानबैगई ॥ कहत बिहारी सुनसरस पियूष मीठी मति बैनरनिचितै गई ॥ भौहनि चढ़ाई चाई मृदुमुसिकाय नेकुचंचल चलाय चखचेरोचित कैगई ॥ लीने कर बेली अलबेलीपा अकेली तिय जावनको आई जिय जावन सो दैगई ॥ ९५ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० चितवनभोरेभायकीगोरेमुहमुसकानि।
लागनिलटकीआलिगरेचितखटकतनितआनि १६

यह नायकाकी चेष्टा नायका सखीसों कहतहै पूर्वानुराग होतहै॥ कबित्त॥भूलतन क्योंहूं बृषभान तन्याकी बानि वह अंगिरान अंगुरिन चटकाय कै। वह गोरे बदुरारे बेदनकी मुसकानि वह चहचही चितवनि भोरे भायकै॥ घूंघट करनि कर कमल उसारि वह लटकि मिलनि सजनीसों लपटाय कै॥ ऐसी भांति जबतेमैं निरखी है तबहीतें पलपल मांझ खटकत चितआय कै॥॥ १६॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० इतीभीरहूभेदिकैंकितहूंहवेइतआय।
फिरैडीठजुरदीठसोंसबकीदीठबचाय॥ १७॥

यह नायकाके चितैवेकी चतुराई सखी सखीसों कहति है। नायक हू सखी सखासों कहै तो होय नायक परकीया॥ सवैया॥ बैठी सखीनकी साझे सभा सबहीके सुनैनन मांहि बसैं। पूछेते बात बनाय कहै मनकी मनके सब दास हसैं॥ खेलतहैं इतखेल उतै पियचित्त खिलावत योंबिलसैं॥ कोउजानै नहीं दृगडोरि कबै कितहूं पिय आनन छूवै नी कसैं॥ १७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० गड़ीकुटुमकीभीरमेंरहीबैठिदैपीठि।
तऊपलकपरिजातुइतसजलहसोंहींदीठि॥ १८॥

यह नायकाके सनेहको निकाई अरु चितैबेकी चतुराई नायककों कहति है नायक परकीया। सवैया॥ प्यारी प्रवीण सनेह सनी नखते सिखलौं सुखकी निधि त्योंहीं॥ कैमेहू मोबरते नटरै जुचुभी चितचाहनि नेह निचोहीं॥ बैठी बधू गुरु नारिनमेंजऊनारि नवाय खरीसकुचोहीं॥ लाज पगी पलएक तऊ परिजात इतै वह दीठि हसोहीं॥ १८॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० नाहिंनचाइचितवतिदृगनिनहिंबोलतमुसकाय।
ज्योंज्योंरुखरूखोकरैत्योंत्योंचितचिकनाय॥ १९॥

Digitized by eGangotri

यहनायकाकी चेष्टानायक सखीसों कहतहै कियह रुखाई मेरेचित को चिकनावतु है ॥ कबित्त ॥ जो रतन लोचन नचाइ नेहचाई भरे मृदु मुसकानि कोनभाव दरशाति है ॥ बोलत नकबहूं मन मोहन मधुरबैन मोरतिन भृकुटीमरोर तनगातहैं ॥ कहैं कबिकृष्ण वाकी गर-बीलीबानि कछूसहज बसीकर कोमंत्र जान्योजातहै । ज्योंहोज्यों रहत प्यारीराधा रूखरूखे करि त्योंहीत्यों खरोई खरोचितु चिकनातुहै ९९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चितईललचौहैंचखनडटघूंघटपटमांहि ॥
छलसोंचलीछुवायकैछिनकछबीलीछांह ॥ १०० ॥

यह नायका परकीया है चेष्टा करिगई है सुनायक सखी सों कहत है ॥ कबित्त ॥ पूरण सुधा निधसों वदन दिखाय फिर घूं घटकी ओट कीनी कछुक लजायकैं । घूं घटके पटमें ह्वै निरखि निशंक चितवनि ललचोहीं चाह चीकनौं जतायकैं ॥ कहैं कबिकृष्ण मृदुमुलकि अलोकी ओर चली काहू छलसौं छबीली छ्वाह छाइकैं । हाहा कहिकोही जाहिएती छबि सोही वहमोही तेनटरत रहीजु रीझिछायकैं ॥ १०० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० त्रिबलीनाभिदेखायकरिशिरढकिसकुचसमाहि ॥
गलीअलीकीओटह्वैचलीभलीबिधिचाहि॥१०१

॥ नायका परकीया की चेष्टा देखी है सुनायक सखी सों कहत है । ॥ कबित्त ॥भोरीबैस इंदुमुखी साँकरी गलीमें मिलि सुंदर गोबिंदको अचानकही आयकैं । कालिदास जगैजेब अंगनि जवाहिरकी वाहरिह्वै फैली चांदनीसी छबिछायकैं ॥ नेरोगह्यौ श्यामसोहै बिहंसि बिलोकी बाम हेरयौतिरछौहैं नारिनैंसुक नवायकैं । गोरेतनुचोरे चितजोरे दृगुमोरे मुखथोरे बीच कोरे लागिचली मुसकायकैं ॥ १०१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० डककुडगतिसीछैवैचलीदुकचितचलीनिहारि ॥
लियेजासचितचोरटीइहैगोरटीनारि ॥ १०२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका की चेष्टा नायक सखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ भानुसुता जल न्हान नहीं जात सुजानु सखीनमें आनंदबाढ़ी। पीछैतें आय सुनाय कछू कहिबतियां छतियां करिगाढ़ी ॥ यौंपलुकैं पलकैं चितई सुचि तो-ढिगच्यार रही फिरठाढ़ी ॥ १०२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहऊंचीआंचरुउलटिमोरिमोरिमुंहमोरि ॥
नीठिनीठिभीतरगईडीठिडीठिसोंजोरि ॥ १०३ ॥

यह नायका की क्रियाजु देखीहै सुनायक के चितमें बसीहै बारबार सखीसों कहतहै नायका परकीया ॥ कबित्त ॥ रूपकी अपार राधा ठाड़ीनिज सद्वार जाकी छवि पर रतिवारिये करोरिकै। मोहिदेखिनैक लजाय कै दृढ़ाय भौंह बाजी चितवनि मांझि लीनों चित चोरिकै ॥ मोरिमतरे मोहजमुहान अंगरानी पुनिआलस बलितनैन बटुरारे ढोरिकै। नीठिनीठि गईभौंन भीतरि सरोजमुखी डीठिसों मिलाय डीठिनीकैनहु जोरिकै ॥ १०३ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० ऐंचतसोंचितवनिचितैभईओटअलसाय ॥
फिरउझकनिकौंमृगनयनदृगनलगनियांलाय।१०४॥

यह नायका की चितवन नायक के चितमें बसीहै सुनायक सखीसों कहतहै । वैसेही फिरचितवै यहअभिलाष ॥ कबित्त ॥ खिरकी उघारि नव नागरि निहारि इत ठाढ़ो बनवारो मनमथ छबिछायकै । बिहंसि बिलोकि शशिबदनो लजायकै सुऐंचत सो मनुभईओट अलसाय कै ॥ लगनलगाई चितलैगई चुरायकै बिहारीलाल रच्योठगकीसो मूरिखायकै। उतचितवत सबकाज बिसरायकै सुफिर अवलोकिवेकी आसउरलायकै॥ १०४ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० वेठाढ़ेउमदाहउतजलनबुझेबड़बागि ॥
जाहीसौंलाग्योहियोताहीकैहियलागि ॥ १०५ ॥

यह नायका परकोया को प्रकाश चेष्टा है नायक को देखि कैसखी कौआलिंगन करत है सुसखी प्रगट कहतहै ॥ कवित्त ॥ मेरो मुंह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चूमें तेरी पूजी साध चूमिवे की चोटे औस अनुक्यौंसिरत प्याम डाटे हैं। छोटेकरमेरे कहाछुवावतिछबोलीछातिछुववो जाकेंछुवायवेकोंअभिलाष बाढ़ेहै ॥ खेलनजोआयेहो तौखेलो जैसेखेलियनुकेसोराय कौंसौंनेये कौन खेलकाढ़ेहैं। फूलफूलमेंदति हैं मोहिकहा मेरोभटूभिटौकिन जाय वेजुभेटवे कोठाढ़ेहैं ॥ १०५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देख्यौअनदेख्यौकियोअंगअंगसबैदिखाय।
पीठातिसीतनमेंसकुचिबैठीचितैलजाय ॥ १०६ ॥

यह नायका परकीया कै चितै कैं लाजकरिवो देखो सुनायकैं सखी सोंकहतहै ॥ कवित्त ॥ मोहतस्वरूप मनीबैठीहो छबीलीराधा होहूं तहां निकस्यौं अचानक होआयकै। मेरी ओर देखउन देखो करिमुसकानिअंगअंग सकल सुसुन्दर दिखायकै। पैठतसी तनमें सकुचातन रीतसी चितवन चाहबैठी सिमट लजायकै। वहमुसकान चितवन सकुचनि क्योंहूं टरतनरहो मेरोहियमें डराय कै ॥ १०६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४।

दो० चिलकचिकनईचटकिसोलफातिसटकलौंआय।
नारिसलोनीसांवरीनागनिलौंडसिजाय ॥ १०७ ॥

यह नायका की सांवरी मूरत देखि आशक्तभयौ सोसखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ चिलकति चारु चिकनाई कीचटकि भरीचलति फलति जैसैलंग चलकति है। सांवरी सलोनी कांतिलोनि अजौंहौंनी वैसशोभा सनीसी समनि सहत लसति है ॥ कुटिल सुभाई चितवनि प्रेमविषभरी नागनज्यौं यह ब्रजनागरि बसतिहै। मनको डसति अरुतनकौ लहरि आवै लागत नयंत्र मंत्र अदभुत गतिहै ॥ १०७ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मैंहौंजान्यौंलोयननुजुरतबांटिहैजोति।
कोहोंजानतुडीठिकोंडीठिकिरकटीहोति ॥ १०८ ॥

यहनायका अपनेनेत्रनको आशक्त सखीसों कहति है अरुयहप्रगट करतिहै किजबते देआंख देखीतबते औरकछु सूझतनाहीं ॥ कवित्त ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जादिमाते आली तै कहीकि मनमोहन केनोचन सलोने देखे अतिहित बाढ़ि है। तादिना तैं मैंहू यहजानी चारिनैनभये जोतिको प्रकाशकछू अधिकाई चाढ़ि है॥ जोरत ही नैन बिथा तनमें बिगरिगई मदनहुता-सन बरत जाढ़ि जाढ़िहै। कौनयह जानहोडीठिही कौ डीठि वीरहोत किर कटी कोऊ सकतन काढ़िहै॥१०८ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० त्योंत्योंप्यासेहीरहतज्योंज्योंपियतअघाय।
सुगनसलोनेरूपकोजनचषतृषाबुझाय॥ १०९॥

यह नायका के नेत्रलगे हैं सुसखी सों कहत है॥ कबित्त॥ हरि मुखचंद त्यों चकोर ह्वै रहति जानि लोचन कमल गत भौंरकी गहत हैं॥ देखतहू देखतरहत दिखसाध लागीहोत अनमेष यौंविशेष उमतहैं। टोनेकछू प्राणप्यारे को सलोनौं रूप तातेनेक नबुझात तृषाकल नलहतहैं॥ तृप्तनहोत क्यों हूं माईरी नयन मेरेपियतअघाय त्योंत्यों प्यासेईरहतहैं॥१०९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अलियनलोयनसरनुकोंखरोबिषयसंचार।
लगेलगायेएकसेदोउनकरतसुमार॥ ११०॥

यहअपने नेत्रकी अवस्था सखीसोंकहतहै अथवा नायककहै॥ कबित्त॥ मरजाके लागे ताहि सुधि नरहतकछू जोहनतताके उर रंचक बिथानहैं॥ तिनते अधिक कुसुमायुध के पांचौं बान जिन के लगे ते टरैं मुनिन केध्यानहैं॥ कृष्ण प्राण प्यारे की दुहाई जियजानी अली सब हीतें विषमविशेष नैन बानहैं। दुहुन बिकलकरैं जतन लगैं न आनदुहूं भांतिलगेहूं लगायेहू समानहै॥११०॥ त्रिकल अक्षर३६ गुरु६ लघु ३०॥

दो० दृगनिलगतबेधतहियहिबिकलकरतअंगआन।
येतेरसबतेंबिषमईछनतीछनबान॥ १११॥

यहनायका के नेत्र देखि नायक कोबिकलताई भई सुसखी नायक सों कहतिहै॥ सवैया॥ भौंह कमानबिनाजिहतैंछुटिटेढ़ेचलैं दुहूं ओरअनेरे। नैननुआनिअचूक लगे हिय बेधत क्योंहूं फिरैंनहिं फेरे॥ और सबैअंग व्याकुलहैं मरमातबिथा घहलात घनेरे। रीतिगहैं सबतें बिषमाईछनतीछनबान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिषमै बिषमै सरई छन तीछन तेरे ॥ १११ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

सो० कोड़ाआंसूबूंदकसिसांकरबरनीसजल ॥
कीनैंबदननिमूंददृगमलंगडारेरहत ॥ ११२ ॥

यह नायका देख नायक के नेत्र विवस भये हैं आंसूपरत हैं मूंदे रहतहैं सुसखीसों सखीकहतिहै ॥ सवैया ॥ तेजव्रतेवृषभान सुता हरि के दृगनेक निहारहरे हैं। वे तबतैं न हले न चले रहेवाहि चितौनकी चाह भरेहैं ॥ कोडाकिये असुवानकी बूंदजंबीर बड़ी बरुनी जकरेहैं। नेक अबैं उनकी सुधिलेहु मलंगमनों मुंहमूंदपरे हैं ॥ पुनःकवित्त॥ तपैं बिरहानलमैं पलकउठायें भुजा ध्यानलीन मननिसबासर बिहातहै। डोरे लाल सेलीसाज असुव फटक मालकोये सोये बसन भगोहैं दरसातहैं ॥ आठौ जाम जागैं अंग विशद बिभूतभरे बोलत न मुख दुखसहैं सीत बातहैं। तेरे मिलबेके वे योगी होनहेत राधेयोगी युगलोचन वियोगीके लखातहैं ॥ ११२ ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० कहतसबैकविकमलसेमोमतनैनबखान ॥
नतरुकुकतइनबिपलगतउपजताबिरहकृशान ॥ ११३ ॥

यह नेत्र लगनि है आंखलगते बिरह रूपी अग्निहोत है यह बचन नायक कहै तो बनै ॥ कवित्त ॥ वरनि बरनि दृगकहत सकल कबि कमल कुरंगमीन खंजन समानहैं। कहैं कबिकृष्ण रचिपचि चतुरानन नैं लोचन ये पाहनबनाये मेरे जानहैं ॥ कमलसों कमललगाय देखैं कैयौं बेर एक आंक क्यों हूं उपजतु न कृशानहैं। लागतही तिय नैन तव ही उपजिउठैं लगनि अगनियतें प्रगट प्रमानहैं ॥ ११३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सबहीत्यौंसमुहतिछिनुनचलतसबनदैपीठि ॥
वाहीत्यौंठहरातयहबिकलनुमालौंडीठि ॥ ११४ ॥

यह नायका लक्षिताहै सखीनायकसों कहतिहै सखीको बचनसखी हू सौं बनै ॥ कवित्त ॥ लाल मनमोहनको छबिपर तूतो बलि रीझि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रहो मोहि बहरावतिहै भोरी ज्यों। प्रीति उर अंतरकी प्रगट बिलोकि प्रति सोहकिये कैसे निबहत चोरी चोरी ज्यों॥ सब त्यौं लखित मिले काहूसोंन तेरी डीठिपीठिदै चलति पुनि सबही की ओरी ज्यौं। इतउत हेरि चित चोरही की ओरआई रहतहै ठहराय मंत्रकी कटोरी ज्यों॥ ११४॥ करभ अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४॥

दो० ढरेढारतेंहीढरतिदूजेढारढरैन॥
क्यौंहोंआननआनसौंनैनालागतनैन॥ ११५॥

यह नायक अपने नेत्रनकी आशक्ति कहतुहै अरु नायका के भ्रम है। किनायकऔर सोंआशक्तिहै नायकाके भ्रमहैसुनायकनायकाकोभ्रम दूर करत है। जो नायकमों कहेतो उराहनौं हू संभवहै॥ सवैया॥ और ते बानपरी सुपरीन टरै वह कोटि उपायकिये हूं। कृष्णकहैं जिह रीझि रचे तिततें नलचैन कहूं ललचैहूं॥ त्योंहीढरे जिहढार ढरेनहिं दूसरे ढारढरे सपनेहूं। आनकिये कहूं आनन आनसौंनै दृगनैकन लागत कैहूं॥ ११५॥ कछ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० हरिछबिजबजलतैंपरैतबतोंछिनाबिछुरैन॥
भरतढरतबूड़ततिरतिरहतघरीलौंनैन॥ ११६॥

यह नायका अपने नेत्रनकी आशक्ति सखीसों कहतिहै॥ कवित्त आजु निरख्यो मैं बृजराजको कुंवर कान्हजाके अंग अंग आली मनहो हरतुहै। कृष्ण प्राणप्यारेकी दुहाई वा निकाई देखे कोरि रतिपति अति लाजनि मरतुहै॥ ताकी सोभा सलिलमें जबतें नयनपरे तबतें घरीलों छिनहूं न बिछुरतुहै। ऐसे भये रचतहीं करत अनेकभाइ भरत ढरत पुनि बूड़त तिरतहै॥ ११६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो०ललनतुम्हारेरूपकीकहौरीतयहकौन।
जासौंलागतपलकपलुलागतपलकपलौन॥११७॥

यह नायकाकी अवस्था सखी नायक सों कहति है किजबते तुम देखोहैतबते वाके पलकहू नाहिं लागत नायका हूं नायक सों कहैतो संभव है॥ सवैया॥ बारक देखेसुध्यौ नरहै दिखसाध लगैंकुलकानि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भगैं। मोहनी रीतिकछू मनमोहन रावरे रूपकीयों उमगैं॥ कौनठगौरी लहीकितकीहू रमानोंबसी करमंत्रपगैं। जाकीकहूं पलयेक लगे पल ताकी पलौंपलकै नलगैं॥ ११७। मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० हैहियरहतहईछईनईजुगतजगजोय।
डीठिहिडीठिलगेदईदेहदूबरीहोय॥ ११८॥

यह नायका के नेत्रनायक कोदेखके लगे अरु देहदूबरी होतिहै। सुनायका सखीसों कहतिहै सखी सखीहूंसों कहैतोवनै अद्भुतहू है॥ **सवैया॥** देखतदेखतहू न लहै कलप्रेम मरूरि उठैअति भारी। देखे बिना नसोहाय कछूपुनहार रटेरति होतदुखारी॥ ब्याकुलहै अकुलाय महामुरि झाय रहै निसनींद बिसारी। नैनलगैं तनदूबरो होयअनोखी सनेह करीति निहारी॥ ११८॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० देखतकछुकौतुकइतैंदेखौनेकनिहारि।
कबकोइकटकडाटिरहीटटियांअंगुरिनफारि॥ ११९॥

यह नायका कहति है नायका कों देखति है सुसखी नायक के चाव बतावतहै। सखीको बचन नायक सों प्रीति करायबो प्रयोजन॥ **कवित्त॥** मैनहूंतें ऐनमन मोहन तिहारो छबिनैननमैं खुभीबृजबाल रिझवारिकैं। बगरको बासु सासननद को तिरासात तैं निरखि सकैन प्यारो बदन उघारिकैं॥ बिनदेखे कलन परत यातें देखिबे कौकरतौ है उपाउ देखो इतधा निहारिकैं। कबकी निमेष भूलिलोचन लगायइत उठि रहीटाटोकर पल्लवसों फारिकैं॥ ११९मरालअक्षर ३४ गुरु१४ लघु२०॥

दो० इनअखियांदुखियानकोसुखहीसिरज्योनाहिं।
देखेंबनैनदेखिबोबिनदेखेअकुलाहिं॥ १२०॥

यह अपनेनेत्रन कीलगनि नायका सखीसोंकहतिहै प्रौढ़ापरकीया॥ **कवित्त॥** आपहीतें लागेयेतो कहेका हूं कैनलागें रैन दिन जागें हैं वियोग आगिधखियां। रूपमाधुरी कोज्यों ज्यों पीवैं त्यों त्योंभूखी रहें हौं हिन अहूखीये बिदूखो सदालखियां। लपटनिपट पटसंपुटनरोंकी रहे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अकुलाय ढहैं जायमधुवो समधियां ॥ चैनहैन आठौंजाम इनहीं कौं ऊधोराम सुविहायो तनुतामैं दुखिहाईं अखियां ॥ १२० ॥ सेनक अक्षर २६ गुरू १६ लघु १६ ।

दो० चकीजकीसीहवैरहीबूझेबोलतनीठि ।
कहूंदीठलागीलगीकैकाहूकीदीठि ॥ १२१ ॥

यह नायका लक्षिता है सखी नायक सों कहति है ॥ सखीहू सों कहति है ॥ सवैया ॥ आजचकीसी जकीसी कहाकछू आंग सम्हार हिराइगोहेरी । बूझैहूं नीठकहै मुखवैन हलैनचलै जनुचित्र नबेरी ॥ मेरी लखेयह तेरीनई गतिमोमति पोच समूहन घेरी । दीठिलगीकि-धौंकाहू कीतोहिकि दीठि लगी कहूं काहूं मोहिरी ॥ १२० ॥ मराल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० नेहुननैननकोकछूउपजीबड़ीबलाय ।
नीरभरेनितप्रतिरहैंतऊनप्यासबुझाय ॥ १२२॥

यह नायका अथवा नायक अपने नेत्रनकी आधाति सखीसों कहे है मखीसखीसों इनकी विवस्था कहै तऊ संभवहै ॥ सवैया ॥ एकपलों नलगे पलकै ललकैं लखिवे कोहि लागोचटो । नीरभरो निसद्योस रहैं न मिटैं तऊभूरी तृषा उपटी । आठहूजाम तपैं तरफैं उपचार हू सौं नघटै नघटी । यह प्रीतिलगी नहीं आंखिन कौंकोऊ पावक व्याधिप्रलै प्रगटी ॥ १२२ ॥ मराल अक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० कैवाआवतयहगलीरहैचलायचलैन ॥
दरशनकीसाधैंरहैसूधेहोयननैन ॥ १२३ ॥

यहनायका अपनेनेत्रनकी दशासखीसों कहतिहैयहनायक मध्याधर-कीयाहै॥सवैया ॥ कान्हअलो बहुबेरगलो महंआवतचारुसिंगारकिये । हूं । देखिबेकों तबहैं तब हीं ललचाइ रहैंनचलायचलेहूं ॥ लाजअचानक आयवहै पछितायहै अपने जियमैंहूं । सोंहैं चितैवेकी साध रहै बरुधो बिलोचनहो तनकैं हूं ॥ २१३ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० साजैमोहनमोहकोमोहींकरतकुचैन ॥
कहाकरौंउलटेपरैंटोनेलौनेनैन ॥ १२४ ॥

यहनायकाप्रौढ़ापरकीयानायककोदेखनेत्र्याकेअकुलातहैंसुसखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बूझतहौं सतभायसखी यहसीखइन्हैंसिखईकहि कौने । मैंसजे मोहन मोहिबे कौं बहुअंजनसाज बनायसलोने ॥ देखतही ललचायरहे अबयेअपने सपनेहुन होने । मोहींकोदैन लगे दुखनैन येज्यों उलटे परिजातहैं टोने ॥ १२४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोहूंसौंताजिमोहदृगचलेलागिउहिगैल ॥
छिनकछ्वायछबिगुरुडरीछलेछबीलेछैल ॥१२५॥

यहनाका अपनेनेत्रनकी आशक्ति सखीसखीसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ जाघरीते मोहनीको मंत्रडारदीनों उनरूप कीमिठाई ता घरीतेकलमले-हैं । केतोहठ करिरोकि हारीओट अंचल की त्योंत्यों अतिवलु करि उतही कोंहलेहैं ॥ मोहूं सों जुहूतौनातो पलकमैं करिहोतो छोड़िसब तातौ वाकीगैल लागिचले हैं । नन्दकौ कुंवर आलीबीस बिस्वेठगुहरी देखतहीदेख मेरे दोऊनैन छलेहैं ॥ १२५ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लोभलगेहरिरूपकेकरीसाटजुरिजाय ॥
हौंइनबेचीबीचहीलोयनबड़ीबलाय ॥ १२६ ॥

यहनायका अपनेनेत्रन की आशक्तिसखीसों कहतिहै ॥ सवैया । नंदकिशोर की मोहनीमूरती देखतही अतिमोमन भाई । तोलगि लो-भलगे दृगआगेई जायमिले मिलिसाद मिलाई ॥ आपनौस्वारथ साध्यौ सबैबिधि हौंईनबीचही बेचरी माई ॥ कैमेकरोंन कछू बनिआवत नैन-नकेमत मेंतो ठगाई ॥ १२६ ॥ चलअक्षर ३०गुरु ११ लघु १९ ॥

दो० यशअपयशदेखतनहींदेखतश्यामलगात ॥
कहाकरोंलालचभरेचपलनैनचलिजात ॥१२७॥

यहनायका सखीशिक्षा देतहै तासों अपने नेत्रन की आशक्ति कहतिहै ॥ सवैया ॥ सासुरिसातिभखैननदी अनि तूसिखवै सखिसीख

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

केबैना। हैबृज्बास चवायभई चहूं ओरचले उपहासकी सैना॥ देखत सुंदर सांवरीमूरति लोकअलोककी लीकलखैना। कैसीकरौं हटकेनरहैं चलिजात तऊलचिलालची नैना॥ १२७। नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० नैनानैकनमानहींकितोकह्यौसमझाय॥
तनमनहारेहूंहंसैंतिनसोंकहावसाय॥ १२८॥

यह नायका अपने नेत्रन की आशक्ति कहति है॥ सवैया॥ सहिये जगके उपहासनितें रहिये गुरुलोगन मांझगसें। डरआनियहै अपने उरहौं समझाय रहीनहिंनेकत्रसें॥ अरुरंचक मेरोकह्यौ न करैंतन हूं मनुहारें तऊहुलसें। यहनेमगह्यौ सजनीइन नैननु पैहरिहेर हंसेई हसें॥ १२८॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० सकैंसताइनतमबिरहानिसादिनसरससनेह॥
रहैवहैलागीदृगनिदीपसिखासीदेह॥ १२९॥

यहनायकाकोध्यानहूं करत है तऊ बिरह घटतनाहिं सुनायकसखी सोंकहतहै॥ सवैया॥वामृगलोचनिके बिछुरेजु भईगति सो नहिंजात उचारी॥ शुदुदशा परिपूरननेह निबातथलीउरअंतरधारी॥ यद्यपि दीप सखासमनैननु लागिरहै तनकी दुतिप्यारी॥ तद्यपिसूझै हिये न कछूभरि पूररह्यौ बिरहा तम भारी॥ १२९॥नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० लाजलगामनमानहींनैनामोबसिनाहिं।
येमुहजोरतुरंगलौंऐंचतहूचलिजाहिं॥ १३०॥

यह नायका सखीसों अपनी आशक्ति नेत्रनकी अवस्था कहतिहै॥ सवैया॥ देखत वा नट नागरि की छबि फांदिपरे हटके न रहाहीं॥ लोचन लोल तुरी मुह जोर सुलाज लगाम कौ मानत नाहीं॥ ऐंचत हौं अपने इतकौं बलिये बलकैं उतही चलिजाहीं॥ कैसी करौं नहिं मो बस ये कुल कानके चाबुकतें न डराहीं॥ १३०॥ अथ चित्तलगनि॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० फिरिफिरिचितउतहीरहतटुटीलाजकीलाव।
अंगअंगसबझोरमेंभयौभौंरकीनाव॥ १३१॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका के अंग की छबि पै रीझोहै सुअपने चित की आशक्ति सखी सों कहतहै ।। कबित्त ।। यौबन महा नदमें रूपको सलिल भरयो तरल तरंग हाव भावन कौ भावहै ॥ अंग अंग छबिको उमंग भर भरी भौंर चपल कटाच्छ तहां फस्यो चित नाव है ।। चलिपै नसकतभ्रमत रहै वाही ठौर तरकि तनूका जिम टूटी लाज लाव है ॥ लागत नक्यौं हों कुल कानि की बिशाल बली धीरज प्रबल पतिवारी कौन दावहै ॥ १३१ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ।।

दो० इततेंउततेंइतेंछिननकहूंठहरातिं ।
जकरनपरचकरीभईफिरिफिरिआवतजात १३२॥

यह नायकामाया परकीया है सुयाकी बिश्वस्यासखीसखीसों कहत है जो सखी नायक सों कहै तो संभवहै ॥ सवैया ॥ जबते अटकी नव नागर सों तब ते न कहूं मन लावतहै । ठहरात नहीं छिन एक कहूं निम बासर ज्यों बहरावत है ॥ कबहूं इतते उत धावत है कबहूं उतते इत आवत है ।। चकरी जिम आवत जातबधू पलकौनकहूं कलपावतहै ॥ १३२ ।। मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोजानेहवैहैकहाव्रजउपजीअतिआगि ।
मनुलागेतनुनालगेचलेनमगलगिलागि १३३ ॥

यह नायक अथवा नायका के दृष्टानुरागतें बिरहभयो है सो बिरह की आग सों मन व्याकुलहै सो सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ दीसैन धूमबरै बिन ईंधनउन्नत ह्वै प्रगटे न सिखाहै ।। नैसक नैननुलागत ही मनु आगिलगे सब आंगनदाहै । लोचन नीरढरैं न बुझैं उपजीब्रज में कोउ आग महाहै ।। देखेहूं दीठपरै न कछू अब जानेधौं आगे को ह्वै है कहा है ।। १३३ बारस अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० डरनटरैनींदनपरैहरैनकालबिपाकु ।
छिनकछाकुउछकैनफिरखरोविषमछबिछाकु १३४

यह नेत्र लगनि है सुनायका अथवा नायक सखी सों कहै है कि छबिको छकु छकीखरो विषमहै सुविषमतावरनन करै है ।। कबित्त ।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुधि कोनकरै नींद नैस कोन परै महाभयतें न टरै मुख निकरैन चाकु है । कहैं कवि कृष्ण क्यो हूं एक बेर छकै संतो उछकैन नेको न समै को परिपाक है ॥ सीरोजागे वरेनिश दिन तरफरै पलकनि गतिहरै धरै काहू कोन धकु है । और मतवारे ते तौ मेरे मतवारे यह सबही ते बिकट बिषम छबि छाकुहै । १३४ ॥ मराल अक्षर३४ गुरु१४ लघु २०॥

दो० उडीगुडीलखिललनकीअंगनाअंगनमाह ।
बौरीलौंदौरीफिरतछुवतिछबीलीछांह ॥ १३५ ॥

यह नायकापरकीया प्रौढ़ाहै सुनायककी चंगकी छांहछुये तेमिलेही को सुख मानतुहै सखीसखीसोंकहतहै । सवैय ॥नन्द ललानवनागरिपै निजरूप दिखाइ ठगोरी सोनाई । बाहरजात बनैगृहतें न बिलोकिबे कों अतिहो अकुलाई ॥ प्यारीकीचंग इतेमेंउड़ी लखिमोद भरीनिज आंगन आई । होती गुडीकी जितैजित छांह तितैतित छबिबेकों डोलतधाई ॥ १३५ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० चलतघेरघरघरतऊघरीनघरठहराय ।
समझउहींघरकोचलैभूलवहीघरजाय ॥ १३६ ॥

यह नायका प्रौढ़ा परकियाहै जहांचित लाग्योहै तहांजातहै सखी सखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ निधरक भईआनि गावतहै नंदघर और ठौर कहूंटोहैहून अहटातिहै । पौरिपाछे पिछवारे देहरी उसारे द्वारे आंगन अटारी इहीबीच मंडरातिहै ॥ हरि रसराती सेख नेकहूं नहाती होति प्रेम रसमाती न गनति दिनरातिहै । जबजब आवतिहै तबकछू भूलिजात भूल्योनेन आवतिहैफेरभूलि जातिहै ॥ १३६ ॥ मरकट अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

दो० ह्यांतेहवांहवांतेयहांनेकौधरतनधीर ।
निसदिनडाढ़ीसीफिरतबाढ़ीगाढ़ीपीर ॥ १३७॥

यह नायका के चितमें लगन लगीहै सुयाको मन कहूं कल पावतु नाहीं याकीदशा सखीसखी सों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ सोभा मनमोहन कोपरम रसालचित चुभि रूजबालकेन छिन बिसरै कहूं । बरसत जल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका के अंग की छबि पै रीझोहै सुअपने चित की आशक्ति सखी सों कहतहै ॥ कबित्त ॥ योबन महा नदमें रूपको सलिल भरयो तरल तरंग हाव भावन कौ भावहै ॥ अंग अंग छबिको उमंग भर भरो भौंर चपल कटाच्छ तहां फस्यो चित नाव है ॥ चलिपै नसकतभ्रमत रहै वाही ठौर तरकि तनूका जिम टूटी लाज लाव है ॥ लागत नक्यौं हों कुल कानि की बिशाल बली धीरज प्रबल पतिवारी कौन दावहै ॥ १३१ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० इततेंउततेंइतेंछिननकहूंठहरातिं ।
जकरनपरचकरीभईफिरिफिरिआवतजात १३२॥

यह नायकामाया परकीयाहै सुयाकी बिश्वस्यासखीसखीसों कहत है जो सखी नायक सों कहै तो संभवहै ॥ सवैया ॥ जबते अटकी नव नागर सों तब ते न कहूं मन लावतहै । ठहरात नहीं छिन एक कहूं निम बासर ज्यों बहरावत है ॥ कबहूं इतते उत धावत है कबहूं उतते इत आवत है ॥ चकरी जिम आवत जातबधू पलकौनकहूं कलपावतहै ॥ १३२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोजानेहवैहैकहावृजउपजीअतिआगि ।
मनुलागेतनुनालगेचलेनमगलगिलागि १३३ ॥

यह नायक अथवा नायका को दृष्टानुरागतें बिरहभयो है सो बिरह की आग सों मन व्याकुलहै सो सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ दीसैन धूमबरै बिन ईंधनउन्नत ह्वै प्रगटे न सिखाहै ॥ नैसक नैननुलागत ही मनु आगिलगे सब आंगनदाहै । लोचन नीरढरैं न बुझैं उपजीब्रज में कोउ आग महाहै ॥ देखेहूं दीठपरै न कछू अब जानेधौं आगे को ह्वै है कहा है ॥ १३३ बारस अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० डरनटरैनींदनपरैहरैनकालबिपाकु ।
छिनकछाकुउछकैनफिरखरोविषमछबिछाकु १३४

यह नेत्र लगनि है सुनायका अथवा नायक सखी सों कहै है कि छबिको छकु छकोखरो विषमहै सुविषमताबरनन करै है ॥ कबित्त ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सधि कोनकरै नींद नैस कोन परै महाभयतें न टरै मुख निकरैन चाकु है । कहैं कवि कृष्ण क्यो हूं एक बेर छकै मंतो उछकैन नेको न समै को परिपाक है ॥ सीरोजागे वरेनिश दिन तरफरै पलकनि गतिहरै धरै काहू कोन धकु है । और मतवारे ते तौ मेरे मतवारे यह सबही ते बिकट बिषम छबि छाकुहै । १३४ ॥ मराल अक्षर३४ गुरु१४ लघु २०॥

दो० उडीगुडीलखिललनकीअंगनाअंगनमाह ।
बौरीलौंदौरीफिरतछुवतिछबीलीछांह ॥ १३५ ॥

यह नायकापरकीया प्रौढ़ाहै सुनायककी चंगकी छांहछुये तेमिलेही को सुख मानतुहै सखीसखीसोंकहतहै । सवैय ॥नन्द ललानवनागरिपै निजरूप दिखाइ ठगोरी सोनाई । बाहरजात बनैगृहतें न बिलोकिबे कों अतिही अकुलाई ॥ प्यारीकीचंग इतेमेंउड़ी लखिमोद भरीनिज आंगन आई । होती गुडीकी जितैजित छांह तितैतित छबिकों डोलतधाई ॥ १३५ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० चलतघेरघरघरतऊघरीनघरठहराय ।
समझउहींघरकोचलैभूलवहीघरजाय ॥ १३६ ॥

यह नायका प्रौढ़ा परकियाहै जहांचित लाग्योहै तहांजातहै सखी सखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ निधरक भईआनि गावतहै नंदघर और ठौर कहूंटोहैहून अहटातिहै । पौरिपाछे पिछवारे देहरी उसारे द्वारे आंगन अटारी इहीबीच मंडरातिहै ॥ हरि रसराती सेख नेकहूं नहाती होति प्रेम रसमाती न गनति दिनरातिहै । जबजब आवतिहै तबकछू भूलिजात भूल्योनेन आवतिहैफेरभूलि जातिहै ॥ १३६ ॥ मरकट अक्षर ३८ गुरु १० लघु २१ ॥

दो० ह्यांतेहवांहवांतेयहांनेकौधरतनधीर ।
निसदिनडाढ़ीसीफिरतबाढ़ीगाढ़ीपीर ॥ १३७॥

यह नायका के चितमें लगन लगीहै सुयाको मन कहूं कल पावतु नाहीं याकीदशा सखीसखी सों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ सोभा मनमोहन कोपरम रसालचित चुभि बृजबालकेन छिन बिसरै कहूं । बरसत जल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तरसत दृग देखिबेकों कहोऐसी लगनि दुरायेहूं दुरैकहूं ॥ घरते बगर आवै बगरते घरधावै फिरैज्यौं बिकल पल कलनलहैकहूं । बाढ़ीमन मथबीर नैसको धरैनधीर डाढ़ीसीफिरत ठाढ़ीछिनुन रहैकहूं ॥ १३७ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पलनचलैजकसीरहीथकसीरहीउसास ।
अबहोतनुरितयोंकहौंमनपठयोकिहिपास १३८ ॥

यह नायका की प्रीति लगीय लगीहै सुरति वहीं जा है सुयाकी दशा देखि सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ सासन उसासति है बासकी सम्हार हैन ऐसी ह्वै कै कौनकेधौं हितमैं हितैरही ॥ कितु हैरी तेरो मनु रीतौ सौं लगत तन अवही तू सुधबुध कहि क्यौं बितैरही ॥ चित्र कोसी लिखी डरी जकित अचेत भई पलकन लगत भूल चकित चितै रही ॥ काहू हेरि हरीमति बिसरी सबै सुरतिहोतौ तेरी यहगति देखि थकितै रही ॥ १३८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० ज्योंज्योंआवतनिकटनिशत्योंत्योंखरीउताल ।
झमकिझमकिटहलेंकरैलगीरहचटैंबाल ॥ १३९ ॥

यह नायका प्रौढ़ा है सु सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ गौनोभये दिनकेउ भये हियमें हरि हेतकी जोतिसी जागी ॥ बासर ज्यों बहरावतनीठि बिधीच सकैं रसमें अनुरागी ॥ आवत ज्यों ज्यों नजीक निशा तिय त्योंत्यों उछाह उमंगनि पागी ॥ सत्वर काजकरै घरके रवनी रति केलि कै लाहक लागी ॥ १३९ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० भृकुटीमटकनिपातपटचलतलटकतीवाल ।
चलचखचितवनचोरचितालियोबिहारीलाल १४०

यह नायका प्रौढ़ा है नायक की शोभा देखि मोहित भई है सु अपने चित्त की वृति सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बनते निकस्यौ बनमालगरैं बनिता मृग वा गुरिसें दृग कीनें ॥ फेंटकसे कटि पीतपटी उघटी छबि सिंधु सुधा रस भीने ॥ कैनटु नागर चेटकसों चलचाह निही

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चितु गोसंग लीनें ॥ लीनों सो कौन किशोर कन्हा मुरलीकर मोर पखा सिर दीनें ॥ १४० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छुटननपैयतुबसिछिनकुनेहनागरयहचाल।
मार्योफिरफिरमारियेखूनीफिरैखुस्याल॥१४१॥

यह लगन को वरननहै जाके जाके लगति है ताकों अधिक दुखहै जाकीलगतिहै ताके कछूमनहूं में नाहीं आवत सुनायका अवस्था सखी सों कहतिहै सखी सखीहू सों कहै तो बनै ॥ कवित्त ॥ छिन बसे छूटिये न विन बसे बनपटी नेह नगरि में यह अटपटी रीति है लीजत छिड़ाय मनु रतन जतन नाहिं अतनु महीप तहां अधिकअनीतिहै ॥ मारेही कौ मारियतु खुनी भये खूनीफिरैं जीतेहीकी हारि अरु हारे ही की जीतहै। सरबसु दीजे तऊ परवस परियतु जहां कछू लोकपरलोककीन भीतिहै ॥ १४१ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० क्योंबसियेक्योंनिबहियेनीतनेहपुरनाहिं।
लगालगीलोयनकरैनाहकमनबंधजाहिं ॥१४२॥

यह लगनहै नेत्रन केलगेमनबंधतुहै ॥ यहअद्भुत अनीति हैसुनायका अथवानायक सखीसों कहैहै ॥ कवित्त ॥ पावक प्रचंड यातेंभागेहूं न छूटियतुबरियतु ज्योंज्यों उपचार कीजियतु है। प्रबलकजानुपै मगनचलतपै ये चितवितु दीजैतऊहित भीजियतुहै ॥ ऐसे प्रेमपुर कैसबसिये निबहिये क्यों देखेयेअनीति छिनुछिनु छीजियतु है। लागनिकरत धायनैन मैंन मतवारे नाहक बिचारोमनु बांधिलीजियतु है ॥ १४२ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० झमकिचढतउतरतअटानेकनथाकतदेह।
भईरहतनटकौबटाअटकीनागरिनेह ॥१४३॥

यह नायका प्रौढानायक कीशोभा देखि आशक्तिभई। सुदेखिबेको चढ़ति उतरतिहै। सुयाकी व्यवस्था सखीसखी सोंकहतिहै ॥ कबित्त ॥ कान्हरकी बनक बिलोकिकै बिकानी बाल तादिनते देखबे को यतन करतु है ॥ सुरभी चरायबृज आइबेकी बेरजानि सरबसहेतगृह काज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिमरत है ॥ सांकगुरुजन सांकहू नठाढ़ोरे छिनइतु छिनउतयाबिधि ढरति है नटकेबटा ज्यों नटनागर केनेह पागीऊंचे अटाकमकि चढ़ति उतरति है ॥ १४३ ॥ पयोधर अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नैंतोसेकैबरकह्योतूजिनइन्हैपत्याय ।
लगालगीकरलोयननुउरमेंलाईलाव ॥ १४४ ॥

यहलगनहै नायकाअथवा नायकअपने मनसों कहै है सखीसों कहिबो संभवित नाहीं ॥ कवित्त ॥ तोसोंमैंकहीहो केउबेरसमझाय इननैननके मतलागे भारीखता खायबो । तबतोन सिखमानी इनहींकी मतिठानी अबकहा होतपर बस पछतायबो ॥ लगालगी इनकोनी उरको लगाय दीनी लगनिअगनिताके कहांभगिजायबो । कीजित यतन सोरो त्योंत्यों होत दुखनेरो निशदिन अनत अनंग का सतायबो ॥ १४४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सारीडारीनीलकीचोटअचूकचुकैन ।
मोमनमृगकरबरगह्योअहेअहेरीनैन ॥ १४५ ॥

यहनायकाकेनेत्रदेख नायककोमनहाथरहत नाहींसोसखीसों कहतो हूचनै ॥ कबित्त ॥ आइचढ़े जोबन केबनमें बिहारकरैं काहूकेनरोंके रहैंबिक्रम अकथके । भृकुटी कुटिलचाल अंजनअसित बासतरल कटाच्छ गहैंआयुध सुहथके ॥ सारी नीली टाटीवोट आवत अचानकही करत अचूकचोट रहित नथथके । मोमनकुरंग को येकरलेत हथाथके राधेतेरे नैनयेअहेरी मनमथके ॥ १४५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जेतबहोतदिखादिखीभईअमीइकआंक ।
गैतिरछीदीठनिअवैहवैबीछीकेडांक ॥ १४६ ॥

यह पूरबानुरागजेचितवन संयोगमेंसुख दीन्हींतेबियोगमें सूधिआयो सालतिहै सोसखी नायका अथवानायक सखीसों कहै है । बिरहकीदशा अवस्थानुमें सुमरन कहिये ॥ रुबैया ॥ रंगरलीमें भलीबिधि सोंबहु भांतिनके सुखदेतहै जेई । तेइनकुंज भयेप्रतिकूल बिलोक हियेदुखसूल सलेई ॥ नेहकेआदि रसीली चितौनहुती इकआंकअमी समेतेई । चीस

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिम्बे बिष आयक ह्वै उरसालत बांकीविलोकनिवेई॥ १४६ ॥ मर लअअर ३४ गुरु १४ लघु ३० ॥

दो० नेकोवहनिजुदोकरीहरषजुदीतुममाल।
उरतेबासछुट्योनहींबासछुटेहूलाल॥ १४७ ॥

यह पूर्व्वानुराग है नायककी प्रीति सखा नायकसों कहतिहै तोतुमसों कहा करूनहीं ॥ सवैया ॥ जादिन वाही अलीनको देखत रीझि हिये हितुम नकैं भारी ॥ आपनेहूं तै उतार दई तुमफूलकी माल बिशाल बिहारी ॥ तादिन तें वहबारिकबार को प्रानहूंते लगीअति प्यारी ॥ वासगई कुमिल यगई पैकरीनतऊ उरतें छिनु न्यारी ॥ १४७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खिनखिनमेंखटकतसुहियखरीभीरमेंजात।
कहजुचलीबिनहीचितैंवोठनहींमेंबात॥ १४८ ॥

यह नायका परकीया है कहींभीर में नायक देखीहै सुवानेंजुक्रियो कीनों सुइन देखी पैबात न सुनी सोसखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ आजमिली बृजबाल अचानक मोमति वाके सनेह गईहै ॥ जातो हुतो अतिभीरमें सुंदरि मोतन हेरि हियो उमहीहै ॥ लाजते पैन बिलोकि सकी बनकीन तऊ रसरीति सहीहै ॥ ओठनहींमें गईजु कछू कहि मैंन सुनी पछतावो यहीहै ॥ १४८ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

दो० बानितनुकोनिकसतलसतहंसतहंसतइतआय।
दृगखंजनगहिलैगयोचितवानिचोपलगाय॥ १४९

यह नायका प्रौढ़ा है जैसी छबिसों श्रीकृष्ण देखतिहै तैसेही अपने नेत्रनिकी लगनि सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आज कह्यो बनको इतह्वै बनि बानिकसों यगुदाको कन्हाई । मोर किरीट लसैं मुरली लकुटी अरु पीत पटी छवि छाई ॥ मोढिग आय भरयौ रस भाय हरे मुसकाय मुरयों सुखदाई ॥ केपिकी चाहन चोंप लगायके लेगयो नैन मैं मोलिनिमाई ॥ १४९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० जबजबवहसुधिकीजितुरतयसबहिंसुधिजाहि।
आखियनआखिलागीरहैंआंखौलायतनाहिं॥१५०

यहपूर्व्वानुराग नायका अथवा नायक सखीसों अपनी बात कहै है॥ सवैया॥ यह प्रीतिकी रीति अनोखी लखी कछुजानि नजात कहागतिहै॥ चितचाहकी चौंप चढ़ीयेरहै अरु प्रेम विथा उरपागति है॥नितआंखिनसों वेई आंखिलगी रहैं आंखिन कैमेहू लागतिहै जबही जब वे सुधकीजतहै तबही सबही सुध भागतिहैं॥ १५० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २० ॥

दो० जहांजहांठाढ़ौलख्यौश्यामसुभगशिरमोर।
बिनहूंउनछिनुगहिरहितदृगनअजौंवहठौर१५१॥

यह पूर्व्वानुरागहै जहां श्रीकृष्ण देखेहैं तेई ठौर श्रीकृष्णकी भावना करिकै नेत्रनको आग्रहन करतुहै सुनायका सखीसों कहै है॥ कवित्त॥ केलि सुखसागरमें झेलि रंगरली परि पूरन बिबिध करती मनरथनु॥ तनमन बाढ़तो उमगि अनुरागु भागु आगतहो मघवा सचीको अन हूतेअनु॥ कृष्णप्राण प्यारेकी दुहाई अतिछबि छायो जिनजिन कुंजनि मिलत हेरी श्यामघनु॥ तेईतेई कुंज अबडीनहूं बिलोकैं बिनुमाई गहि राखत घरीकलौं अजौं दृगनु॥ १५१॥ बारनु अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० सघनकुंजछायेसुखदसरसिजसुरभसमीर।
मनहवेजातअजौंवहैउहियमुनाकेतीर॥१५२॥

यह पूर्व्वानुरागहै सुयमुना कैतीर संयोगमें जुचित्त की बृत्ति होतही सोवही भावना करिवो सही होतिहै सोनायका सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ सघनानि कुंजछाये सुखद सुहाये अरु मंडित सरस गुंजपुंज मधुपनकी॥ प्रफुलित मंजु अरि बिंदनके बृंद आवैं त्रिबिध बयारिलै सुगंध कुसमनकी॥ लतिका ललित छबिबलि तलहल होति जेहूती बिहार भूमि नंदके सुमनकी॥ कृष्ण प्राणप्यारेकी सौ वेई यमुनाके तीर अजहूं निरखिबहगति होति मनकी॥ १५२॥ मरालअक्षर३४गुरु१५लघु२० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० फिरिफिरिबूझतकहिकहाकह्योसांवरेगात ॥
कहाकरतदेखेकहाअलीचलीक्योंबात ॥ १५२ ॥

यहनायका अधिकआशक्तहै सो सखीको बेरबेर वाहीकी बातबूझति है ॥ कबित्त ॥ कबहूंक आलीपर अंगिराय डारेंअंगु दिनबहरावे क्योंहूंकलनपरति है। ऊतरसहेली लायउनके संदेशेसुनि सुनिते प्रसिद्ध मनुरोसिये अरति है। हाहाकहि कैसे गई कैसीकैसी बातभई कहाहै लालन मन धीरन धरतिहै। एकबेर बूझिफिरि बूझिऔरों बूझि फेरि फेरि २ वहैबात बूझिबा कहति है ॥ १५२ ॥ पयोधर अक्षर३६ गुरु १२लघु २४ ॥

दो० मननधरतमेरोकह्योतूआपनेसयान ॥
अहेपरनिपरप्रेमकेपरहथपारिनप्रान ॥ १५३ ॥

सखीनायका सों कहति है कि प्रीतिके प्रसंगति प्राण पराये हाथ परतिहैं सतमति करै तो यह प्रसन्नहै कि सखी प्रीतिकरति मनै क्यौं-करतिहै सो मनौ नाहि करति प्रीति दृढ़ावति है कि प्राण पराये हाथ परेंगे जो तोहि कहतिा है तो करि मानवतोके प्रसन्न सखी नायका सों कहै तो येहू बनैकी प्रेमकी पराग में तूपर अरु प्राण जुहैं नायक ताहि पराये हाथमतिपरै ॥ सवैया ॥ तूनहींमानत मेरोकह्यो अपनेमन मान सयानपुभारी। देखवे कों ललचावति ज्यों कछु द्योस नितै यह रोस निहारी ॥ नेहकहूं नदनन्दन सों लगि जैहै तो फेरिन ह्वै हैरारी ॥ बेंचत प्राणनु क्यों पर हाथफसै मति प्रेमफंदा बृजनारी ॥ १५३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० चितवतबचतनहरतहठिलालनदृगबरजोर ॥
सावधानकेबटपरायेजागतकेचोर ॥ १५४ ॥

यहनायक के नेत्रन पै आशक्त सो नायक के नेत्रयाके मनको जोरा वरी हरिहरिलेत है सो नायका सखीसों कहति है ॥ कबित्त ॥ राखत सलूक मिले मदन महीपतिसों सुतनुसर कि जात कानन को वोरहैं। चपरिहरति ब्रजबालन केमन धनुमरति मरोरभरेयोबन मरोरहैं ॥ जागति हूं मुसै सावधान को बिबस करैचपल चितौन सरबेधतसजोर हैं। मोसों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहिआली व्रजलाडिले के लोलदृग ठगहैं कजाकहैं डकैतहैं किचोरहैं ॥ ॥ १५४ ॥ प्योधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० नावकसरसेलायकैंतिलकुतरुनिइतताकि ॥
पावकझरसीझमकिकैगईझरोखाझांकि ॥ १५५ ॥

सवैया ॥ साजे सिंगारभरीछवि भारहिये बिरहागिनि बारगई है ॥ चोपभरीकछु आखे सों ओढर झरोखे हू नेकानिहारगई है ॥ पावक ज्वालसी बालिबिलोकिकै नावक तीरमे मारिगई है । झांकतबांक लखो जबते तबतेसुविमोहिं बिसारिगई है ॥ १५५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ नायकको ध्याननायका कै

दो० कबकीध्यानलगीलखौंयहघरलगिहैकाहि ॥
डरियतुभृंगीकीटलौंमतवहईहवैजाहि ॥ १५६ ॥

यहनायकानायकके ध्यानमें लीनहूरहीहैसोसखीसखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ ठाढ़िविलोकतिहौं कबहीं यहपूरन प्रेमहिये धरिबो । पाँहनकी पुतरी ह्वैरही बिसरयो उर अंचल को धरिबो । ध्यानहिं ध्यानमैं लोकबहूं यह होय वही तौ कहाकरिबो ॥ याकोघरा अबलागि है काहि कहागति ह्वैहियहै डरिबो ॥ १५६ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ।

दो० सरसतुपोंछतुलाखिरहतुलागिकपोलकेध्यान ॥
करलैयौंपाटलबिमलप्यारीपठयेपान ॥ १५७ ॥

यहनायका की आसक्ति नायकमें अधिकहै सो वाके हाथके पान देखि जो चेष्टाकरतुहै सो सखीसखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ प्राणप्रियारे तिया पठयेकरहेत हियेसरसें परसें। पाटलपानखरे सुथरे जिनकी छबि देखि हियोतरसें । पोंछत हैं पटलैकबहूं कबहूं दरसेंकबहूं परसें । ध्यान कपोलनको कबहूं करिचुंबत यौं रसको बरसें ॥ १५७ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

दो० अधरधरतहरकेपरतिवोठदीठिपटजोति ।
हरितबांसकीबांसुरीइंद्रधनुषरंगहोति ॥ १५८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायकामुरली बजावतदेखि रीझीहै सोवहशोभा भांतिभांतिकर कहतिहै। सखीसखीसोंकहतिहै॥ सवैया चलिदेखिरी वानकसोवनि कैव्रजराजकोलाडिलो आवत। मुखचंदकीचोरमरीचन सोंबलिनैनचकोर सिरावतहै॥ जबदीठिकीवोठन कोपटको मुसकानको रंगमिलावत है॥ तो बांसुरी बांसहरेकी लला सुरचापके रंगदिखावतहै॥ १५८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० कितीनगोकुलकुलवधूकाहिनकहिसिखदीन।
कौनेतजीनकुलगलीह्वैमुरलीसुरलीन॥ १५९॥

यहमुरलीकी धुनिपैरीझीसों सखीयिचादेतिहै तासों बाजुरलीकोमो हनताकहतिहै॥ सवैया॥ कौनठगोरीभरीहरी आजवजाईहै बांसुरिया रसभीनी। तानसुनीजिनहीं जितहीं तिनहीं तिन लाजबिडाकरदीनी॥ घूंघरवारीखरीनंदके बारनवीनीकहाअरु बालप्रवीनी। याबृजमंडलमेंरस खानसुकौनभटूसुलटू नहिंकीनी॥ १५९॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० लईसोंहसीसुननकीतजिमुरलीधुनिआन।
कियेरहतदिनरातदिनकाननलागेकान॥ १६०॥

यहमुरली सुनीहैतबतेऔर कछूसुनतनाहीं सोसखीसखीसों कहति है॥ सवैया मोहनकी मुरलीकी अलीजबतें मधुरी धुनिकान परीहै। बालभई तबहीतें लटू इहकाज समाज सबै बिसरी है॥ काननकानन घोरकियेरहैं कामखरी कलकानकरी है। बातसुहातनहोत कछूसुनिबे की मनो मनआनिकरीहै। १६८। पयोधर ३६ गुरु १२ लघु २४।

दो० उरलीनैअतिचटपटीसुनिमुरलीधुनधाय।
हौंनिकसीहुलसीसुतोगोहुलसीउरलाय॥ १६१॥

यह मुरलीसुनि सबकामछांडि हुलसीनिकसी वहनदेख्यो तबजुकछू अवस्थाभईसोसखी सोंकहतहै। सवैया॥ भौनकेकोनमें बैठीहुती हौंकछूगृह काजके साजपगीरी। बारककान्हकरीतवही मुरलीधुनिप्रानन आनसगीरी॥ हौंलखिवेको उछाहभरीनिकरी वहदीठपरयोनठगीरी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नैननकोअरुकाननको मनकोतबतेतलावेलीलगोरी ॥ १६१ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ।

दो० फूलेपदकतलैफरीपलकटाक्षकरवार ।
करतबचावतवियनयनपाइकधाइहजार॥१६२॥

यहदोनोंकेमैत्रआपस मेंकटाक्षनकीचोट करतिहैंऔरनकी दृष्टिबचावतहैं सोसखीसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ अंजनुअंगअछेक छनीसिखयेन वयौवननायकहैं । फांदतफूलेनसांक गहेकर बालकटाक्ष सहायकहैं ॥ आटेकोढ़ालकरी पलकैं ललकैंअति जोमसों लायकहैं । बिषलोचनचोट बचावतिहैंतिय नैनकिमैनकेपायकहैं १६२ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ।

दो० कहतनटतरीझतखिझतमिलतखिलतलजिजात ।
भरेभौनमेंकरतहैंनैननहींसोंबात ॥१६३॥

यहदोऊभरेघर में नेचनुहीं मेंसबबातकरत हैं सोसखीसखीसों कहतहै॥ सवैया ॥ जानतलालकी जानतबालसखी हूंकहूं नलखी अनखाते । नीचेहूंनारिनिहारि प्रसिद्धभौमानु वसीठदुहूंकीदिखाते ॥ चोरिहीमेंचित चोरवोजोहनिनैन निहोरिवोनेहकोघातें । रीझिरिसानिहसी इठसोंहम मैननुहीनिवही सबबातें ॥ १६३ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० डीठिपरतबांधिअटानिचढ़िध्यावतनडरात ।
इतेंउतेंचितदुहुनकेनटलोंआवतजात ॥ १६४ ॥

यह दोउनके चितलगे हैं छुपरनपर अपनें अटा परंतें निशंक देखत हैं सोसखीसखी सोंकहत है ॥ कवित्त ॥ नैनकेझरोखेआनि डीठनुपरत बांधिगाढेसुत जोरतेतनाव कररा खेहैं । अनमिल्योतनमिले इमकारभाष तहै ऐसीमनमिले मिलबेनअभिलाषे हैं । नटकोअटकी कहूं नटकीक लाकत ताऊपर दौरिदौरि दोऊरमचाखे हैं । बड़ेबंसबीच रसरितन सों बांधिराखे चढ़िउतरतते तौउतरतभाखे हैं ॥ १६४ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जुरेदुहुनकेदृगझमाकिरुकेनझीनेचीर ।
हलकीफौजहरौलज्योंपरतगोलपरभीर॥१६५॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह दोउनके नेत्रघूंघटको ओटपेलकैमिलगये हैं सो सखीसखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ बैठीअलीगनमें नवनागरि आयौतहां चलिप्यारो बिहारी॥ लालकीदीठि बचायबेकों मुखघूंघटओट करयोनिहारी॥ नैनसोंनैनउमंगमिलेनरहैं पटओटकितो पचिहारी। रोकिसकैनहरौलकी फौजज्यौगोल पैआनिपरैभलभारी॥ १६५ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३लघु २२

दो० दूरयोखरोसमीपकौलेतमानिमदमोद।
होतदुहुनकेदृगनहींवतरसहंसीविनोद॥ १६६॥

यह दोऊनेत्रनहीं में बातकरतहैं मिलबेकौ सोसुख मानत हैं सो सखीसखीसों कहतहै॥ सवैया॥ प्रेमप्रभावदुहून के कैसेहूं मोपैबने नबखानत हैं। चारुकलीचितचातुरीकी रसभाइभरी उरआनतहैं। यद्यपि दूरखरे उतऊचे समीपहीकों सुखमानतहैं॥ १६६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० उनहरकेहंसिकैइतैइनसौंपीमुसकाय।
नैनमिलेमनमिलगयेदोऊमिलवतगाय॥ १६७॥

यहदोऊगायमिलवति मनमिलगये सोसखीसखी सोंकहतिहै नायका परकीया॥ कवित्त॥ उनहंसिहांकिये यहांकी हैनईसोगाय मोपैनधरति काल्लकेते दुखदयेहैं। इनमुसकायकही भृकुटीनचाय येतौगाइहैं हमा रीहीलैपैरमाबनाये हैं॥ कहैं कविकृष्णमिले बैनानिसोंदैन अरुनैनन सों नैमरोझिरसवसभयेहैं॥ १६७॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० यदपिचवाइनुचोकनीचलतिचहूंदिशसैन।
तदपिनछांडतदुहुनकेहंसीरसीलेनैन॥ १६८॥

यहनायका परकीयाहैमोटोउन केनेत्रदेखतहैं तबहंसतही हैं सोसखीसखीसोंकहतिहै॥ सवैया॥ नेहकीघातलगी जबतेतबतेरसरीति रहैनहिढांकी। देखतहींउरमोदभरै उरकौनकरैकुलकान कहांकी॥ यद्यपिसैनचलायवसी उपहाससमेत चलैचहुंघांकी। तद्यपिछांड़नैनदुहूंकेरसीलीहंसीरावलो कनिबांकी॥ १६८ करभअक्षर ३२ गुरु १२ लघु २०॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० झूठेजानिनसंग्रहेमनमुहनिकसेबैन ।
याहीतेमानोकियेबातनकौबिधिनैन ॥ १६९ ॥

यह दोऊआपसही में बातकरतहैं सोसखीसखीसों कहतहै कबिकी उक्तिहूहोय ॥ कबित्त ॥ इतब्रजराजकोकुंवर रस राशिउत बीनवृषभान कीकुंवरि वरबानिकै ॥ उठेहितबाढ़े आपअपनेअटानिपै करत कटाक्षमन मथकीकलानिकै ॥ बदनतेनिकसे तेभूउहेात मेरेजानबैननु कोसंग्रह हू करोनयहजानिकै । परमप्रबीन दोऊ याहीतेपरसपर लोचननुहीमें बत रातसुखमानिकै ॥ १६० । पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवतजितबतहितहियेकियेतिरीक्षेनैन।
भीजेतनदोऊकंपतक्योंहूंजपनिवरैन ॥ १७० ॥

यह दोऊपरसपर आशक्त हैं सो जपकरत देखत हैं सखीसों सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ यमुना के तीरनरन रिन की भारीभीर तदपि निरख बिनुहरषे रहेन हैं ॥ कहैकबि कृष्णचित चौंपसौं खगतअनुराग सोंपगत उमगतमनमैंन हैं ॥ योहींदिनबितवति हियेहितजितवत चितवत चायसोंतिरिछे कियेनैन हैं ॥ भीजेपटकंपतन काहूते चपत दोऊ अधिक जपतक्योंहोंजपनिबरे नहैं ॥ १७० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ।

दो० घामघरीकनिवारियेकलितललितअलिपुंज ।
यमुनातीरतमालतरुमिलतिमालतीकुंज॥ १७१ ॥

यहनायका परकीया वाग्विदग्धा स्वयंदूतीनायका कोबचननायका सों ॥ सवैया ॥ चारुतमालकलिंदी केतीरउसीर सुगंधसमीर हरैमन॥ मा लतीमाल निकुंजनि मेंमिलगुंजत मत्तमधुव्रत के गन ॥ फूलनिके भरि झूमलत रही वेलिलगी लपटाय तमालन ॥ कीजेबिराम घरीकइतै यह आतपनेकनिवारिये लालन ॥ १७१ ॥ पयोधरअक्षर २६ गुरु १२ लघु २४

दो० छवैछिगुनीपहुंच्योगिलतिअतिदीनताादिखाय ।
बलिबावनकोद्यौतसुनिकोबलितुम्हैंपत्याय १७२

यह नायक के चित्तकी वृत्तललचौ देखि नायकाप्रीति बढ़ायवे को

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहतहै ॥ अरसापराध देखिखंडिता हूकहैसंभवहै ॥ कवित्त ॥ झूठकाजकोबनाय मिसहीसौं घरआयनेना पतिश्यामबतियांनि उघरतहैं ॥ आयकै समीप करहंसी सुसयानहीं सोंहसिहसि बातनहोबांहकोधरत हैं ॥ मैंतौसयराबरे केबातजियमें कोजानिजाके परपंचयेते हमसों करतहैं ॥ कहाँ ऐसी चतुराई पढ़ीआपयदुराई अंगुरीपकरि पहुंचेको पकरति हैं ॥ १७२ ॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० लाईलालबिलोकयेजियकीजीबनमूल।
रहीभौनकेकोनमेंसोनजुहीसीफूल ॥ १७३ ॥

यहनायका कोंसखीलेआईहै सुनायक कौकहति है ॥ सवैया ॥ जाहिबिलोकि कैप्यारेबिहारी सम्हार तुम्हैसबभूल रहीहै आई सुजीवन मूल बिलोकियेतो हितसों अनुकूलरही है ॥ बैठीदुकूलमें अंग दुरायत ऊतन कीदुतिझूलिरही है ॥ चौंधत लोचनभौनकेकोन मेंसोनजुहीमनों फूलरहीहै १७३ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १२ लघु २० ॥

दो० रहीपैजकीनीजमेंदीन्हीतुम्हैंमिलाय।
राखहुचंपकमाललौंलालहियेलपटाय ॥ १७४ ॥

यहसखीनायका कों लैआईहै सोनायक सों कहतहै ॥ कवित्त ॥ नैननकेतारेनमें राख्योप्यारेपूतरी कैं रली ज्यों लायराखोदशन बसनमें ॥ राखोभुजबीचबनमाली बनमालाकरि चंदनज्यौंचतुर चढ़ायर खौतनु में ॥ केशोरायकलकंठराखो बलिकंठुलकैं करमकरम क्योंहूंआनीहैभवन में ॥ चंपककलेसी बालमूंघिमूंघिदेवतासीलेहु प्यारेलाल इन्हैंमेलिराखौ मनमें ॥ १७४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३ ॥

दो० अथसमागम+दोऊचाहभरेकछूचाहतकह्योंकहैन।
नहिजाचकसुनिसूमलौंबाहरानिकसतबैन १७५॥

यह प्रथमदरशनागम मेंलाजकेअधिक दोऊकछूकहसकत नाहीं सो सखीसखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ आजदुहूं मिलिकै सजनीमनमोहन सोंमनसाकरिखोर मिलायो। ठाढ़ेठगेसे रहैंटकलायकै नेहकोमेह तहीं बरसायो। चाहभरे दोऊ चाहकछ्योकछू बोलनयोसुख आवनपायो ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सूमज्यौंआवै नभौंनते बाहिरद्वारसुनै जबैयाचक आयो १७५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

दो० करसमेटकचभुजउलटिखयेसीसपटुडारि ।
काकोमनबांधेनयहजूराबांधनहारि ॥ १७६ ॥

यह जूराबांधन नायकानायक नेदेखीसोसखो कहतहैजाति बरनन होय ॥ कबित्त ॥ नैननैनमैन केमेबानखर सानधरेआनन की वोपकछू जैसोचन्दपूरेकी । कनक लतासी भुजउरजउतंग गोरेसुलिखु भी कंचुकी सवज रंगरूरेकी ॥ कहैंकबिकृष्ण मटकीलीचारु चितवनचटकीली चूनरी चटक चोखेचूरे की । सीसपटुटारि भुजउलटि समेटि कचक्योंनमन बांधे बांकी बांधनिजूरेकी ॥ १७६ ॥ मच्छअक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० सहजसचिक्कनश्यामरुचिशुचिसुगंधसुकुमार ।
गनतनमनमथअपथलखिबिथरेसुथरेबार ॥१७७॥

यह नायका के केशनकी शोभापैआशक्त नायकहैसोसखो सों कहत है ॥ सवैया ॥ निंदतहैतमपुंजप्रभा जिनकीछबिहेरि शिलीमुखहारे। श्यामसुगंधसुभाय सचिक्कनमोहत सुंदरलांवेलछारे ॥ मैनमनोंअपनेकरि कै मखतूलकेचीर बनायसंवारे । देखतहीमनथाकि रह्योनवनागरिकेशसु देशतिहारे ॥ १७७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बेईकरब्यौरनवहैब्यौरौकौनबिचार ।
जिनहीउरझ्योमोहियोतिनहीसुरझेबार ॥ १७८ ॥

यहनायककी आशक्तिनायका के हाथनपै हैसु बारव्यौरत देखनाय-कसखीसोंकहतहै ॥ सवैया ॥ प्रानलसेसरसी रहसतिनऊपर मोदग भौर भयेहैं । केलिफिरी सी खरी सुथरी अंगुरीनख चंदप्रभानिछयेहैं ॥ वेही हैं हाथवहै चलिबो कहियामे विचारकहा धौंठये हैं । मेरोहियो उरझ्यो जिनसों तिनव्यौरे नहीं सुरझेकचये हैं १७८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ ॥ लघु २० ॥

दो० छुटेछुटावतजगततेंसटकारेसुकुमार ।
मनबांधतबेनीबंधेनीलछबीलेबार ॥ १७९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायकाके बारपैंनायकको मनरीझ्योहै सोनायकसों कहतिहैअथवासखीसोंकहतिहै कबिहूकीउक्तिहोय ॥ सवैया ॥ सोहतहैसुकमार महा उपमा को सिंगारन लागत नेरे । मेचक लांबे सुगन्ध लसैं छबि देखत नैदफिरैं नहीं फेरे ॥ छूटेछुटावत हैं जगतें इनके कछु कोटिक टोनासेहेरे । नीरजनैनीकहा कहियमनुबांधत बेनीबंधेकचतेरे ॥ १७९ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कुटिलअलकछुटिपरतमुखबढिगोइतोउदोत ।
बंकबिकारीदेतज्योंदामरुपैयाहोत ॥ १८० ॥

यहमुखपैबार छुटेतेशोभाअधिक भईहैसोसखीसों कहतहैसखीनायक सोंकहैनायका सोंकहैकबिकी उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ मानभुजंग निकंज चढीमुख ऊपरएकछुटी अलकैयों । कारीमहासट कारोहैसुंदर भीजरही मिलसौधेनहींयौं ॥ लटोलटबाड़लकी ढिगवोरगईबढिकै छबि आननकीयौं ॥ आंकवहोदिये दूनबेकारिकै होतरुपैयनतें मुहरैं ज्यौं ॥ १८० ॥ अहिषरअक्षर ४३ गुरु ५ लघु ३८ ॥

दो० खोरिपनचभृकुटीधनुषबधिकुसमताजिकान ।
हनततरुनमृगतिलकसरसुरकभालभरितान ॥१८१॥

यह नायका कुलटाललाट शृंगारहै सो सखीनायक सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कुंचितभौंह कमानकसे तिहकों जिहके सिरखोरि बनाई ॥ ताकुंलैतीर करयौ तिलहूं सुरकै गहितापर भाललगाई । खेलतयोबनके बनमेयहसाज सिंगार मनोजअठाई । हेरिहनैंजुप्रबीन कुरंगनहीं न दया उरकै कठिनाई ॥ १८१ बारन अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नीकोलसतालिलाटपरटीकोजटितजराय ।
छबिहिंबढ़ावतरबिमनौंशशिमंडलमेंआय ॥ १८२॥

यह लिलाट परटीको है ताकीउपमा सखीनायकसों कहतिहै कबिकी उक्तिहू होय ॥ सवैया ॥ यौवन ज्योतिजगामगहोति सिंगारप्रभा सरसावतिहै । रीझिरहैलखिलाल के लोचनमोदहिये भरआवतहै ॥ सोहत टीकोजरायजरयो तियभालमहाछ बिछावतहै । मानहुं चंदके मंडल में

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिननायक शोभाबढ़ावतहै। १८२ पयोधरअक्षर३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० झीनेपटमेंझलमलीझलकतिओपअपार ॥
सुरतरुकीमनुसिंधुमेंलसीसुपल्लवडार ॥ १८३ ॥

यहभुलमलनि को बर्णनहै सोषमासखीनायकसों कहैसखीनायक कहैकबिकोउक्ति ॥ कवित्त ॥ जाके करनाभरन बृषकेदिवाकरमे नयनदीबरनकीछबिमरजातहै। अधर सुधाधरसुधाधर से बदनमें किलकति ललित कपोलनकीकांतिहै। अंतर ललित झीनेबसन में भुमलोकहै कबिकृष्णझलकतऐसीभांतिहै ॥ मेरेजानसागर में डारकलपद्रुमकी पलवनिसोहित प्रगटदरसातिहै ॥ १८३ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० तियमुखलखिहीराजरीबेंदीबढ़तिबिनोद ॥
सुतसनेहमानोलियोबिधुपूरनबुधगोद ॥ १८४ ॥

यहनायकाकेभाल हीरेकीबेंदीहै सोसखीशोभाउपमा नायकसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ कनकबरतन जगरमगरहोत वोपउपजवास भौन आसपासकीनोहै। सकलसकेल रूपबिरंचि बिरंचबाल खोन कटिकठिन उरोजजुगपीनोहै ॥ ललितललाट परहीराकी लसतबेंदी कहै कबिकृष्ण देखेमनुनेहभीनोहै। मेरेजानमोदभरि अधिकसनेहकरि पूरनमयंकभरि अंकबुधलीनोंहै ॥ १८४ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कहतसबैबेंदीदियेआंकुदसगुनोंहोत ॥
तियलिलाटबेंदीहियेअगनितबढ़तउदोत ॥ १८५ ॥

यहबेंदीदिये ते मुखकीसोभा अधिकबढ़ीहै सो नायकसखीसोंकहै अथवासखीनायकसोंकहै कविकोउक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ योबनसोंमिलिजगमगत अपारओप महामनिहूं कोमनदेखें रसमोत है। कहैकबि कृष्ण छबिपुंजनसोंछाजिरह्यो सरससिंगार बरसतसुधासोतहै ॥ सबको ऊपेसेहीकहत मंहिमंडलमें बेंदीकेदियेतें आकदशगुनोंहोतहै। यहनर नागरिकेललितलिलारपर बेंदीलगीबिढोअगनितसुउदोतहै ॥ १८५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० पचरंगरगबेंदीखरीउठतऊगिमुखजोति ॥
पहेरेचीरचुनौंठियाचटकचौगुनीहोति ॥ १८६ ॥

यहनायकानायकने जैसीछबिदेखीहै तैसीभांतिसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ बेंदीललारलमे पचरंगलसबिडरे कचकुंचितभौंहै। अंजन रंजितटीरघ नैनबड़े गथ्यकेमुकता नथमोहैं ॥ चीरचनो ठियामें चमकें कछु गोरोअगो टिठरोजउठौहैं। भेदकीबातलखी बतरातपरोसिनि सोहैं कपोलहंसोहैं ॥ १८० ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० भाललला बेंदीललनअक्षतरहेबिराज ॥
चंदकलाकुजमेंबसीमनोंराहुभयोभाज ॥ १८७ ॥

यहसिखनखमललाटबेंदीआखतनक शोभाहै मोसखीनायकसोंकहत है अरुकविहूकीउक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ उदयसमै के राकाचंदमोवदन तैसोईतरुनकी उमंगगोरेरंगमें। कंचनकी नारो बारीकाकरेसिरी तामें दुरयोदरमतु कचबृंदउतमंगमें ॥ भालपररोचनकोबिंदुछवि देतातामें अखलसैज्योंगंगसरसुतीसंगमें। त्रासुमानितमकेसुधाकरकीकलामानौं बसी हैनिशंक अवनिसुतअंगमें ॥ १८८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० भाललालबेंदीछयेछुटेबारछबिदेत ॥
गह्योराहुअतिआहकरिमनुशासिसूरसमेत ॥ १८८ ॥

यह नायका के ललाट पै बेंदीहै अरु तापर बार छूटे हैं सो शोभा सखी कहतहै नायकसों अथवा सखीसों कविहू की उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ रुचिसों रतिसंपति दंपतिकान्ति दुहूं की तहां सरसी। वृषभानसुता घनमें जिमिदामिनि श्यामकेसंग सुरंगलसी ॥ क्रीड़त बरछुटे इकबार तिरीनाढपै मुखओपगसी ॥ मनोरोससों दोऊगहे सुरभान अचानक आनिकै भानससी ॥ १८८ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

दो० मंगलबिंदुसुरंगमुखशासिकेसरआडगुर।
इकनारीलहिसंगरसमयकियलोचनजगत १८९ ॥

यहसिखनखमें ललाटशृंगार है सोसखी सखीसोंकहतहै ॥ सवैया ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मंगल बिंदु सुरंग बिराजत भामिनि भालमहा छबिछायो ॥ आननचंद कलापरि पूरनकेसरि आड़मनोंगुरआयो ॥ कृष्णकहैं इकनारीमें आईमनौ परिपूरन योगलखायो नैनभरे रसकीबरषा करि चैन समूह हिये उमगायो ॥ १८९ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हाहाबदनउघारिदृगसफलकरैंसबकोय।
रोजसरोजनकैंपरैंहंसीससीकीहोय ॥ १९० ॥

यहमुख बरननहै सोसखी नायकासों कहै है नवोढ़ाके प्रसंगमें बनै मानछुड़ायबेकों कहैतो बनै ॥ कबित्त ॥ लोचन लहेकोफल सफलहमारो करि प्यारोप्रान प्यारेकों सनेहरस लीनकरि ॥ तैहींपाई परमनिकाईकी अवधिअब येतीबृषभानकी कुवरि अरबीनकरि ॥ टारिपट घूंघटको हाहा देउघारि मुखनिजछवि पानपमें पीकेनैन मीनकरि ॥ कंजछबि छीनकरि शशिहि मलीनकरि सौतिकको दीनकरि प्यारेको अधीनकरि ॥ १९० ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ डिठोना बरनन ॥

दो० लौंनेमुंहडीठनलगैयोंकठिदीनोंईठि।
दूनीहवैलागनलगीदियेंदिठौनाडीठि ॥ १९१ ॥

यहडिठोनाको बरनन नायक सखीसों कहै नायकासों कहैसखीसों कहै ॥ सवैया ॥ तोहिलखेरतिकी दुतिलाजत राजतआप सिंगार किये तें ॥ भौंहनकी बरनौन परै छबिमोहन न्यायही नौलियेतें ॥ सुंदर आनन डीठिनलागे कह्योअलियों हितमानहियेतें ॥ तोमुखतें अबलागन लागीरोदूनी ह्वै डीठि डिठोना दियेतें ॥ १९१ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु १३ लघु २६ ॥

दो० सूरबिदितहूमुदितमनमुखसुखमाकीओर।
चितैरहैचहुंओरतेनिहचलचखनुचकोर ॥ १९२ ॥

यहमुख बरननसखी नायकासोंकहै ॥ कबित्त ॥ सुखको समूहबृषभानकी कुवरितेरे मुखकोप्रकाश जगमगतअमंदु है । याहितें बिलोकि छबिहरषि लटूह्वैभटू भांवरो भरतफिरै प्यारोनंद नंदु है ॥ द्योसहूनिसा कौंरहै बिधिनबिनाम कछूदेखेउमगत अतिआनंदकोबृंदु है ॥ सकलबिलास

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छोड़िएक आधलगेर हैं और जानें कमज चकोर जानें चंदहै ॥ १९२ ॥
करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० पियतियसोंहासिकैकह्योलख्योडिठौंनादीन ।
चंदमुखीमुखचंदतेंभलौचंदसमकीन ॥ १९३ ॥

यहडिठोना बरननायक नायकासों कहैअथवा सिंगारकरता सखी सोंकहै। सवैया ॥ प्यारीको चारुसिंगार निहारिहियेपतिके अतिमोद भरयौहै।चाहिचषोड़ाकहीमुसिकाय सहीबिधिरूपसकेलधरयौहै॥ जामुख कोअकलंक प्रभासकलंक मयंकखरो निदरयौहै ॥ सोमुखतें वैडिठोनादे आजुभलोयहचंद समानकरयौहै ॥ १९३ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० छप्योछवीलीमुखलैंसनीलेअंचलचीर।
मनौंकलानिधिझलमलैकलिंदीकेनीर ॥ १९४ ॥

यहनायकाके मुखकोवरनन सखीनायक सोंकहै है नायकाहूसोंकहै ॥ कवित्त ॥ भावतीतिहारी कोगईहीलेद गिरधारीताहि देखेमेरोमन परयोछबिभीरमें । कृष्णबानप्यारेकी लुनाईहोत जगरमगर बाकेसोनेसे शरीरमें ॥ खंजनभवर बिंबकीरकी प्रभानिदरबदन दुरायबैठीझीने नीले चीरमें ॥ मेरेजानपूरनकलानिसों झलमलात परदसुधानिध कलिंदजाकेनीरमैं ॥ १९४ ॥ मछअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

दो० कियेहायचितचारुलगिबजिपायलतुवपाय ।
पुनिसुनिसुनिमुखमधुरधुनिक्योंनलाललचाय १९५

यहनायकाकी आशकजानिसखी नायकसोंप्रीत बढ़ायबेको कहतिहै बानोबरनन । कवित्त ॥ गजगतितेरी हेरीलटूतबही भयोतापै सुनीपायलकीझनक सुहाईरी । तबहीतेवाके उरलागीअति चटपटीतुव मिलबेकोंललकनुहै कन्हाईरी ॥ बीनाकेसुरनहूते मधुरसरसधुनि काल्हिकहूंतेउनबानी सुनिपाईरी । काहेतेमवाके उरमदनमरूरिउठैं कहोसेहो कहनजरतोसों आईरी ॥ १९५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छिनकुछबीलेलालवहनहिंजौलागिबतरात ।
ऊखमयूषपियूषकीतौलगभूषनजात ॥ १९६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायका केबानको मधुराईसखी नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ जाकेसुनेधुनवीन कहागहिलाजपिकी बनभागत है ॥ जासुनिकेकबिकृ-ष्णकहैं मुनिकोमनसा अनुरागतहै ॥ जौलोंछबीले जलातुमसोंवह बाल-नबातनपागतहै ॥ तौलोंमहूप पियूषकी ऊपकीभूषन कैसें हूं भागतहै ॥ १९६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १८ लघु २४

दो० जरीकोरगोरेबदनबढीखरीछबिदेखि ।
लसतमनोंबिजुरीकियेशारदशशिपरिबेख १९७॥

यहनायकाके मुखपैकिनारी कीशोभा नायक सखीसों कहतहै ॥ ॥ कबित्त ॥ पून्योंसीतिहारी लालप्यारेमें निहारीवह तारेसमोतिन केसिंगारही साजिकै ॥ झीनोंपट गावत चांदनीसो अबदात जाललोवन चकोरनकोदेखे दुखभाजिकै ॥ सेनापति तनसुखसारीकी किनारीबीचि नारीकेवदन अछिछबिरही छाजिकै ॥ पूरनशरद चंदबिंबताके आसपास रह्यौ है अखंड मानोंमंडले बिराजकै ॥ १९९ मरहल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० नासामोरनचायदृगकरीककाकीसोंह ।
कांटेसीकसकताहियेगड़ीकटीलीभोंह ॥ १९८ ॥

यहनायकाकी भोंहनचायबेकी चेष्टादेखि नायक सखीसोंकहतहै ॥ ॥ सवैया ॥ मोतनहेरिपरोसन सोंपतरातकछू बनतरसछाको ॥ येकर तीरतिकोदुतिहोतन वाकोंनिकाईलखे समताको ॥ नकचढ़ाई उचाय-केंभौटनछ्यकरीदृगसोंहक काको ॥ वाछबि कोबेकटलीसी भोंहकरे जेमेंशूलनी सालतवाको ॥ १९८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ नेत्रवरनन

दो० वारोंबलितोदृगनपरअलीखंजमृगमीन ।
आधीडीठिचितौनजिहकियेलालआधीन १९९॥

यहनायकाके नेत्रनको अध खुली चितवन देखिनायक आधे नभयो सोमखीनायकसों कहै ॥ कबित्त ॥ कारेझपकारेरतनारेअनियारे सो हैंमहजद्दारे मनमथमत वारेहैं ॥ लाजभरिभारे भारेचपल निहारेतारे सांचेकैसे ढारेप्यारेरूप केउचारेहैं ॥ आधीचितवन हीमें आधीनकिये तें

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हरिटोनेसे बस करकेलोने येनिहरेहैं ॥ कमलकुरंगमीन खंजनभंवर वृष भानकोकुवरितेरे नैननपै वारेहैं ॥ १९९ ॥ मछ्अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४

दो० चमचमातचंचलनयनबिचघूंघटपटझीन ।
मानहुंसुरसरिताविमलजलउछलतजुगमीन२००॥

यहनायकाके नेत्रनकी शोभा सखीनायकसों कहे । नायकहूनायका सों कहै सखीसखीसों कहै छंदउपजाति ॥ कवित्त ॥ रूपकी रसाल आज देखी वृजबालयेक केती सोभासनी वाकेसो नेसे शरीरमें । टारनोन टरतवह भावमोहिये मैक्यों हूं बैठी मुखढ़ाकि गुरुलोगन की भीरमें ॥ कहैं कविकृष्ण अतिचहलबिशालबांके लोचनयुगल झलकत झीनेचीरमें । क्यों न मनहोय छबिनिरखि अधीरबिव मीन उछलत मानौ सुरसरि नीरमें ॥ २०० ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु ॥ २० ॥

दो० करैचाहसोंचुटकिकैंखरेउड़ोहैंनैन ॥
लाजनवायेंतरफरतकरतखुदीसेनैन ॥ २०१ ॥

यहनयकाके नेत्रलाज अरुचाहदो उनके वसखुदीसीकरतहैं सोसखी सखीसोंकहतहै नायकाहूसोंकहै ॥ कवित्त ॥ नैननवनागरिकेतल तुरंग अंगछबिकीतरंग रंगनधरेधरैं । मदनप्रबीनतिन्हे फेरिबोसधावतहैं घूंघट को चौट ऐसे कौतुक करैंकरैं ॥ कोनैंचाहआंवगीसों चूकिकै चपल ात खरोईउडोहैंनेउमगलों भरेभरैं । लाजबागवसतरफत ताइभरेकरतखुदी सीपगधरत हरैंहरैं ॥ २०१ मछ्अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० सायकसमनायकनयनरंगेत्रिबिधरंगगात ॥
झखौबिलखिदुरिजातजललखिजलजातलजात२०२॥

यहनायकाके नेत्रनकी शोभासखी नायक सों कहै ॥ कवित्त ॥ सायकसेघायक हैं तोखनतरलदृग सेतश्याम अरुनत्रिबिध रंगगात हैं । कहै कविकृष्ण जाकेउरमें भिदततादि सुधिनरहतगात घूमघननातहैं ॥ येतेपरभौहैं येविषमविषअंजन सों याहोतेविषेषविथा उरसरसात हैं । सफरीबिलोकिजलबिलखि दुरितमृगभटकत विपनलजातजलजातहैं ॥ २०२ मछ्कअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० बरजीतैंसरमैनयेऐसेदेखेमैन ॥
हरिनीकेनैनानुतेयेहरिनीकेनैन ॥ २०३ ॥

कवित्त ॥ चीरेकीनेखंजनकसेरेकीनै कंजपुंज उपमाको नेरे अलि रंचकलगेनहैं। सोहतबिसाल येरसालसाल सौतिन के देखेमनु हरतकर तचितचैनहैं ॥ चपलकटाच्छ बरजीततमदनसर सुखकेनिकर और देखेऐसे नैनहैं। कामदुखदन्दनीके वृषभान नन्दिनीकेहरिनके नैननतें हरिनीके नैनहै ॥ २०३ पयोधरअक्षर ३५ गुरू १२ लघु २३

दो० रससिंगारमंजनाकियेकंजनभंजनदैन ॥
अंजनरंजनहूंबिनाखंजनगंजननैन ॥ २०४ ॥

यहनायकाके नेत्रनकीशोभा सखीसोंनायकाकहै नायहूसोंकहै नायकानायकसोंकहै सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ कंजकुरंग गुमान नुगंजन पोमनअंजनहैं अनियारे। खंजनमीननकेमद भंजनअंजनहूं बिनये कजरारे ॥ लाजसमाज सुशीलहसीरसरंगभरे बिधिमैनसुधारे। कृष्ण कहा उपमाकाहिये तियायाजगमें दृगतेरे उजारे ॥ २०४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० जोजुगगतसिखयेसबैमनोंमहामुनिमैंन।
चाहतापियउद्वैतासेवतकाननुनैन ॥ २०५ ॥

यह नायकाके नेत्रनकी शोभाअरु तरुनाईको बिलोकिपियकोचाह सखी नायकसों कहतिहै सखीसखीसों कहै ॥ कवित्त ॥ लीनोउपदेश महा मुनिमानिकेतको योगकला कुशलबिमल बिलसतहैं। तनमनमोहन सों एकभयोचाहतहै काननको सेवतजगतजोतिवंतहैं ॥ कृष्णप्रानप्यारेकी दुहाई जिन्हैं देखतहीं विरहकलेश दुखसकल निहसंतहैं। सरलसुभाई उर माझधरे श्यामछबिप्यारी तेरे नैनमनहरन महंतहैं ॥ २०५ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सबअंगकररासीसुथरनायकनेहसिखाय ॥
रसजुतलेतअनंतगतपुतरीपातुरराय ॥ २०६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका की पुतरीनकी शोभाअनेहकी अधिकाईसखी नायक सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ चारुप्रभा पलकैंझलकैं मृदुपीतपटीप हरेसुथरी हैं । नावकनेह सिखायसवैरस भेदसुधायप्रबीनकरी हैं ॥ कृष्णकहैं अतिचा- इनमों गतलेतमनो बहुभायभरी हैं । लेतरिझाय मनैं अतिचातुरपातरदाय किधौंपुतरीहैं ॥ २०६ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० लागतकुटिलकटाक्षसरक्योंनहोहिबेहाल ।
कढ़तजुहियेदुशालकरतऊरहतनटशाल २०७ ॥

यहनायकाके नेत्रनायकके हृदयमेंखुभेहैं सोसखी नायकासोंकहतिहै नायकसखीसों कहतहै नायका सखीसोंकहै ॥ कवित्त । भिदेसूधेतीरते तौतनकोबढ़ावैं पैरजानियह बातजिय सकलडरातहैं ॥ लागेब्रजनागरिके कुटिलकटाच्छ सरक्योंन होहिबिकल बिहालसबगातहैं ॥ बिक्रम निधान अतिपारथके बानहूते मेरे जान इनकेअनोखे उतपातहैं ॥ देखिये नघाइ उरकट दुसालकर येते पर देखोनटसाल रहिजातहैं ॥ २०७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ नासा वेध वर्णन ॥

दो० बेधकअनयारेनयनबेधतकरनिषेध ।
बरबटबेधतमोहियोतोनासाकोबेध ॥ २०८ ॥

इस नायका की शोभा नायक नायकासों कहत है ॥ कवित्त ॥ अनियारे नैनबेधतविराने मन कोअचरिजपैन सहजसुभायकै ॥ तोहिनिर खतवृषभानकी कुंवरिअदभुतको तरंगरही मेरेउरछायकै ॥ सोहैं किधौं नेहकी निकाई को निकेत किधों सुखमधुकरने सुचिरुकीनों आयकै ॥ बरबट मेरोहियो बेधतहै प्यारीतेरो नासिकाको बेधमनरहै क्योंधिरायकै ॥ २०८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बेसरमोतीदुतिझलकपरीअधरपरआय ।
चूनोहोयनचतुरतियक्योंपटुपोछ्योजाय ॥ २०९

यहनायकाके आठ ऐसेउज्ज्वलहैं जोमोतीकी झलक ललाईके मध्य स्वेतझलकतिहै सुयचूनों जानि पूंछतहै सखीयाकी भ्रांतिदूर करत है अथवा नायका झलक देखिनिश्चै करतहै सोसखी कहतहैं जोनायका

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सखीसों कहै तोरूप गर्वितहू होय ॥ सवैया ॥ आजसिंगार बन्योतिय तेरो जगमग जोतिसमूह करै ॥ देखत आरसी बारहीबार हिये हरिको कहिक्योंन हरै ॥ बेसरके मुकताकी प्रभाअति उज्ज्वलआनि परीअधरै ॥ होयनचूनों लग्योमृग लोचन क्यों पटसोंअब पोंछपरै ॥ २०६ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरू ६ लघु ३० ॥

दो० इहद्वैहीमोतीसुगथतूनथगरबनिशांक ।
जेहिपहिरैजगदृगग्रसतिलसतहसतसीनांक २१०

यह नायका केनथकीशोभा सखी कहतहै अन्योक्तिकवित्तहूमेंबनै ॥ कवित्त ॥ सुरनसमेत नाकहीते कहति मुकतनियुत मुकतिपुरीसी दीसतिहै ॥ कहैंकविकृष्ण मनमोहनके मोहिबेको मोहनीकीसिधि मान शोभासरसतिहै ॥ तोहिपहरतें जगनयन ग्रसति अतिछवि बरसत मानों नासकाहसतिहै ॥ अहेनथउरमें निशांकतूगरब करिहैहो मुकताके मोल सहतिलसतिहै ॥ २११ ॥ बारनअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६ ॥

दो० जटितनीलमनिजगमगतिसीकसुहाईनाक ।
मनोअलीचंपककलीबासिरसलेतानिशांक २११ ॥

यहनथका कीसीकपहिरेते सुशोभा भई सो उपमा सखीसखी प्रति कहतु है सखीनायक सोंकहतिहै नायकाहूसों कहै ॥ कवित्त ॥ पूरन मयंककेकि अंकमेंलसत किधौनैकनिरखतही हरतचितचेतहै ॥ प्रफुलित पंकजपै सोहैकरहाटु किधों तिलकोसुमनु सुखसौरभ समेतहै ॥ नीलमनि जटितछबीली तेरीनाकपर सींकयोंलसति महाशोभाको निकेतुहै ॥ मेरे जानमुकलित चंपककीकलिकापै बैठीअलि सांकुनिशांक रसलेतहै ॥ २११ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यदपिलौंगलालितौतऊतूनपहरइकआंक ।
सदाशंकबाढ़ीरहैरहैचढ़ीसीनाक ॥ २१२ ॥

यहनायकाकीनाक मैलौंगहैताकर नाकचढ़ीसीदीखतहै सोसखीनायकासोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ किधोंहैबदनछबि दीपकोसुमेरजाकी जगरमगरजोतिपूरन प्रकाशिका ॥ किधोंकविकृष्ण चारुचंपककी कलिका

है मसजसुगंध निकसतजाते स्वासिका ॥ तदपिलवंग अतिललित लसत तऊ मतपहरि डरपति उरदासिका ॥ मानके भरमभूलि मोहनबिलो-किरहे मृगनैनो निरख चढ़ीसो तेरोनासिका ॥ २१२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सालतहैनटशालसीक्योंहूंनिकसतनाहिं।
मनमथनेजानोकसीखुभीखुभीजियमाहिं २१३॥

यहनायकाके खूबीकी शोभानायक सखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ राधिकाप्यारीके आननपैछवितीनहूं लोककी आनि गुभीहै ॥ मैंनिरखी जबतेतबते मनमेरो लुभाइतहाँही चुभीहै ॥ रूपके वोहथ कानमैं वाके बिराजत ओपअनूप खुभी है ॥ सालतहैजु मनोजकेनेजेकी नोकमनोटर माझखुभीहै ॥ २१३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लसतसेतसारीढप्यौतरलतरयोनाकान ।
परयोमनोसुरसरिसलिलरविप्रतिविम्बविहान२१४॥

यहतरयोना वर्णन सखीकोवचन नायकहू को वचनकविहूकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ सुंदरसुकुमार बालचलतिमराल चालअंग अंगभूषन समूह बरसतहै ॥ कदरपदरपन लसतकपोल फलबलदेव सुखमा समूह बरसत है ॥ नगमनि जटित जरायकोतरोना तामैंताकी झलकनि ऐसो भालपरसतहै ॥ सुरकांतिमणिकी मयूषनसोंमिल्योएक प्रभाकरमानोप्रति बिंबदरसतहै ॥ २१४ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० तरवनिकनककपोलदुतिबिचबीचहीबिकान ।
लाललालचमकतचुनीचौकाचिन्हसमान॥२१५॥

यह तरवनिकी शोभा सखो नायकसों कहै तोसुरत गोपनाहोय ॥ कवित्त ॥ आजकीबनक बरनतनबनत तेरीछविकोछटानकी घटासी उमगतिहै ॥ दमकतसरससिंगार कीअपारओपयौवनकी कांतिजगाजोति सीजगतिहै ॥ कनक तरवोननुको ललितकपोलनिकी दुतिमें समायगयो अदभुतगतिहै ॥ कृष्णप्राणप्यारेकोसो चारुचमकतयेतो लाल लालचुनी चौकाचिन्हसोलगतिहै ॥ २१५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० लैंसमुरासातियश्रवणयोंमुकतनदुतिपाय।
मानोपरसकपोलकेरहेस्वेदकनछाय ॥ २१६ ॥

यह मोतिन को मुरासाको वर्णन करिकहै तो लक्षिता जानिये ॥ कवित्त ॥ आजनौनागरी कीआगरीविलोकी छविदेखबे कोनैननललचाय ललकतहैं ॥ कहैं कविकृष्ण वहीबानिकबिलोक ठगरीझिपगेतबतैं लगत पलकतहैं ॥ आननकीछविलखि चन्दद्युति मन्दहोत ताइपै अनोखेचिन्ह अतिसरसत हैं ॥ मेरेजान परसकपोल इनहूंके उरलच्योप्रस्वेद तेईबूंद झलकतहैं ॥ २१६ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नखसिखरूपभरेखरेतोमांगतमुसकानि।
तनतनलोचनलालचीयेललचेंहीबानि ॥२१७॥

यहनायकाअथवानायक मुसकानदेख्ये चाहतहै सोअपनेनेत्रकी आशक्तिकहतहै ॥ सवैया ॥ देखतहीअनमेखरहे उमड़ेसे परेन बिचारत गोहूं ॥ रावरेरूपअनूपसों पूरिरहेजऊ नखतेसिखलोहूं ॥ मांगतहैं इतनेपरतोमधुरीमुसकानि अघातनत्योंहूं ॥ नैनभयेअतिलालचीये ललचेन कीबाननछांड़तक्योंहूं ॥ २१७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकहसोंहींबानताजिलख्योपरतमुखनीठि।
चौंकाचमकनिचौंधमेंपरतचौंधसीदीठि ॥ २१८॥

यहअकारण हसीजानिगुरुसखीनायकासों शिक्षाकेप्रसंग मेंचौंकाकी चमककी बड़ाईकरे अथवा नायकहू नायकासों कहैतोसंभवहै ॥ कवित्त ॥ तैसीयेजगत जोतिसीससीस फूलनकी चिलुकतातिलक तरुनितेरेभाल को ॥ तैसीयेदशनदुति दमकतकंधीराय तैसोईलसत लालकंठकठ मालको तैसीयेचमक चारुचिबुक कपोलनकी झलकततैसोनकमोती चलचालको। हरेहरेहसि नेकचतुर चपल नैनचितु चकचौंधे मेरे मदन गुपाल को ॥ २१८ ॥ मरकट अक्षर २२ गुरु १० लघु १५ ॥

दो० ठोड़ीगाड़बर्णनंडारैंठोडीगाड़गहैनैनबटोहीमारि।
चिलकचौंधमेंरूपठगहांसीफांसीडारि ॥ २१९ ॥

यह ठोडीकी गाड़को वर्णन नायक नायका सों कहै ॥ सवैया ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

केशनके बनके उपकूलतहँ भृकुटी गिरवोटविचारै ॥ चारु लिलार सिंगार कोचौंधमें देतप्रचंड दगानहिं हारै ॥ फांसीगरे मुसकानकी पारिकैठोड़ी कीगाड़ कुबांगहि डारै ॥ प्यारीमहा ठगतेरो स्वरूपदयातजि नैनबटोहिनमारै ॥ २१६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु ७६ ॥

दो० ललितश्यामलीलाललनबढ़ीचिबुकछविदून।
मधुछाक्योमधुकरपर्योमनोगुलाबप्रसून२२०॥

यहनायकाकी ठोढ़ीपै लीलाकी शोभा सखी नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कुंकुम गारिकियो मनुनेह महासुकुमार सुगंध को भौना ॥ रूपसुधा भरयोचंद सोआनन लाल लसैमनको ललचौना ॥ ठोढ़ीकीगाड़ मेंश्यामल बिंदु निहारतवाहि थकेमनुगौना ॥ कैमधुपान गुलाबकेफूल मेंमतपर्यो मनोभौंरको छौना ॥ २२० ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० खरीलसतगोरीगरेधसतिपानकीपीक।
मनोगुलीबंदलालकीलाललालदुतिलीक २२१॥

यह कंठ वर्णनहै सुकुमारता सखी नायकसों कहै ॥ सवैया ॥ प्यारेमैं पियारी तिहारीलखी नखतेसिखलौं सुनिकाई भरीहै ॥ केसरिकीसुकुमारि मनोछविपुंजसों कैधविरंचि करीहै ॥ गोरीके गोरे गरेमनुमोहतिसोहति पीककीलीक खरीहै ॥ चीरगुलीबंदलालकी लाल मनौं दुतिकी प्रतिलीक परीहै ॥ २२१ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० कुचगिरिचढ़िअतिथकितह्वैचलीडीटमुखचाड़।
फिरिनटरीपरियेरहींपरीचिबुककीगाड़॥२२२॥

यह अंग देखत देखत दृष्टि ठोढ़ी की गाड़ में जाय परी सो टरति नाहीं सो नायक अपनी अवस्था नायका सों कहै अथवा सखी सों कहै सवैया ॥ दीठि नदी त्रिवली तिरनीट रुमावलि कानन ते निकरी है। पीन उरोज पहार चढ़ी अति थाकि तऊ न वहां ठहरी है ॥ चाहि ली मुख मंडल की छवि बीचही ले बिधि ऐसी करी है। ठोढ़ी की गाड़ गढ़े में परी सुपरी ये परी न तहां ते टरी है ॥ २२२ ॥ त्रिकल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० चलननपावतनिगममगजगउपज्योअतित्रास।
कुचउतंगगिरिवरगह्योनैनामैंनमवास॥ २२३॥

नायक नायका सों कहै सखी कहै तौऊ बनै॥ सवैया॥ लूटत माल मुनिंदन के मन ज्ञान बिसांत ले को निबह्यो है। बेद को पंथ चलै कहि कैसे सबै जगमें अति त्रास चल्यो है॥ कृष्ण कहै त्रिबली सरितारू मिली बन पास गढ़ा सुलह्यो है। ऊंचे उरोज पहार के छोर मनोज महीप मवास गह्यो है॥ २२३॥ नरअच्छर ३३ गुरू १५ लघु १८॥

दो० दुरतनकुचबिचकंचुकीचुपरीसारीसेत।
कविआंकनकेअरथलोंप्रगटदिखाईदेत २२४॥

यह कंचुकी के बिच कुच शोभाय मान हैं तिनकी प्रभा देख नायक नायका सों कहै सखीनायकासों कहै नायकसोंकहै॥ कवित्त॥ कंचनबरनमनहरन अडोलगोलगोरेश्रीस श्यामताधरतुहैं। उन्नतको रेखरेचिकने सुनाईभरेमदन बमीकरमे मनकोहरतु हैं॥ ऐसे कुचभीनी सितकंचुकीतलांछी माझप्यारीये दुरायेनदुरत उघरतहैं। कहैकविकृष्ण जैसे सुकविके आंकनमें अरथटमंग डीठिप्रगटपरतु हैं॥ २२४॥ चिकल अच्छर ३६ गुरू ६ लघु ३०॥

दो० उरमानिककीउरबसीडतटघटतदृगदाग।
लछकतबाहिरभरमनोंतियाहियकोअनुराग॥ २२५॥

यहउरबसीकीशोभा सखीनायकासों कहैयाकिअनुराग की पूर्णताप्रकटकरतिहैजोसखी नायकासोंकहैतोतियपदतेंसंबोधन होय नायकालक्षिता॥ कवित्त॥ हियेआलबालतें प्रगटकोकनदफूल्यौ किधोंअनुराग आभाटमगीहैसरबर। ईश्वरुमतिकिधों भोरहीउदित भानुबैठोचक्रवाक कनकेपेमकोप्रगटकर॥ मोतिनकीमालसोहै गंगाजूकीधारातामेंध्यानलगे तीसरोनयनखोलि दीनोंहर। मानकनियमकुच अग्रउरबसी सोहैमंगल मुदितमानोमेरुके शिखरपर॥ २२५॥ नरअच्छर ३३ गुरू १५ लघु ८४

दो० बडेकहावतआपसोंगरवगोपीनाथ।
तोबदिहोंजोराखिहोहाथनुलखिमनुहाथ॥ २२६॥

यह नायकाके हाथकीशोभासखी नायकसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ सिंधुमथिश्रशि शशिमथिनखवाके नेहीकीनेहैंसुरतिकहैकविपतियाइ है॥ चीरकेकलपतरुको येअंगुरीनिक री म नहोतवहि मनचितेफलपाइहै ॥ कमलाहियेकेकंज दलकीहयेरी कीमीतापर भवरभयेभावरे हीखाइहै । हौंतोत्रिभुवननाथ जानिहैपैऐसेतिय हाथनिरखिजब हाथनिबिकाइहै॥ २२६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नखरुचिचूरनडारिकैठगुलगायनिजसाथ ।
रह्योराखिहठलैगयोहथाहथीमनुहाथ ॥ २२७॥

हाथकीशोभादेखि नायककोमनुय.केहाथनाहींरह्यो सोनायक अपनेमनकीगतिसखीसों कहतहै नायकाहू सों कहै ॥ सवैया ॥ बूंदलसै मेहदीकेसुरंग उहींअरुनायकरंगरचेके । रेखवसीकरमंत्र दिखायकेसाथ लगायलियोअपनेके ॥ चारुनखादुतिचूरन डारि अधीनकियो बहुभांति भुरेके । राखेहूंपैनरह्यो ममहाथहथाहथी हाथगयोमनुलेके ॥ २२० ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० गोरीछिगुनीअरुननखछलाइयामछविदेय ।
लहातिमुकतिरतिपलकुयहनैनत्रिबेनीसेय ॥ २२८॥

यहनायकाकी अंगुरीकीशोभा नायककहत है ॥ सवैया ॥ कोबर गोरीलसै छिगुनी अरुलालप्रभानख कीसुखदैनी ॥ तापरश्यामछला कीफबीछविनैननको लखिलागतऐनी ॥ लोचनसंतलहैरति मुक्तनि मेघकदेखतही मृगनैनी । तोकरमाहिंबिराजत है यह तीरथराजकी रीति त्रिवैनी ॥ २२८ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० बढ़तनिकसिकुचकोररुचिकढ़नगोरभुजमूल ।
मनुलुबिगौलौटनुचढ़तचौंटतऊंचेफूल ॥ २२९ ॥

यहनायका जाछविसोंदेखीहै सोनायक सखीसोंकहतहै ॥ सवैया ॥ बनआजुलखी बृषभानु सुताजगजोति रहीचहुंकूलनकी । चिहुटीचितमें उकसायेभुजाबहचौंटनि उंवितफूलनकी ॥ बढ़तीकढ़नेकुचकोरनकीरुचि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चारुप्रभाभुजमूलनिकी॥ लटिगेमनुलौट विलोकतहीछविमोहनकैमेहूं भूलातिकी॥ २२९॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० फरउठायघूंघटकरतउसरतपटगुझरोटे।
सुखमोटैलूटीललनलखिललनाकीलोय॥२३०॥

यहनायकाकी लौटकीशोभा नायकनेदेखीहै सोसखीसखीसोंकहतहै॥ सवैया॥ जातिहीबालगलीमें अलीसंगआवत मोहनदेख्योअगोढ़ैं॥ ज्योंकियेघूंघटहाथ उठायकैत्योंउसरी पटकीगुझरोटैं॥ सोछविमोपैक-हीनपरै कछूकौरिनकोर लुटीसुखमोटैं॥ लाललख्यो अतिमोद हियेनव नागरिकी निरखीजबलोटैं॥ २३०॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कटि वर्णम्॥

दो० लगीअनलगीसीजुबिधिकरीखरीकटिखीन।
कियेमनोवेहीकसरिकुचनितंबअतिपीन २३१॥

यह नायकाकी कटियोबनके आयेतेघटबढ़ ह्वेगईहै सोसखी नायक सों कहतिहैकविहूकी उक्तिहोय॥ कवित्त॥ रूपसांचेढारे रचिपचिकै सुधरेबिधि अंगअंगपकल सुदेशरस भीनेहैं। तापैतरुणाईने बनाई कछु औरेबिधि खीनकरेपीन अरुपीन करे खीनिहैं॥ छोलि छोलि ठाकुअति सूछमकैराखे ताहिलचकत जानिकैयतन ऐसेकीनेहैं॥ कनिहांकी कृश ताकीसिधिकै कसरमानों उरज नितंब अतिपीनकरि दीने हैं॥ २३१॥ चल अक्षर ३० गुरु १५ लघु २६॥

दो० लहलहाततनतरुनईलचिलगलौंलफिजाय।
लगैलांकलौइनभरीलोइनलेतलगाय २३२॥

यह नायकाकी जोशोभादेखीहै सोनायक सखीसों कहतहै अथवा सखीनायकासों कहैतो संभवहै॥ कवित्त॥ लकलकेतनमें लहलहाति तरुनाईताकी नईअरुनई रहीछविछायकै॥ कुचनके भार चपल गलौं लफतिजब चलतिगयंद गतिसहजसुभायकै॥ कहैकविकृष्ण नखसिखलौं लुनाईभरी मानोंमहा मोहनीने देहधरी आइकै॥ सुछिमलसत अति

CC-0.In Public Domain. Digitized by Google

चारकी सैआकुएसे लगैलांकचारी लेतलोयन लगाइकै ॥ २३२ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बुधिअनुमानुप्रमानश्रुतिकियेनीठठहराय ।
सूक्षमकटिपरब्रह्मकीअलखलखीनाहिजाय २३३॥

यह कटि बरनन सखीसखी सोंकहै नायकसों कहै नायका सखीसों कहैनायक सोंकहै कबिहूकी उक्तिहोय ॥ कबित्त ॥ सुमनमें बासजैसे सुमनमेंआवे कैसेनाहीं नाहींकही जातिहांकहां चलतिहै ॥ सुरसरिसूरतनयामें सुरसती जैसेबेदके बचनबांचे सांचेनिबहतहै ॥ बुधिअनुमानते प्रमान पारब्रह्मऐसे कामिनीकी कटिकबिमोरन कहतहै ॥ परिवाकेघषि कीकलाज्योंरहै अंबरमेंपरिवाको अच्छपरतच्छन लहतहै ॥ २३३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जंघयुगलजोइननिरेकरेमनोबिधिमैन ।
केलितरुनदुखदैनयेकेलकलासुखदैन २३४ ॥

जंघकी शोभानायक सखीसोंकहै सखीनायकसोंकहै ॥ कबित्त ॥ कारेकरेरे कुरुपकरीकर क्योंसमहोत प्रभाइन कीके ॥ मोहतसुंदर पोन सचिक्कन मोहनहैं मनमोहनपीके ॥ केलिकलोल कलाकेनिधान महादुखदायक हैं कदलीके ॥ तोजुगजंघ विरंचि मनोज बनायकरे निरेलीय नहीं के २३४ ॥

दो० रह्योढीठढाढसगहैशाशिहरगयोनसूर ।
मुरयोनमनमुरवानिचुभिभौचूरनचपिचूर २३५॥

यहमुरवानिकी शोभामें नायकको मनचुभ्योहै सोसखीसों कहत है नायका हूसों ॥ सवैया ॥ प्रान पियारीके पाइनऊ परिपुंजप्रभाको परै उमग्योई ॥ देखतही अति रीझके चायसों जायतहां मन मेरोलग्योई ॥ सररह्यो अतिसाहसकै कविकृष्णकहैं नडराय भग्योई ॥ चूरभयोचपिचूरन सोंपैतऊन मुरयोमुरवान पग्योई ॥ २३५ । नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० पायमहावरदैनकोनायनबैठीआय ।
फिरिफिरिजानिमहावरीयेड़ीमिड़तजाय २३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायनकी सहसचरुनाईको अधिकसखी सखीसों कहति है नायकहूसों कहैतो संभवहै ॥ कवित्त ॥ मंदहूखपैते चंदबधूके बरनहोत प्यारीकेचरननवनीतहूं ते नरमें ॥ सहजललाईकाश्रीराम बरनीनजायजिनके निहारेंकबिहूकीमति भरमें ॥ येड़ीठकुराइनकी नायनिगहति तब ईंगुसोंरंगटौरिजात दरबरमें ॥ दीनोंहैकिदैनोंहै निहारेधोंचे बारबार बावरोस ह्वै रहीमहावरलेकरमें ॥ १३६ ॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

दो० कोहरसीयेड़ीनकीलालीदेखिसुभाय ।
पायमहाबरदेनकोआपभईबेपाय ॥ २३७ ॥

यहनायकाकीयेड़ीनकी शोभासखीनायक सोंकहै ॥ कवित्त ॥ कोहरूकहाहैबन्धुजीव कोंबिलोक्योचाहै लाजनतेकमलमुदित फूलिफूलिकै ॥ मानिकपवारीबिंबकैसे पटतरहोतऐसीदुति सहजउठतिउलिउलिकै ॥ चाइनसोंपाईनमहावर लगायबेकोआई ठकुराइननिकट अनकूलिकै ॥ कहै कविकृष्णचारुबदन बिलोकतहीनाईन बिचारीगईसबसुधिभूलिकै ॥ २३७ ॥ मत्तअक्षर ४१ गुरु ८ लघु १४ ॥

दो० अरुनबरनतरुनीचरनअंगुरीअतिसुकुमार ।
चुवतसुरंगरंगसीमनोचपबिछियनकेभार २३८ ॥

यहचरनांगुलीनकोशोभा नायकसखीसों कहतहैनायकाहू सोंकहैसखी सखीसोंकहै कविकीउक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ मन्दगतिहरैकलहंसन लहत कलापमइगयंदनकोगरबगरतहै ॥ कृष्ण गनयाकेचारुचरननिहारेवाकेजलज समूह जियना अधिधरतहै ॥ अतिसुकुमारतनीकोपगअंगुरीनऐसोअरुनाई कोउजासउघरतहै ॥ मेरेजानपरतोबिछियानको अपारभारताहीमोंउमंगरंग निदुरोपरतहै ॥ २३८ ॥ मरालअक्षर ४२ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० पगपगमगअगमनपरतचरनअरुणदुतिझलि ।
ठौरठौरलखियतउठेदुपहरियासेफूल ॥ २३९ ॥

यहनायकाकेचरननमें अरुनताकीअधिकताई सखीनायकसोंकहैनायकनायकासोंकहै सखीसोंसखीनायक सोंसखीसोंकहै ॥ कवित्त ॥ प्यारीके पगनपायऐसी अरुनाईतातेसुगधि बधूनदिनमांझकरभाखोहै ॥ बागह्वैक-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कृतब्राकेसिसिरलुनानहूमें किमलैअलीतोरिवेकोअभिलाष्योहै ॥ चिन्तामनिचांदनीबिछौनापर आवैलाल मखमलको बिछौनामनु नाहिंनाख्योहै ॥ चरनधरतब्राके आंगनपटिक बन्धमानौ लालबिद्रुम दलनिबांधि राख्यो है ॥ २३९ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सोहतअंगुठापायकेअनवटजरयोजराय ।
जीत्योतरवनिदुतिसुढरपरयोतरनिमनोपाय २४०॥

यहनायकाकेशृंगारका आरम्भ है सोएकही अनवटपहरयोहै ताकोउपमासखीनायकामों कहतिहै ॥ सवैया ॥ प्यारोसिंगारसबांरन बैठोआचानक आयोतहांदधिडानी ज्योहुतो त्योहींरहीनवनागरि नन्दकिशोरकेरूपलुभानी ॥ नीकोजराव अनेटलसे पगकेअंगुठा उपमा सुबखानी ॥ पायपरयो है मनोरबिआयकै तेजकोहारि तरयोनासोमानी ॥ २४० ॥ वाधक अक्षर ४३ गुरु ४ लघु ४०

दो० सरसकुसुमडरातअलिझूकिझपटिलपटात ।
दरसतअतिसुकमारतनपरसतमनुनपत्यात २४१ ॥

यह सुकुमारताविशेष है अरु कोऊकसखी नायका सों अनभिज्ञजानत हैसुनायककीसखीभ्रमरकोप्रसंगकरि अन्योक्तिमेंवाकोभ्रम निवारनुकरत है ॥ कवित्त॥ सुखकोअंगारउपवन कोसिंगारचारुसौरभ बिबिधदमगत जाकोगातहै ॥ सरसकोसुमनु सरसअतिशोभासन्यो निरखिलुभानोअलिदे खेनअघातहै ॥ कहैकविकृष्णअति रीझपर्योआसपास रहैमडरानोनझप टिलपटातहै ॥ दरसचचाकोतनअति सुकमारतातेंपरसत वाकोमन क्योंहूं नपत्यातहै ॥ २४१ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० भूषनभारसम्हारिहैक्योंयहतनसुकमार ।
सूधेपायनपरतधरशोभाहीकेभार ॥ २४२ ॥

यहसुकुमारता हैसखीनायक सों कहति हैं किभूषन पहिरत बिकल होय यातेंवेगचलै ॥ कवित्त ॥ बोलनि चलनि चतुराई चितवनिंतन चाहिनाहिंचित और तौरठहरातुहै ॥ वाको अंगउबटि जुओपीतियमन छवितेऊउपमादै औरसुकविसिहातहै ॥ करतानिहारिसुकमारजी बिचारि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहकोने बिनभूषनहि भूषन सोगातु है ॥ सकिहै सम्हार कैसे आभरन भार पाई आभाहूको भारनसम्हारयो तन जातुहै २४२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैंबरजीकैबारनूइतकितलेतकरोट ।
पंखुरीलगैगुलाबकीपरिहैगातखरोट ॥ २४३ ॥

यह नायका बिश्रब्ध नवोढ़ा है सपने में थिरता नाहीं याते सखी डरदिखाय सयनकरावतिहै ॥ सवैया ॥ मैंबरजीबहुबार अहैनहिमानत तूसोकहाधौं करैगो ॥ लेतकरौटइतै मुरक्यो अरबोरि कोलौं इतैक धरैगो कोमलआपने अंगनिहारितबैसुकुमारसु क्योंसम्हरैगो ॥ पांखुरीगात गुलाब कीज्यों गड़िजैहैकहूं तौखरौट परैगो ॥ २४३ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥ यह नायकके हृदयमें नायका बसै ॥

दो० नजकधरनहरिहियधरेनाजुककमलाबाल ।
भजतभारभयभीतहवैघनचंदनबनमाल २४४ ॥

यह नायकके हृदयमें जोनायका बसति है ताबिपरीति को अधिक सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ निजभक्तनकोहितको कमलापति संततचित्तबिचारकरैं ॥ अतिचंदनअंग लगावैनहीं बहुफूलनकी नहिंमाल धरैं ॥ अरु जोकबहूंक सिंगारसजैंकबिकृष्णतऊ कलकैसेपरैं ॥ यहसोच हियेनिशि द्यौसडरैअतिनाजुक श्रीमतिभारभरैं ॥ २४४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छालेपरिबेकेडरनिसकतनहाथछुवाय ।
झिझकतहियेगुलाबकेऊमाझमयतपाय २४५ ॥

यह नायकाके चरणनकी सुकुमारता सखीनायकासोंकहतिहै सखी हूसों कहै ॥ सवैया ॥ पैनलगैअलि पंखेकोहोति चलाचलकैसे बयार करैं ॥ कृष्णकहैं कहूंकेधरिअंग लगैयेतौसौतिउछाहभरैं ॥ प्यारीकेना-जुक पायनिहारिकै हायलगावत दासोडरैं ॥ धोवतफूलगुलाबकेलेपैतल झझकैमतिछालेपरैं ॥ २४५ ॥ मराल अक्षर३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० लग्योसुमनह्वैहैसफलआतपरोसनिवारि।
बारीबारीआपनीसींचसुहृदतावारि॥ २४६॥

सखीको वचन नायकासों हैशिक्षारूप॥ कवित्त॥ बारीहैन बावरे तूदेत लडवावरयौ क्योंमानकरिबेको उरमेंसरबिचारियै॥ अबहीतो नेह बेलिनवल लगाईताहि जतनजतनदृढ़करिपोषि पारियै॥ लाग्योहैसुमन सुतोहोहिगो सफलअब कहैंकबिकृष्ण रिसआतप निवारियै॥ सीखमानि मेरीमति सौतिनुके बौतेकरे प्यारी प्रीत रसहीमें सींचि हित वारियै॥ २४६॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० तूरहिहोंहीसखिलखोचढ़नअटाबलिबाल।
सबहिनुबिनहीशशिउदैदीजतुअरघअकाल२४७॥

यह नायकाके मुखकी शोभा अधिकायहै सोसखीनायका सोंकहति हैं। सवैया॥ हौंहो अटाचढ़िहौं शशिदेखन तूसजनी रहिआंगनही तिन॥ औरकितेक व्रतीबनिता सबदेखतचंद उदो छिनुही छिन॥ तो मुखदेख उछाहभरी सबदेहिंगी अर्घमयंक उदैबिन॥ औरनको व्रतभंग करैमतिहोहिगो पातकुमान कछूोकिन॥ २४७॥ करम अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० दियोअरघनीचेचलौसंकटुभानोजाय।
सुचतीह्वैऔरौसबैशीशविलोकेआय॥ २४८॥

नायका के मुख की शोभा सखी कहति है॥ सवैया॥ पूजि-निशाकर अरघदियो अवनीचे चलौबलि संकटभाने। औरनकी दुचिताई मिटैजिन साधउपास मनोरथठाने॥ चंदउदै इतनोमुखचंद कितैबिनवैं चितसोच समाने। वैअपने व्रतपूरेकरैं जुरहीचकि आजुरजै बरआने॥ २४८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० कहालडैतेदृगकरेपरेलालबेहाल॥
कहूंमुरलिकापीतपटकहूंमुकटबनमाल॥ २४९॥

यहनायका के नेत्रदेखि नायककी जोदशाभई सोसखी नायकासों कहतिहै प्रयोजन कि तेरी चाहहै तूचल॥ कवित्त॥ कहूं बनमाल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहूंगुंजन की मालकहूं संगसखाग्वाल ऐसेहाल भूलगयेहैं । कहूं मोर चंद्रिका लकुट कहूं पीतपट मुरलीमुकटकहूं न्यारे डारिदयेहैं ॥ कुंडल अडोलकहि सुंदर न बोलैंबोल लोचनहैं लोल मानोंकाहू हरिलयहै । घूंघटकी ओट ह्वैकै चितई की चोटकरि लालनतो ताघरीतें लोटपोट भयेहै । २४९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पियमनरुचिहवैबोकठिननरुचिहोतासिंगार ॥
लाखकरोआंखिनबढ़ैबढ़ैबढ़ायेबार ॥ २५० ॥

यहनायका शृंगार करिकै विलंब करतहै सोसखी नायकसों कहति है अथवातियको शृङ्गारदेखि याकेईर्षा भई सोसखीसों कहतिहै यतें प्रेमगर्बिताहोइ ॥ कवित्त ॥ बैठ्योकुंजसदन विलोकतिहै तुवमग तेरो नाममोहन रटतवार बारही । उठचलि हिलमिल मानिरंगरली अलौ मेरो कह्योमान अनगवति कहरही ॥ पियमन बसिकरिबे। यहकठिन अकृतनदुति सरसतिसाजैहू सिंगारही । कहैकविकृष्ण कीजैलाखकयत-न तऊ लोचन न बढ़त बढ़ाये बढ़ै बारही ॥ २५० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गहलीगरबनकीजियेसमैसुहागहिपाय ।
जियकीजीवनजेठसोंमाहनछांहसुहाय ॥ २५१॥

यहसखीको शिक्षाहै अरुजेष्ठाके भेदमेयासों नायककोहेतु अधिक जानिकै तिहूकोकहबो संभवहै ॥ सवैया ॥ अलिहौं समझावत तोहि यहैं तजिमान हहासुख देहहमें । फलक्योंनकहै बलियेाबनको मनमो हनसोंमिलि क्योंनरमें ॥ लड़बावरीपाय सुहागसमो जियतौ गुमानधरै जियमें । सबकोवह जेठमेंजीवनि मूरिसुछांह सुहायन माहसमें ॥२५१॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सघनकुंजघनघनातिमिरअधिकअंधेरीराति ॥
तऊनदुरिहैंश्यामयहदीपाशिखासीजाति ॥ २५२

यहन यका नायक सघनकुंजमें निशशंकबैठेहैं सोगुरुसखी नायकमें नायकाकी दीप्तिको वर्णनकरि शिक्षाकरतिहै अरुनायकसखी सोंकहैहै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वानायक कोनेआव अथवाकुंजमेंले चलितहाँ सखीको कहवो संभवहै ॥ सवैया ॥ वाकेसमीप नहीहूंदुरौं लखिलेत बेटूरहिं तेउपहासी । कीजैकहावसुहै कछुजो विधियाविधि दीपतिहै परकासी॥ काहूकी आंखिनमूदिन जानतहूं बलिजाऊंनहूं जेउदासी । लाऊंसकौमे अंधेरहूं मांझउजेरीजू नागरिदीप शिखासी॥ २५२ ।मरालअक्षर३४ गुरु१४लघु२०॥

दो० फूलीफालीफूलसीफिरतजुबिमलबिकास ॥
भौरतरैयाहोहुतेचलततोहिंपियपास ॥ २५३ ॥

यहनायकी सखीनायकसों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ निरखिनिकाई तेरीहौंतोहीं बिकाईबलि तूहूअलबेली कछूमेरोकहयो करैगी । तेरीतन दुतिआगें रतिनरतीकि लागै मांचीकहिकोलो ऐसोहठउर धरैगी ॥ फूली फाली फिरतसिंगार मजैसौतितेरी तिनके कुमानकहि तूधौंकब हरैगी भौरकीतरैयासमदेखियेगी प्यारीसबहिनूकरिजब तूपियाकी वारढरैगी । २५३ शृंगारअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

दो० तनभूषनअंजनदृगनपगनमहावररंग ।
नहिशोभाकोसाजियतुकहिऐहीकोअंग २५४ ॥

यहनायकाकेअंग कीस्वाभाविकशोभा सखीनायकासों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ सहजअरुणगुल फनतेंउठतछटा तिनकोनिकट कहाजावक करंगुहै । गातकीगुराई आगेकंचन के आभूषन फीकेमेलगत रंचशोभा कोनसंगु है ॥ अंजनहूंआंजेबिन नैनकजरारेदेखै खंजनअनेकन कोहोत मानभंगुहै । तोतनशृंगारकछू शोभाकौनसाजियतु अबैअजानअहवातही कौअंगुहै ॥ २५४ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बेंदीभालतमोरमुहसीससिलसिलेवार ।
दृगआंजैराजैखरीएहीसहजसिंगार ॥ २५५ ॥

यहनायकाकी सहजकी शोभासखी नायकसोंकहतहै ॥ कबित्त ॥ केशरकेबेंदी भालमोह मधिराजत हैंसूरंग कपोलतिल सोहतअपारहैं । पानभरेआननकटाक्ष दृगकाननलौंमोहै कचश्याममख तूलकेसेतारहैं ॥ बेसरको मोतीछबि नेहउझकावनको भरमसुकबिअंगअंग सुकमारहै ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लाखहीकीचूरीयह लाखनुलहतिअरु सादगीकीसादगी सिंगारकोसिंगार है २५५ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० खरीपातरीकानकीकौनबहाऊबान।
आककलीनरलीकरैअलीअलीजियजान २५६॥

यह नायकाकी अन्याशक्तिजानि नायकके मनमें भ्रमभयो है सखी निवारनकरत है ॥ सवैया ॥ बोलसिरोरुख बंधननाहिनैगंध सुहातन गंधफली को। आरतिमालतिकीनर तोलबलेसनभावत है लवलीको ॥ बारही दूषन दैनवकै वसिकौन कहाऊंकै नैरकली को ॥ माधुरी की मधुराई बंध्योनचलैचित अंकाकी ओरअलीको ॥ २५६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तोरसराच्योऔानबसकहैंकुटिलमतिकूर।
जीभनिबोरीक्योंलगैबौरीचाखिअंगूर ॥ २५७ ॥

नायकाकी अन्यशक्तिनिश्चय जानिनायका सखीसों कहैता सखीभू मुनिवारनुकरतिहै ॥ सवैया ॥ तेरोहीध्यानधरैं नंदनंदनकाननहूंसुनेतेरी कथाहै। तोरसरंगमेंपागि रह्योनिशिबासरतेरोई रूपसराहै ॥ ताहितूऔर सोंराच्योकहैकहि मोसोंहहामन आयकहाहै। बावरीदेखु बिचारहिये कोउदाखहिंखयनिबोरहिचाहै ॥ २५७ ॥ मंडूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ नायककीचेष्टा ॥

दो० डोरीलाईसुननकीकहिगोरीमुसकात।
थोरीथोरीसकुचसोंभोरीभोरीबात ॥ २५८ ॥

नायका प्रौढानेनायक की चेष्टादेखी है सोसखीसखी सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ जादिनतेवहसांवरों नैनसोंनैनमिले मुसकायगयोहै। तादिन तेंकबिकृष्णकहैं मनवाहीकेहाथ बिकायगयोहै ॥ थोरीसीलाजगहैहित चोकनीभोरीसी बातबनायगयो है। काननकोअबवे बतियांसुनिवेहीकी डोरीलगाय गयोहै। २५८ बारनअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जौलौंलखोंनकुलकथाबिकसौलौंठहराय।
देखैआवतदेखहीक्योंदूरह्योंनजाय ॥ ३५९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायकाप्रौढ़ा अपनीदृढ़ता सखीसोंकहतिहै अरुनायकाकोस्वरूप ऐसोसुंदर है॥ जुदेखतेक्योंहूंनाही रह्योजातुनायका को बचनसखीसों सखी कोवचननायकासोंसंभवहै कितोहिदेखत नाहीं तौलौंकुल कथा दृढ़देखेतेक्यौंहूंरह्योनजायगो ॥ सवैया ॥ जोलौंनडीठिपरैमनमोहनहौं न बदौंसखितौलौंसयानहि । ठीकजुठानि पतिव्रतकौकरिलेकुलकानकथा के बखानहिं ॥ लोचनक्योंहूं नरोकेरहैं जबदेखतिवामृदुमूरति कानहिं । देखेबिनानरह्यौपरै कैसेहूं मेरोकह्योकिनसाँचकैमानहिं॥ २५२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ लघु २४ गुरु १२ ॥

दो० रहनसक्योकसकररह्योबसिकरलीनौमार ।
भेददुसारकियोहियोतनदुतिभेदीसार ॥ २६० ॥

यहनायकाकी तनदुति सखीनायक सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ राधिका रंगभरीको मनोबिधितीनहूं लोकको रूपदियोई । ताहिअली अबलोकतही बियनैनन प्रेमपियूष पियोई ॥ यद्यपिकेतो रह्योकसकै धरिकैअतिधीरजमेरो हियोई । तद्यपिबातन कोदुति भेदकसारने भेददुसार कियोई ॥ २६० चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ नायकाकोबचननायकासों ॥

सो० तोतनअवधिअनूपरूपलग्योसबजगतको ।
मोदृगलागेरूपदृगनिलगीअतिचटपटी॥२६१॥

यहनायकाके रूपसों नायकके नेत्रलगेहैं सो अपने नेत्रनकी तलफनि कहतिहै नायकको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ सुंदरताको तुही परमावधितैं रतिकोदुति पायतुपेली । कोरमनी रमनी पतिहूपुरराधिके तो समहोय जुहेली ॥ तोतनसोहै लुनाईको खानिलग्यौ तिहूलोकको रूप नबेली । त्योंतिहरूप लगेममनैन लगीममनैननित्यों तलबेली ॥ २६१ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ आलंबनिभाव

दो० गलीअंधेरीसांकरीभोभटभेराआन ।
परेपिछानेपरसपरदोऊपरसपिछान ॥ २६२ ॥

यहअंधेरीगलीमें जाभांतिभेटभईसोसखीसखीसोंकहतिहै संपरस्परका पहिचानिबोदोउनको आगम मिलापहै यहव्यंगनायका परकीया ॥ सवै-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

या ॥ रैनअंधेरीघने घुमड़ेघन भूमिमहातम पुंजछयेहैं । तैसीयेसांकरी लावीगली भटभेरअचानक दोऊभयेहैं ॥ गातसोंगातही लागतहीजियजानि गयेजपटाय गयेहैं । राधिकामाधोजू माधोजूराधिका आपहीतें पहिचान लयेहैं ॥ २६२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० उयोशरदराकाशसीकरतक्योंनाचितचेत ।
मनोमदनक्षितिपालकोछांहगीरछबिदेत ॥२६३ ॥

यहमानवती सोंसखीकोवचन नायकासोंमान छुड़ायबेको प्रयोजन ॥ सवैया ॥ बलियाजु सुहानीराका कीरैनिबिहार, समोसुख साजतहै । वहदेखरी इंदुउदोतभयो अरुनाईगहै छबिछाजतुहै ॥ अबलोकत नाहि रिसैलतियान कोमानकहूं डर भाजतहै । यह मानोमंजु महा क्षितिपाल कोमानिकछत्र बिराजतहै ॥ २६३ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० डिगतपानडिगलातगिरिलखिसबब्रजबेहाल ।
कंपकिशोरीदरशकेखरेलजायेलाल ॥ २६४ ॥

यहसात्विकभाव सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ लोप्रसुन्यौबलि कैमघवातब कोपिकैमेघ सबैमुकलाये । गोधनकान्ह धरोतबहीं सबकेउर केभयभूरि भगाये ॥ पानडरेडगु लातलख्योगिरि लोगसबैब्रजके अकुलाये गोरीकिशोरी निहारिकै कंपतिगात खरेनंदलाल लजाये ॥ २६४ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सुरतिनतालनतानकीउठ्यौनसुरठहराय ।
येरीरागबिगारिगोबैरीबोलसुनाय ॥ २६५ ॥

यहसात्विक भावनायकाको बचनसखीसों अरुसखीको बचननायकासोंहोयको लक्षितासखी सखीहूसोंकहै तोसंभवहै परकीया ॥ सवैया ॥ लैकरबीन प्रबीनतिया सुरसाधिकैगानकौठाटठयोहै । द्वारपैआयकै ताही समैमनमोहनकाहू कीनाचलयोहै ॥ तानकहूं अरुतालकहूं सुरतोकछू औरतें और भयोहै । बैरी अचानक बोलसुनायकै नंदको राग बिगारि गयोहै ॥ २६५ ॥ शार्दूलअक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० ध्यानआनढिगप्राणपतिमुदितरहतिदिनराति ।
मुलकिकपतिपुलकतिपलकुपलकुपसीजतजाति २६६

यहनायकाबिरहनी ध्यानकरमिलेसे तवहीसात्विक भावहोतहैसोसखीसखीसोंकहतिहै सखीनायकासोंकहै तौहूसंभवहै ॥ सवैया ॥ वा हरिकेबिछुरेगति ऐसीभईसुबखान कहांलगकीजै । ध्यानही ध्यानमेंचंद मुखीमिलिप्रानपिये रसरंगमेंभीजै॥ रैनदिनारहैमोदभरी वहैकोहैबियोग निक्योंतनछीजै ॥ कंपितह्वैकबहूललकैं कबहूपलकैंकबहूं कपसीजै २६६ मदकलअक्षर ३१ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० स्वेदसलिलरोमांचकुशगहिदुलहीअरुनाथ ।
हियोदियोसंगसाथकेहथलेवाहीहाथ ॥ २६७ ॥

यहबिवाससमय दोउनकेअतिसनेहके आधिक्यातें सात्विक भावभयो सोसखीसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ मंडपमंडलतीरथ साधिकैवेटविधान सोंदानदियोहै । स्वेदभयोसोईनीर नयोउलहैफलकै कुसपुंजलियो है ॥ मैनमुनिंदप्रयोगपढयो रतिकोलहिये अभिलाषकियोहै ॥ दोउनलों अपनो अपनो योहियोहथलेबाई हाथ दियोहै । २६० पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्योआंचअतिबिरहकीरहेप्रेमरसभीज ।
नैननकेमगजलबहैहियोपसीजपसीज २६८ ॥

यहनायका अथवानायक वियोगतें असुवा बहतहैतिनको उत्प्रेक्षा करतहैसखीसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ जादिनतेंब्रजनागरिकोमननंदकिशोरकेनेहनच्योहै । आंचतच्यो बिरहानलको हितकोरस मेंअतिभीजि रच्योहैतामेंतरंगउमंगउठयो तेहिऊपरप्रेमानुरागरच्योहै तातेंपसीजपसीजि हियोबियनैननकेमगनीरबच्योहै॥२६८ ॥मरालअक्षर३४गुरु१४ लघु २० ॥

दो० मैयहतोहीमेंलखीभक्तिअपूरबबाल ।
लहिप्रसादमालाजुभौतनुकदम्बकीमाल २७९॥

यहसात्विकभाव सखीकी वचन नायकसों परकीया लक्षिताहोय ॥ सवैया ॥ कोरिकयारिन प्रेमगरेरंगलालनके रंगलालभईहै । कोनेछ-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कीछविदेखिगुपालको कोवनितान बिहालभईहै ॥ मैनिरखीयहतोतन-आजअपूरबभक्ति रसालभईहै । मालप्रसादकीपावत हीसबदेहकदंबकी मालभईहै ॥ २६६ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकउतैउठिबैठिएकहारहेगहिगेहु ।
छुटीजातनुहदीक्षिनुकमहदीसूकनदेहु ॥२७० ॥

यहनायकको देखिनायकाको सात्विकभाव भयोहै सो सखी नायक सोनिवेदनकर तहैनायकाहूसनेहके आधिक्यतेनायकसोंकहतिहैं ॥ **सवैया** ॥ आजलोंकैसेहूं जानिपरीनचली जबते रसरीतिचला । देखितुम्हैं उमग्यो अबहीकर पल्लवछोरन स्वेदजला ॥ बैठहुनेकइतैउठि कैउघरी यहआवतिप्रेमकला । जातछुटीअबही नुहदीमहदीछिनु सूकनदेहुलला ॥ २७० मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पहरतहीगोरिहिगरेयोंदौरीदुतिलाल ।
मनोपरसिपुलकितभईबोलसिरीकीमाल२७१ ॥

यहनायककीमालास्पर्शतेनायकाके सात्विकभावभयोहैसोसखीनायकसोंकहतिहै ॥ **कवित्त** ॥सौरभसहित चुनिचुनिकैकुसुमचारु अपनेकरन मनमोहन गुहीबनाइ । मैतौजायदीन्हीउन लीन्हीअतिआदरसोंपहिरी हियेमें प्रानप्यारी हितसरसाइ ॥ कृष्णप्रानप्यारे के गोरेगोरे ताहिंपन उपजीनबल दुतिरही ऐसो छबि छाइ ॥ मेरेजानि लालबोर सिलीकी ललितमाल पुलकितभई वाकेतनको परसपाइ ॥ २७१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हितकरतुमपहियौंलगेयाबिजनाकीबाय ।
टलीतपतितनकीतऊचलीपसीनौन्हाय ॥ २७२ ॥

यहनायकके बीजनाकी बयारलगे नायकाके सात्विकभाव भयोसोसखीनायकसों कहतिहै ॥ **सवैया** ॥ मोरपखोउनको रुचिकै हितकेपठयो तुमप्यारे बिहारी ॥ ताहिबिलोकतही तियकी तनताप टरी उमग्यौ मदभारी ॥ हौं तोबिलोकि अचंभेरही अबलौंनकहौं गतिऐसीनिहारी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाबिजनाको बयारलगेवह न्हायपसीनाके नीरमेंनारी ॥ २७२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सहितसनेहसंकोचसुखस्वेदकंपमुसकानि ।
प्रानपानकरिआपनेपानधरेमोपानि ॥ २७३ ॥

यहनायकाको पानदेत नायकाके सात्विक भावभयो अरु नायकके प्रान वा बिहसनि को देखिबाकेबस भयेसो सखीसों नायक कहतहै ॥ सवैया ॥ वा मृगलोचनिके सबअंग अनंग बिलास बसो करहेरे ॥ स्वेद संकोच सुनेकबिकृष्ण सनेहभरे सुखपुंजघनेरे ॥ कंपतगात कछू मुसकात चढ़ायकैभौंह बिलोचनफेरे ॥ मोकरपान दयोहितसों उनप्रानलये अपने करमेरे ॥ २७३ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहबसंतनखरीअरीगरमनशीतलबात ।
कहिक्योंझलकेदेखियतपलकपसीजेगात २७४॥

यह सात्विक भाव देखि सखीनायकसों कहतिहै परकीया लक्षिता जानिये ॥ कवित्त ॥ सोहत समान मे यह तो बंसतऋतु नाहिनै गरम अरुशरीरकनि अतिहै ॥ कहैंकवि कृष्ण बलिहम सोतो सांचीकहि काहेतें छबीलीभई तेरीऐसीगतिहै ॥ कबहूंतपत गातकबहूं पुलक होत कबहूं पसीज आवै कबहूं कंपतिहै ॥ जानिहेरीजानी हितसानीअरगानी रहि देखिदधिदानी प्रेमरसमें पगतिहै २७४ ॥ मच्छअक्षर ४१गुरु०लघु ३४॥

दो० ऊंचेचितैसराहयतुगिरहकबूतरलेत ।
झलकतदृगमुलकतबदनपुलकितहैकिहिंहेत २७५

यह नायकको कबूतर देखि नायकाको सात्विकभाव भयोसो सखी नायकासों कहतिहै परकीया लक्षिता ॥ कबित्त ॥ अंबरमें शोभासाजि उड़तकपोत येतौ बाजीकरैरंगमें गिरह आछी लेतहै ॥ तिन्हें सबैकोऊ नैन ऊंचेकर चाहत है रीझरीझ सुघर सराहत सहेत है ॥ चाहिबो सराहिबो बिसरिगयो तोहि प्यारी देखतही देखिरहीतेरे चितचेत है ॥ झलकतनैन मुलकितहैं अधरतेरे साचीअंग पुलकतुमो किहहेतहै ॥ २७५ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० रहौगुही बैनी लखैं गुहि बेकेत्यों नार।
लागेनीर चुचानजे नीठ सुकाये बार॥ २७६॥

यह नायक सखी भेद ह्वै कै नायका को शृंगार करनलागी बेनी गुहति सात्विक भाव उपज्यो सब नायका ने जान्योनेा नायक सेा कहतिहै॥ सवैया॥ गोपीको बेष बनाय गुपालू श्रीवृषभान सुता ढिग आये॥ हौंसजिजानत नीकेसिंगार कहैातुकरौं कहि बैन सुनाये॥ बेनीगुहावत प्यारीगह्यो सुघरायइतै कितते तुमआये॥ नीर चुचानलगे अबही सटकारे से बार जेनीठि सुकाये॥ २७६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० राधाहरिहरिराधिकाबनिआयेसंकेत।
दंपतिरतिबिपरीतसुखसहजसुरतहूलेत॥ २७७॥

यह लीला हावभाव रति विपरीत समय सखी सेांकहै॥ कवित्त देखिरेजोदेह ह्वैएक मनएक प्रानरूप शील बैसगुन चातुरी समेतहैं॥ जैसेदोऊ सांचेढरेचेरगटी तरंगमन आजलौंन देखेकहौ ऐसेहियहेत हैं॥ राधामाधो माधोराधा अदलबदलबेष बनिबनिआयेकेलि केलिके निकेत हैं॥ कहैंकविकृष्ण दोऊसहज सुरतिकरि रतिबिपरीतके बिबिधसुखलेत हैं॥ २७७॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ११ लघु ३०॥

हो० तजीसंक सकुचनिरहतिबोलतअतिबकुबाकु।
दिनछ इछाकीरहतिछुटतनछबिकीछाकु २७८॥

यह नायका को छबिका गर्वहै सेा सखीसखीसों कहतिहै मदहावजो नायककी छवि कोछाकुसखीकहै तोलक्षिताहोय॥ सवैया॥ कछुबूझत बातही ऊतरदेतनलाइ टकी अनमेषतकैं॥ अरकानि करैंनअलीनहूं की तजिलाजभरीखनि ह्वै उझकैं॥ सबशंकतजी सकुचैनहिये मुंहआवैसबाकु कुबाकुबकैं॥ रहैरैनदिना बृषभानसुताछबि छाकछकी नछिनौं उछकैं॥ २७८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० रहीदहेड़ीढिगधरीभरीमथनियांबारि।
फेरतकरउलटीरईनईबिलोवनिहारि॥ २७९

यह नायकाको बिभ्रमदेखि सखीनायक सों कहतिहै सखीसखीहूसों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहैतौहूसंभवहै ॥ सवैया ॥ पासदहेंड़ी धरीयेरचीजलसों भरिकैतुमघा-नीलईहै ॥ थंभसोंनेतोलिपटेदईउलटीकर फेरततामेरईहै ॥ मोहिंतोलागात नीकोमहाउर पूरनप्रेमको रीतिठईहै ॥ सांवरी मूरतिकी रिझवार नईतू बिनोवन हारभईहै ॥२०६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कुट्टामत

दो० लहिसूनेघरकरगहतादिखादिखीकीईठि।
गडीसुचितनाहींकरतकरललचौहींडीठि ॥ २८०

॥ यह सुरतांतरसमैं नायकाकी जोचेष्टादेखी सोनायकसखीसों कहतहै परकीया कुट्टामत हाव ॥ सवैया ॥ देखाही देखीकीईठ अचानक डीठ परी अकलीगृहमाहीं ॥ साहसकै अपनेउरमें अति मोडिगजाय लईगहि बांहीं। लैसिसकीझहराईकरै उनतेछननैनकिये चहुंघाहीं ॥ कैललचा-वनडीठिकरी वहनाहींयेनटरै अबनाहीं ॥ २८० ॥ वारनअक्षर ३० गुरु १० लघु २० ॥

दो०हरषिनबोलीलखिललननिरखिअमिलसंगसाथ ॥
आंखिनहींमेंहंसिधरयोशीषहियेधरिहाथ॥ २८१

यह बोधक हाव नायका प्रौढ़ा परकीया नायककी देख चेष्टाबनीसो सखीसों सखी कहतहै ॥ सवैया ॥ जखल साथिमें देखिगुपालहिं गोप कुमारकरी चतुराई ॥ बैनकछूनकहे मुखतेंलखि फूलीमनो निधिनवनिधि पाई ॥ हाथपस्यो हियपैपहिलेपुनि शीषछुयो रसरीति बढ़ाई ॥ आंखिन हींमें कछूबिहसी पियको जियको सबबात बताई ॥ २८१ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लखिगुरजनाबिचकमलसौंशीशछुवायौइयाम ॥
हरिसनमुखकरिआरसीहियेलगाईबाम ॥ २८२ ॥

यह नायका परकीया प्रौढा दुहुनजोचेष्टाकीन्ही सोसखीसखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ आजदुहू मिलिकै सजनी कछुसैननहीं समझ्यो समझायो ॥ गोरीलखीगुरनानमें सरसकहोसिरश्याम छुवायो ॥ सोल खिकै बृषभानसुता दियोऊतरभेदनकाहुनपाय कृष्णकहैंहरिकेसमुहै कर दरपन बामहियेसो लगायो ॥ २८२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० किल किंचित ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० सुनिपगधुनिचितईइतैन्हातदियेहींपीठि ॥
चकीझुकीसकुचीडरीहसीलजीलीडीठि ॥ २८३ ॥

यह नायका जासमैं नायकने देखी तासमय की जोचेष्टा उनकीसो नायकसखीमें कहतहै ॥ सवैया ॥ कामकीबामहूं तेंअभिराम लसैं दुति यैबनकी रससानी ॥ न्हातहीपीठ दियेअकिली सकिली धुनिमो पगकी पहिचानी ॥ जाछबिसों चितईयहिं औरसुकैसेहूं मोपै न जातबखानी । चौंकीचकी सकुची डरपी करिडीठिलजौहीं झुकी मुसकानी ॥ २८३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बालमबारेसौतिकेसुनिपरनारिबिहार ॥
भौंरसुअनरसरिसरलीरीझखीजइकबार ॥ २८४

यहनायककीबहु नायकतासुनिकै नायकाकेदुःखभयौ सोसखी सखी सोंकहति है सवैया ॥ बैठीसखीजुसमाजमें प्यारीसिंगारकेसाजन सों सर मानी । काहूकहीतुबसौतिके बासरेआनिबधू केगयोदधिदानी ॥ सोसुनि कैकविकृष्णकहैं रहसीबिलखीहुलसीउकलानी ॥ एकहीबेरलखीमृगलोचनिरीझिखीजी मुसकानीरिसानी ॥२८४॥ मरालअक्षर३८गुरु१०लघु २८

दो० पतिरतिकीबतियांकहीसखीलखीमुसकाय ॥
करिकैसबैटलाटलीअलीचलीसुखपाय ॥२८५ ॥

यहनायकानायकसोसुरतारंभसमयजानिसखी कछूमिसकरिउठिचली सखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ चौपरिखेलखगीबनिता व्रजराजबिलोकतहीललचानो । सैननमेंकछुकेलि कलोलकीबातकहीमनमेंन भुलानो प्यारीअलीनकीओर लखीहसियोंरस भावहियेसरसानो ॥ देखिसबैसुखपायचलीअपने अपनेगृहऊठि मुठानो ॥ २८५ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० लखिदौरतपियकरकटुकबासछुडावनकाज ॥
बरुनवनागाढ़ेदृगनरहीगुढ़ौकरिलाज ॥२८६ ॥

सवैया ॥ रतिमंदिरमें नवनागरिकान्ह मिले रसरंग हियेदरिकै ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दलुदौरतदेख्यौ तहांप्रियकोकरुबास छुड़ावनकोकरिकैं ॥ कविकृष्णकहैं ठहरातहांनसकी रहिधीरजकोधरिकैं ॥ गहिओटघनेवरुनी वनकीरहीं नैननलाजगुढ़ैकरिकैं ॥ २८६ ॥ सार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० सकुचिसुरतिआरंभहीबिछुरीलाजलजाय ॥
ढरकिढारदुरढिगगईढीठभईढिगआय॥ २८७॥

यहप्रौढ़ानायकाकीसुरतसखीसखीसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ अतिअभिरामश्यामरतिमंदिरमें बिहरतिलंग अनंगरंगभरिकै। नखदानरददानचुंबनअधरपान आलिंगनकरत अनेकभायभरिकै॥ सुरतकेआरंभहीलाजवतीसखीनिपटलजाय जियगईकहूंढरिकै। ढाढ़सुहियेमेंगहिनिधरकहूंलजकैआय ठाढ़ीभईनिपट ढिठाईढीठढरिकै॥२८७॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भौंहनत्रासतिमुहनटतिआंखनसोंलपटाति ॥
ऐंचछुटावतकरइचीआगेआवतिजाति ॥ २८८ ॥

यहसुरतारंभके समयप्रौढ़ानायकाकी जो चेष्टाहै सो सखीसों कहतिहै नायकसखीसोंकहैतौहूंसंभवहै ॥ कवित्त ॥ प्यारेपानगह्योआनि भौनमेंअकेलीजानि नैननचढ़ायकैसलोनीसासेरतहै। नैननहसोंहीं डीठि राखतसोहै मुसकायकैलजोहीं अंगअंगठहरातहै ॥ भयेमनभायोज्यों सुरसुखपायोहिये आनंदनबढ़ायोनेकनेकनिहरातहै। झटकिछुटावैबांह मिल्योचाहै मनमांहकरैं नाहींनाहींयाही मिसनियरातिहै ॥ २८८ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० दीपउजेरेहूपतिहिंहरतिबसनरतिकाज ॥
रहीलपटछबिकीछुटननेकीछुटीनलाज॥ २८९॥

यहसुरतवर्णन नायकके तनकीछबिको अधिक सखीको बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ तैसोप्रकाशरति मंदिरकेदीपनकोतैसोहीं समूह जगमग तरतन को। तैसोयेसुधानिधिसे मुखकी निरखिजाति मोहनके मनभाव उमग्योअतनको ॥ प्रीतमबिहारी लाल लेबेको सुरतसुनि निजकरबसन झटकिहरयोतनको। छबिकीछटान हींसोंरहीलपटाय राधे मानोउनहून

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कीछूटी नलाजतनकी ॥ २८६ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२ ॥

दो० यद्यपिनाहिंनहींनहींबदनलगीजकजाति।
तदपिभौंहहांसीभरिनुहांसीहियठहराति ॥२९०॥

यहसुरतारंभनायका प्रौढासखी कोबचन सखीसों ॥ सवैया बैठी सिंगारसजेवृजनारि अचानकमोहन आयोतहांहीं। पानिगह्योअबिलोकि अकेलोअलौकिककेल कलाचितचोहीं ॥ यद्यपिबानच नागरिकेमुखलागी यहैजकनाननानाहीं। तद्यपिहांसीभरी भृकुटीनमेंबीसबिसे ठहरात हैनाहीं ॥ २९० मच्छअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

दो० चमकतमकहांसीससकमससझपटलपटानि।
येजिहरतिसोरतिमुकतिओरमुकतिअतिहानि॥२९१॥

यहसुरतवर्णन नायककी बचन अथवा कविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ किलकिनमुलकिनहेर निहारनुचितुचमकति झमकतिधनिमुसकानिहै ॥ लसनिमिलनि आरसभरी कसकनिससक मसकझपटानि रुखदानिहै ॥ लटकनिमटकनि दुरनिमुरनिकलि कुंजनिललनि ललकनि लपटानिहै ॥ ऐसोरीतिरतिसोई मुकतिकहावतिहै मुकतकहावैऔर सोतोअतिहानिहै ॥ २९१ ॥ चिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥ सुरतांत वर्णन ॥

दो० सकुचिसरचिपियनिकटतेंमुलकिकछुकतनतोरि।
करआंचरकीओटहवैजमुहानीमुहमोरि ॥ २९२॥

॥ यहसुरतांतनायका प्रौढासखीकोवचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ केलि कलाकुशल कुरंगनैनी पिकबैनी जाकीछबि परसौति वारिएकोरिकै ॥ सैनसोपामोअनुरागी पतिसंगजागी मैनकेबिलासन सों लेत चितचोरिकै ॥ सरकीसकुचिमन मोहनकेनिकट कछुक मुलकी अंगरानीतन तोरिकै। शोभावहमोपैक्योंहूं जातनवखानीकर अंचरकीओटजमुहानो मुंहमोरिकै ॥ २९२ चिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०

दो० लखिलखिआखियांअधखुलनआंगमोरअंगराइ।
आधिकउठिलेटतिलटकिआलसभरीजंभाइ॥२९३॥

यहसुरतान्तनायका प्रौढासखीकोवचनसखीसों॥ कवित्त॥सैनसुखपा-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गाअनुरागीहरि संगजागीशोभा सरसानीअरसानीजमुहातहै । बिथुरीअलकझुकीआवतपलकै मनमथकोझलकैअतिरसबरसातहै ॥ ललितकपोलपैलसतनीकीपीकलीक दोऊभुजजोरीमुहमोर जमुहातहै ॥ अधखुलीआंखिनसोंआलीतन अबलोकि आधीउठि सेजहीलटकिलटि जातहै ॥ २९३ ॥ करमअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नीठिनीठिउठिबैठिहूंप्योप्यारीपरभात ।
दोऊनींदभरेखरेगरेलागिगिरजात ॥ २९४ ॥

यहसुरतान्तनायका सखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ वृषभानलालीब्रजराजलालरति संगरमेंनिशिसंगजगे । कविकृष्णकहैंकुल कामकलाबहुभायबिलासहियेउमगे ॥ उठिबैठिनिमेजपै नीठितऊउठिपै नसकैअति प्रेमपगे । अतिनींदभरेसरसातखरे बहुरयोंगिरजात गरेहीलगे ॥ २९४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रंगीसुरतरंगपियहियेलगीजगीसबराति ।
पैंड़पैंड़परठठाकिकैऐंड़भरीएंड़ाति ॥ २९५ ॥

यहसुरतांतसखी कोबचनसखीसों जोसखीनायकसों कहैतोलाचता। हाय॥ सवैया ॥ सबरैनजगीहरिकंठ लगीरतिरंगरंगी अलसातखरीहै - डगएकचलैफिरिकै चितवैमुरिकैअंगरात मरोरभरे है ॥ बिथुरीअलकैंझलकैंअमवारिझुकीपलकैं मुखढारढरीहैं । लगिपीकीकीलीकिकपोलननीकलसैअतिसारी सलोटपरीहै ॥ २९५ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यौंदलमलियतनिरदईदईकुसमसोगात ।
करधरदेखोधरधराउरकोअज्योंनजात ॥ २९६

यहनायका सुरतसमैमर्दित अतिबिकल भईहैसोसखी नायकसों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ सुखहैंसखीनविच दैकेमोहधायकैखवायकछु चाइबर कोनीबसुबसुहै ॥ कोमलमृनालिकासो मल्लिकाकी मालिकासो बालिका जुड़ाहीं मंडिमानसकिपसुहै ॥ जानेनबिभाति भयेकैसेबसुनेकोबात देखो आयगातजात भयोकिधौंअसुहै ॥ चित्रसोजुराखी यहचित्रनो बिचित्रगति कहौ नयेरसिकधौंयामें कोनरसुहै ॥ २९६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११लघु २६॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० लहिरतिसुखलगियेहियेलखीलजोंहींनीठि।
खुलतनमोमनबंधिरहीवहैअधखुलीडीठि॥ २९७

यहसुरतांत नायकाकी बचन सखीसों॥ सवैया॥ केलिकला सुख झेलिप्रभात लसीपर्य्यंक पैराधिका प्यारी॥ अंकलगी तऊनाज पगी रही नारिनिवाय महाछविधारी॥ सोहैंचितैवेको मोहुहव्योतब नैंसकभौंहउचायनिहारी॥ सोवनिदीअंखियां अधखोलीचितौ नहियेतटरै नहींटारी॥ २९७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० बिनतीरतिबिपरीतकीकरीपरसपियपाय।
हंसिअनबोलेहीदियौऊतरादियौबताय॥ २९८

यहरति बिपरीति है सोसखीको बचनसखीसों॥ कबित्त॥ केलिकला कुशलकुरंग नयनीकेअंग अंगकोनिकाई दुतिरतिको रतीकरी॥ बहिरत अंतरबिहरेबिहरे बिबिधि मदन महीपकी बिभूतबढ़तो करी॥ तैंहींरति मंदिरमें राधेके परसपगि रतिबिपरीतको पियारेबिनती करी॥ प्यारीमुसकाई चनबोलैंही बतायो दिया प्रीतमकेजीकी चाहयाहीमें सहीकरी॥ २९८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० परयौजोरबिपरीतिरतिरमीसुरतरणधीर।
करतकुलाहलकिंकनीगह्योमौनमंजीर॥ २९९

यह बिपरीत वर्णननायका प्रौढ़ा सखीको बचनसखीसों॥ सवैया॥ श्रीवृषभान सुतातन योबन जोतिजगे रतिलाजनलागी॥ भौंह बिलासनिहासनिकै हरिसाजनको सुखसाजनलागीं॥ धीरमहा रति संगरमेंबिपरीतरची रतिराजनलागी॥ मौनगह्यौ बिछयांनतहो रसनारसही रसवाजनलागी॥ २९९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० मेरीबूझतबाततूकतबहरावतबाल।
जगजानीबिपरीतरतिलखिबिंदुलीपियभाल३००॥

यह नायका प्रौढ़ारति बिपरीतकीनी सखीसोंदुरावतिहै सोप्रवीनसखी जानिलई सोनायक सों कहतिहै॥ सवैया॥ हौंहिंतूकै बलबूझत हूं तू बहरावत बातहो मेरी॥ पून्योंको चंद उदोतकरेतब कैसे दबैकिये ओट

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अंधेरी ॥ तैहंरिसोंबिपरीत करीरतिक्यों दुरिहै अबतौ हमहेरी ॥ नीकी है जानिपरीसबको पियभाललखी बिंदुली तियतेरी । ३०० ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरू ७ लघु ३४ ॥

दो० रमनकह्योहठिरमनसोंरतिबिपरीताबिलास ।
चितईकरलोचनसतरसगरबसजलसहास ॥३०१

यह नायकने रतिबिपरीतकी बातसुनाईने चितवनमेंचेष्टा कीनीसोसखीसखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ वृषभान सुता नदनंदलला रसकेलि कलानप्रवीण खरे ॥ रतिमंदिरमें अतिप्रेमपगे रतिकंतविलासके रंगढरे ॥ रतिकी विपरीतकरैं रमनी हंसियौंजब प्यारे निहोरकरे । तबप्यारी किये लखिनैन तिरीछे गुमान भरी अरुलाज भरे ॥ ३०१ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरू ११ लघु ३० ॥ सखीनको लखिबो ॥

दो० पढ़कीढिगकतढांपियतसोहतसुमगसुभेष ।
हदरदछदछबिदेतईहसैदरदकीरेष ॥ ३०२ ॥

यहसुरतिको चिन्हनायका दुरावति है ॥ सोसखी नायकासों कहति है ॥ सवैया ॥ आजभटूरतिरंग के मंदिर तू मनमोहन केसंगजागी । केलिविलासनि केबड़िभागिन तैंरिझयोफल लेअनुरागी ॥ ढाँकतक्यों पट कीढिगसों अतिसोहति चारुप्रभान सोंपागी । देतमहाछबि कीहदयौंयह रेखरदच्छद कीसदलागी ॥ ३०२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

दो० आजकछूऔरेभयेठयेनयेठिकठैन ।
चितकेहितकेचुगलयेनितकेहोहिंननैन ॥ ३०३ ॥

यहनायका केनेत्रसुरत चमकतदेखसखीनायकसों कहै तोसळताहोय नायकासोंकहै तोखंडिता ॥ सवैया ॥ आलसकेरसमें बिंधकेरंग लाल केरंगसुरंग भयेहैं । देतकहैंचितके हितकोचुगली ठिकठैननयेई ठयेहैं ॥ निंदतहैं अरबिंदप्रभा अनुरागपराग मेंपागिगयेहैं । हेाहिंनयेतिनके सजनी दृगआजअपूरब ओपछयेहैं ॥ ३०३ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

दो० सुरतदुराईदुरतिनहिंप्रगटकरतरतिरूप ।
छुटेपीकऔरउठेलालीओठअनूप ॥ ३०४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहसुरतकेचिन्ह देखसखीनायक सोंकहतिहै ॥ परकीयाजो नायका सखीसोंकहै तोअन्यसंभोग दुःखिताहोय ॥ सवैया ॥ भूषणचारु बनाय सजे कचफूलगुहे रुचिआड़बनाई । होतकहापलटैं पटराधिकेलोक कपो लन पोंछिकैआई ॥ देतकहैरति रंगकीभांति अनूपमकांति दुरैनदुराई । पानकीपीक छुटैअधरान पैऔरकछू प्रगठीअरुणाई ॥ ३०४ ॥ मङ्गल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोसोंमिलवतिचातुरीतूनाहिंभानतभेउ ।
कहैदेतयहप्रगटहींप्रगट्योपूसपसेउ ॥ ३०५ ॥

यहनायका श्वेतलक्षिसखी सुरतभयोजानि कहतिहै लक्षिताजानिये ॥ सवैया ॥ आजपगीसुख पुंजमेंप्यारी निकुंजमेंकेलि करीमनभाई । पीकगईछुटि ओठनपै प्रगटीमुखमंडलपै अरुणाई ॥ भेदकीबात कहैकिन भामिनी मोसौंचलावत क्योंचतुराई । तोतनदेतकहै प्रगटैयह पूसकेमास पसेउमेंन्हाई ॥ ३०५ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नटिनशीससाबितभईलुटीसुखनकीमोट ।
चुपकरियेचारीकरैसारीपरीसरोट ॥ ३०६ ॥

यह नायका लक्षितामरगजो सारीदेखि सखी नायकासों कहति है ॥ कबित्त ॥ रसकीउमंगभरी रंगभरीसोहतिहै अंगकीशिथिल द्युति अमिजलछाईहै । भ्रूमतिभ्रुकति अंगरातिजमुहाति मुसकाति अरसाति सरसात्यों मुनिकाईहै ॥ मोटेलूटी सुखकीप्रगटभई तेरेसीसक्यों तूमुकरति मनमथकी दुहाईहै । चुपक्योंनकरै बलियेईतोकरत चोरीजेतूआज सारी में सरोटपारि आईहै ॥ ३०६ ॥ मरालअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मोहिंकरतकतबावरीकियेदुरावदुरैन ।
कहेंदेतरंगरातकेरंगानिचुरतसेनैन ॥ ३०७ ॥

यहनायकाके नेत्रदेखिसखी कहैतोलक्षिताहोय । जोनायकके बिधमाननायकको सखीसों नायकाकहै तोखंडिताहोय । कबित्त ॥ सुरति के चिन्ह चतुराईसों लुकायोतनभूषण बनायसजेबसन तुरतहै । कृष्णप्राण प्यारेकेसनेह सरसानीतातैं गातअरसानेरस रमागढ़ुरतहै ॥ काहेकोसया

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नं मोहिंबावरी करतअबकियौ तैंदुराबकाहिकैसे कै दुरत है। प्रगटपुकारै रंगरातकेकहत येतोलोचन युगुलमानेरंगनिचुरत है ॥ ३०७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लाजगरबआलसउमगभरेनैनमुसकात।
रातरमीरतिदेतकहिऔरैप्रभाप्रभात ॥ ३०८ ॥

यह नेत्रनकोभाव देखसखी नायकसों कहै तोलक्षिताहोय जो नायका नायकसों कहै तोखंडिताहोय ॥ कवित्त ॥ सारसतैंसरस लसत भरे आरसमहारस मगनहेरि हियेहरिलेतहैं ॥ लालडोरेरातहैं औरउपसाजतहैं फूलेमुसकातहैं निकाईके निकेतहैं ॥ मैनकोटमंग भरेयौबनके रंगभरेलाजकी तरंगभरेगरब समेतहैं। सेनसुखपागे मिसजागेदृगतेरे बाम रातरमिरतको प्रभातकहेंदेतहैं ॥ ३०८ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कोटियतनकीजैतऊनागरिनेहदुरैन।
कहेदेतचितचीकनोनईरुखाईनैन ॥ ३०९ ॥

यह नेत्रदेखसखी नायकासोंकहै लक्षिताहोय ॥ सवैया ॥ तोमन मोहनसों मिलयोंमनमें तबहींछबिही लखिपाई ॥ बूझततोहिहिये हितु मानिकै मोसोंचलावत तूचतुराई ॥ कोटिउपायकरै किननागरि नेहकी डीठि दुरैनदुराई ॥ नैननमांझ रुखाईनई यहदेतकहेचितकी चिकनाई ॥ ३०९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सहीरंगीलेरतिजगेजगीपगीसुखचैन।
अलसौहैंसौहैंकियेकहैंहसौहैंनैन ॥ ३१० ॥

यह नायकाके नेत्रनको भावदेखि सखीकहै लक्षिता ॥ सवैया ॥ मोसोंछबीलो छिपावकहापरतच्छही छातीसोंछैल लगाईहौ ॥ देवकहै अलसौंहों हसौंहींसी आईंरिसौहों हियेउमगाईहौ ॥ प्यारेपिया पर्य्यंकपै पारिकैप्रेमपियूष पिवायपगाईहौं ॥ कामकलोलनि कामनिआजुकी जाम निचारहू जामजगाईहौ ॥ ३१० ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ युगल दरशन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नितप्रतिएकतहीरहतबेसबरनमनएक।
चहियतयुगलकिशोरलखिलोचनयुगलअनेक३११॥

यह युगलकी शोभाअरु दोउनके हितकी अधिक सखीकी बचन सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ नितश्री वृषभान सुतानंदलाल बिराजत हैं छबिपुंजछये॥ कविकृष्णकहैं मनसोल वहीक्रम बातरताइक रंगरये॥ सुखदेखिसिहात सबैसजनीविधिसों बिनवैं अभिलाखभये॥ यहरूपबिलोकि बेकौं तनमेंप्रतिरोमनि लोचनक्योंनभये॥ ३११॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० मिलिपरछाहींजोन्हसोंरहैदुहुनकेगात।
हरिराधाइकसंगहीचलेगलिनमेंजात॥ ३१२

यह दोउनको मिलबो गलीमेंजात एकही जानिपरतहै॥ कवित्त। दोऊरसभीजे रूपरीझे तरुनाई भरेदुहुनके सनेह उमगत गातगात हैं॥ दंपतिकरतिचतुराईके चरित्रचारु औरकौन जानेये प्रवीननकी बातहैं॥ जहांपरछाईतहां प्यारी यौंबिलोकियति जोन्हको प्रकाशतहां कान्हहीं लखातहैं॥ कहैंकबिकृष्ण कुंजकेलिकौंनिशंक भयेदोऊएकसाथहो गली मेंचलेजातहैं॥ ३१२॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० तजितीरथहरिराधिकातनदुतिकरिअनुराग।
जेहिव्रजकेलिनिकुंजमगपगपगहोतप्रयाग३१३॥

यह युगल बर्णन॥ कवित्त॥ तीरथनि सटकतकाहेकोतु भटकत क्यौंन अटकत ब्रजशोभाकी हिलंगमें॥ राधाबनमालीकी सरसगोर श्यामदुति सकलनिकाईको लसतसारसंगमें॥ तासोंकरिप्रीतियह निगमप्रसिद्ध बिधि सिद्धिबिधि शंकरसे तिनहूं ते अंगमें। डगडग प्रतिहोत प्रगट प्रयागपग जिनकेपरतिकेलि कुंजनकेमगमें॥ ३१३॥ मरालअक्षत ३४ गुरु-१४ लघु २०

दो० उनकोहितउनहींबनैकोऊकरोअनेक।
फिरतकोकगोलकभयोदेहदुहूंज्योंएक॥ ३१४॥

यह दोउनके हितकी अधिकाई सखीसखीसों कहतिहै॥ कवित्त।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आधे आधे कहिबेको राधे माधो लहिबे को आधौछिनु राधाते न माधो बिछुरतहैं॥ ऐसोकछू नेमगह्योमनमें न भेदरह्यो दुहुन के प्रेमबढ्योकह्यो नपरत है॥ पलकमेंआय इतपलकमें जायउतपलक नचायनटविद्यासी धरतहै। राजाराम मेरेजान दुहूतन एक प्राणकागट्ठग पूतरीन फिरवो करतहै॥ ३१५॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० बियसौतिनदेखतदईअपनेहियसोंलाल।
फिरतसबनमेंडहडहीउहोंमरगजीमाल॥३१६॥

यहनायकाकी मालापायबहुतप्रसन्न भईहैसोसखीनायक सोंकहतिहै प्रेमगरबिताहिय॥ कवित्त॥ सौति केलखतमन भावनमया के दीनी हरतेंउतारि परगटकोनीरतिहै। तबहीतेंरहसति बिहसति हुलसतिविल-सतलसतगुमानभरी अतिहै॥ मनमेंमुदितफूली तनमेंसमात नाहिंचल चितबत अनुराग उमलतिहै। मरगजीमालाउहोंउर धरेबालाबहडहडही आलिनकेझुंड मेंफिरतिहै॥ ३१६॥ मारालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० अपनेकरगहिआपहीहियपहराईलाल।
नीलसिरीऔरचढ़ीबोलसिरीकीमाल॥३१७॥

यहनायकने अपनेहाथ बनाय बोलसरी की माला पहिराईताहि पाइयाकीशोभा अधिक भईसोसखी नायकसोंकहति है॥ सवैया॥ आपनेहाथ नवीनके फूलबनाईगुही मनलायकन्हाई। मालसुबोलसरी-कीरसालसुगंध भरीअतिही छबिछाई॥ आलिनकेगनमें लसिकैहंसिकै हठिप्यारीहिये पहराई। औपमानूपलही तरुनी बरनी न परैअनुरागनि-काई॥ ३१७ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० तीजपरबसौतिनसजैभूषनबसनशरीर।
सबैमरगजैंमुहुकरीउहींमरगजैचीर॥३१८॥

यहनायका प्रेमगरबिता मरगजेचीरताको गरबभयो तातेंसिंगारन को योसोसखीकोवचन सखीसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ सौतिनहुलसिगनगो-रिकै परबसाधि भूषनबसनबहु भांतिनसुधारेहैं। तिलकतमोरबेंदी बेसर तरौनासजिअंजनसोंआंजे चारुलोचनअन्यारेहैं॥ कृष्णप्राणप्यारेकेरिझाइ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेकोहेाड़ीहेाड़ाचपल कटाच्छहायभाइन सोंढारेहैं । उहींएकरातिमरगजे चीरहीसोंमबहीके नीकेमुखअतिफीकेकरि डारेहैं ॥ ३१८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० औरैगतिऔरैवचनभयौबदनरंगऔर ।
द्यौसकतेंपियचितचढ़ीकहैचढ्योंहैत्यौर ॥ ३१९ ॥

यहनायकामायकके प्रेमगर्राहतैंकाहू कौमनआनत नाहींसोसखीसखी सोंकहै ॥ सवैया ॥ औरहीचाल बिलोकनऔरही देखोयों आननऔरंग औरही। बोलतआनही भांतिगुमानसोंज्योंनिधनी निधिपाइकै बौरही ॥ बूझेहूबातकेऊतर देतनडीठिकहूं ठहारातनठौरहो । ह्वैकदिनातैंचढ़ीहरिकोंचितप्यारीचढ़ायेही राखत न्यारेही ॥ ३१९ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कियोजुचिबुकउठायकैकंपितबरभरतार ।
टेढीयौंटेढ़ीफिरतटेढ़ैतिलकललार ॥ ३२० ॥

॥ सवैया ॥ ठोढ़ीउठायकरयो चितचायसोंनंदलला अतिहीअनुरागे । भाललगावतही अंगुरीकर कंपभयो अतिहेततौ पागे ॥ आनेनआनेमनै तबतेंनगनैंकछु आपने प्रेमकेआगे । टेढ़ीयेटेढ़ीपिरैमृग लोचनिटेढ़ोईटीकोतिलार पैलागे ॥ ३२० ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० सुघरसौतिबसपियसुनतदुलहनिदुगुनहुलास ।
लखीसखिनसोंडीठकरिसगरबसलजसहास ॥ ३२१ ॥

यहनायकागुन गर्राधताआपने गुनकोगुमानतेसौतिनके आगमकोदुख नाहींमानतिप्रसन्न भईसोसखीतिन चितवतिहै सोसखीसखी सोंकहतिहैं ॥ सवैया ॥ रूपकीराशि सखीन समाजमेंसोहै सिंगारसजे ब्रजनारी । काहूकहो सुघरायन कैतुवसौतिनैलीनौं रिझायबिहारी ॥ यौंसुनिकैअति हीहुलसैगुन चातुरी कीपरमा वाधिप्यारी । लाजगुमानभरी मुसकायकै रंचक डीठिअलीतन डारी ॥ ३२१ ॥ वारनअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० दुसहसौतिसालीसुहियगनतननाहिंविहाय ।
धरेरूपगूनकोगरबफिरतअछेहउछाय ॥ ३२२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायका आपरूपकेगुनके गरबतें औरकोंचितमें आनतनाहींसोसखी सखीसोंकहति ॥सवैया॥ नाहकेब्याहमेंप्यारीअछेहउछाहभरीपिटभूषन ठानत। जानतनिहचै अपनेहिय कोबनिता करिहैनहिहांनत। रूपके यौवनके गुनके अभिमानतें आनहींनामनआनत॥ यद्यपिसौतियासालतऊ उरमेंबृहतीनरतीदुखमानत॥ ३२२॥चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० खलबढ़ईबलकरिथकेकटैनकुवतिकुठार।
आलबालउरझालरीपरीप्रेमतरुडार॥ ३२३॥

यहप्रेमकीदृढ़ता सखीसोंनायका कहैअथवानायककहै॥ कवित्त॥ देखतहीमूरति मधुरमनमोहनकी नैननकेमिलेंमिल्यो मनअबदात है॥ आलबालउरमेंप्रगट भयेप्रेमतरुदिनदिन झालरतुआतिमरसातहै॥ ताछिदूरिकरबेकों कितने लखनखगि कुबातकुठार गहिकीनौ उतपात है कहैकविकृष्णसबै याकेअतिबलकरि नेकनघटतत्यौंत्यौं दृढहोतजात है ३२३॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० करतजातजेतिकघटनिबढ़िरससरितासोतु।
आलबालउरप्रेमतरुतितौतितौदृढ़होतु॥३२४॥

यहसनेहकेअंगमें दृढ़तानायकाकी अथवा नायककी वचन सखीसों सखीनायकाहूसों कहैतोसंभवहै॥ कवित्त॥ आलबाल उरमें मनोज बयौनेहबीजतातेभयेआलीप्रेमअंकुरउदोतहै। सुरतिसलिलमींच्यौयाही तेउमंगउठयोफूल मेंनमंदरह्योदुहुनके प्रेमबढ़यो कह्योन परतहै। पलक मेंआयइतपलकमें जायउतपलक नचायनटबिद्यासीधरतहै॥ रजारामभेजानदुहूतन एकप्राणकागहग पूतरीनाफिरबो करतहै॥ ३२४॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० वियसौतिनदेखतदई अपनेहियसोंलाल।
फिरतसबनमेंडहडहीउहोंमरगजीमाल॥३२५॥

यहनायकाकीमाला पायबहुतप्रसन्नभईहै सोसखीनायकसों कहतिहै प्रेमगरबिताहाय॥ कवित्त॥ सौतिकेलखत मनभावन मयाकेदीनी उरतेउतारिपरगट कीनीरतिहै। तबहीतेरहसति बिहसति हुलसतिगिल-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सतलक्षतगुमानभरी अतिहै ॥ मनमेंमुदितफूलीतनमें समातनाहिंचलचित व्रतअनुराग उफलति है । मरगजीमाला वहीडरधरै बालावह डहडही आलिनकेझुंडमें फिरतिहै ॥ ३२५ ॥ मराल अक्षर३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अपनेकरगहिआपहीहियपहराईलाल ।
नीलसिरीऔरैचढ़ीबोलसिरीकीमाल ॥ ३२६ ॥

यहनायकनेअपने हाथबनाय बौलसरीकी मालापहिराई ताहियाइ याकीशोभाअधिक भईसोसखीनायक सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ आपने हाथनबीनके फूलबनाईगुही मनलायकन्हाई । मालसुबोलसरीकीरसाल सगंधभरीअतिही छबिछाई ॥ आलिनकेगनमें लसिकैहंसिकैहिठियारी हियेपहराई । ओपअनूपलही तरुणीबरणीनिपरै अनुरागनिकाई ॥३२६॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० तीजपरबसौतिनसजेभूषणबसनशरीर ।
सबैमरगजैमुहकरीवहीमरगजेचीर ॥ ३२७ ॥

यह नायका प्रेमगर्विताभरगजे चीरताको गरव भयोताते सिंगार न कियौसो सखीको वचनसखीसो कहति है ॥ कबित्त ॥ सौतिन निरखे निरिखेबिन चैनपरैनघरी है ॥ व्याकुलहै मुरझायपरी तलफै बिननीर मनौ सफरी है । मैनगरूर बियाचितहो नितहीनित होतखरोये खरीहै जात मरीछिनुकेबिछुरे यहप्रीत जरीअरी कौनकरीहै ॥ ३२७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोहदयोमेरोभयोरहतजुजियमिलसाथ ।
सोमनबांधनसौंपियेपियसौंतिनकेहाथ ॥ ३२८ ॥

यहनायकाप्रौढ़ा उराहनो नायका बचन ॥ सवैया ॥ जोमनमोहि मयाकैदियोतुममो जियसौमिलिकै रसभीजै । भेदरह्योनस्वरूपसुभायनें प्रेमपियूषसदामिलपीजै । मैंअपनोकरजान्योंयही अवअंतरहोतछिनैछिन छीजै । सोमनजोरावरीकरि मोहनसौतिनकेकर बांधनदीजै ॥ ३२८ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० भयेबटाऊनेहतजिबादबकतबेकाज।
अबअलिदेउराहनौंउरउपजतअतिलाज॥३२९॥

यहनायकापरकीयाप्रेढ़ा उराहनौंनायकके विद्यमाननायकी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ नैननसोंतनसों मनसोंरहनेईमिलेत्वहते सुखसाजनि। भूलिगईं सबवेबतियां हितपुंजनकोबहुभांतिविराजनि। येतजिनेह बटाऊभयेअब बादबकैंसजनीबिनकाजनि। देतउराहनौंऐसेनको अपने उर ह्वीचपियेअतिलाजनि॥ ३२९॥ मदकलअक्षर ३०गुरू ८ लघु २२

दो० तोहीनिर्मोहीलग्योमोहीयहैसुभाउ।
अनआयेआवैनहींआयेआवतआउ॥३३०॥

यहनायकापरकीयाप्रौढ़ाहै नायककोनिठुरताई अपनेहृदयकीआशक्ति उराहनौंदेकरप्रगट करतहैनायकाकोबचननायकसों॥ कबित्त॥ नेहभरेनैननकीजबतेनजरमिलीतबहीतेचितकीलगायौ अतिचावहै। मिलतमिलतमनहिलमिलएक भयेपरयौप्रेमफंदको अनोखोटरभावहै। कहनसकतेरोहियोनिरमोही अतिमेरोहियागच्योकछू ऐसोईसुभावहै॥ तेरेअनआयेअनआवेहू रहतमहतेरेआयेआय जातप्यारौतनआवहै॥ ३३०॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४

दो० ललनसलौनेअरुरहैंअतिसनेहसोंपागि।
तनककचाईदेतदुखसूरनलौंमुंहलागि॥३३१॥

यहनायकाप्रौढ़ा हैनायकअंतष्करणमैं कछूकपटजानि उराहन में प्रगटकरतहैनायकाको बचननायकसों॥ सवैया॥ नैकचितैचितचोरतहो उरजोरतहोअनुरागसचाई॥ रावरेप्रेमप्रबंधनको जितहीतितही सुनियेचरचाई॥छपसलोनेसोनेह पग्योहरिप्रीतकेरंगमेंबुडुरचाई॥ मूरनलौंमुंह लागितऊदुखदेतललायहनेककचाई॥३३१॥ नर अक्षर३३ गुरू१५ लघु १८

दो० आपदयोमनफेरलैपलटैंदीनीपीठि।
कौनचालयहरावरीलाललुकावतडीठि॥३३२॥

यहनायकाप्रौढ़ाउराहनो देतहैनायकाको बचननायकसों॥ सवैया॥ नंदललाउरझायहियो अबदेखवेकोतरसावतहौ॥ अबतोहमकोयहजानि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

परीयहलाजइनैनहें आवतहो ॥ तुम मोहिंदयो अपनो मनआपहो फेरलै क्योंसिरनावतहो ॥ अबतौपलटेतपीठिदई हरिकाहेको दीठि लुकावत हो ॥ ३३२ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

दो० बिरहबिथाजलपरासिबिनुबसियतमोहियलाल ।
कछुजानतजलथंभविधिदुरयोधनलौंलाल ३३३॥

यह नायका प्रौढ़ा उराहनो नायकाको बचननायकसों ॥ सवैया ॥ हरिमोहिय प्रेमसरोवरमेंबसिबो निसवासरठानतहै॥कविकृष्णकहैं अपने उरकोहमनोंप्रियनेट न मानतहो ॥ बिरहाकबिथानहिं नेकुतुम्हैंपै इमें अतिहीदुखदानतहो ॥ कछु जानि परीदुर्योधन लोजलथंभनकी बिधि जानतहै ॥ ३३३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दक्षिणपियहवैबामबसिबिसराईतियआन ।
ऐकैबासरकौबिरहलागेबरसबिहान ॥ ३३४ ॥

यह नायका प्रौढ़ा सुनायकको उराहनो देतहै दक्षिणप्रियायापदतें चतुर प्रिय संबोधन जानये॥ जो दक्षिण नायक न बनै ॥ कबित्त ॥ रसरीत नागरहै चातुरीके सागरहै कोटिकाम कलानिधि उपमान परसै ॥ सब सुखदेत है निकाई के निकेतहो तुम्हैंदेखतही प्रेतसबहीके उरमरसै ॥ दक्षिणसनेह हरिऐसे भयेबाम बसि बसिराई और तियदेखिबे कौंतरसै ॥ कहैंकबिकृष्ण एकभौन बसिरहे हमध्यान लागोबिरह बिहानलागेबरसै ॥ ३३४ ॥ सुरनअक्षर ४६ गुरु २ लघु ४४

दो० फिरतजुअटकतकटनबिनरसिकसरसनखियाल ।
अनतअनतनितनितहितनुचितसकुचतनाहिंलाल३३५॥

यह नायका प्रौढ़ा उरहानौं नायकाको बचननायकसों ॥ कबित्त ॥ कृष्णराय प्यारेजग जानतहिहारे गुनगढ़न उधारेऐसो ढरनिढरतहै ॥ सब हीको भावतहै। रसिक कहावत पैरसनरसीलेलाल ख्यालमें करतहै ॥ अटकति फिरतजगन बिन ठौर ठौर प्रेमपन सांचोपै कबहुन उघरतहै ॥ अनत अनत नितकी जतनबलनैहरंचकहु जियमें न सकुचधरतहै ॥ ३३५ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० सुभरभर्‌योतुवअगुनकननुपक्यौंकुवतकुचाल।
क्यौंधौंदार्‌योजोहियोदरकतनाहिंनलाल ॥ ३३६ ॥

॥ सवैया ॥ मोटरमें अनुरागके फूलनेंप्रीति प्रतीत कलीप्रगटीज्यों ॥ गवरे गुनके कनकाछलके बकुलासंग भूरिभरेत्यों ॥ बंचकताईकीबातन सैंकविकृष्ण कहैंपरपक्क भयोयों ॥ आवतमाहिं परेखोयहै अबद ड़िमज्यौं टरकैनहियोक्यों ॥ ३३६ ॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० सदनसदनकेफिरनकीसघनछुटैहरिराय।
रुचैतितैबिहरतफिरैंकितबिहरतउरआइ॥३३७॥

यह नायका प्रौढ़ा उरहनों नायकाको वचननायकमों ॥ सवैया ॥ डोलतलाल घनेघनझांकत प्रेमकौ आंककहूंन उघरो ॥ जानिपरेअबतौ बकसौउरहीं करिहैंहम ध्यानतिहारौ ॥ बानपरी सुनक्यौंहूंछुटै मनुमानत ही रुचमानपधारौ॥ भावतमेज बिहारबिहारीयों कितयोंइत आयबिहारौ ॥ ३३७ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ स्वाधीनपतिका ॥

दो० छिनकुचलतठटकतछिनकुभुजपीतमगलडारि।
चढ़ीअटादेखतघटाबीजुछटासीनारि ॥ ३३८ ॥

यह संयोग शृंगारनायका स्वाधीनपतिका सखीको बचन सखीमों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ सावनकेमास मनभावनके संगप्यारी अटा परटाढ़ी भईघटाअंधियारीमें ॥ दामिनीके धोखेचकचौंधे हगकबिनाय छबिनमौं मुरिटुरैपियअंकबारिमें ॥ कोटिरतिवारौं ऐसीराधाजूके रूपपररंभारंकहा संकसर्चा कैनिहारोमें ॥ पागिरही रसजागिरही जोतिलाजनि मैनेहभीजोवे हमेह भीजीनेतसारीमें ॥ ३३८ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुनिहाईसवटोलमेंकहीजसौतिकहाय।
सुतेऔचिप्यौआपत्यौंकरीअदोखिलआइ ३३९॥

यह नायका स्वाधीनपतिका सखीको बचनसखीमों ॥ सवैया ॥ रात दिनाछकियाहीके धामपर्‌यो रसमैरहतौसुखटाई ॥ पासपरोसनके कहतीं यह बीसबिसेतियहै दुनिहाई ॥ तू जब तैंगुनरूपकी राशिसुशीलतुहागल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गौनेहीआई ॥ प्राणपती अपनेबसिकै तैं भलीकरीसौतिकी छोतिबिहाई ॥ ३३९ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० तोपरवारौंउरबसीसुनिराधिकेसुजान ।
तूमोहनकेउरबसीहृवैउरबसीसमान ॥ ३४० ॥

यह नायका स्वाधीनपतिका सखीको वचननायकासों ॥ कबित्त ॥ रूपकी उजारीब्रषभानकी दुलरी राधे तेरीयेनिकाईहरि सौतिसबहारी है ॥ तेरेगुणगायबेकौ तेरेई रिझायबेकौ तेरोप्रीतिहीकौ पनुगह्यौ गिरधारी है ॥ तेरोनाम तेरोध्यान तेरोहीहियेनें धरेतेरैरसबस उनगायहू बिसारी है । तूहीउरबसी ह्वै कै उरबसीमोहन केतेरी छबिऊपरकी उरबसी वारी है ॥ ३४० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तूमोहनमनगड़िरहीगाड़गिढ़ीनिगुवालि ।
उठनसदानटसालसौंसौतिनकेउरसालि ॥३४१ ॥

यह नायका स्वाधीन पतिका सखीकौ वचन नायका सों ॥ सवैया ॥ खोनकरीखटि पीनसेपेट कुठोरउठे कुचकोकिल बेनी ॥ कंबुसोकंठकनाधरमो मुखकोटि कटाच्छन कीअतिपैनी ॥ तूमनमोहन केमन उबालिरही गढ़िलकला सुखदैनो ॥ सौतिनकेउर मांझसदा नट साल ज्यौंसालतहै मृगनैनो ॥ ३४१ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नभलालीचालीनिसाघटकालीधुनिकीन ।
रतिपालीबालीअनतआयेबनमालीन ॥ ३४२ ॥

यहनायका उतकंठितापरकीया नायकाकौ बचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ आजमन मोहन कौ मगयनिरखत मेरेपलक न लागे प्रीति उरतैंन टालोहै ॥ भईनभलाली देखिफीकौ परीनखताली सुनि पतिधुनि चिट कालीनिसाचालोहै ॥ काहूरवनी कीलखिमदगज चालीतासों जानिपति रीझिबनमाली रतिपालीहै ॥ कहाकहौंआलीइत मदनबिपति घालीखालीमेजभई जैसीआली बिकरालीहै ॥ ३४२ ॥ वासक सज्या ॥

दो० झुकिझुकिझुपकोहैपलनफिरफिरजुरिजमुहाय ।
बींदापियागमनींदामिसिदींसबअलिनउठाय ॥ ३४३ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायका परकीया बासक सज्यासखीकोबचन सखीसों क्रियाविद-ग्धाहू संभव है ॥ सवैया ॥ जानिसमेपिय आगमकोचतुराई करीचित चाहकै चाहकै ॥ सैकरिआधिक मूंदिकै आंख झुकीसीकरी पलकैंचप लायकै ॥ जोरिभुजा तनतोरितिया अंगिरानीखरी अरसाय जंभाइकै ॥ बैठीहुतीढिगआई अलीसुदई सबऊठमहोसों उठायकै ॥ ३४३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० निशअंधियारीनीलपटपहिरचलीपियगेह ।
कहौदुराईक्योंदुरैदीपासिखासीदेह॥ ३४४ ॥

यहनायका कृष्णाभिसारिका सखीकी शिक्षाअंग दीप्तिआधिक्य अरुजो प्रत्युत्तरहोयतो नायकाकेबचन तैरूपगरबिता होय ॥ कबित्त ॥ हेरि हेरि अंगनलगावत अरारसतफेरिफेरि येतौ झेरकाहै तू करतिहै ॥ लाल केसंदेश रचिजातहिये औजिभौंजि आवत पसीजसुघराई उघरतिहै ॥ मंडन छबीलीयह छबितेरी छाजतिहैमेरीया अंधेरीमेंतू दियासीबरति है ॥ आपहीतैं करचतुराई चल्यौचाहत सुगातकी गुराईयों दुराईक्यों दुरित है ॥ ३४४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अरीखरीसटपटपरीबिधआधेमगहेर ।
संगलगेमधुपनलईभागुनगलीअंधेर ॥ ३४५ ॥

यहनायका कृलाभिसारिका अपनीरात कीबातसखी सखीसों कहति हैराहमेंचन्द्रोदय भईछायलोनीया पटतैरूपगरबिताहू भई ॥ सवैया ॥ श्यामनिशा सखितैसोईसाज सिंगारकहौ पतिपास चलीरी ॥ त्योंअधगैल उदोतभयो शशिदेखत मोमतिसोचलगीरी ॥ पंकजछांड़ि सुगन्ध केलोभ लगो संगभौंरनकी अवलीरी ॥ ताहिसमै मगभागनि आयकै छायलई उनकुंजगलीरी ३४५ ॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० छिप्पौछिपाकरक्षितिछयौतमुसमहरनसम्हारि ।
हंसतिहंसतिचलिशशिमुखीमुखतेंआंचरडारि॥ ३४६॥

यह नायका शुक्लाभिसारिका राहमें चन्द्रअस्तभयो देखिसंकुचित भई तबसखी सपधान करतिहै ॥ सवैया ॥ तेरे कहे सजिसुभ्र सिंगार

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चलीबलेहौ गहिकै गतिमंदहि ॥ अहयोसेम अकी अघमीचही देखि-छये छितपैं तमबृन्दहि ॥ घूंघुट कोपटटारिकैं प्यारी उघारिटैतू अपने मुखचंदहि ॥ बारसनैमति ज्यौन्हइंसीकरयौं चलिकैमिलरीनंद नन्दहि ॥ ३४७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० उठिठकुठकुयेतौकहापावसकैंअभिसार ।
जानिपरैगीदेखियौदामिनिघनअंधियार ॥ ३४७

यहसखीनायकासों कहतहैकिअभिसारकोसहजहीसमयहैनायकापर-कीय ॥ सवैया ॥ क्योंतननीलनिचैलसजैसखिक्योंमृगमंदकोलेपकरैगी ॥ पावसकैअभिसारकोयेतौबिचारकहाचितमाहिंधरैगी ॥ कुंजकेभौननिशंकहूवैक्यौं नचलैहरिकंतहि अंकभरैगी ॥ श्यामघटाकीअंधेरीमें तेरीछटासीतनद्युति जानिपरैगी ॥ ३४७ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु २८ शुक्लाभिसारिका ॥

दो० जुवतिजोन्हमेंमिलगईनैननहोतलखाइ ॥
सौंधेकेडोरनलगीअलीचलीसंगजाइ ॥ ३४८ ॥

यहनायका शुक्लाभिसारिका सखी को बचन सखी सों कबित्त ॥ तनकीगुराई तरुनाई की निकाईछाई जाकी उजराईते उजारी उप-मातिहै ॥ शरदनिशामेंप्यारी बिशदसिंगारसजै गजगमनीकी शोभा अति सरसातिहै ॥ चलीअनुरागी मिलि मोहनकोमिलिबेकोचांदनीमें मिलगई क्योंहूंनलखाति है ॥ सौंधेके डोरन लगी अलसंगचली मानोंपूनोचन्द सहतारन लिखाति है ॥ ३४८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गोपअथाइनतेउठेगौरजछाईगैल ॥
चलिचलिअलिअभिसारकीभलीसंजोखसैल ३४९

यहनायका संध्या बिसारिका सखीकोबचन नायका सोंकिएसे समय अभिसाकर ॥ सवैया ॥ छोडिअथाइनगोलयबेकोउठी सबगोपनकीअवली है ॥ छीनभईसुखही रबिकीछबिगौरजपूरत गैलगली है ॥ चंदनकला प्रगटीनअजौं चलिक्योंनकरै अलिरंगरली है ॥ मानिसुहाग मेरोकह्यौ अभिसारकी सैलसझीखेभली है ॥ ३४९ ॥मरालअक्षर३४गुरु१४ लघु२० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० पलसोहैंपगपीकरंगछलसोहैंसबबैन।
बलसोहैंकतकीजियतयेअलसोहैंनैन ॥ ३५० ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका कोवचन नायकमें ॥ कबित्त ॥ सोहतअधिथल गातयरसमें पागे निशिजागेतातें आरसकेढार ढरियत है ॥ बैनतुतरात अंगरातमुर बेरबेर फेरि फेरि हेरिहेरि हिये हेरियतु है ॥ बैनसनेछलमोहै पीकपगेपलमोहै देखे छबिदृगनि अनंद भरियतु है ॥ कृष्नप्रान प्यारेश्रमका है कौकरत येतौअलमोहै नैनबल सोहैंकरियतु है ॥ ३५० ॥ मरालअक्षर३४गुरु ४ लघु २० । मदकलअक्षर३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कतलपटैयुतमोगरेसोनजुहीनिशिसैन ॥
जिहिंचंपकबरनीकियेगुललालासेनैन ॥ ३५१ ॥

यहनायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिताफूलन के नामशबद को चमत कार है ॥ सवैया ॥ मोगरेभूलिनलागिकै लालन सोनजुही निशि सैनमेंप्यारी ॥ जाकोलसैतन चंपकसों दसना वलिकुंद कलीछबिधारी ॥ लोचनलाल गुलालाकेरंगकरेंनिजरै निजगायबिहारी ॥ निंदत है अरविंदनकी छबि प्रीतिपराग भरे भरभारी । ३५१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कतकहियतदुखदैंनकोराचिरचिबचनअलीक ॥
सबैकहावरह्यौलखैंलालमहावरलीक ॥ ३५२ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीराखंडिता नायकाको वचन नायकमें ॥ सवैया॥ आजमयाकरमेरे पधारेलसो छबिरैनविहारबिहारे ॥ क्योंकहि येदुखदैन कौवैनबनाय बनाय सनेहहिहारे ॥ घूमत लोचननींदभरे उघरे उरमें नख चिन्ह तिहारे ॥ चोर कहाव रह्यौसबलाल लिलार महाडर लीक निहारे । ३५२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पटसौंपूछिपरीकरौखरीभयानकभेष ।
नागिनहूवैलागीदृगननागबेलरसरेष ॥ ३५३ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥आज मया कर मेरे पधारे खुली बड़ भागिनि की सुघरी है प्रीतमये पटसों रसों पोंछि परी करौमो मति हेर हरी है ॥ लागत है मम नैनकोआहिसुभामनि सीमैभूरिभरी है। केलसमैंअहिबेलिके रंगकी रेखनिमेखनि पैउघरी है ॥ ३५३ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० जिहींनामभूषणरच्योचरणमहाउरभाल।
उहींमनोंआंखियांरंगीवोठनकेरंगलाल ॥ ३५४ ॥

यहनायकाप्रौढाअधीरा खंडितानायकाको बचननायकसों॥सवैया॥ वाहीकेनैनको काजरबोंठपैनीकोलाग्यो जनपौंछिकैखोऊ। वाहीकेपायको जावकरंगलिलार महाछबिदेतहै सोऊ। ऐसोबनाय सिंगारकरयौ जिहहै वहबालविचच्छनकोऊ। जानहुलालरंगी उनहीं अखियांअधरानके रंगमें दोऊ॥ ३५४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पलनपीकअंजनअधरधरैमहाउरभाल।
आजमिलेसभलीकरीभलेबनेहौलाल ॥ ३५५ ॥

यहनायकाप्रौढ़ाअधीरा खंडिता नायकाको बचननायकसों ॥ सवैया॥ आजबनेहौभलेनंदलाल भयेसबबानिकसोहितभारी। मंडनुआंखिन पीकलगीअरुलीकलगी कछुओठनकारी वांईतौवांहतिलोछरही यहदाहनोवांहसिहातातिहारी। बैठीखेखेखिगलाग उठी यहकैसीबिराजत बीर सारी ॥ ३५५ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु१९ ॥

दो० वाहीकीचितचटपटीधरतअटपटेपाय।
लपटबुझावतबिरहकीकपटभरेऊआय ॥ ३५६ ॥

प्रौढ़ाधीरा नायकाकोबचननायकासों॥ कवित्त ॥ अनतवसेकोहोतौ बलगुनमानतहौ सवरसबसकीयो चाहिबहुनायकै ॥ ताकेभागजागेजाकेसंगनिशजागे मेरेभोरभये आयेहतु हियकोजनायकै। जानियतु वाहीकी लगी है चितचटपटी अटपटेचरन परत उगलायकै ॥ पताटबुझावत हौ बिरहहुता सनिकोकपट भरेऊआए यारे तुम आयकै ॥ ३५६ मरालअक्षर ३४ गुरु १० लघु २० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० गहिकंगासऔरैंगहैरहैअधकहैवैन।
देखिखिसौंहैपियनयनाकियेरिसौंहैनैन॥ ३५७॥

यह नायकाखंडिता नायकसुरतके चिन्हदुरायकै याकेआयेयहबात करनलावत रातमेंनायकके नेत्रदेखितेइनजानी सोबातछोड़िकोपके गांस गहैसखीको बचनसखीसों॥ सवैया॥ आवत प्राणपतीहि विलोकिसुधा समनेहकोडीठसौंहेरे॥ धायकै आगेहूं आयलये हियमेंउमगे सुखपुंजघनेरे। आधेमे बैनकहैई रहैं मुखगांस भरेउरकोप करेरे॥ कान्हके नैनखिसात विलोकिरिसाइकै प्यारीतिहीदृगफेरे॥ ३५७॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० पावकसोनैननलग्योंजावकलग्योंजुभाल।
मुकरजाहुगेपलकमेंमुकरविलोकोलाल॥ ३५८॥

यह नायका प्रौढ़ा आधीरा खंडिता नायकाको बचन नायकसों॥ कवित्त॥ मैनछविरेनके उनींदे नैनमूंदे आवैनींदके करसइन्दी बरन दरतहौ पियरोबदन भयो हियरो छुवत मोहिंसियारो करत ज्यों ज्यों निहारो करतहो। आलसमुप्यारी जिय ऐसेकैपठाये पियताके उठिदिन प्रतिपायन परतहो। कचमुकराय मधुकरकोसो माललाल मुकरावलो को कतमुकरकरतहो ३५८॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० तेहतरेरेत्योरकारिकतकारियहदृगलोल।
लीकनहींयहपीककोश्रुतिमनझलककपोल॥ ३५९॥

यहनायक सापराध जानिनायकानेत्र चंचल करतहै सोनायकासखी नायकाकेचितको भ्रमनिवारनकरतहै सखीकाबचन नायकासों नायका सखीसोंकहैतो भूतसुरतगुप्ता परकीयाहोय॥ कवित्त॥ आजलखिपति कछू औरैभांति तरीगतिआननपै उमगललाईललकति है। भृकुटीकुटिल अतिनेहसोंतनोनी भईनैननमेंरिसकी तरंगछलकति है॥ कहैकविकृष्ण यहधोखोहिहहाँतो करिपीकलोक जानतजबोलबलकति है। ललितकपो लपरतीकेकैबिलोकि श्रुतिभूषनकीमनकी झलकझलकति है॥ ३५९॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० आयेआपभलीकरीमेटनमानमरोर।
दूरकरोयहदेखिहैंछलाछिनीयाछोर॥ ३६०॥

यहखंडिता नायकाकीसखी नायकसों कहतिहै॥ सवैया॥ आप कृपाकरआयेभली करीआजकोबानिक मे.मनमोहै। देखतरावरीमोहनी मूरतिमानमरोर धरेउरकोहै। काहूछबीलीकी छोटीछलायहछोरछिगूनीकेछाजतछोहै। देखिरिसायगीदूर करोकछूजानतहौ अनआयलसोहै॥ ३६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० लालनलहिपायेदुरैचोरीसोंहकरैन।
शीसचढेपनिहांप्रगटकहैपुकारेनैन॥ ३६१॥

यहनायका प्रौढ़ाधीराखंडिता नायकाकोबचन नायकसों॥ सवैया॥ आयेउनीदेजगात तऊकछूभेदनजान्यों हियेकीमैंभौरी। वाकुचकुंकुमके लगेचिन्हमिलाय हियेमसकेजिहगोरी॥ लाललहीअबतो सबबातदुरेनहीं सौहकरौंकिनहोरी। सीसचढेपनिहाँ होउनैनपुकार कहैरतरंगकीचोरी॥ ३६१॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १४ लघु २१॥

दो० तुरतसुरतकैसेदुरतमुरतनैनजुरिनीठि।
डोढ़ीदैगुनरावरेकहैकनोड़ीदीठि॥ ३६२॥

यसनायका प्रौढ़ाअधीरा खंडितासखीको वचनसखीसों॥ कवित्त॥ चिन्हअंगअंगके दुरायेचतुराईकै पैअरसगमनगात ढुरढहनातहै। प्रेम सुधापानके हुलासतें मुदितमनमैंनमुख सनेऐनबैंनतुतरातहै॥ तुरतसुरत कहैकैसेकै दुरतलाल नीठिजुरिमुरतनैन जलजातहै॥ कृष्णप्रानप्यारेयह डौंड़ीदै कनौड़ीदीठि प्रगटकरत रातरति वारीवात है ३६२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० मरकतभाजनसलिलगतइंदुकलाकेबेष।
झीनझगामैंझलमलैश्यामगातनखरेष॥ ३६३॥

यहनायका खंडितानायका कोबचननायकसों॥ सवैया॥ नाहकी छातीमें देखनखछत नारिनबोढ़ा कह्योंपुनऐसे। सुंदरबागेकी चोलीमें

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेल्हि कैल्यायेहो चंदकलाधरिकैसें ॥ खेलिबेकोहमहैंयह देहजूयोंकहिकै हरिदोरहरेसें ॥ लायजईउरसोंहंसिके गसिदोऊरहैकसि राखियेजैसें ३६३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नखरेखासोहतनईअलिसोहैंसबगात ।
सोहैंहोतननैनयेतुमसोहैंकतखात ॥ ३६४ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडितानायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ हरिजानिपरी हमहूंपैमया पगधारेइतैरति केलिकिये । तुम तौसबकेसुखदायकहौ सबहीकोबनै सुखपुंजदिये ॥ सुकरोंजिनयेप्रगटैलखियेजुलगोटटको नखरेखहिये ॥ दृगसोंहनहोत सकोचन तेंअबकाहेकौं सोंहइतीकरिये ॥ ३६४ वारन अक्षर ३६ गुरु १० लघु २६ ॥

दो० तरुनकोकनदबरुनबरभयेअरुननिशिजागि ।
वाहीकेअनुरागदृगरहेमनोअनुरागि ॥ ३६५ ॥

यह नायका प्रौढ़ाअधीरा खंडिता नायकाको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ कृष्णप्रानप्यारे प्रातप्रीतिकै पधारे मेरेदेखे मैंन मूरतिबिरह गयोभागिकै । मरगजेवागेरस पागैलटपटी पागैं आसर मगनअंगरहैअंक लागिकै ॥ रावरेलसत अतिलोचन ललितभयेको कनदअरुन बरुननिशि जागिकै । मेरे जानप्राणपतिवाही प्राणप्यारेके परम अनुरागमें रहेहैं अनुरागिकै ॥ ३६५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सोहतसंगसमानसोंयहैकहैसबलोग ।
पानपीकवोठनबनैकाजरनैननजोग ॥ ३६६ ॥

यहनायका प्रौढ़ाखंड़िता नायकाकों बचन नायक में ॥ सवैया ॥ ग्रंथनतें यहबात प्रमाणहै यौंचलि आयो मतौ सबही को । जैसेको तैसोई जोगजुरै तबहोत महासुख दायक जीको ॥ जो बिपरीति विलोकिये संग कुढंगतही रंग लागत फीको । पानकी पीक बनै पिय वोठन आंखिनहों लगै काजर नीको ॥ ३६६ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० प्राणपियाहियमेंबसीनखरेखाशशिभाल।
भलौदिखायौआनयहहरिहररूपरसाल॥३६७॥

यह प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेमपों प्राणपियारी बसायहिये पियरो फूलमायो। भालनई नख रेख विराजत सोय मयंक लसे छविछायो ॥ लोचन रागुर जोगुण राजत घूमत नैन तभांगुण पायो। पीतम प्रातही आनि यहै झुभलो हरि को घर रूप दिखायो ॥ ३६७ ॥ चल अक्षर ३८ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहांनचलिबलिरावरीचतुराईकीचाल।
सनखहियेखिननखिननटतअनखबढ़ावतलाल ३६८॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ यहां न चलै कछू रावरी लाल चलावत जे चतुराई की चाल। छाती नख छत पीक मृगाल धरैं अति रंग महाउर भाल ॥ खातइते परसोंह गुपाल हिये उमगावत क्यों रसजाल। भाग बड़े उहि भामिनी भाल हिये उमगी जिह भेट तमाल ॥ ३६८ ॥ नर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० वैसीयेजानीपरतिझगाऊजरेमाहं।
मृगनैनीलपटतजुयहबैनीउपटीबांह ३६९ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायक के विद्यमान सखी हूं सों कहै ॥ सवैया ॥ काहे को करत चतुराई के चरित्र लाल सींचभरी मूरत प्रकट पेखियतु है। सोहै जिन करो नैन नेक मोहनीसी शोभा अतिही विराजै अंगअंग खेलियतु है कृष्ण प्राण प्यारे कुच कुंकुमकी छायरही छाती पै उधरि यह अब रेखियतुहै ॥ मृगनैनी लपटति ऊपटी खयेपै बैनी ऊजरे झगामेंअरटेपी पैजयतु है ॥ ३६९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नकरुनडरुसबजगकहतकतबेकाजलजात।
सौंहेंकीजैनैननजोसांचीसौंहेंखात ॥ ३७० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ मोहतो लागत नीके महातुम आये प्रभात प्रभात रसोंहैं। जो करिये तौ हिये डरिये बिन कीये कितेडरिये डरसो हैं ॥ क्योंबिन काज संकोच भरौं उर काहे कों कीजत नैन लजोहैं। जो तुम सांची ये सोंह करौ हरितौ इतक्यों न करौ मुखसोहैं ॥ ३७० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

दो० रहौचकितचहुधांचितैचितमेरौमतिभूलि।
सूरउदयआयेदगनरहीसांझसीफूलि ॥ ३७१ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन सखीसे होय नायक सों होय ॥ सवैया ॥ देखत रावरो मोहन मूरति मोहिं सबै सुधि भूलि रही है। आज महा छवि छाजत भोर निकाई सबै अनकूल रही है। चाहिरह्यो चहुधां चकिसों चित आचरजै मति डूलहोहै ॥ आयेहो सूर उदोत भयोविष नैनन सांझसो फूल रहीहै ॥ ३७१ पयोधर अक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

दो० कतबेकाजचलाइयतचतुराईकीचाल।
कहैदेतयेरावरेसबगुनबिनगुनमाल ॥ ३७२ ॥

यहनायकाप्रौढ़ाअधीरा खंडितानायकाकोबचननायकसों॥सवैया ॥ सौतकेधामबिराम कैआपुप्रभातयते पगधारतहौजब। मैनछकीछबिऐन दिखायअनंदहिये उपजावतहौतब ॥ क्योंबिनकाजचलावतहौ चतुराईकी चाललालहमसोंअब। मालबिनागुनकोउरपै उपटोमुनरावरेदेतकहेसब ॥ ३७२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुरैनिधरधधोंदियेयेरावरीकुचाल ॥
बिसुसीलागतहैबुरीहंसीखिसीसीलाल ॥ ३७३ ॥

यहनायकाप्रौढ़ा अधीराखंडिता नायकाको बचननायकसों ॥ सवैया जानतहौ हियकेहितसौं उनहोकेबसेसुखसोंनिसनासो। भोरकिहूभ्रमभूलि कैलालपधारेइतेकछू कीनीकृपासो ॥ ढीठभौंदियोकहो कैसेदुरैइहओरही

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेंजु कुचालप्रकासी। लागतबोसबिसे बिबसी सुखसापनके मुख आवत-हांसी ३०३॥ मराल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० गड़बड़ेछबिछाकुछकिछिगुनीछोरेछवैन॥
रहेसुरंगरंगरंगिउहींनुहदीमहदीनैन॥ ३७४॥

यहमहदीकौ वर्णन है अरुजोनायकाको बचन नायकसोंहोय तोखंडिताहोयजोनायका कोबचनसखीसों होयतौगुणकथन॥ सवैया॥ वाकी छबीलीछिगूनीके छोरये येकचपुंजनयेईनयेहैं। तापरचारुलसैंनुहदी महदीदलबिद्रुमजीतलयेहैं॥ ताकीमहाछबिके मदछाकिछुटैन अजौंगड़येसे गयेहैं॥ येबियलोचनवाईकेरंगमैं राचिकैमानौसुरंगभयेहैं ३०४॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० कतसकुचतनिधरकफिरौरतिपोषोऋतुमैन॥
कहाकरौजोजानियेलगैलगौंहैंनैन॥ ३७५॥

यहनायकाप्रौढ़ाअधीरा खंडितानायका कोबचननायकसों॥ कवित्त॥ कृष्णप्राणप्यारे आजप्रीतके पधारेहोतेतनमन वारौंबहु हुलसिबधाइये। नेकनिरखिन लगेजाहिजोलगेहैं नैन ताकोतुमकहाकरौ ग्रीवननवाइये॥ कैसेराख्यौजातमोरिमनु बंध्योप्रेमडोरितुमतन खोरिकहेरंचकोनपाइये। काहैको सकुचकीजे रुचै तितै सुखदीजै अलिह्वै निसंक रसलीजै जहां पाइये॥ ३०५॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अनतबसेनिसिकीरिसनुउरबरहीबिशेखि॥
तऊलाजआईझुकतखरेलजौहेंदेखि॥ ३७६॥

यहनायकाप्रौढ़ा अधीरासखीको बचनसखीसों॥ सवैया॥रातिकहौं अनतेबितई मनमोहनकेलिकलासुख सौंहैं। तातेंहिये अतिहीरिसछायरही अनखाय चढ़ायकै भौंहैं॥ भौंरही आवत देखिजऊ कहिबे कौभईझुकवेन रुखौहैं॥ आईतऊ अतिलाजहिये निरखेजब लालखरेई लजौहैं॥ ३०६॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० बिलखीलखैखरीखरीभरीअनखवैराग॥
मृगनैनीसैननभजैलखिबैनीकेदाग॥ ३७७॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नायकाअन्यसंभोग दुखितासखीकोबचनसखीसों ॥सवैया ॥ साजि-सिंगारहुलासकैआई बिलोकरहीवकि दूरतेझंकहि । सौतिकीचीकनी चोटीकोदागलग्यो टटकौपतिकैपरयंकहि ॥ ठाढ़ीजकीसीकपोलधरेकर रोसभरी भृकुटीकरिबंकहि ॥ सोचसनीबिलखै मृगलोचनिलेत उसासन आवतअंकहि ॥ ३७७ ॥ चलअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६ ॥

दो० नईबिरहबढ़तीबियाखरीबिकलजियबाल ॥
बिलखीदेखिपरोसन्यौहरबिहसीतिहिकाल॥३७८॥

यह नायकाअन्य संभोगदुखिताएक तो नायकयासोंहित नाहींकरत तातेविकलहै दूसरीपरोसन देखीताही समैतबखरीबिलखी अरु नायक याके परोससों रहतहै सोवहयहबिलखी देखि अतिप्रसन्नभई ॥सवैया॥ बालमकोहित आनबधूसों रहैनकहूंघर एकघरीहै । तादुखबालमहाजि-यत्याकुलकामखरी कुलकानपरीहै ॥ बाढ़ीबियाअति डाढ़ीसीडोलति गाढ़ी वियोगकी गाढ़परीहै । त्यौंमृगनैनी परोसकौदेखि खड़ीबिलखी लखिमोदभरीहै ॥ ३७८ ॥ त्रिकलअक्षर ३८ गुरू ६ लघु ३०

दो० रहीपकरिपाटीसुरासिभरेभौंहाचितनैन ।
लखिसपनेतियआनरतिजगतहुलगतहियेन॥३७९

यहनायकाने स्वप्नमें नायक अन्यासक्तदेख्यौ तबजागतहूमान नाहीं छोड़तअन्य संभोगदुखिता सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ दंपति केलिकलोलपगे उरलागेरमैय गयेपलिकाहीं । ऐसेमें प्यारीलख्यौ सपनो हरिआनबधूसों कियेगलबाहीं ॥ पाटीसौंलागिरही मृगनैनीभरीरिस नैन-नाभौंहनमाहीं । चौंकियहैचित पागी महातिय जागी निसाहिय लागत नहीं ॥ ३७९ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरू १० लघु२८

दो ०छलापरोसिनहाथतैछलकारिलियोपिछान ।
पियहिदिखायोलखिबिलखिरिससकुचीमुसकान। ३८०

यहनायकाअन्य संभोगदुखिता सखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ पेखिपरोसनिके करप्यारीकरी चतुराईके चारुकलाहै । मांगिलियोकछु ऊठमसौंहुकै मनुहारि हलाऊमलाहै ॥ प्रीतमसौंमुसकाय कहीकवि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कृष्णकहैंरुख रोसरलाहै। नेकइतैलखिये मनमोहनआज भलोहमपायो छलाहै ॥ ३८१ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० गह्योअबोलोबोलप्योआपैपठैबसीठि।
दीठिचुराईदुहुनकीलखिसकुचौंहींडीठि॥ ३८१ ॥

यहनायकाअन्य संभोगदुखितासखीका वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ आपनीप्यारीअली कोपठैपियप्यारेकौं आपहीबोलिपठायो। आगेहूवैआयलियौहितसोंहियरो हुलस्योनियरोजबआयो ॥ येतेमेंकृष्णदुहून कीदीठिलजौहींलखी उरतेहटचायो। पोलैकोभारीमनोलौ भरयोजियकासों कहैअपनोडहकायो ॥ ३८१ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० सुरंगमहावरसौतिपगनिरखिरहीअनखाय।
पियअंगुरिनलालीलखैउठीखरीलगिलाय३८२॥

यहनायकाअन्य संभोगदुखितासखी कोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ पेखिसुरंगमहावर सौतिकेपाइनबालरहीअनखानी। याहीबिलोकिबिकायगौमोहनबातयहैअपनेउरआनी ॥ येतेमेंप्रीतमकी अंगुरीनललाई बिलोकिखरी बलखानी। पावकबालजगी उरमेंमुरझातमहारिसमेंअकुलानी॥ ३८२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० बिथरयौजावकसौतिपगनिरखहंसीगहिगांसु।
सलजहसौंहींलखिलियौआधीहंसीउसांसु॥३८४

यह नायकाअन्य संभोगदुखितासखी कोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ बालहंसी कछुगांस गहैलखिफैल्यो महावर सौतिके पायनि। जानियहै अपनेजियमेंयह जानितनाहिं सिंगारकेभायनि ॥ येतेमेंमोदभरी मुसकात लजौहींबिलोकनि देखिसुभायन। आधीयैहांसीउसास भरीअकुलातखड़ी बिसरीचितचायनि ॥ ३८३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० हठहितकरप्रीतमलियौकियौजुसौतासिंगार।
अपनेकरमोतिनगह्योभयोहराहरुहार ॥ ३८४ ॥

यहनायकाअन्य संभोगदुखितायाकोहारनायकने लैकैसौतकोपहरा-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

योसुनायका सखीसोंकहै ॥ सवैया ॥ मांगिलियौहितके हठिप्यारेनेहारु सुचारुप्रभानसोंपाग्यौ। ताहिलैलालची लालगच्छौकाहू सौतिकेधामति-हींअनुराग्यौ ॥ वाहीकीरीझि सिंगारकियौलखियाके हिये अनुखाहटजा-ग्यो। आपनेहाथ बनायगच्छौमुकता कौहराहर हारसोलाग्यो ॥ ३८४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० प्यारोसोरसुहागकोइनबिनहींपियनेह।
उनदेहीआंखियांककैकैअलसौंहींदेह ॥ ३८५ ॥

यहनायका सौतिकौ आलसबल देखिअरुरसमसो आंखिदेखि सखी सोंकाकध्वनिकरि कहतुहै अन्यसंभोग दुखिता होयजोई सखीनायकसों कहैतौयाकीरिसकी निवारनहोय ॥ सवैया ॥ सैंकरि आंखउनींदीकरी अधऊतरसोंमुख बोलउचारयौ। बारहीवार जंभाय कैयौहींखरौतनआरस केढरढारयौ ॥ झूठीजतावतहै सुखसेन जगीयह जामिनि जामनिवारयौ। देखितौ प्रीतमकी बिनु प्रीति सुहागको सोरकितो यह पारयौ ॥ ३८५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

दो० सखिसोहतगोपालकेउरगुंजनकोमाल।
बाहिरलसतमनोप्रियेदावानलकीज्वाल ॥३८६॥

यहनायकाप्रौढा अधीराखंडिता नायकाकोबचन सखीसों॥ सवैया॥ भागबड़ो निरख्यो यहवानकु आजुको हौंबलिजाऊं घरीकी। ऐनप्रभाल-खिलागतहैकछू मोहिंतो मैनको मूरतफीकी ॥ देखरीमोहनके उरभा-वतीमालबिराजत गुंजकीनीकी। पीवहुतोप्रगटो सुतौबाहिर ज्वालमनौं बड़वानलहीकी ॥ ३८६ ॥ चल अक्षर ३० गुरू ११ लघु २६ ॥

दो० मुहमिठासदृगचिकनईभौंहैंसरलसुभाव।
तऊखरेआदरखरौखिनखिनहियौसकाय ॥३८७॥

यहनायका सादराधीरीप्रौढा नायककोबचन नायकासों ॥कबित्त॥ बदन कमलतें अधिकहितसाने बैनमधुरेकढ़त अमीजिनमें चुचात है। भृकुटीसुभायही सरललखियत कहूंरोसकीनरंच लवलेस दरसातुहै ॥ ने-हकीनिसानीरससानी चितवनित्यौंहीं कैसेहूंनमोपैयह भेदलच्छौजातुहै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज्यौंज्यौंअतिखरोआदरकरतप्यारीत्यौंत्यौंमेरोहियोखरो खरोईसकातुहै। ३८७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० खरेअदबइठलाहठीउरउपजावतित्रासु।
दुसहसंकबिसकीकरैजैसेसोंठमिठासु॥ ३८८॥

यहनायका सादरातधीरा प्रौढ़ानायकको बचनसखासों॥ सवैया॥ गांसगच्योउरमें जितनोकछूमैंतौन चूकइतीककरीहै। बानसजीइटलाह-टकीअवकाहेसौंधों नाडजानिपरीहै॥ त्रासहियेउपजावै खरौअतिआदर सौंअभिमानभरीहै।सोंठचबातज्यौं मीठोलगैसबकोऊकहैबिषहीकोडरीहै॥ ३८८॥ चल अक्षर ३७ गुरु १६ लघु २६॥

दो० नाहिंनचायचितवतदृगनुनहिंबोलतमुसकाय।
ज्यौंज्यौंरुखरूखोकरैत्यौंत्यौंचितचिकनाय॥३८९॥

यह नायका प्रौढ़ाधीरा अकृतगुप्ता नायका को बचन नायक सों॥ कबित्त॥ जोरतनलोचन नचाईनेहचाई भरेमुरि मुसकानकौनभावदर-सातुहै। बोलतनकछूमन मोहनमधुर बैनमोरजिनभृकुटी मरोरतनगात है॥ कहैकविकृष्ण वाकीगरब लीवानिकछू सहज बसीकरको मंत्र जान्यो जातहै। ज्यौंहोंज्यौं रहत प्यारीराधा रूखेरूखकरि त्यौंहीं त्यौं खरोई खरौ चित चिकनातुहै॥ ३८९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२लघु २४॥

दो० जोतियतुमजियभावतीराखीहियेबसाय।
मोहिंझुकावतदृगनहवैवहईउझकतिआय॥ ३९०॥

यहमान भ्रमनायकको आंखिन में अपनो प्रतिबिंब देखि अरुखो जानि कहतहैनायका ने॥ सवैया॥ नेकमनेकरौपायपरौहरि काहेसों मोसोरसीदतिहै।राजकरो नितयाहिलियेरहौयामेंकहाकहनावतिहै॥ जो तुमराखीबसाय हियेपियप्यारी तिहारीकहावतिहै। झांकतरावरी आंखिन आनवहैतियमोहिं झुकावतहै॥ ३९०॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० चिरजीवोजोरीजुरैक्योंनसनेहगंभीर।
कोघटिहैवृषभानुजावेहलधरकेबीर॥ ३९१॥

यहपरस्पर मानसखीको बचनसखीसों॥ कवित्त॥ अनगने औठ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पायरावरे गनैनजाहि बेऊआहितमकिकरैया अतिमानकी । तुमजोईसोई कहौवेऊजायसोई सुनेतुमजोभपातरेवे पातरीहैं कानकी ॥ कैसोकैसो रायकाहिबरजोंमनाऊं काहि आपनेसयांकोधो सुनतसयानकी । केऊबड़वान लकीह्वै है सोई अहैबीचतुम बासुदेववेहैंबेटी वृषभानकी ॥ ३६१ मरकट अक्षर ३१ गुरु ० लघु २४ ॥

दो० दोऊअधिकाईभरेयेकैगौंगहराय ।
कौनमनावेकोमनैमानैमतठहराय ॥ ३९२ ॥

यहपरस्पर मानहैदोऊ अधिकाई भरेसोनायकामानवती नायकरूपमानीअथवानायकाको मान देखिबेकीगौंहै सखीकोबचन सखी सोंअरु दोऊ अन्याशक्ति होहियहकहिबो संभवहै ॥ सवैया ॥ आजचलीरसही रसमेंकछुबात दुहूंनसों क्योंकहिआवै । लैअपनो अपनोरिसमें अरुझायो हियो अबकोसुरझावै ॥ दोऊ खरेअधिकाई भरेगहे एकही गौं कोउभेदन पावै ॥ कौनमनावैमनै कहिको मनमानो दुहूंनकोमानहीं भावै ३६२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु१२ लघु २४ ॥

दो० मानकरतबरजतनहींउलटिदबावतिसौंह ।
करीरिसौंहींजाहिगीसहजहसौंहीभौंह ॥ ३९३॥

यह मानदृढ़ावतहै सोमानछुड़ायबो प्रयोजनहै सखीकोबचन नायका सों ॥ सवैया ॥ रूखोकरयो रुखनैन चढ़ायकैं बैनकहैं मुखतेअनखोहैं । मानकरयोसुभलीकरी होनमनेकरो और दिवावतिसोंहैं ॥ मोहूं सोंबूझेनऊतरदेतसु देखोगीमोहन कोमुखजो हैं करीहीमें हैंरिहैंयगी लालाये सहजही सुहसोंहीं येभौंहैं ३६३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु१४ ॥

दो० रसकेसेरुखशाशिमुखीहांसिहांसिबोलतबैन ।
गूढ़मानमनक्योंदुरैभयेबूढ़रंगनैन ॥ ३९४ ॥

यहनायकाअधीरा कोमानहैसोसखीनायक कीनायका सोंकहतहै ॥ सवैया ॥ ऊपरकोरसकोसौं करयोरुखभावकियेहितके सरसातें ।सूधेचितै हंसबोलतबैनकढ़ै मुखमीठे सुभावसुधातें । नेहकेचिन्हजनाय सबै बिध स्वास दबाय कैतेहके तातें ॥ मान हियेको दुरै कोहिक्यों जु मजीठ के

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रंग भये दृग रातें ॥ ३९४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चितवनरूखेदृगनकोहीसीबिनमुसकान ।
मानजनायोमाननीजानिलियोपियजानि ३९५ ॥

यह नायका मानवती पैमानके लक्षण कुछप्रकटकरै नहीं पै प्रवीण नायकनेजानीसखीकोबचन सखीसों नायकाहू सोहोय॥ कबित्त॥ वैसेही चितौनजैसेआगे चितवतही पैनेहचिकनाई कोनदृगन निसानी है ॥ मधुर बचनत्योंहीबोलतबिहंसिपैसरसमुसकानकीनबानपहचानी है ॥ ऐसी भांति भामिनीजनाई झूठमारीति जानिमन प्यारे भेष देखतहीजानी है॥ साधकै रूखाईरिसठानीतें सयानी सोप्रबीनन कीडीठ तेरहतकैसे छानी है ॥ ३९५ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कपटसतरभौंहैंकरिमुखअनखौंहैंबैंन ।
सहजहसौहैंजानिकैसौहैकरतेनैन ॥ ३९६ ॥

यहमान परिहासहै नायका प्रौढ़ा सखीको वचनसखीसों॥ कबित्त प्रीतमकी प्रीतिकीप्रतीत लखिबेकोप्राणप्यारीकछुकीनो परिहासझूठोमानठानि ॥ कहैकविकृष्ण उरऊपर रूखाई भरिबदन बिदोरिबैठिधरिकै कपोलपानि ॥ आपनीअलीनहूं सोंजोरतनु रूखमुखबेनअनखायकहिबेकी ज्योंज्यों गहीबानि । भृकुटी सतरकीनी कपटसोंतानिऐपै सोहैंन करत दृगसहज हसौहींजानि ॥ ३९६ मदकलअक्षर ३५गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मनुनमनावनकोकरैदेतरुठायरुठाय ॥
कौतिकलाग्योयौंपियाखिजहूरिझवतजाय३९७॥

यहनायकाको मनु देखिबो प्रयोजनहै सो सखीसखीसोंकहति है॥सवैया रोनभरीअंखियान हूं को अबिलोकन माझभरयौ रसभारी । याहींतेंमान हुं कोरूखदेखिबेकी नन्दनन्द हियेकचिधारी ॥ होतमनोहो प्रजासबहीं तबसें करिदेतरूसायबिहारी । कौतिकलाग्यो इहीरसके खिजहूके रिझावत राधिकाप्यारी ॥ ३९७ ॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४

दो० भलेपधारेरावरेहवैगुड़हलकोफूल ॥
ताहीदिनतेनाम्योमानकलहकोमूल ॥ ३९८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायकापरकीया उपपतिको बिरहदुरायबेकौ पतिमोमान कीनोंसो सखीसखीसोंकहति है जोसखीनायकसौं कहै तो खंडिताहोय॥ कबित्त॥ जाहीरजनीके घरबसै आनघरबसै जानेकौन कहामंत्र कैसे पढ़िनायो है। वाहीरजनीतें अजौमिटयौ नयेनेसोमान सखी पचिहारीकाहू मरमनपायो है॥ कहैकविकृष्ण ऐसोकठनोसुन्यों नदेख्योजैसोउहि लरिहार उरमेंदिढ़ायो है। पाहुनैपधारै आछेफूलगुड़हरको ह्वै कलह को मूलबाबगर बगरायोहै ३९८ करभअक्षर ३२ गुरू १६ लघु १६

दो० मोहूंसोंबातनलगेलगीजीभाजेहनाय॥
सोईलैउरलाइयेलाललागियतपाय॥ ३९९॥

यहमध्यममा नायका सों बातेंकरत जानि नायका सों आशक्त होय नायकने ताहीकोनामलीनों सोनायका नायकसों कहतिहै॥ कबित्त॥ कौतौराखोगोयहो प्रगटहियेकोभाव जासोंरंगमगिमन रल्योअनुरागि कै॥ उघरीरसिकरस रीतको प्रबीनबाकीभलैसुधिकीनी मोसोंबातनहूं लागिकै॥ कृष्णप्राणप्यारे पूरीप्रीतिको धरमयहै पायोअबमरम भरमगयोभागिकै। पाइनपरतिहरिवाही उरलेपैजाहीरमनीकौनामरह्यौरसनामैंपागिकै ३९९॥

दो० बिधिबिधिकौनकरैटरैनहींपरेहूपानु॥
चितैकितैतेलैधरयोइतौइततनुमानु॥ ४००॥

यहमनायबो सखीकोबचन सखीसौं॥ सवैया॥ खोयपरैमनमोहन हूं बहुभांतिहियेरस भायभरेतौ। प्रीतिकीचोपचढ़ायअलीनि कहीसमझाय बिनैकरिकेतौ॥ लोचनचेरेतऊनचले अनखायनचे अतिरोसरचेतौ। नेकचितैमृगनैन कितेतेधरयौभरि मानइतेतनयेतौ॥ ४००॥ मरालअक्षर ३४ गुरू १४ लघु २०

दो० अहेकहैनकहाकह्योतोसोनंदकिशोर॥
बड़बोलीकितहोतबलिबड़ेदृगनकेजोर॥ ४०१॥

यहमनायबौसखीको बचनसखीसो॥ कबित्त॥ सांचीकहि मोसोंअहे काहैतेकहतनाहिं तोसोंकहाकह्यौमनमोहन कन्हाईरी। क्योंतूबड़ेबोल ऐसोबोलतगुमान भरयोयेतोरिसरासतें कहातैगहिपाईरी॥ कृष्णप्राणप्यारो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अतिहितूकैमनाबतहै करिमनुहार बहुबातमेंबनाईरी। मानकछौमेरा बलिउलटन करिजोपैतेही पाईबड़ीबड़ीआंख छबिछाईरी॥ ४०१॥ बारनअक्षर ३८ गुरु१० लघु २८

दो० हंसहसायउरलायउठिकहिनरुखोहैंबैन॥
जकितथकितहवैताकिरहेतकितविलोछेनैन४०२॥

यहमानकपरिहास नायककेविद्यमान सखी नायका सों कहति है जे॥ नायकको सुरतापराधदुरायबेकोकहै तौ हूसंभवहै॥ कबित्त॥ मानकियोहो-हितोमनाबेप्यारोपायगहिरोसकेयतनकोविचारकहाकीजिये। रसिकरसाल तेरेलोचनतिलोछे चाहिचक्रतहूं रह्योऐसेनाहक न पीजिये॥ हाहानेाहि सोंहैंअबसधीकरि भौंहैंबैनकाहिन रुखोहैंलालछाती लायलीजिये। हंसिये हंसाइयेरीसुख सरसाइयेरीरस बरसायदुख सौतिनकोदीजिये॥ ४०२॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० येरीयहतेरीदईक्योंहूंप्रकृतनजाय।
नेहभरेईराखियेतूरूखीयलखाय॥ ४०३॥

यहमनायबौसखी कोबचनसखीसों॥ कबित्त॥ कौनपरीप्रकृतछुटा-येहूं छुटैनक्योंहूं ज्योंज्यों कीजैउनीत्योंत्यों टूनपेखियतहै। कृष्णप्राणप्यारे कीदुहाईतेरीगतिदेखे मेरीमतिसोचसों सनीबिसेषियतहै॥ यद्यपिसनेहभरे उरमैंबसायप्यारे प्रीतसरसाई अनलेखेलेखियतहै। तऊतियभौंहनमेंबैनन मेंनैननमेंतेरेअंगअंगमें रुखाईदेखियतहै॥ ४०३॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० क्योंहूंसहबातनलगैथाकेभेदउपाय।
हठुदृढ़गटुगढ़बैसुचालिलीजैसुरंगलगाय॥ ४०४॥

यहगुरुमानहैसखी नायकसोंकहतहै किवाकोंमानचालि छुटैगौसखीको बचनसखीसों॥ सवैया॥ आजसज्योहठको गढ़प्यारोनदेखतधीरज कौन कोंदीजै। क्योंनहूं भांतिलगै सहबातनभेदउपाय यकेमतलीजै॥ लोचनटूट-नक्योंहूं मिलैहरिमानिये मंतुविलंबनकीजै। आपनहींचलिये बलजानुसु-रंगलगायजोलीजैतौलीजै॥ ४०४॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० अनरसहूरसपाइयतुरसिकरसीलीपास।
जैसेसाठेकीकठिनगांठ्योभरीमिठास ॥ ४०५ ॥

यहमानवतीकीशोभासखी नायकासोंकहतिहै ॥ कबित्त ॥ मानि नीतिहरोमनमोहन निहारीकछूमोपैनकह्यो परतुशोभाको बिलासुहै। नासिकासिकोरमोर भृकुटीअनखिबैठी लोचननुमांझअरुणोईकोप्रकाशहै। रसिकरसालवारसीली कीबिनोकिछबि अनरसहूमैऐसे रसको निवासहै। कहै कविठाकुरजैसेसाठेकीसरस री तगांठिहै कठिनभरी तऊपैमिठासहै ॥ ४०५ ॥ मरकट अक्षर ३४ गुरु १६ लघु १८

दो० हमहारीकैकैहहापाइनुपारतप्योरु।
लेहुकहाअजहोंकियेतेहतरेरेयोरु ॥ ४०६ ॥

यहनायका मानवतीसखी कोबचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ नेहनातो तोरितिनुकालौ तूतनगिबैठी तिमईकेहठऐसे देखेतुनेहैंकहूं। केतिननछाई ब्रजबालाकलुगाई परिगासोपैरिहाईन दुहाईदेखोमैंकहूं ॥ केतीमनुहारि ठानीपायपरे दधिदानीमतभायमानी मुखबानीआनीहैकहूं। लागीकाकेमतरानीसांझहीतें सतरानीरन्योंपतिरानी बतरानीतूननैकहूं ॥ ४०६ ॥ भ्रमरअक्षर २० गुरु २२ लघु ५

दो० सोहैहूहेरयोनतेंकेतौधाईसोंह।
येहौक्योंबैठीकियेऐंठिउबैठीभोंह ॥ ४०७ ॥

यहअतिगुरुमानहै सखीकोबचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ केतीमनुहारिकरिहारयो नंदलालब्रजबनिता निहालहैत जाकेनैनचाहैतें। होंतो तूसयानीपरकहा चितआनीयेरस केसमाजबिनुकाज अवगाहैतें ॥ सोंह हेरबेकोहमकेतिखाई सोंहैतऊतेरोमनलाग्यौ क्योंनरसकेउमाहैतें ॥ कियो कहाचाहतिहैसोहो क्योंनकहैबलियैंठी बैठीभोंहकरि बैठी अबकाहैतें ॥ ४०७ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० निरदइनेहुनयौनिरखिभयोजगतभैभीतु।
यहनकहूंअबलोंसुनीमारिमारियेजुमीतु ॥ ४०८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहमानबिरहसखी कोबचननायकमें नायककेपक्षकी सखीहैजोपरकीयानायकाकाहियेतोकाहियेतो ॥ सवैया ॥ ऐसोअधीनभयो मनमोहन तोबिननेकनअंग समारहि । ताइतौतरसावत बावरीक्योंन करैमिलकुंज बिहारहि । तेरौनयौ निरदेहित हैरिदुरौ जगुहोहि भरो भयभारहि । आजलौं ऐसीसुनीन कहूं गति आपमरै अरुमतको मारहि ॥ ४०८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हठनुहठीलीकारिसकैयहपावसऋतुपाय ॥
आनिगांठ्योंघुटतत्योंमानगांठिछुटिजाय४०९॥

कबित्त ॥ दामिनीचपल गतिसोऊ घनश्यामघनहू सों मिलि बिहरति अतिशोभा सरसातिहै । दुमनिसोंलहलहीलतिका लिपटरही सबहीके उरप्रीतिरीति अधिकातिहै ॥ कैसीयेहठीली कोऊरूठनो न ठानिसकै मदनमरूरि नसौंछातो अकुलातिहै । देखोरतिपावस के नेहकीनिकाई माई अनिगांठ खूटैमानगांठ छूटजाति है ॥ ४०९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सतरभौंहरूखेबचनकरतकठिनमननीठि ।
कनाकरौंहवैजातहरिहेरिहसौंहीदीठि ॥४१० ॥

नायकाप्रौढ़ा उत्तमासखी सिखावतिहै किमान करियाके नायककी देखतहीं मानरहत नाहींनायका कोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ तेरो कह्योरूखरूसनो ठानतिहूं रूखरूखोकै तानतिभौंहैं । नीठिकठोरकरमनहूंमुखहूतें बखानतिबैन रूखोहैं ॥ ताकोकहाबसु मेरीअलीलचैलालचीजोअपनो तकिगौहैं । कैसीकरौं मनमोहनकोमुखदेखत लोचनहोत हंसोंहैं ॥ ४१० ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मिलेदुंहूकेदृगझमकिरुकेनझीनेचीर ।
हलकीफौजहरौलज्योंपरतगोलपरभीर ॥४११ ॥

मानमोचन सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगनि में नवनागरि अचानकआयो तहांगिरिधारी । लालकीडीठिबचायबेकों मुख घूंघटओटकियेन निहारी । नैनसोंनैन उमंगिमिले नरहेपट ओट कितौ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पचिहारी ॥ रोकसकेन हरोलकीफौज ज्योंगोलपै आनिपरैभरुभारी ॥ ४११ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मोहीकोछुटिमानगौदेखतहीब्रजराज।
रहीघरिकलौंमानसीमानकियेकीलाज ॥ ४१२ ॥

मान मोचन सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बोलेही बोले हंसैही हंसैअरुसेनकहैकछुबातहियेकी। अंकहूं मांझनिसंकनिहोतसुसंक हिये पियपायछियेकी ॥ केसबरायसों डीठ छिपायेछिपैकहूं जोतिदिये की। मोहनकोमिलै मानछुटयो पैछुटी नखसीमनुमानकियेकी ॥ ४१२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चलौचलैंछुटजायगौहटरावरेसंकोच।
खरेचढ़ायेहेतअबआयेलोचनलोच ॥ ४१३ ॥

यहमानछुटायवेकों सखीकोप्रयोजन नायकको लैजायवेकोहै सखीको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ जानेकोकाल्हितहारीपियारी कहाजियजानि महारिसठानी। कैतीमेंबातबनायमनायकरी मनुहारपैएकनमानी ॥ क्यों हूंकेआजढरैदृगभौंहकछूकनईजुहुतीअतितानी ॥ लालचलौअवलोकि तुम्हैं छुटिजायगोमानअबैहमजानी ॥ ४१३ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३लघु २२ ॥

दो० तुहूकहतहौआपहूसमुझतसबैसयान।
लखिमोहनमनजोरहैतौमनराखोमान ॥ ४१४ ॥

यहनायकाप्रौढ़ा सखीकहतिहै तूमानकरि सो नायका सखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ मानकियेरमनीजिमके बसप्रीतम होतमतोयह तेरो। होहुयहै अपनेचितआनति जानतुहौकरि स्यानुघनेरो ॥ तोकरोमानरी मोहनको लखिजोसखीहाथरहै मन मेरो। कहासबौंजीमें बिचारतिहौ पै कहाकरौ त्यौरनहोततरेरो ॥ ४१४ ॥ मरालअक्षर३४ गुरु १४ लघु ३० ॥

दो० मोहिंलजावनलाजयेहुलसमिलेसबगात।
भानउदैकीओसलौंमाननजानेजात ॥ ४१५ ॥

नायकाप्रौढ़ा मानमोचननायकाकोबचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ तूतो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहमानबिरहसखी कोबचननायकमें नायककेपक्षकी सखीहैजोपरकीयानायकाकाहिये तोकाहिये ॥ सवैया ॥ ऐसोअधीनभयो मनमोहन तोबिननेकनअंग समारहि । ताइतौतरसावत बावरीक्योंन करौंमिलकुंज बिहारहि । तेरौनयौ निरदेहित हैरिदुरयौ जगुहोहि भरो भयभारहि । आजलौं ऐसोसुनीन कहूं गति आपमरै अरुमतको मारहि ॥ ४०८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हठनुहठीलीकारिसकैयहपावसऋतुपाय ॥
आनिगांठ्योंघुटतत्योंमानगांठिछुटिजाय४०९॥

कबित्त ॥ दामिनीचपल गतिसोऊ घनश्यामघनहू सों मिलि बिहरति अतिशोभा सरसातिहै । दुमनिसोंलहलहीलतिका लिपटरही सबहीके उरप्रीतिरीति अधिकातिहै ॥ कैसीयेहठीली कोऊरूठनो न ठानिसकै मदनमरूरि नसौंछातो अकुलातिहै । देखोरतिपावस के नेहकीनिकाई माई अनिगांठ खूटैमानगांठ छूटजाति है ॥ ४०९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सतरभौंहरूखेबचनकरतकठिनमननीठि ।
कनाकरौंहवैजातहरिहेरिहसौंहीदीठि ॥४१० ॥

नायकाप्रौढ़ा उत्तमासखी सिखावतिहै कितूमान करियाके नायककी देखतहीं मानरहत नाहींनायका कोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ तेरो कह्योरूखरूसनौं ठानतिहूं रूखरूखोकै तानतिभौंहैं । नीठिकठोरकरमनहूंमुखहूतें बखानतिबैन रूखोहैं ॥ ताकोकहाबसु मेरीअलीलचैलालचीजोअपनो तकिगौहैं । कैसीकरौं मनमोहनकोमुखदेखत लोचनहोत हंसोंहैं ॥ ४१० ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मिलेदुंहूकेदृगझमकिरुकेनझीनेचीर ।
हलकीफौजहरौलज्योंपरतगोलपरभीर ॥४११ ॥

मानमोचन सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगनि में नवनागरि अचानकआयो तहांगिरिधारो । लालकोडीठिबचायबेकों मुख घूंघटओटकियेन निहारो । नैनसोंनैन उमंगिमिले नरहेपट ओट कितौ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पचिहारी ॥ रोकसकेन हरोलकीफौज ज्योंगोलपै आनिपरैझरूभारी ॥ ४११ ॥ करभ अचर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मोहीकोछुटिमानगौदेखतहीब्रजराज ।
रहीघरिकलौंमानसीमानकियेकीलाज ॥ ४१२ ॥

मान मोचन सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बोलेही बोले हंसेही हंसेअरुसेनकहैकछुबातहियेकी। अंकभूं मांझनिसंकानिहेतसुसंकहिये पियपायछियेकी ॥ केसबरायसों डीठ छिपायेछिपैकहूं जोतिदियेकी। मोहनकोमिलै मानछुट्यो पैछुटी नखसीमनुमानकियेकी ॥ ४१२ ॥ नरअचर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चलौचलैंछुटजायगौहटरावरेसंकोच ।
खरेचढ़ायेहेतअबआयेलोचनलोच ॥ ४१३ ॥

यहमानछुटायवेकों सखीकोप्रयोजन नायकको लैजायवेकोहै सखीको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ जानेकोकाल्हितहारीपियारीकहाजियजानि महारिसठानी । केतीमेंबातबनायमनायकरी मनुहारपैएकनमानी ॥ क्यों हूंकेआजढरैदृगभौंहकछूकनईजुहुतीअतितानी ॥ लालचलौअवलोकि तुह्मैं छुटिजायगोमानअबैहमजानी ॥ ४१३ ॥ मदकलअचर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तुहूकहतहौआपहूसमुझतसबैसयान ।
लखिमोहनमनजारहैतौमनराखोमान ॥ ४१४ ॥

यहनायकाप्रौढ़ा सखीकहतिहै तूमानकरि सो नायका सखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ मानकियेरमनीजिमके बसप्रीतम हैतमतौयह तेरो। होहुयहै अपनेचितआनति जानतुहौकरि स्यानुघनेरो ॥ तोकरोमानरी मोहनको लखिजोसखीहाथरहै मन मेरो । कासिबौंजीमें बिचारतिहौ पै कहाकरौ त्यौरनहैततरेरो ॥ ४१४ ॥ मरालअचर३४ गुरु १४ लघु ३० ॥

दो० मोहिंलजावनलाजयेहुलसमिलेसबगात ।
भानउदैकीओसलौंमाननजानेजात ॥ ४१५ ॥

नायकाप्रौढ़ा मानमोचननायकाकोबचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ तूतो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सिखवतिमनमें हनसों मानकरिमेरेहुहिये मेंतूविचारठहरातरी । निरखत कृष्णप्राणप्यारेकोछबीलीछबिआपहीतै हुलसिमिलतसबगातरी॥ कहाकरौं निलजयेमोहीकोंलजावतहैं कहूं जोपैहोयकछुकहिवेकी बातरी । भानके उदोतभयेओसकनकीसीभांति मानमनमेंतैहूं नजानतबिलातरी ॥ ४१५॥

करभअक्षर ३२ गुरू १६ लघु १६

दो० नैनानैकनमानहींकितौकह्योसमुझाय ।
तनमनहारेहूंहसैंतिनसोंकहाबसाय ॥ ४१६ ॥

नायकाप्रौढ़ानेत्रोयालंबनायकाकोबचनसखीसों॥ सवैया॥ सहियेजग केउपहासनतें गहियेगुरूलोगनमां रगसैं। डरआनियहैअपनेउरहौं समझा-यरहीनिहिंनेकत्रसैं ॥ अरूरंचकमेरो कह्योनकरै तनहूं मनहारे कहूं हुलसैं। यहनेमगह्यौ सजनीइन नयननु पैहरिहेरि हसैंईहसैं ॥ ४१० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२

दो० रहैंनिगोड़ेनैनडिगगहैंनचेतअचेत ।
हौंकसुकारिरिसकोकरौंयेनिसखेहंसदेत ॥ ४१७ ॥

यहनेत्रोयालंबहै सखीनायकाको दृढावतिहै कि तूमानकरि नायका अपनेनेत्रन के स्नेहकी आधिक्यइहै सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ हेतु अहेतुकछूनबिचारत क्योंहूं अचेतन चेतगहैरी । देखत वामनमोहन की छबिक्योंहूं लगातनमेरेकहेरी ॥हूं कितनौकेसुकै रिसकौंकरौंयेन सिखेहंसकै उमहेरी । कैसोकरौंयह नयननको यहबानपरीडिगिहूके डहेरी ॥ ४१० ॥

नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १६ ॥

दो० सकुचनराहियेश्यामसुनियेसतरौंहैंबैन ।
देतरचौहौंचितकहैंनेहनचौहैंनैन ॥ ४१८ ॥

यहप्रथमसमागम नायका परकीयासखीकोबचननायकमों ॥ सवैया॥ आगेह्वैलीबोयहै इनकोंउतचाह इतें दृगखैलईहै । मानिबेकोंयहई प्रति ऊतरमानियेबात जुमौनमईहै ॥ रोसकोबातवहै रसको रूखकाहेको केश्व छांड़दईहै। नाहींयहांतुमनाहींसुनी यहनारिनईन कीरीतिनईहै॥ ४१८ ॥

मुहुक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० कहालेहुगेखेलमेंतजौअटपटीबात।
नेकहसोंहींहैभईभौंहैंसौंहेंखात ॥ ४१९ ॥

यहनायका औरसोंआशक्त जानिनायकाने मानकियो नायकमनावन आयोसोवाही नायकको नाममुंहते निकस्योतो सखीनायक सों वाके मानछुड़ायवेकोपरिहासकोप्रसंगचलायोसखीकोबचननायकसों ॥ सवैया ॥ हाँसीतोकीजिये तासोंलालहंजोसैमखपाय नयेतियऐसी॥ बारहोबारलैबैर कोनामभुकावेइन्हैतजोबानिअनैसी ॥ यापरिहासपैलेहोकहाकरियेतो इते कहिकोमुरवैसी। सोंहेकिये भईनीठहमाहीं यहभौंह कमानमनोजकीऐसी ४२० ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० खिचेमानअपराधहूंचालिगेबढ़ैअचैन।
जुरतदीठितजरीसखीहंसेदुहुनकेनैन ॥ ४२० ॥

यहमानमोचन नायकाकेनेत्रनतो मानसोंखिचे नायकके नेत्रअपराध सोंखिचेहैं पै अचैनतेविनादेखे रह्योनजाय यातेंरसअरूखिसी आपहीतें छोड़िकै दोउनकेनेत्र हंसेसखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ मानके भामिनऐंचरहीदृग रातकहूं हरिअंतनसेई। याहीतेमोहन नारिनघाइ रहे उरसोचसकोचगसेई ॥ कृष्णकहैबिनदेखेदुहूंनके मैनअचैनाहिये सरसेई। डीठजुरैतजिरीसखीसो बिचनयनमिलैंमुखपाइहंसेई ॥ ४२० ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० अजहूंनआयेसहजरंगाबिरहदूबरेगात।
अबहींकहाचलायतललनचलनकीबात ॥ ४२१ ॥

यहनायकाप्रवत्सपत्यतिकासखीकोबचननायक सोनायकाहूको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥लेखतिमेंकहुंकान्हकह्योतुमकाल्हिहोजैहो चरावन गाई ॥ सोसुनिकेउनदीरघ स्वासभरीसबअंग परीपियराई॥ तादिनकी बानबेलीकेअंगनिआजहूं लौंदमिटीदुबराई ॥लालर हो अनबोलैकहाअबहीं चरचा चलिबेकी चलाई ॥ ४२१ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिलखी डबकौंहैं चखनपियलखि गवनबराय।
पियगाहि बरिआयो गरैंरखीगरैलगाय॥ ४२२॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायका प्रवत्स्यत्पतिका मध्यावाकी यहदशा देखि नायक ने गवनवहरायकै गरेसोंलगाय सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पतिप्राण पियाबिछुरैनकहूं सुखमोर है प्रेमप्यूषपिये ॥ हितुमानिबिदेशको हौंनि विदाहरिआयौ प्रयानको आजुकिये ॥ निरखो डबकौहैसे नैनकिये बिलखो मृगलोचनि सांसलिये ॥ नकहीचलिबेकी कछूबतियां छतियां भरि लीनी लगायहिये ॥ ४२२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० ललन चलन सुन चुपरही बोली आपुन ईठि।
राख्यो गहि गाढ़े गरौ मनो गलगली डीठि ॥ ४२३

यह नायका प्रवत्स्यत्पतिका सखी को बचन सखी सों मध्या प्रवत्स्यत्पतिका ॥ कवित्त ॥ प्यारीकेभवन अतिहितकरि प्राणपति आयौ बिदाहोन परदेश कोउमहिकै ॥ ललन चलन सुनिरही अनबोली तिय आलेनहूबचन सुनायोकछू कहिकै ॥ चकितसीभई चकचौंहटुसो छायो हिय आवत सलिलदोऊ नैननते बहिकै ॥ गलगली डीठिकरि हेरो हेरि सनमुख मेरेजानि राख्योयेही गाढोगरों गहिकै ॥ ४२३ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ललन चलन सुनि पलनमें असुवांझरके आय।
भई लखाइनु सखिनहू झूठेही जमुहाय ॥ ३२४

यह नायका मध्या प्रवत्स्यत्पति का सखीका बचन सखीसों क्रिया विदग्धा परकियाहू होय ॥ सवैया ॥ खेलतही सजनीगन में वृषभान कुमारि सरूपसों सानी ॥ कान्हर कालि करैगो पयान सुनीयह काहूके आननबानी ॥ आंखनमेंअंसुवा झलकें यहभेदको बातअलीहूनजानी ॥ यौंमुंहमोरि जंभायबेकी करिऊठमुंह पोंछतिनैनसयानी ॥ ४२४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहिहै चंचल प्राणये कहीकौनकी ओट।
ललनचलनकीचितधरीकलनपलनकीओट ४२५

यह नायका प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका नायका को बचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ मैनसुखसंगनमेंनेहकोतरंगनमेंअंगअंगपागि रहेरंगमेंटमहिहैं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है ॥ कृष्णप्राण प्यारेतैंनछिनोभर न्यारेभये औरहीतें बसनभये ऐसीबान गहिहैं ॥ पलनकी ओटभये कलनकहत क्योंहूं जैसी गतिहोत सोधों आवत नकहिहैं ॥ ललनाविचारी चितचलनकी बातअब कौनकी ओटये चपल प्राणरहिहैं ॥ ४२५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चाहभरी अतिरिस भरी बिरहभरीसबगात।
कोरिसंदेसे दुहुनकेचले पौरलौंजात ॥ ४२६ ॥

यह प्रदेशको गमन दोऊनके हितको अधिकाई सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजको कान्हर कोन्हें पयान महूरतसाधभलेई। अंतरहोत दुहूनकोज्यों अकुलात वियोगके शूलसलेई ॥ चाहभरी अरु प्रीतिभरी रसरीति भरी बतियांनर लेई ॥ पौरलौं जात दुहूनको औरतें आलीरी कोरिसंदेश चलेई ॥ ४२६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मिलिचलिचलमिलिमिलिचलतआंगनअथयौभानु
भयौमहूरत भोरकोपौरी प्रथमनिलानु ॥ ४२७ ॥

यह प्रदेश प्यान को समय सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ सोहैं कियेढरओहें मे नैनटरैंनकहूं हियकीहिलिये। आगेहूं आयेनतूके कछूरुकत्यौ न मुहथ्रुतिसामलिये ॥ भोर सांझभई न अजौंघर भीतर बाहिरओटलिये। रहेंगेहकी देहरी ठाढ़े ठीरटलागीदुहून चलौचलिये ॥ ४२७ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० बामाभामाकामिनीकहिबोलौआबेस।
प्यारीकहतनलाजनहिंपावसचलतविदेश४२८॥

यहनायकप्रौढ़ा प्रवत्सप्रत्यतिकानायका कौबचननायकसों ॥ सवैया ॥ आयेहौमांगनमोपै बिदाइतपावकमे घुमड़े घनकारे। कामिनी भामिनी बामकेबोलहूप्यारी कहौजिन नंददुलारे ॥ रंचकहूनलजात हियेहितकै अबयेदुख दीजतुभारे। ऐसेमेंछांड़िबिदेश चलेकहामेरीकहा गतिप्राणपियारे ॥ ४२८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० पियप्राणनकीपाहरू करतजतनअतिआप।
जाकीदुसहदशापरयौसौतिनहूंसंताप ॥ ४२९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायकाप्रोषितपतिका सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ ताप तपीबिरहानलके बिलखीयह नागरिखीनानिहारी । आंखिनहीमरहै अब आनिकै प्राणसबै सुधिआनिविसारी ॥ सौतिसबै उपचार करैंगनकैपिय प्राणनकीरखवारी । दाहनुवाकोदिसा निरखेंउनहूंकेपरी जियसंकटभारी ॥ ४२९ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

दो० पावकझरतेमेहझरदाहकदुसहविशेषि ।
दहैंदेहवाकेपरसयाहिदृगनहींदोखि ॥ ४३० ॥

यहनायकाप्रोषित पतिकाबिरहनी नायकाकोबचनसखीसों उद्वेगतें नायकहूसखीसों कहैतोसंभवहै ॥ सवैया ॥ धूमधुरेधुरबागहरे अरुअंबर पूरमहीअवगाहै । देखरीपावकको झरतैंयहमेहकीज्वाला करालमहाहै । बाही भटूपरमैंही दहैयह नैननही निरखे तनदाहै । बागिरिधारी बिना बचिबे को तुही कहि और उपाव कहा है ॥ ४३० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरू १० लघु २८ ॥

दो० कहैजुबचनवियोगिनीबिरहबिकलअकुलाय ।
कियेकोअंसुवासहितसुबातिबोलसुनाय॥४३१॥

यहनायकाप्रोषितपतिका सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ प्राण पतीविनबातिय कोइकसायसबैदुख आनपरेहैं । वाकोदिसालखि पासकेवासीउमास भरेगहरेगहरेहैं ॥ जेकहेंबैनबियोगनि नेअकुलायबियोग बिधानभरेहैं । वेबतियांअबबोल सुबासबहीअसुवान समेतकरेहैं ॥ ४३१ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरू १० लघु २८

दो० दुसहबिरहदारुनदसारहैनऔरउपाइ ।
जतजानज्योंराखियतपियकोनामसुनाय ४३२ ॥

यहनायकाप्रोषित पतिकाबिरहनी सखीकोबचनसखीसोंदसअवस्थान केभेदमेंव्याधिजानिये ॥ सवैया ॥ प्राणपियाप्रदेश कियेतियअंग अनंगतरंगनिताये । सीरीहै जातजरै कबहूंउपचारविचार जितेसबछाये ॥ ईठ निधायखबासिहिनू सुरझायरहीन भयेमनभाये । ऐसेकहैंजोबचैतोबचैकहै गावोभावो मोहनआये ॥ ४३२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० रह्यो पैंचिअंतनुलहैअवधिदुसासनबीरु ।
आलीबाढ़तबिरहज्योंपंचालीकोचीरु ॥ ४३३ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका प्रौढ़ानायका कोवचनसखीसों ॥ सवैया ॥ चैनपरैनहिं मैनदहै दिननैननमाँझ रहैजलछायो । भावैनभोजनभौनसुहाइनहायहिये परतापतचायो ॥ ऐंचतिऔध दुसासनवीरु जऊबलकृतऊ अंतनपायो । वहकैबिछुरेबिरहानुबढ़्यो अवद्रोपदीकेपटज्यों अधिकायो ॥ ४३३ ॥ चिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० तियहियनियजुलगीचलतापियनखरेखखरोट ।
सूखनदैतिनसरसईखोटिखोटितनखोट ॥ ४३४ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोवचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मैननेंरंगरमीरसरंगअनंगतरंगउमंगसुहाई । कान्हरकेकरकीनखरेटकहूंतिय केउरमैं लगिआई ॥ पी परदेशगयो जबते तबतै लननीधनको धनपाई । देखत खोटखरोट खरौटिन मूकनदेतवहै सरसाई ॥ ४३४ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २३ ॥

दो० मारिबेकोसाह सुककैबढ़ेबिरहकीपीर ।
दौरतिहवैसमहींशशिहिसरसिजसुरभिसमीर॥ ४३५॥

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोवचन सखीसों ॥ सवैया ॥ श्रीमनमोहनसों जबतेंबिछुरीतबतें नयलोकलपावति । नीरबिना सफरीज्यौं खरीपैपरीतलफैकभईदुबरीचति । दौरतसासुहैसीरसमीर सरीजनलैहियरा सोंलगावति । ऐसीभईरीं दशातनकीअबप्राणबयान को राहबतावति ॥ ४३५ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बासिसकोचदसवदनबससांचदिखावतिबाल ।
सियज्योंसोधतियतनहिंलगनअगनकीज्वाल ४३६॥

यहनायक नायकाकेलगनिके लगेतेंसनेहकी कधिकाईहै यतेंचगान हैसीयाकी दसासखीनायकसों निवेदनकरतिहै ॥ कावित्त ॥ जादिनतेंरयौनवनेह मनभावनसों तादिनातेंमैनकी मरुरिनमरति है । चमू

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गुरुलोगनिके सासनिसकति भरिएक आसलागी निसबासर भरति है ॥ बसतसकोचदस बदनकेबसयातें कछुनबसात ध्यानपतिको धरतिहै। लगनिकीअगनिकी ज्वालनिमेंबाल निजदेहकों सियालौंबहसोधन करतिहै ॥ ४३० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० करीबिरहऐसीतऊगैलनछांड़तनीचु।
दीनेहूंचसमाधरैनचाहैलहैनमीचु ॥ ४३७॥

यहनायका प्रोषितपतिकासखीको बचननायकसों विरहनिवेदन करि सखीसखीहूंसोकहै॥ कवित्त ॥अतिहीकृशंगीखरीकृशहूतेंत्रस करिहरिके वियोगदुखदेह दहियतुहै। नैननिनिहारि नमैनेकहूनडीठ परेसे जतन बलनमैनोग लहियतुहै ॥ बहनीबयारी लागैजिनउड़िजाय सेखसखीके समाजअनमेष रहियतुहै। अतनसीभईसुतो बिसहैके बेधबेकों मैनहूके नैनउपनैन चहियतुहै ॥ ४३० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० औंधाईसीसीमलासबिबिरहबिकलबिललात।
बिचहीसूकिगुलाबगोछीटोछुईनगात ॥ ४३८

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोबचन नायकसोंसखी हींसोंकहै तोबनै ॥ सवैया ॥ बालबधूमन मोहनसोंबिछुरे बिलसीदुख दंददवाई। नीरबिना सफरीज्यों धरीतलफै बहुभांति वियोगतचाई ॥ सीतल जानि सखीकरुणाकरि सीसतेंमे सगुलाबनकाई। बीचहीनीरबिलाय गयोसब येकहूछोटन अंगलौंआई ॥ ४३८ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जिहिनदाघदुपहरभईरहितमाघकीराति।
तिहउसीरकीरावटीखरीआवटीजाति ॥ ४३९ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखीकोवचन नायकसोंसखीकोवचन सखीहूसोंवनै ॥ सवैया ॥ लालतिहारे वियोगतेबाल बिहाल खरीतरकै सफरीसी। बातनतापके त्रासनतेंसखि कोऊनजाय सकैनियरोसी॥ ह्वैरहेजेठकी ज्वालनि मेंजहांजाड़ेकीराति तुमारभरीसी। ताहीउसीरकेधाममेंवासबुजाड़े कीरातिमेंजातबरीसी ॥ ४३९ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० सीरेयतननुशिशिरऋतुसहिबिरहनुतनताप।
बासिवेकोंग्रीषमदिननुपरयोपरौसिनपाप॥ ४४० ॥

यहनायका प्रोषितपतिकासखी कोवचननायकसों बिरहनिवेदनअरु सखी कोवचन सखीहूसोंसंभवहै ॥ कवित्त ॥ जानबूझिफेर खात फेरन उतहिजातयेकबेरभयेजेवड़ोहीबाड़गरके ह्वैरह्यो अवाआवासुतेउतचमी आस पास उसतैं उसासतज्योंचाहत नगरके ॥ जबजबस्वारकेसमीर इत आवतहैंकान्हजू तिहारीबिरहनकेबगरके। पवतनडरपान पेड़तेपरसजातु सोंधेभरि आलबालउपटेनगरके ॥४४०॥ पयोधरअक्षर ३६गुरु १२ लघु २४॥

दो० गनती गनवेतेरही छतहू अछत समान।
अवयेतिपिआमरन लौंपरेरहौतनप्रान ॥४४१॥

यहनाका प्रौढ़ाप्रोषितपतिका सखीकोवचन सखी सों ॥ सवैया॥ देखिरी कैसीकरीमनभावन ऐसीधौंबाहि कहावनि आई। औधिहूबीति गई न लईसुधि यैतोधरीउरमें निठुराई ॥ लागिनतीगिनवेते रहेनभयेसभये बिन चासुखदाई। येतिय औमनोंद्योसके सोमलें प्राणपरे तनमेरहौमाई ४४१ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० सुनतपथिक मुहमाहनिसि लुवैचलतउहिगाम ॥
बिनपूछेबिनहीसुनेजियत विचारीवाम॥ ४४२ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका विदेशमें पथिककेमुखकी बातसुननायकने अटकरतेयाकीदशाजानी सखी वाचनसखीसों ॥ सवैया ॥ सीतसमैहूं कीरातमें लूवें चलेंउहिदेश हुतासनसानी। आपसमें बतर तबडोही अचानकआनपरी यहबानी ॥ छांड़दियेसब काजबिदेशीकी बुद्धितहीं घर कोअकुलानी। प्राणपियारीकी आयगईसुधि जीवतहैजियमें यहजानी ॥ ४४२ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० आडेदैआलेबसनजाड़ेहूकीराति।
साहसककैसनेहबस सखीसबैढिगजाति ॥४४३॥

यहबिरहनिवेदन प्रोषितपतिका सखीकोवचननायकसौंसखी सखीसों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहै ॥ कवित्त ॥ लालबनमाली बिछुरेतेंब्रजबालभई निपटबिहालबिथा उरसरमाति है। अतनसताई वाकेतनकी ततार्ईदेखेब्रषकेतरणिहूं कीकरणिमिरातहै ॥करतउपाय हाय कहिबारबारमीड़िरकर करनिनिपटअकुलातहै। आड़े देबसन आलेजाड़ेहू कीरातमांझ साहसकैहू नासखी ढिगजातिहै ॥ ४४३ ॥ मरलअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० मारसुमारकरीडरीमरीमरीहिनमारि।
सींचिगुलाब घरीघरीबरीबरीहिनबारि॥ ४४४ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका उद्वेग दशानायककी वचनसखीसों अन तरंगसखीसखीहूंसों कहैतो बनै ॥ कवित्त ॥ बालमबियोगतै बिकल अतिप्राणकछू सूझतनआन बन्यो दुखहीकोदावरी। चीरउपचार करिमारिन मरेको जोहितूहै तौतूक्षणप्राणप्यारे कौमिलावरी ॥ घरीघरी सींचत गुलाबकेसलिलसोंतू कियौकहाचाहतिहै माहूधौंबावरी। भरतघरीपैमारी मारकीडरीहै बिरहागिनि बरियेअवारि जिनबावरी ॥ ४४४ ॥ मच्छ अक्षर ॥ ४१ गुरु १७ लघु २४

दो० पलनुप्रकटबरनीनबढ़िनाहिंकपोलठहरात।
असवापरिछातियांछिनकुछनुछनायछपिजात ४४५

यहनायका प्रोषितपतिका मध्यसखीकोबचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ बालनन्दलाल के बियोगतेबिकल यातेंपलपल विधकैसेबासर बिहातहैं। बिरहतताकीबढ़न बरनीनजाति येतेमानतचेवाके कुसमसेगातहैं ॥ पलनु तैंप्रगट बढ़तबरनीनहू तेपरतकपोल पैंपरतढरिजातहैं। सलिलकी बूंद तातीछतियांपै परतऐसेछातीपर असुवाछनकि छपिजातहैं ॥ ४४५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० फिरिसुधिदेसुधिधायप्यौइहनिरदईनिरास।
नईनईबहुरयौदईदईउसासउसास ॥ ४४६ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका याकोअवस्था सखीसखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आलीबियोग भयोबनमालीका व्याकुलवालखरी अकुलाई। पाहन की पुतरी ह्वै परी उपचार विचार कछू न बसाई ॥ ऐसेमैंवाहि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दईसुधिदैसुध धायपिया दुखरासजगाई ॥ वानिरदैमोंकहा कहिये जिन प्रेम मरुरकी पीरम पाई ॥ ४४६ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिरह जरी लखि जीगननु कह्योनउहिकैबार ।
अहेआवभजि भीतरीबरसतआजअंगार ४४७॥

यह नायका प्रोषितपतिका उदवेग दशा सखी को बचन सखी सों नायकहूसों बिरह निवेदन बनै ॥ कवित्त ॥बैसकीकिशोरी गोरीशोभा बरनीनजात गातकीनिकाईछबि नाहींकाहूजानमें ॥ बासकगंवायो खेलि जियमेंबियोगबेलि मांझसमयबिथाबाढ़ी बैठिपियभौनमें ॥ कैधिकेबितीत भयेरंचकौन कलपरीव्याकुलसी भईजातसीरे मंदयोनमें ॥ नीचेतेउठाय नारिडीठिपरे जागनासुआगि आगिआगि कैकैभाजगई भौनमें ॥ ४४७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवत चलिजातउतचलीछसातक हाथ ।
चढ़ी हिंडोरेसैंरहेलगीउसासनसाथ ४४८ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको बचन बिरह निवेदन नायक सों औरसखीको बचन सखीसों दुर्बलता अधिक है उसासनतें मुकरता नसंभवहै ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलेाचलिदेखिये आपहीजाय बियोगनकेढंग ॥ थेारेहीद्यौसनतें लखियेसबदेहभई जरदीहरदी रंग ॥ बैसहूकेभरमें यहभांति परेबरहीन खरेदुबरे अंग ॥ पैंड़छसात हिंडोरेमे बैठी जुआवतजाति उसासनके संग ॥ ४४८ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नेकन झरसीबिरहझर नेहलताकुमलाति ।
छिनछिनहोतखरीखरीखरीफैलतीजाति ४४९ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका नायकाको बचन सखीसों अथनायकको बचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ नंदकेदुलारे प्यारेन्यारेभये जबहीते तबहीते तातीहवैकै छातीअकुलातिहै ॥ सुधिआयेघरीघरी सूलसे मलतरर प्रा परेपरबसकछुन बसातहै ॥ दारुनबिरहझर यद्यपिसनेहलता झरसीतद्यापि नेकहूनकुंभिलातहै ॥ दिनदिन छिनछिन उमंगिअधिक होत हरीहरी खरीखरी झालरतिजातिहै ॥ ४४९ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहै ॥ कबित्त ॥ लालबनमाली बिछुरेतेंब्रजबालभई निपटबिहालविथा उरसरमातिहै। अतनसताई वाकेतनकी ततार्ईदेखेब्रषकेतरणिहूं कीकरणिमिरातिहै ॥करतउपाय हाय कहियारबारमोड़िरकर करनिनिपटअकुलातहै। आड़ेदेवसन आलेजाड़ेहू कीरातमांझ साहसकैहू ना सखी ढिगजातिहै ॥ ४४३ ॥ मरलअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० मारसुमारकरीडरीमरीमरीहिनमारि।
सींचिगुलाब घरीघरीबरीबरीहिनबारि॥ ४४४ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका उद्वेग दशानायककी वचनसखीसों अन तरंगसखीसखीहूं सों कहैतो बनै ॥ कबित्त ॥ बालमबियोगतै बिकल अतिप्राणकछू सूझतनआन बन्यो दुखहीकोदावरी। औरउपचार करिमारिन मरेको जोहितूहै तौतूक्षणप्राणप्यारे कौमिलावरी ॥ घरीघरी सींचत गुलाबकेसलिलसोंतू कियौकहाचाहतिहै माहूधौंबावरी। भरतघरीपैमारी मारकीडरीहै विरहागिनि बरियेअवबारि जिनबावरी ॥ ४४४ ॥ मच्छ अक्षर ॥ ४१ गुरु १७ लघु २४

दो० पलनुप्रकटबरनीनबढ़िनहिंकपोलठहरात।
असवापरिछतियांछिनकुछनुछनायछपिजात ४४५

यहनायका प्रोषितपतिका मध्यसखीकोबचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ बालनन्दलाल के बियोगतेबिकल यातेंपलपल विधकैसेबासर बिहातहैं। बिरहतताकीबढ़न बरनीनजाति येतेमानतचेवाके कुसुमसेगातहैं ॥ पलनु तैंप्रगट बढ़तबरनीनहू तेपरतकपोल पैंपरतढरिजातहैं। सलिलकी बूंद तातीछतियांतै परतऐसेछातीपर असुवाछनकि छपिजातहैं ॥ ४४५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० फिरिसुधिदेसुधिधायप्यौइहनिरदईनिरास।
नईनईबहुरयौदईदईउसासउसास ॥ ४४६ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका याकोअवस्था सखीसखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आलीवियोग भयोबनमालीको व्याकुलवालखरी अकुलाई। माहन की पुतरी ह्वै परी उपचार विचार कछू न बसाई ॥ ऐसेमैंवाहि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दईसुधिदेसुध धायपिया दुखरासजगाई ॥ वानिरदैसोंकहा कहिये जिन प्रेम मरुरकी पीरम पाई ॥ ४४६ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिरह जरी लखि जीगननु कह्योनउहिकैबार ।
अहेआवभजि भीतरीबरसतआजअंगार ४४७॥

यह नायका प्रोषितपतिका उदवेग दशा सखी को बचन सखी सों नायकहूसों बिरह निवेदन बनै ॥ कबित्त ॥बैसकीकिशोरी गोरीशोभा बरनीनजात गातकीनिकाईछबि नाहींकाहूजानमें ॥ बासकगंवायो खेलि जियमेंवियोगबेलि मांझसमयविथाबाढ़ी बैठिपियभौनमें ॥ कोधिकेबितीत भयेरंचकौन कलपरीव्याकुलसी भईजातसीरे मंदयोनमें ॥ नीचेतेउठाय नारिडीठिपरे जागनासुआंग आगिआगि कैकैभाजगई भौनमें ॥ ४४७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवत चलिजातउतचलीछसातक हाथ ।
चढ़ी हिंडोरेसैंरहेलगीउसासनसाथ ४४८ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको बचन बिरह निवेदन नायक सों औरसखीको बचन सखीसों दुर्बलता अधिक है उसासनतें मुकरता नसंभवहै ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलेाचलिदेखिये आपहीजाय बियोगनकेढंग ॥ थेारेहीद्यौसनतें लखियेसबदेहभई जरदीहरदी रंग ॥ बैसहूकेभरमें यहभांति परेबरहीन खरेदुबरे अंग ॥ पैंड़छसात हिंडोरेमे बैठी जुआवतजाति उसासनके संग ॥ ४४८ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नेकन झरसीबिरहझर नेहलताकुमलाति ।
छिनछिनहोतखरीखरीखरीफैलतीजाति ४४९ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका नायकाको बचन सखीसों अथनायकको बचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ नंदकेदुलारे प्यारेन्यारेभये जबहीते तबहीते तातीहवैकै छातीअकुलातिहै ॥ सुधिआयेघरीघरी सूलसे मलतहर प्रा परेपरबसकछुन वसातहै ॥ दारुनबिरहझर यद्यपिसनेहलता झरसीतद्यापि नेकहूनकुंभिलातहै ॥ दिनदिन छिनछिन उमंगिअधिक होत हरीहरी खरीखरी भालरतिजातिहै ॥ ४४९ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० याके उरऔरै कछू लगी बिरहकी लाय।
प्रजरैनीर गुलाबको पीकी बात बुझाय ॥ ४५०

यहनायका प्रोषितपतिका नायकाकी अवस्थासखी सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ ऐसीदशा लखिहूअकुलाति कितै उपचार बिचारतकोरी ॥ आनन बोलैन खोलैबिलोचनि टूबरीहोत छिन छिनगोरी ॥ याके हियेकछु और अनेखीयेग हुत सनज्वाल जगोरी ॥ नीरगुलाबके टूनी बरैपिय प्यारेकी बातही होतहै सोरी ॥ ४५० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० होमत सुखकरि कामना तुमहिं मिलनकी लाल।
ज्वालमुखीसीजरतलखिलगानिअगानिकीज्वाल ४५१

यह नायकाकी लगानकी ज्वालकी अधिकाई सखीनायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ कृष्णप्राणप्यारे लालजबहींते भयेन्यारे तबहींते प्यारी पलकनधरतिहै ॥ समकिसमकिआति उरमेंउसासेंलेत तलफितलफि सुध बुधबिसरतिहै ॥ बिरहहुतासनकी निरखि प्रचंडज्वालनिहचै हियेमेंज्वाल मुखीकोधरतिहै ॥ मिलवेकी कामना हियेमेंकरिइंदुमुखी अबसबसुखनिकोहोमसो करतिहै ॥ ४५१ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० नितसं सोहं सोबचनु मनोसुयह उनमान।
बिरहअगानिलपटनसकैझपटनसींचसिचान ४५३

यहनायका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीसों कहै तो बिरह निबहन होय ॥ सवैया ॥ बिछुरेपियऊसन कोबिषयो वहकौन कथा जुकहावतिहै तुमसोंतुकह्यो तिहयेगजिये जिनजानहुबात बनावतिहै ॥ उहिनागरकी तनतापजुहै हितहवैकरि सोदरसावतिहै ॥ डरदाहनिवा बिरहानलके बलिवायहमीच न आवतिहै ॥ ४५२ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

सो० बिरह सुकाई देहनेह कियौ अति डहडहो।
जैसे बरसै मेहजरै जवासो जौजमै ॥ ४५३ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहकीअरु सनेहकीअधिकाई सखीसों

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहैअरु नायकहू सखीसों अपनीअवस्था कहै तोसंभवहै ॥ सवैया ॥ देखो बियोगन नेह सुखायकरी दुबरीरह्यो मांसनमासो। नेहलताउल हायहरीकरी हेरिसखीनहूं कैपरनोमासो। आवतहै जियमें उपमाकवि कृष्ण कहैदेखिये तमासो ॥ ज्योंबरसेघनपावसके सबओरजमैजरैआकजवासो ॥ ४५४ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बिरहबिथादिनपरैही तजैसुखनसबअंग।
रहिअबलौंबटुखौभयौचलाचलौजियसंग ४५५॥

यहनायका प्रोषितपतिका नायकाकोबचनसखीसों अरुसखीसखीसों कहैतोहूसंभवहै ॥ कबित्त ॥ जौलौं प्राणनाथकेसमीपरहीतौलौंअंगअंग सरसाने सुख उमंगिउमंगिकै। न्यारेहोत प्यारेकेबियोग बिथा बाढ़तही नातौ करिहातौवेअगाऊ गयेभगिकै ॥ दुखकीनिकाई कछूबरनी न जात माईयेतौदुखसह्योतऊ रह्योप्रेमपगिकै। पैनभयौहीनोरीयहांलौंसाथदीनो अबचलिबोबिचारयौ संगप्रान न केलागिकै ॥ ४५५ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० छतौनेहकागरहिये भयौलखाइनटांकु।
बिरहतचैउघर्योसुअब सेंहडकोसोआंकु ४५६॥

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोबचन सखीहूसों नायकहूकोबचन सखीसोंसंभवहै ॥ सवैया ॥ जौलोंसमीप रहयोहरितौलगमें अपनोमन भायोकरोई। काहूलहयो यहभेद नजोयको यद्यपिहौ सबभौनभरोई ॥ नेहछतोई हुतौ हियकागर कोनहूंभास नजानिपरोई। सोंहडिको सो लिखाव अलो बिरहा गितचै अबतौ उघरोई ॥ ४५६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्रजर्योआगिबियोगकी बह्योबिलोचननीर।
आठौंजामहियेरहै उड़्योउसाससमीर ४५७॥

यह अवस्था बिरहकी नायक अथवा नायका अपनी अवस्थासखी सों कहतहै ॥ कबित्त ॥ सबहीतें कठिन सनेहकी हिलगयह किन-सुखपायौ मनप्रेम पंथ ढारिकै। जाके तनलागे सोही जानतहै भेदयह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेदन विषमकौन सकत सम्हारिकै ॥ कहै कविकृष्ण यह और अद्भुत गतिप्रजरयो वियोग आगिबच्यो द्रगबारिकै। तऊदेखो आगेजामु उठयोई रहतदीयो दीरघउसासनकी प्रबल बयारिकै ॥ ४५७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

सो० मैं लखिनारीज्ञानकररास्योनिरधारयह।
वहईरोगनिदानवहैवयदऔषधिवहै ॥ ४५८ ॥

यह लगन सखीको बचनसखीसों। अनतरंग सखीको कहिवो है अरुनायकाहू अपनी अवस्था सखीमें कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ काइको घोरघनो घनसारबृथा उपचारनु कौतनुवारो। भेलखिनारकरयो निरधारल है यहभेद नवेदविचारो ॥ जाकोस्वरूप खुल्यो उरमेंकिनताहि दिखायबिया यहटारो। औषधिवैद वहै उपचारवहै पुनरोग निदाननिहारो ॥ ४५८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्योआंचअतिबिरहकी रह्योप्रेमरसभीजि।
नैननकेमगजलबहै हियोपसीजिपसीजि ४५९ ॥

यह नायका की अथवा नायक की विरहकी अवस्था सखी सखी सों कहतहै ॥ सवैया ॥ जादिनतें वृजनागरिको मननंदकिशोरके नैननहयो। तादिनतें दिनरैनडरै असुवातिनको यहभेदलहयो ॥ आंचतच्यो बिरहानल की हितप्रेरसमें अतिभीजरहयो। ताहीते अंगपसीज हियो पियनैननके मगनीरबच्यो ॥ ४५९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पावकझरतेंमेहझरदाहकदुसहाविशेखि ॥
दहैदेहवाकेपरसयाहिदृगनहींदेखि ॥ ४६० ॥

यहउद्वेगदाहा नायककोअथवा नायककोबचनसखीसों ॥ सवैया धूमधुरेधुरवागहरे अरु अंबपरपूर महीअवगाहै। देखरीपावककी झरतें नेहमेहकी ज्वालकरालमहाहै ॥ वाहिभटूपरसेही दहैयहनैननहीं निरखे तनदाहै। वागिरधारीबिना बचिवेकोतुहीकहि और उपावकहाहै ४६० ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० कौनसुनैकासोंकहौंसुरतबिसारीनाह ॥
बदाबदीज्योंलेतहैयेबदराबदराह ॥ ४६१ ॥

यहनायकाप्रोषित पतिकाबिरहकोदशा अथवाभेदमेंचिंता नायकाकी बचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ कासोंकहौं कौनयह जानेउर अंतरकी सुरत बिसारीसुखकारी हरिनाहरी। येतेपरबरज्यौनमानै क्योंहूं प्राणलेतबदाबदी बदरानियट बदराहरी ॥ अंगहीतबिकल अनंगतनतावतहै कौनहरैवेदन रहतचितचाहरी । कृष्णप्राणप्यारेकी दुहाईनसुहाईकछू बरसत नैननतें सलिलप्रवाहरी ॥ ४६१ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० श्यामसुरतिकरराधिकातकतितरनिजातीर ॥
अंसुवनिकरतितरोसकोखिनकखरोहौनीर॥ ४६२॥

यहनायकाप्रोषितपतिका दसअवस्था केभेदसमस्तसखीकी बचनसखीसों ॥ सवैया॥ ॥ श्रीमनभावनके बिछुरेबृषभानसुता अतिहीअकुलानी। भोजनभोनसखीन सुहायसुहाइरटै निसबासरबानी ॥ सूरसुताहि निहारि रहीउनहारकछू हरिकीपहिचानी । आंसुनकेपरवाह करौखिनयेकखरो होतरोसकोपानी ॥ ४६२ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० सोवतजागतसुपनबसरसारिसचैनकुचैन ॥
सुरतश्यामघनकीसुरतबिसरैहूबिसरैन ॥ ४६३ ॥

यहअपनेचित्तकी प्रीतिसखीसोंकहतहै दसअवस्थाकेभेद मेंस्मृतिजानिये ॥ सवैया ॥ बाहरजाउंतौबाहर हीघरआउंतौ आवत संगलगेहो भौनकेभौनबैठि रहौहरिपैठिरहै हियमें पहलेहो ॥ नींदहूंमेंनकबानी करैछिनहूछिन आवतहैसपनेहो । सोवतजागतरैनदिना मनमोहनमोहन चैननदेहो ॥ ४६३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० भोयहऐसोईसमोजहांसुखददुखदेत ॥
चैतचांदकीचांदनीडारतकियेअचेत ॥ ४६४ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका दशअवस्थानमें उद्वेगनायकाकी बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ व्यालभईअब मालतीमाल समीरतेंपीर हियेसरसाई ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पावकपुंजमों चंपक्र चंदनचंद्रकुचंद लख्योनसुहाई ॥ चैतहरैचितचैतको चांदनो बेधतबानन कामकसाई। आनिवन्यो अवऐसो समौदुख देतसबै जुहुतेसुखदाई ॥ ४६४ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० हौंहींबौरीबिरहबस कैबौरोसबगांव ।
कहाजानियेकहतहैशशिहिसीतकरनांव ॥ ४६५॥

यह नायका प्रोषितपतिका नायकाको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कुंभजहूअचयौ सुपचयौनयाहीते उगडारयौतमहू डरपिबिषकदसों। देखी अबलिनकोकलको लैचढ़ायेसोसईस कहाजानिहित कीनोमतिमंदसो ॥ कैधौंसबहीकी मतिहीन भईमेरी आली कैधौंहूंहो बौरीभई मैनदुख दुंदसों ॥ ४६५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० औरभांतिभईवयेतौसरचंदनचंद ।
पातिबिनअतिपारतबिपतिमारुतमारुतमंद॥४६६॥

प्रोषितपतिका ॥ कवित्त ॥ जेईजेईसुखददुखद अबतेईभयेकबिटदुर बिछुरतयदुपतिय । सीतलमंदसुगंध है जोईहुतीसोई भईअमिल अनिल हतेततिय ॥ तरुभयेतोरव्याल भईबल्लियजगुभई यमुनकुसुमभयेकतियों । जिनबनहमबिहरति श्रीपतिसंगतिन बनअबबिहरन लगिछतिय ॥ ४६६ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवतचलिजातउतचलीछसातकहाथ ।
चढ़ीहिंडोरेसेरहेलगीउसासनसाथ ॥ ४६७ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका कृष्णताको अधिक्यसखीको बचन नायकसों सखीसखीहूं सोकहैतोहोय जसअवस्थानमें व्याधिस्वाससंचारी सुकमारतानसंभवहै ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलो चलिदेखिये आपहीजायबियोगनकेढंग । थोरेईद्योसनतें लखियेसबदेहचढ़ी जरदीहरदीरंग ॥ वैसहूकेभरमेइहभांति परेपरहीनखरे दुबरेअंग । पैडछसातहि डोरेसेबैठीजुआवत जात उसासनके संग ॥ ४६७ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० हरिहरिकरिबरबरिउठतिकरिकरिथकीउपाय ।
वाकोजुरबलिबैदज्योंतौरसजाइतोजाय ४६८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहनायका प्रोषितपतिका व्याधिअवस्था बिरहनिवेदन सखीकोवचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ हरिहरिरटत बढ़तबिथाछिनु छिनु बरिबरिउठतवाकेनेरेजात जरिये। करिकरि यकोहैउपाय सबआलीअबकछुनबसायउरसोच भारभरिये ॥ येहैबलि बैद अबराबरेसुरसही बचैतोबचै बाल बलिवाकोपीरहरिये ॥ तीखातापटारिये धर्मटरधारिये निवारिये गहरु करुणाकेडारढरिये ॥ ४६८ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० मरीडरीकिटरीबियाकहाघरीचलिचाहि।
रहीकराहिकराहिअतिअबमुखआहिनआहि ४६९

यहनायका प्रोषितपतिकादस अवस्थाभेदमें जड़तासखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ ऐसीकोछाँड़ि बिदेशगयो हरिजोकबहूं बिछुरीनघरीहै। हाय यहैरटलाय रहीगतियाकी लखैमतिमेरी हरीहै। बालबियोबरजागि भरोबेकराहनिक्यों अबहीबिसरीहै ॥ पीरटरीकि परीहै मरीचलि देखिअरी कहाटूरखरीहै ॥ ४६९ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० मरनभलौबरबिरहतेयहबिचारचितजोय।
मरनमिटैदुखयेककोविरहदुहूंदुखहोय ॥ ४७० ॥

यहनायका प्रोषित पतिकानायका कोबचनसखीसों अरुनायक हूको बचनसखीसोंसंभवहै ॥ सवैया ॥ नैकहूं कोबिछुरे सबही सुखसाज भयेदुखदायकभारे। नैननीर झरीबरसैं तरसैंछतियां बिनप्राण पियारे ॥ आलीबियोगबिथा ढरिबेतेभलौ मरिबो मनमान्यो हमारे ॥ येककोदुःख मरेमिटजातबियोगमेंहोतहैं दोऊदुखारे ॥ ४७० मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ बिरहनिवेदन ॥

दो० करकेमींड़ेकुसमलौंगईविरहकुमलाय।
सदासमीपनसखिनहूंनीठपिछानीजाय ४७१ ॥

यहनायका प्रोषतपतिका सखीकोबचन नायकसों अरुसखीकोबचन सखीसोंहोय ॥ कबित्त ॥ प्यारेनदनंदन तिहारेबिछुरेतेमोपै कहतबनैन जैसीभई वाकीगतिहै ॥ आलीजेरहत निसवासर समीप तिनहूं पैपहचानी नहनीठही परतहै ॥ त्रासदेखि पासजैवो छोड़ोपासवाननेहयेतेमानमद-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नहुतासन बरतिहै । कोमल कुसम मानोमोड़ोकरबरकरिऐसे कुंभिलाय मुरझायगई अतिहै ॥ ४७१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० नेकनजानीपरतयोंपरयोविरहतनछाम ।
उठतदियेलौंनादिहरिलियेतिहारोनाम ४७२ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखीकोवचनसखीसों ॥ सवैया ॥ लालतिहारेवियोगतें बाकोबिहातघर्र बिधिबासर कीसो । छांह भयोअतिही तनबामकोकाम दहैसुधबुद्धि हरीसो ॥ सेजमेंनेकहूजानीपरै नहिंदेखिये कंचनरेखलिखी सी ॥ राबरोनामसुनै इकबारही नांदि उठै दुतिदीप महीसो ४७२ ॥ मरअक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० जोवाकेतनकीदशादेख्योचाहतआप ।
तौबलिनेकविलोकियेचलिअचकाचुपचाप ४७३ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका व्याधिअवस्था सखीकोवचनसखीसों नायक कोले चलिबो प्रयोजनहै ॥ सवैया ॥ पाहनको पुतरीहवैपरी बरसैंअसु बासरसें तनतावैं ॥ ज्यों ज्योंकरै उपचारबरै त्योंपरौहम लोगनको अति पावैं ॥ बाकीदशाअब ऐसीभई हरि ज्योंअबलोंक्योंई चाहत आवैं ॥ तोवह सोधलहैन बलायन्योयेंअबका चलियेउपचावैं ॥ ४७३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० तजतअठाननहठपरयोसठिमतिआठौयाम ।
भयोबामवाबामकोरहतबामकेकाम ॥ ४७४ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखीकोवचन नायकसोंसखी सखीहूसों कहैतोसंभवहै ॥ कवित्त ॥ लालमनभावन तिहारे बिछुरेतें बालबिरह अगनिनिबरत नेहनाधेहैं ॥ वेहीकामकाम बामदेवके भरमभूलिदत्योवाही बामसोंबिषम बैरबांधेहैं ॥ षटमतिहठिभरि दयाघरपरहरि आठोंयाम रहतसरोसरससाधेहै ॥ कीजेधोंकहाउपाव छोड़तनऔटपाउतकैं हनिबेको टाउलग्यो इहधांधेहैं ४७४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० बालबेलिसखिसुखदईरहीरूठिरुखधाम ।
फेरडहडहीकीजियेसुरससींचघनश्याम ॥ ४७५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह अनुराग निवेदन सखीको बचन नायकमें पुरुषमानहूके प्रसंगहू संभव है ॥ कबित्त ॥ हितकरजाकोहरि लीज्योचितलाल यह कित हैंउचितताहि येतोदुखदीजिये ॥ जानतहोनं कै प्रीतरीतिको प्रवीणपनु कीजे नगहर सुखदैकै सुखलीजिये ॥ रावरेदुसहयेहूं रूखेरूखधामहीं सो बाल बेलिनकीजाहि निरखतसुखीजिये ॥ प्यारेघनश्यामजग जरनिनिवारतहौ सींचिकैसुरसफिरडहडहीकीजिये ॥ ४०५ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० लालतिहारेबिरहकीअगिनिअनूपअपार ।
सरसैंबरसैंनीरहूझरहूमिटैनझार ॥ ४७६ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको बचननायकसों बिरह निवेदन ॥ कबित्त ॥ कृष्णप्राणप्यारेलाल बिछुरेतिहारे बाल अतिही विकल मिलवेको तरसतिहै ॥ सारीहैतसीरे उपचारतातैंताती छिनछिन अकुलात छातीपीर परनतहै॥ वाकेतनरावरे बियोगकी अगनि ऐसीअद्भुत गतिमें अपारदरसतिहै ॥ महाझरहूते झारसीरीनपरतपरिजरत ज्यों ज्योंनीरकी झरनिबरसतहै ॥ ४०६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देखतदुरैकपूरलौंउपैजायजिनलाल ।
छिनछिनजातखरीखरीछीनछबीलीबाल॥४७७॥

यह नायकाको अनुरागनिवेदन सखीकोबचन नायकसों बिरह नवेदनहू होय ॥ कबित्त ॥ बिछुरे तिहारेलाल बिलखी बिकलबाल परी बिललात क्योंहूंधीरनधरातहै ॥ येतेमानअकसभई परेपरयंकपर नीठिनिठ निरख्योपरत वाकोगातहै ॥ काल्हही सुआजनाहिं आजुहीसु अबनाहिं यातेपरजननको जीवअकुलातहै ॥ ऐसीछिनछीजनि बिलायजिनजायबाल ज्योंकपूरदानोमें कपूरउड़जातहै ॥ ४०७ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० हांसिउतारहियेतेदईतुमजतिहींदिनलाल ।
राखतप्राणकपूरज्योंवहैचुहटनीमाल ॥ ४७८ ॥

यह अनुराग निवेदनहै सखीको वचन नायकसों ॥ सवैया ॥ टूबरी ऐसीभई बिछुरेतिय सेजहूमेंनलखी परैसोतौ ॥ आलीविलोकिकै मंडित हाथगयोइकसाथ सबैसुखजोतौ ॥ बीसबिसेउड़जाते कपूरलौंराखौतोप्यारी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

केप्राणनकोतो ॥ जोबहलालतिहारोदयो घुंघचीकोहराउरमांझनहोतो॥ ४८० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कहाकहौंवाकीदशाहरिप्राणनकेईश ।
बिरहज्वालजरिबोलबैमरिबोभयोअशीश४७९॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन नायकसों ॥ कवित्त॥ प्यारेमनमोहनतिहारेबिछुरेतें वृषभानकीकुमरिभई खरीकलिकान है॥ जल बिनमीनज्यौं बिकलतलफतअति कहौंकाबिकृष्णऐसी होतआन वान है ॥ ज्योंज्योंकरियत उपचारन कीभीर त्योंबढ़तदूनी पीरर है आंखिनहींप्राण है ॥ बिरहकी ज्वालनिमें जरिबेके लेखे वाकोंमरिबेको वचन अशीसके समान है ॥ ४७९ ॥ चिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु २० ॥

दो० यहबिननननगरासिवकैजगतबड़ोयशलेहु ।
जरीबिषमजुरिजाइयैआयसुदरशनदेहु ॥ ४८० ॥

यह नायका प्रोषितपतिका व्याधिअवस्था सखी को वचननायकसों ॥ कवित्त॥ जरीहैबिषमजुरि गिरीहैअचेत वहधिरीहैचहूंधांव्याधि बृन्दन मेखरिये ॥ कंचनपेतनको अतनवृथाबारतहै रतनटबारिये यतनहरिकरिये ॥ ऐसीगतिदेखोहोतो मरतपरेखैंअब कछुन बसातछिन छिनजातबरिये ॥ लीजियेजगतयश कीजियेधरमयह दीजियेसुदरशन वाकोतापुहरिये ४८०॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० मैलैदयौलयौसुकरछुवताछिनकगौनीरु ।
लालतुम्हारौअरगजाउरहवैलग्योअबीरु ॥४८१॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखी को वचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारेलाल बिछुरेतिहारेअब हियोब्रजबालको अनंगदुखदाग्यो है॥ कोंबरीनिपट कुंभिलायगईफूलजिमि दुखअनकूलभौंस मूलसुखभाग्यो है ॥ तुमपैगयोसोमैंने दीनोजायवाही उनिलीनो अतिहितकरि चितअनुराग्यो है ॥ कर परसतही छिनकगयो नीरअरु अरगजावाके उरमेंअबीर ह्वैकै लाग्योहै ॥ ४८१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो थाकीयतनअनेककरिनेकनछांड़तगैल।
करीखरीदुबरीसुलखितेरीचाहचुरैल॥ ४८२॥

यह नायकाको लगन सखीकोवचन नायकसों॥ सवैया॥ रोमनि रोमनिभोय गई हियमेंधसि प्राणनमांझखगीहै॥ हौंकरियाकोउपायसबै हरियंत्रन मंत्रनहूनजगीहै॥ देहमुखायकरीदुबरी तबबावरीज्यों सुधबुद्धि भगीहै॥ येतेपैवाको नछाड़तगैल चुरैलह्वै रावरीचाह लगीहै॥ ४८२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० पियकेध्यानगहीगहीरहीबहीवहनारि॥
आपआपहीआरसीलखिरीझतिरिझवारि॥४८३

यह नायकाको लगनतनमें तासखी को बचन सखीसों॥ सवैया॥ नेहलग्योमनभावनसों उहितोअंगईयहबाननईहै॥ ध्यानहीध्यानमें आज कछूवृषभानसुता भईकान्हभईहै॥ आरसीमेंलखि आपनीमूरतिआपही रीझिनिहालभईहै॥ पूरनप्रेमकीजोतिजगी उरआनिसबै सुधभूलिगईहै॥ ४८३॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० अरैपरैनकरौहियोखरेजरेपरजार।
लावतघोरगुलाबमेंमलैमिलैघनसार॥ ४८४॥

यह नायका प्रोषितपतिका नायकको बचन सखीसों॥ सवैया॥ काहेकोतू घनसारगुलाबमें घोरि घनोघसि चंदन लावै॥ काहेकोसियरे नीरभिगाय उसीरपपान समीर डुलावै॥ तोहीकहाजक ऐसीपरीप्रजरी उरआगि खरी प्रजरावै॥ ये उपचार करैन परै कलजातेपरै किन ताहि मिलावै॥ ४८४। मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो रंगरातीरातोहियेपातीलिखीबनाय।
पातीकातीबिरहकीछातीरहीलगाय॥ ४८५॥

यह पातीसखीको वचन सखीसों॥ कवित्त॥ जबते बियोग भयो लालमनभावनसों तबहींते प्यारी तलफतमुरझायकै॥ नैनजलबरषतिमिलबे कोतरसति सरसतिमदनमरुर बहुभायकै॥ अतिअनुरागगस्योबनायेलिखि प्राण पति ऐसे में अचानकही दीनी काहू आयकै॥ हित अकुलातो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सोतो बिरह की काती जानि राती पाती रही ताती छाती सों लगा यकैं ॥ ४८७ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कहाभयोजोबिछुरेमोमनतोमनसाथ ।
उहींजाहुकितहीगुड़ीतऊउड़ायकहाथ ॥ ४८६

यहनायककी पत्रीनायका को ॥ सवैया ॥ जोकरतार रचीमुसही बिधिचारबिचार अकारथहीहै । बेदपुराणपुरानसुनी सबकोऊकहै यह गाथहीहै ॥ अंतरबीचपरयो तोकहाभयोमोमन तोतुवसाथहीहै ॥ जाहु गुड़ीकितहूंउड़िडोर उड़ावनहार के हाथहीहै ॥ ४८६ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० करलैचूमिचढ़ायसिरउरलगायभुजभेटि ।
लहिपातीपियकीलखतिबाचतिधरतिसमेटि ४८९॥

यह नायककी पत्री आई ताहि देखि नायका की जो दशा भई सुसखीसखीसों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ नैननीरबरसत देखिबेकोतरसत लागेकामसरसतपीर उरआतिकी । पायेनसंदेसे तातेअधिक अंदेसेबढ़ेसोचै सुकुमारपैनकहैमनगतिकी ॥ ताहीसमयकाहूओच कहीआनिचिट्ठीदीनी देखतहीसेनापति पाईप्रीतिरातिकी । माथेलैचढ़ाई दोऊदृगनलगाईचूम छातीलपटायराखी पातीप्राणपतिकी ॥ ४८० ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० कागदपरलिखतनबनतकहतसंदेसलजात ।
कहिहैसबतेरोहियोमेरेहियकीबात ॥ ४८८

यहपत्रीनायककी अथवानायकाकी परकीया ॥ कबित्त ॥ पातीमैं लिखतकैसे बनतलजतीहै चाहसागरको सलिलचुरूमेकैसेकीजिये । कहत संदेस उरआवत है लाजकरति अधिक संदेसे ऐही छिनाछिन छीजिये ॥ मनऐसोमानसमिलैन कोऊ मधिमातीजासौं सम कार्यजियको भेदकहि दीजिये॥ यातेंप्रीतिरीति अवदातमेरे हियेकीबात आपनेहियतेनीकीभांति जानिलीजिये ॥ ४८८ ॥ पयोधरअक्षर २६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तरझुरसीऊपरागिरीकजलजलछिरकाय ।
पियपातीबिनुहीलिखीबांचीबिरहबलाय ४८९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह नायकाप्रोषपतिका बिरहकीअधिकाई पत्रीलिखबेतेजानीगई ॥ कबित्त ॥ प्यारेकोसंदेश लिखिबेको बैठीसाहसुकै लिखतबन्योना अति बिरहमलीनीहै ॥ सरतातेपानिके परसपरजरी और ऊपरतेगिरीअसुवनि जलभीनीहै ॥ ऐसीपैलपेटिउनससौंपीजनीकेहाथ उनजायत्यौंहींप्राणनाथ हाथदीनीहै ॥ खोलतहीपाती पियताती की सुरतिकरि छाती गहबरि आई आंखभरलीनीहै ॥ ४८९ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बिरहबिकलबिनहीलिखीपातीदईपठाय।
आंकबिहूनीयौंसुचितसूनैबांचतजाय ॥ ४९० ॥

यहनायका प्रोषितपतिको पत्रीआईयातें दोउनकेबिरह की अधिकाईतेसुन्यतीजा निपरी ॥ कबित्त ॥ बिरहमकर तैनतनकी तनक सुधि बालअतिव्याकुल अचेतऐसे ह्वैगई ॥ लिखिबेकोलई पातीलिखतबन्योंन कछूवैसीयेलपेटि प्राणपतिपै पठैदई ॥ बाकीबिकलाईको कहांलौंअधिकाईकहौं एकसे दुहूकीगति एकबेरह्वैभई। चपरीप्रवीनी वहजऊअंकहीनीतऊबाचिसुनि हियकेलगाय छातीसों लई ॥ ४९० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चलतचलतलौंलैचलेसबसुखसंगलगाय।
ग्रीषमबासरशिशिरनिशापियमोपासबसाय ४९१

यहपत्रीनायकाकी नायकमों ॥ सवैया ॥ रैनदिनारहतेईमिले रसरंग उमंगनमेंमनढारे। ऐसोसनेह बढ़ायकैदेखरी कैसोकरोउन कान्हपियारे॥ लैगयोसंग लगायनबैसुख दैगयोसोचटरैनहिंटारे ॥ पूसकीयामिनी बैठकेद्योसबसाय गयेअबपासहमारे ॥ ४९१ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० गोपिनकेअसुवनभरीसदाअसोसअपार ॥
ढगरडगरनैहवैरहीबगरबगरकेबार ॥ ४९२ ॥

यहब्रजकेबिरहनिवेदन ऊधोकोबचन श्रीकृष्णसों सखीकोबचनसखीसों कबित्त ॥ जोगदैनगयोहौ बियोगबारिबारिधिमें बूड़तबचैहौनाथ नारी नैनयोंबहै। गंगहूसहस्रधार अधिकसुधारजानि बरषानहोहिजो रहोगेगिरहूगई ॥ येतौजलउनैहन बारिधिसमैहैकछू मुनपरअचरौनजैहै कानखो-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिकैकहै । कविप्रहलाद ज्योमिलाप पारिबांधिहैनबटुकिबटा केपातराबरे भलेरहै ॥ ४९२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० कियौसयानसखीनसोंनाहिंसयानवहभूल ।
दुरेदुराईफूललोंक्योंपियआगमफूल ॥ ४९३ ॥

आगमोत्सव नायकासखीसों सखीकोवचन ॥ कवित्त ॥ ललितकपोल आजुमंदमुकुलन लागेआननपैभईकछूऔरैअरुणाईरी। मैतौपूछीसुखमानितैं कछूरुखाईठानि घूंघटमेंढांकिमुख डीठक्योंदुराईरी॥ नाहींनैसयानपनुबोसबिसे भूलिहैसयानी सजननमोंकरी जोचतुराईरी । फूलकीसुबास लौं बिकासपहली ढोत फूलहैरआगमकी क्योंदुरेदुराईरी ॥ ४९३ ॥ त्रिकल अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० आयोमित्रविदेशतेंकाहूकहीपुकार ।
सुनहुलसीबिकसीहसीदोऊदुहुननहीनिहार४९४॥

यहनायकापरकीया इकनायकउपतमें दोउनकोसनेहहूवै गयौआगम मेंदोउनकेहरषभयौ याहीतेपरस्परजानिपरी सखीकोवचनसखीसों ॥ सवैया ॥ कान्हरकेबिछुरे ब्रजबालदुहौंमन हामनमेंमुरझानी । कृष्णकहैं बहरायबेको मनुबैठदुहूं मिलि चौपड़ठानी ॥ मोहनमोतबिदेशतें आयौ पुकारिकैकाहू कहीजबबानी । सोसुनिदोउदुहून बिलोकलसीबिलसीहुलसीमुसक्यानी ॥ ४९४ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ९ लघु ३०

दो० मृगनैनीदृगकोफरकउरउछाहतनफूल ।
बिनहीपियआगमउमगिपलटनलगीदुकूल ॥४९५ ॥

यहआगमस्वप्नपतिका सखीको वचनसखीसों ॥ सवैया ॥ बालखरी अकुलात हियेनंदलालबियोग बिथाउरजागी । ऐसेमेंआन अचानकही हुलसीछतियां सुघरीअनुरागी ॥ बामविलोचनके फरकेमृगलोचन जैसे उछाहनपागी । फूलभरीबिनहीं पियआगमचारु दुकूलचुवावनलागी ॥ ४९५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० मलिनदेहबेईवसनमलिनबिरहकेरूप ।
पियआगमऔरैउठीआननओपअनूप ॥ ४९६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहआगमस्यत्पतिकासखीको बचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ लालमनभावनकोबिछुरे मयंकमुखीअतिही बिकलाचित परयोचिंताकूपहै। अधिकअनगपीरतीर सोखगतहिय चांदनोलगतजैसो ग्रीषमकी धूपहै ॥ कीनोनसिंगारुचारु वैसोयेमलिनदेह बसनमलिनउही बिरहकोरूपहै। कहैकविकृष्णपिय आगमसुनतबाढ़ी चौरओपआननपै इमंगि अनूपहै ॥ ४६६ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहेबरोठेमेंमिलेपियप्राणनकेईश।
आवतआवतकीभईविधिकीघरीघरीश ॥४९७॥

आगमोत्सवनायकाकोबचनसखीसों संचारीके भेदमेंऔत्सुक्यजानिये। सवैया ॥ आये बिदेशतेंप्राण पतीयेंतिया कीसुनैं छतियां सियराई। नैननलागिरही निखसाध मनोजउमंग हियेभरिआई ॥ कृष्णकहैं मिलवे कहैकाहूसों पौरिमें जौलौंरही सुखदाई। आवतआवतकी सुघरी बिधिबासरहू ते खरोसरसाई ४६० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु२० ॥

दो० कहिपठायजियभावतीपियआवनकीबात।
फूलीआंगनमोंफिरैआंगनअंगमात ॥ ४९८ ॥

आगमोत्सव सखीकोबचनसखीसों सचारहरष ॥ सवैया ॥ बालबियोगमलीनमहा बिसरीसुधिहासबिलासहू भूलै ॥ येतेपैऔधबितीतभईटरमेंकहीसाथसबै दुखऊलै ॥ आवनत्योंमनभावनकी सुनिकैउमहैमुख पुंजसमूलै ॥ आंगनमेंहुलसी फिरैसुंदरआँगन अंगसमातनफूलै ॥ ४६८ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नाचअनाचकहीउठेबिनपावसबनमोर ॥
जानतहीनंदितकरीयहादिसनंदाकिशोर ४९९ ॥

यहआगमोत्सवनायका कोबचनसखी सोंसखीहूकोबचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ राधायों बिशाखासों कहतिजाको रूप मोहिंचारुचित्र पट अवरेखतेदिखायोरी ॥ जानियतबहचित चोरनटपूतधूतआली यहकानन कहूंतेआजआयोरी ॥ लहलहीहोतबहुकालकी सुखभीबेलफूलतसुमनऐसोबनछबिछायोरी ॥ बिनउनएं हू घनभये हरषित मननाच नाचमोरन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुलाहल मचायेरी ॥ ५९९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० बामबाहुफरकतामिलेजोहरिजीवनमूरि ॥
तोतोहीसोंभेटिहोंराखिदाहिनीदूरि ॥ ५०० ॥

आगमोत्सवभुज फरकतही नायका को बचन बाम भुजा प्रति ॥ ॥ सवैया ॥ कान्हबिसामीविदेशरह्यो बसिमैनदहीबहुभांतिहियेहौं॥ बामभुजाफरकेतू भलैअबहौंहूं यहैनिश्चैपनकोहौं ॥ कैसेउबामनभावनकोअबजोभरिआंखिन देखनपैहौं ॥ राखिहौं दूरियादाहिनी बामको तोहीसोंगाढ़ेअलिंगन दैहौं ॥ ५०० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० बिछुरैजियसंकोचयहबोलतबनैनबैन ।
दोउदौरिलागेहियेकियेनिचोहेनैन ॥ ५०१ ॥

यहपरदेशतेंइनदोउनके हितकोआधिक्य सखीको बचन सखीसों॥ ॥ सवैया ॥ दंपतिआपुसमैंकहतेपलुओटभयेपलप्राणरहैना ॥ आयोबिदेशबितैवह बासरनंदलालाअति चैनकोऐना ॥ येतौबिछोहभयेहू जियेयहलाजतेंबोलत बैनबनैना ॥ दोउलगेलपटाय हियेपैमिचैहें कियेसकुचौंहसैनैना ॥ ५०१ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० यदपितेजरोहालबलपलकौलगीनबार ।
तउग्वेंड़ौघरकोभयौपैंड़ोकोसहजार ॥ ५०२ ॥

यहपरदेशतेंआगमआगतिपतिकानायका औत्सुक्यसंचारी॥ सवैया॥ कौनहूं काजकौप्राण पियापरदेशसमोबहुतै बितयोहै ॥ राधिकाकीसुधकैकविकृष्णतिहीं छिनभौनकोगौनु ठयोहै ॥ यद्यपितेजउरी नियरोघर तद्यपिकोसहजार भयोहै ॥ ग्वैड़ेकौपैंडौनकटयौ कटैअभिलाषसमूहहियेउनयोहै ॥ ५०२ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २२

दो० छिरकेनाहनवोढदृगकरपिचकीजलजोर ।
रोचनरंगलालीभईबियतियलोचनकोर ॥ ५०३

यहजेष्ठाकनिष्ठाकोभेदअन्यसंभोगदुखिताहूहोयसखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ नंदलला ललनागणमेंजलकेलि रचीरसरीतरलाई ॥ चूभ कलेऊछरेबहुभांतिदुरे भरिअंककरीतरलाई ॥ भावतीलोचन केछिरके

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर कीपिचकी जलधारचलाई ॥ मौतिकेलेचनकोरन मांझतहौंभईरोचनरंगललाई ॥ ५०३ ॥ चिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० मिसहीमिसआतपदुसहदईऔरबहराय।
चलतललनमनभावतिहतनकीछांड़छिपाय॥५०४॥

यहजेष्ठाकनिष्ठाकेभेदमेंसंभवहै सखीकोबचन सखीसों॥ सवैया कान्ह सुजानकेमोपैकछू रमरीतकेभेदकहैनाहिंजाहीं। आतपकोमिसकै बहराय दईसंगऔर जितीबनताहीं॥ छैलगहो बहलैभटू यमुनातट केलिनिकुंज जहांहीं। राधिकाप्यारीकेलैचल्यो संगकियेअपनेतनकीपरछांहीं॥ ५०४॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० लाजगहौंबेकाजकतघेररहेघरजाहिं।
गोरसचाहतफिरतहोगोरसचाहनाहिं॥ ५०५॥

यहनायका प्रौढादानमर्मो॥ कवित्त॥ लाजक्योंनगहौंबिनकाजमग घेररहै इतराइबोल कहतअनैसेहै। गोरसनचाहतहो गोरसकोचाहतहौंभलीभांति जानतहोकान्ह तुमजैसेहै॥ कृष्णप्राणप्यारे ब्रजविदितितिहारे गुणमाखन केचोरबेकोघरघरपैसहो। अबयहबनऐने चलनचलावत होमोहैलखि हसतलसतमन लेसेहो॥५०५॥नरअक्षर३३गुरु १५लघु १८

दो० पहलाहारहियेलसेसनकीबेंदीभाल।
राखतखेतखरीखरीखरोउरोजनबाल॥ ५०६॥

यह नायका जातवर्णन नायकाको बचन॥ सवैया॥ पातरौलांक कटौरखरेकुचगोरी अंगेठलुनाईभरीहै। मेचकपोनगरेबड़ेदृगओटनुमैंअरुणाईधरीहै॥ हारहियेपहुलाकौ लसैबिलटीसन को प्रखुरी कीकरीहै। राखतखेतखरी ब्रजनागरि योबनजोति खरी निखरी है॥ ५०६ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० टटकीधोईधोवतीचटकीलीमुखजोति।
लसतरसोईकेबगरजगरमगरदुतिहोति॥५०७॥

यहजात वर्णनसखी नायकके रूपकीनिकाई नायकसों निवेदनकरत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है ॥कवित्त ॥ बैठीअप्रसव्रज नागरसरबस बेषपेखिमन मोहनकीसुध बुधडगरी। कृष्ण प्राणप्यारेकी दुहाईबैसतैसी दईविधि नेसकेल शोभा कोन्हीमानोंसगरी ॥ दमकेबदन ज्योतिविदसबरनधौतिपहिरे लसतसौति रूपगुणआगरी। ह्वैरह्योप्रकाश अतिजगरमगर तिहिबगररसोईके अपार ओपबगरी ॥ ५०७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० यदपिनाहिंनाहींनहींबदनलगीजगजाति।
तदपिभौंहहांसीभरिनुहांसीपैठहराति ॥ ५०८ ॥

यह जातवर्णन नायकाप्रौढा सुरतारंभ ॥ सवैया ॥ बैठि सिंगारसबै बृजनारिअचानक मोहनआयो तहांहीं। पानिगह्यो अविलोकि अकेलि अलौकिककेल कलाचितचाहीं ॥ यद्यपिबानबनागरके मुंहलागी यहैजकनाननाहीं। तद्यपिहांसिभरी भृकुटी नमैबैस बिसे ठहरातहैनाहीं ॥ ५०८ ॥ चलअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६ ॥

दो० दृगथरकाहेअधखुलेदेहथकोहैडार।
सुरतसुखदसीदेखियतदुखितगरभकेभार ॥५०९॥

यहजात वर्णनगरभनिकी शोभा सखी नायकसों कहैसखी सखीसों कहै नायक सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ बोलत बैन हरेईहरेभई छबिआननकी पियरीहै। आधेखुले अलसौंहैमे लोचन देहथकोहैसेढार ढरी है॥ गरबकोभारधरै सुकुमारअऊ दुखितोनवनारिखरीहै। नीकीतऊ अतिलागतहैमनो केलिकलोजके रंगभरीहै ॥ ५०९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० ज्योंकरत्योंचुटकीचलतिज्योंचुटकीत्योंनारि।
छबिसोंगतसीलैचलतिचातुरकातनहारि॥५१०॥

जातवर्णन नायकको वचनसखीसों ॥ सवैया ॥ ज्योंकरत्योंहीं चलै चुटकीउघरे भुजमूलबढ़ी छबिभारी। चारुकताईकी मोरनग्रीवकीटोरन जो टरैनहींटारी ॥ भौंह उचेतिरछेकर लोचन लेतकिधौं गतिरूपउजारी। पातुरमानोमनोज पकीअतिचातुर कातनहारि निहारी ॥ ५१० ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु ६० लघु २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० मुखउघारिप्योलखिरहतरह्योनगोमिससैन।
फुरकेओठउठैपुलकगयेउघरिजुरनैन ॥ ५११ ॥

यहजात वर्णन परिहास सखीको वचनसखीसों॥ सवैया ॥ पौरिते बोलिसुन्योपियको उठिपौढ़िरही पटचौटसयानी। झीनेदुकूलमेंलाललखी बड़रीअंखियांझलकैंसरसानी॥ शिरोमणिऐचिलियोअचराबहरायकै कान्हर त्यौंतिरछानी। ओठसोंओठ लगायरहीहिगदाबि कपोलनहीं मुसकानी ॥ ५११ ॥ मच्छअक्षर ४१. गुरु ० लघु ३४ ॥

दो० नहिंअन्हायनहिंजायघरचितचहुट्योतकितीर।
परसफुरहरीलैफिरतबिहसातिधसतननीर ५१२॥

यहजात वर्णन नायका परकीयाक्रिया विदग्धासखी को वचनसखी सों ॥ सवैया ॥ न्हायबेकी जमुनागई बालतहांवनितानकोहै अतिभीरी त्यौंहीं अचानक कृष्णकहैकहुंडीठ परीनट नागरनीरो। चाहचुभ्योचित न्हाहिसुकीनगयो नहिंजातु कंपातुशरीरो॥ अंकुलनीर भरेंगहिडारतनाक सकोरिकहैयहसीरो ॥ ५१२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मुहपखारिमुड़हरभिजैशीषसजलकरछ्वाय।
मोरउचैघूंटैनुनैनारसरोवरन्हाय ॥ ५१३ ॥

यहजातवर्णन कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ बैठिकेतीर पखारिकै आननहाथभिजैजलकेप्रन छ्वैकै। कृष्णकहैंकरसोंउसराइकधोंधरशीषपकोचीर भिजैकै ॥ ढूकरं पंकज दोऊखये धरिमोरि उचैकटिखीन लचैकै। योंब्रजबालसरोवर न्हातमहाछविमों घनश्यामतनैकै ५१३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० बिहसातिसकुचातिसीदियेकुचआंचरबिचबांह।
भीजेपटतटकोचलीन्हायसरोवरमांह ॥ ५१४ ॥

यहजातवर्णन कविकीउक्तिसखी नायकाकीशोभा नायकको दिखायबेको कहैतोहूसंभवहै ॥ सवैया ॥ देवदिवाकरको करिवंदन कृष्णकहै मनहीमनावति। बांहदियेकुचअंचल बीचलजायहिये हंसिनैननचावति भीजेदुकूलरहै लपटायमहाछवि कंचनसे तनछावति। योंब्रजनागरिरूप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उजागरि न्हायसरोवर तीरकोआवति ॥ ५१४ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० मुहधोवतयेड़ीघसतिहंसतिअनगवततीर।
धसतनइंदीवरनयनकालिंदीकेनीर ॥ ५१५ ॥

यहजातवर्णन नायकाकीचेष्टा सखीसखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ न्हायवेकोंआई अतिरीझिमंडराय हियेकृष्णप्रानप्यारे कोस्वरूपदरसतहै इंदीवरनैनी अनगावतिअनेकभांति पैवहकालिंदीके नसलिल धसतिहै ॥ परसिविसारैकरू कोरिकोरिशोभानिधिनासिकासकोरि मुहमोरिविहसतिहै षदनपखारतिहै वाकेइगढारतिहै गुलफघसतिअतिरंगवरसतिहै ॥ ५१५ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० ओठउचैहांसीभरीदृगमोहनकीचाल।
मोहनकहीसुचालियोपियततमाखूलाल ॥५१६॥

यहजातवर्णन नायकाको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ मैनिरख्यो जब तेंतबतेंजियकीगति जानतकौनबियोरी। जोकछुरूपकीरीझ खुभीचितजानतहो इकमेरोहियोरी ॥ हांसीभरीचख भौंइनकीछबिओठ उचैइकभाव कियोरी पावतलालतम खू केघूटकहीउन मोमनपीन लियोरी ॥ ५१६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० अंगुरिनउचभरिभीतिदैउलमाचितैचखलोल।
रुचिसोंदुहुनदुहूनकेचूमेचारुकपोल॥ ५१७॥

यहजातवर्णनदोउनकोहितकोसीरसाईसखीकोबचन सखीसों परकीया ॥ सवैया ॥ आजभटूब्रजनागर नागरिकोनोविलास महारसमान्यौ॥ चाहकीचौपसोंचाहिचहूंघा वियोजबकोऊइतौतनजान्यौ ॥ दैभरू अंतर भीतिदुहीउलमेंअंगुरी उचिकौतिकठान्यौ ॥ चारुकपोल दुहूनके दोउन चूंघनकोअतिहीसुख मान्यौ ॥ ५१७ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० हंसिओठनबिचकरउचैकियेनिचोहेनैन।
खरेअरोपियकेपियालगीबिरीमुंहदैन ॥ ५१८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहजातबर्णन नायककोशोभासखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ कान्हकही अतिहीहठकैतबराधिका केजियनेयहआई ॥ ग्रीवनबायदुराय कपोलकियेनत नैनकछू मुसकाई ॥ बीरीबनायलईकरकंज खजैबेकोभंजु भुजाउकसाई ॥ यौंहितकीसरसाई बिलोकि भई मनमोहन कैमनभाई ॥ ५१८ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नांकमोरिनाहीककैनारिनिहोरेलेय ।
छुवतओठबियआंगुरिनबिरीबदनप्योंदेय ॥ ५१९ ॥

यहजातबर्णनसखी कोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ आजुदुहूको बिलास अलीमें दुरैदरत्योंकहते नहिआवत ॥ नंदलला अतिही हठकै बृषभान कुमारिको पानखवावत ॥ ओठनसों बियअंगलिछ्वै मुमकायकैनैनसोंनैन मिलावत ॥ नासिकामोरिमरोरिकै भौंह करैतियनाहि त्योंत्योंसुखपावत ५१९ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बतरसलालचलालकीमुरलीधरीलुकाय ।
सौंहकरैभौंहनहसैदैनकहैनटजाय ॥ ५२० ॥

यहनायका परकीया प्रौढ़ाजाति बर्णन सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ आजलखोबृषभाननललीमनमोहनसोंरसखेल टरीहै ॥ बातन केचसकैसुरलोमुरली हरिकैटबकाय धरीहै ॥ ज्योंज्योंहहाकरिमांगेलला वहत्योंत्योंकछू इठलातखरीहै ॥ दैनकहै मुकरैहंस भौंहनुमौंहकरैरस भायभरीहैं ॥ ५२० ॥ मदकलअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गदरानैतनगोरटीऐपनआडलिलार ।
हूंव्योदईचलायदृगकरतिगवारिसंवारि ॥ ५२१ ॥

यहजाति बर्णननायका कीशोभानायक सखीसोंकहत है ॥ कबिचत शोभाकेरतभरी रूपकेसे सांचेढारी बिनहूंसिंगारछबिकही न परति है । ललित लुनाईसने गातमें सरसभरेतरुणाई आनभरी चीरहू भरतिहै ॥ बदुरारे बदनपै ऐपनकीसोहै आडतैसीये चिबुकगाड मनको हरतिहै । सहजसुभाय इठलायकै गंवारीगोरीहूठनो दै चलायनैनघायल करतिहैं ॥ ५२१ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नाकचढैसीवीकरौजेतेछबीलेछैल।
फिरिफिरिजानवहैगहैप्योंककरीलैगैल ॥५२२॥

यह जातवर्णन सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ सखि जात चले ढोउतोरेपंथ उराहने पायनरंगहैं। वहप्यारेकी रीझ रिझावन प्यारी की मोपै न ओहूवखानिपैं ॥ अतिनाजुकछैल छबीलीतिया जितनाक सकोरिकै सीबीकरै ॥ कविकृष्णकहैयहचाह पर्योतितजानिकैपीतमपाय धरै ॥ ५२२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० जालरंध्रमगअगनुकौकछुउजाससौपाय।
पीठदियेजगत्यौरह्योडीठझरोखालाय ॥ ५२३ ॥

यहजातवर्णन नायकाकीअंगदीप्तिदेखि नायककोऔर बातसबभूलगई हैसोसखीसखीसोंकहतिहै॥ कवित्त ॥ प्यारीखण्डतीसरेरसीलीरंगरावटीमें तकिताकीओरछकि रह्योनेनंदहै ॥ कालदासवीचिन दरीचिनुह्वै छज-कतिछविकीमरीचिनको झलकअमंदहै ॥ लोगदेखि भरमेंकहा धोंहैया घरमेंसुरंगमग्यो जगमगोजोतिनकोकंदहै ॥ लालनकोजाल हैकिज्वालनि कोभालहैकिचामिकरु चपलाकिरबिहैकिचंदहै ॥ ५२३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दोऊचोरमिहींचनखेलानिखेलअघात।
दुरतहियेलपटायकैंछुवतहियेलपटात ॥ ५२४ ॥

यह जातवर्णन चोर महींचनाखेलत दोउनकोबिलात सखीसखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ वेषुकैकुमारिकाको बृजकीकुमारिकानि मांझमांझ केशवदासचास पगपेलिकैं। कामकीलतासो चलियेमयासिसो अमलबुधि बलराधिकाके कंठभुजमेलिकैं॥ दुरदुरदूरिदूरि पूरिपूरिअभिलाष लाखलाख भांतिकी अनूपरूपकेलिकैं। जनीकेंअजिरआजि रजनीमेसजनोरी सांची कीनीश्याम्मचोर मिहचनीखेलिकैं ॥ ५२४ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २९

दो० दृगमिहचतमृगलोचनीभरेउलटभुजबाथ।
जानगईतियनाथकेहाथपरसहीहाथ ॥ ५२५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहजातवर्णनसखी कोवचनसखेसों ॥ सवैया ॥ बैठी हुतीवृषभान कुमारि अचानकआयो तहांगिरधारी। प्यारेकेलोचनमोचु लयेउनहूं भुज लौटिभरयौअंकवारी ॥ प्रीतमकेकरके परसेउमग्योउर आनंदबुंदिबिचारी य हीतेंआमनभावन कोयहिचानहसी सुविचक्षणचारी ॥ ५२५ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० पीतमदगमिहचतपियापानिपरससुखपाय।
जानिपिछानिअजानलौंनेकनहोतजनाय ॥ ५२६ ॥

यहजात वर्णन सखीकोवचन सखीसों ॥ सवैया ॥ खेलतमकहूं पाछलोघातें अचानकहीचलि आयेबिहारी। मूंदकेप्रानपियारी कैनैन चह्यौ उपहवै रसरीतिसंचारी ॥ यद्यपिवामनमोहन कोकरलागतही उमग्योसुखभारी। तद्यपिजानिकैं आपनेगौंहि अजानभई वृषभानदुलारी ॥ ५२६ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० ढीठिपरोसनईठहवैकहैजुगहेसयान।
सबैसंदेसेकहिकह्योमुसकाहटमैंमान ॥ ५२७ ॥

यहपरकीयाप्रौढ़ा सखीकोवचनसखीसों ॥ सवैया ॥ जाइपरोसनकें दुखपीसों झुकीललनारि सजीमडिठाई। सोहीपरोसिन ढीटयहांलगईठ ह्वैयाहिमनावनआई ॥ पीतमकेसंदेसे हुतेवेकहेसवही करिकैचतुराई येनेपैमानकह्यो मुसकायय कहिप्यारोखरी कैरिसाई ॥ ५२७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० चिततरसतामिलतनबनतबासिपरोसकेबास।
छातीफाटीजातसुनिटाटीओठउसास ॥ ५२८ ॥

यहपरकीया अनुराग नायक को अथवानायकाको वचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ नीचोडीठिआपन पैकोलगचितैये बालकैसेहूनदेखे जाहुजेतो सोचकरिये। मुरलीकीधुनिसुनि द्वारेउझकीनेसे खमनकेडरेतें तनहीं कांपडरिये ॥ लाजनकी भीरपलपैडोहूनपावै नैनधीरैधीरैमकुच बचाई पांवधरिये। कीजैकहाकान्हर कनोडेभये जीवों नाहिंनातोयेक वासमे उसासलेलेमरिये ॥ ५२८ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० दीठ्योदैबोलतहसतप्रौढबिलासअपोढ।
त्योंत्योंचलतनापियनयनछकियेछकीनवोढ॥५२९॥

यहमदपानसमय सखीकोंबचनसखीसों॥ कवित्त॥ आजबरुतीकी बारनीकीमैं बिलोकीवहशोभा मेरेनैननमेंअब लौबसतिहै। ज्योंज्योंवह ढीठप्रौढैकैबोलत सरसबैननागर नवेलीहेरिहेरि कैहसतिहै॥ कहैकबि कृष्ण रलागिवे कौललक्षितप्रौढ़ा केसकलबिलास बिलसतिहै। त्योंत्यों छकितियनैछकाई ऐसेपीकेनैन पलकनिहूकीभूली गतिदरसतिहै॥ ५२९

अहिवर अक्षर ३८ गुरु ५ लघु ३३

दो0 हंसिहंसिहेरतनवलतियमदकेमदउमदाति।
बलकिबलकिबोलतबचनललकिललकिलपटाति।५३०

॥ कवित्त॥ क्षिनकमेंहंसै क्षिनरोवैक्षिनदेखि रहै क्षिनकमेंबैठि क्षिनलेटि लेटिजातहैं। क्षिनकमेंठाढी ह्वैकै सखिनसोंबातैकरै क्षिनकमैं भूमिभूमिपुर मुसक्यातहै॥ गातकीनसुधिन सम्हारकछू अंचरकी क्षिनक हूमें आलीहूकेअंग लपटातहै। क्षिनकमें रोझिरीझि बारको बदन चूमै क्षिनकमेंफेरि फेरिबूझेकहीबातहै ५३०॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० मिलिचंदनबेंदीरहीगोरेमुहनलखाय।
ज्योंज्योंमनलालीचढैत्योंत्योंउघरतजाय॥ ५३१॥

यह मदपानसमय नायकाकीशोभा नायककोकहैअथवा सखीसखी सोकहै॥ सवैया॥ कछु आजुलखी मदपानसमयललना किप्रभाजियतेंन टरै। कविकृष्ण कहैं बलकैंललकैं मनमोहनको हंसिअंकभरै॥ दुतिचंदन कीबिंदुलीकी रहीमिलि गोरेललार नजानिपरै। अरुणाईचढ़ैमद की मुखज्योंही ज्यों त्योंहीं त्यों जात खरी उघरै॥ ५३१। नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो०निपटलजीलीनवलतियवहकिबारुनीसेय।
त्योंत्योंअतिमीठीलगेज्योंज्योंडीठ्योदेय॥ ५३२॥

यहमदपानसमयसखी कोबचननायकसों॥ सवैया॥ लाजभरीअतिही नवनागरिजाकी सुधाईसुधाईकैगाई। ताहिबकीछबि देखिबेकोपियप्यारे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भुरायकै वारुनिछाई ॥ ज्योंज्योंउमंग उठैमदकीतिय त्योंत्यों निशंकह्वै देतढिठाई । डीठयौहीलागत नीकीमहावह मानौभरीबहु भांतिमिटाई ५३२ ॥ मच्छअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४

दो० मानतमासोकररहीबिवसबारुनीसेय ।
झुकतिहंसतिहंसहंसझुकतिझुकझुकहंसहंसदेय५३३ ॥

यहमदपान नायकाकी शोभानायकसोंकहतिहैं सखीसखी हूंसोंकहै कवित्त ॥ बारुनीविवस मनमोहनसो मानठानआज मृगलोचन तमासे कोलसतिहै। चारुतरुणाईमें निकाईछबिछाई त्योंत्योंगोरेमुखपर अरुणाई सरसतिहै ॥ कबहूबदन पटघूघटके ढांकलेत कबहूटघारिदेत रंगबरसतिहै । झुकतिहंसति हंसझुकति झुक हसतिहसी हसि झुकै झुकझुककै हसतिहै ॥ ५३३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रूपसुधाआसवछक्योआसवपियतवनैन ।
प्यालेवोठपियावदनरह्योलगायेनैन ॥५३४ ॥

यह मदपानसमय नायका की शोभादेखि नायक छकरह्यो सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ बारुनीको बनिआयो समोंकहते न बनै कछुकौतिक भारो । प्यावत रंगभरी मृगनैनानि रह्यो दुतिकोभरि भौन उजारो ॥ आसव रूपसुधाकै छक्यो मदपीबेको भूलगयो सुधि प्यारो ॥ प्यालेसो ओठपियामुख नैनलगाये रह्योछबिको मतवारो ॥ ५३४ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

दो० खलितबचनअधखुलितदृगललितस्वेदकनजोति।
अरुणबदनछबिमदछकीखरीछबीलीहोति५३५॥

यह मदपान समय नायका की शोभा सखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैनकछू उघरेसे मुंदेअरुबैननमें सिथलाई रसीली । स्वेदके बूंदनसों झलके अरुणद्युति आनन पै चटकीली ॥ तैसीयेरूप उजागरि नागरि सोहतशोभसनी गरवीली । चारुजगीतन यौबनजोति छकै मद होतखरीये छबीली ॥ ५३५ ॥ पर्यधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० छकिरसालसौरभसनैमधुपमाधुवीगंध।
ठौरठौरझोरतझपतभौरभौरमधुअंध॥ ५३६॥

यह बसंतऋतु समयजोमानवती नायकसों सखी कहैतो मनायबो होयजोनायका नायक सोंकहै स्वयंदूतहोय ऐसे नायकहू को कहिबो संभवहै जोनायकसखी सोंकहैतोअपनो अवस्थाप्रयोजन नायका मिलाष सवैया॥ फूलनकेरसके चसकेअवगाहि थकेसबबेलि जितावन। माधुरी केमृदुगंधसने अरबिंदपराग सोपागिरहैतन॥ मंजुरसालके सौरभसों मल मतभयेसुरत्यौन रहीमन। ठौरनिठौरनि झोरनि झूमिझुके मधुअंधमधू बृतकेगन॥ ५३६॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० फिरघरकोनूतनपथिकचलेचकितचितभागि।
फूल्योदेखपलासबनसमुहीसमुझदवागि॥ ५३७॥

यहवसंत समयनायकाको बचननायका सोहोयतो प्रोषित पतिका सखीकोबचन नायकसोंहोय॥ कबित्त॥ देखोऋतु राजको समाजबन बागनमेंप्रफुलित सुमनरहे हैंजोतिजागिकै। कुसुमपलाशके अंगारजानि चहूंवोर चोचुनसों चापतजकोर अनुरागिकै॥ आगैतें विलोकि फूलेमैन मदचिंतऊलें नूतन पथिकभूले भरमद वागिकै। परीडरऐल परदृष्टकी बिसारीगैललौटि चलेघरकोचकित चितभागिकै॥ ५३७॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

दो० बनबीटनापिकबटपरालखिबिरहानिमतिमैन।
कुहौकुहौकैरिकरिउठतकरकरिसतेनैन॥ ५३८॥

यहबसंत समयसखीको बचनसखीसों होयतोअपनी अवस्थाजताय बोहय॥ सवैया॥ मैनमहीपको मानिमतौ द्रुमडारि चढ़ेचहुंवोरनि टूकत। देखतहीबिरही जनकोकरि लोचनलाल कुहोकुहे कूकत॥ बीस बिसेबनबाटन मेंबटपारबसेपिक भूलतकूकत। प्राणपतीबिनक्यों बचिबो अबदांपरे रिपुक्योंटकचूकत ५३८॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० दिशिदिशिकुसमितदेखियतउपबनाबीपिनसमाज।
मनोबियोगिनकोकियोशरपंजरऋतुराज॥ ५३९॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहबसंत समय सखीको बचननायकसों होयतोमनायबो नायकसों होयतो प्रवत्सपतिका ॥ कवित्त ॥ आयोहै मदन क्षितपाल को हुकम पाइ आमलप्रबल ऐसो अमल चलायोहै। मानगढ़तोरिबेको अधिक प्रचंड वहदेखो सबहीके उरअनुराग उमगायोहै ॥ बनउपबन जितततित अबलो कियतदिशिदिशि कुसुमसमूह छबिछायो है। बैरबांधि बिषम बियोगिन के राखिबेको मानों रतिराज घरपंजर बनायो है ॥ ५३६ ॥ करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० हीओरैंसीह्वैरहीटरीअवधिकेनाम।
दूजेकरडारीखरीबोरीबारेआम ॥ ५४० ॥

यहवसंत समय नायकाकी अवस्थासखी नायकसों कहतिहै सखी सखीहूं सांकहै ॥ सवैया ॥ मोहनसोंबिछुरो जबतेतबते न लही कलयेक घरीहै ॥ नैननीरढरै निशिवासर व्याकुलबालअचेत खरीहै ॥ ऐसीदशा महजेहींहुती पुनओरैं भईसुधि औधिटरी है। तापरबोर रसाल मे देख्यो बसंतकेमोसर बोरीकरीहै ॥ ५४० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० कहिलोनेयेकतबसतआहिमयूरमृगबाघ।
जगततपोबनसोंकियोदीरघदाघनिदाघ ॥ ५४१ ॥

यहग्रीष्मसमय नायकाकोबचन नायकसोंहेठ अतो प्रवत्सतपतिका सखीकोबचन नायकसों नायकहू सों होय ॥ कवित्त ॥ एकभूतमय होतभूततजिपंचभूत भ्रम अनिलअंबु आकाशअवनि ह्वै जात आगिसम। पंथश्रकित मदमुकति सुखितसिंधु रसजोवत। काकोदर करिकोसउदर तर केहरि सोवत ॥ पियप्रबल जिय यहविधिअबल सकल बिकल जल थल रहत। तनिकेशबदास उदासमतिजेठ मासजेठे कहत ॥ ५४१ ॥ पयोधर अक्षर ३८ गुरु १२ लघु २६ ॥

दो० बैठिरहीअतिसघनबनपैठसदनतनमाह।
देखदुपहरीजेठकीछाहौंचाहतछाह ॥ ५४२ ॥

यहग्रीष्मसमय नायकाको बचननायकसों स्वयंदूतऐसेनायकको बचन नायकासों जोन यकाकीसखी नायकसों कहैतोप्रदेशको निवारनहोय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कबित्त ॥ तरुवरलतावन ऐसेमुरझायगये जैसेकामनीको मुखकांतविन भयोहै । सरिताभईहैछीन ऐसेसरजलहीन प्यारी दीनहोतीजो विदेश पतिगयोहै ॥ अवनिअकाशपानी नाहविनऐसेजेसे नाहकोवियोग भामिनी कोतनतयोहै । जेठकीजरनिमांह छांहहुतिकति छांहयेहोरिझवारपर-देशकोगयोहै ॥ ५४२ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० नाहिनयेपावकप्रबललुवैचलतचहुंपास ।
मानहुबिरहबसंतकेग्रीषमलेतउसास ॥ ५४३ ॥

यहग्रीषमसमय नायकाप्रेषित पतिनायकाको वचनसखीसों ॥ कबित्त चंदकरमंडलसे मंडकेअखंडधार बरषतपावक प्रचंडकिधौंयहरी । कृष्ण प्रागप्यारेकोदुहाईकिधौं आयबड़वानलकी लूयेंनातेतचतिदुपहरी । चंडकर मंडलीसे पावकनबरषत लूवैनचलतजिन्हैं देखमतहहरी ॥ मेरेजानिपीतम बसंतके वियोगभयें ग्रीषमबिरहनि उसासेलेतगहरी ॥ ५४३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० लैचुभकीचलजातजितितजलकेलिअधीर ।
कीजतकेशरनीरसेतितितकेशरनीर ॥ ५४४ ॥

यहजलकेलि सखीकोवचन सखीसों ॥ सवैया ॥ मोहनमोंजल केलि रची ब्रषभानसुताहि तरंगमेंबोरी । कृष्णकहैकबिताछबिपै रतिकामकी वीरकरोरिकेजोरी ॥ चूभकलैगहरैजलहूचलिकै जितहीजितजातकिशोरी केशरिकेजलकेशरिकेशर नीरकरैतितहीतितगोरी ॥ ५४४ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पावसघनअंधियारमहिरह्योभेदनहिआन ।
रातद्योसजान्योपरतलखिचकईचकवान ॥ ५४५ ॥

यहवरषासमय स्वयंदूत नायकाकोबचन नायकाप्रति नायकाकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ अंबरआनिदिशा विदिशासगरे समहेंकोवितान मोतान्यो । मेघकरंग बसेजगमेंअतिमोदहिये निशिवारनमान्यो ॥ पावस घनकेअंधियरमेंभेदकछूनपरैपहिचान्यो । द्योसनिशाकोंबिठेकसुतौ चकई चकवानकेबोलतेजान्यों ॥ ५४५ ॥ चिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० कुढंगकोतजिरंगरलीकरतिजुवतिजगजोय।
पावसगूढनिबातयहबूढ़नहूरंगहोय ॥ ५४६ ॥

यहबरषासमय सखीकोवचन नायकामें मनायवो ॥ सवैया ॥ पावस आवतहींखग पुंजनि मोदसोकुंकुम चायदईहै। चायभरीबहु भायभरी मिलिरंगरलीबनितानटईहै ॥ कोपप्रसंगकुढंग निवार निहारि घटाटनई जुनईहै। गूढ़नहूँ यहबातगुणायन बूढ़नहूदेखि मुरंग भईहै ॥ ५४६ ॥ बारनअचर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० धुरबीहोंहिनलखिउठेधुवांधरनचहुंकोद।
जारतआवतजगतकोपावसप्रथमपयोद ५४७॥

यहबरषासमय नायका प्रोषितपतिका नायका को बचन सखीमें ॥ कवित्त। मेरोकह्योमानि जियनेहचीके जानिआलीप्रथमही पावसके बलबघरतहै। घीतलसमीरमिल्यो तैसोईसहायकरचि रहीबिचारे काहू कैसेउबरतहै ॥ जगहि जरावत येआवत उमड़घनताही आसखग कुलसोरये करतहै ॥ चपलान चपलकरप ज्वालजालनिकीतेई धूमधारये न धुरवा परतहै ॥ ५४७ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० वेऊचिरजीवीअमरनिधरकफिरोकहाय।
छिनबिछुरैजनकीनहिनपावसआवसराय ५४८॥

यहबरषा समय सखीको बचन नायकासों नायकाकी बचन सखीसों कवित्त उक्ति ॥ सवैया ॥ घोरघटाघुमड़ी चहुंओरकरै बहुभांतिन सोरबिराबो ॥ भूमिहरी बहघीत समीरगहैंमति मंदसुगंधसुभावो ॥ ऐसे समयछिनएकबिछोह भईजिनकीगई छूटनआवो ॥ वेचिरजीवों भयेजगमें अचरामरक्यों न निशंककहावो ॥ ५४८ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० अबतजिनाउउपावकोआयोश्रावनमास।
खेलनरहिवोखेमसोंकेसकुसुमकीबास ॥ ५४९ ॥

यहबरषासमय प्रोषितपतिका नायकाको बचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ जोलौमन रह्योहाथ तौलौंन उसासीगाय आगयोबिरहदुख खलनकोसहयो ॥ प्यारेनंदनंदनकी आवनअवधिआस जैसेतैसे रह्योजीव अबकहा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहिबो॥ आयोसखो श्रावनऋतु आयो मनभावनरो अबतू उपायनकोंछोड़ि वृथाबहिबो। कुटम कुसुमकी सुवासको प्रकाश भयोखेलुहै नप्राननको कुशल सों रहिबो॥ ५४९॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० तियतरसोंहैंमुनिकियेकरसरसोंहै नेह।
धरपरसोंहैंहवेरहैंनरबरसोंहैं मेह॥ ५५०॥

यह वर्षा समय है कविकी उक्ति श्रीस्वयंदूती नायकाकोबचनना यक सों॥ कवित्त॥ हरितेपुहुमिजल भरेबनटपबम चहुओरसौरभके द्रुम-गिटदयरहै॥ हमही लतालहलही छबि छायरही कुंज कुंज खगकुल कोलाहल कैरहै॥ उमड़िघुमड़ि परसतसे पुहुमिघन सोहैबरसोंहैभूमि ह्वैरहै॥ हेरिहेरि मुनिमन तियतर सोहै होत इतघनबृंद अनुराग के उतैरहै॥ ५५०॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ६०॥

दो० चलितचलितश्रमस्वेदकणकलितअरुणमुखतैन।
बनबिहारथाकोतरुणिखरेथकायेनैन॥ ५५१॥

यह बनविहार नायकाकीशोभा नायककीस्तुति सखीसखीसोंकहति है॥ कवित्त॥ सुखमाकलित तरुणाईकी गुराई मांझटमगि प्रकास अरुणाईकेसुहायेहैं॥ तैसेईललितश्रम स्वेदकणझलकत जगमगजोतिकेस-मूहसरसायेहैं॥ कहैंकबिकृष्ण देखिरहे अनमेषह्वै कै चालत न क्योंहूंपगयेसे रोकिधायेहैं॥ बिपिनबिहारी रसछाकी ब्रजबाल बांकीथकित प्रभानखरे लोचनथकायेहैं॥ ५५१॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० बरजैंदूनीहठचढ़ैनासकुचैनसकाय।
टूटतकटिद्रुमचीमचकिलचकलचकबचजाय ५५२॥

यहसखी समय हिंडोरेकी शोभानायकसों कहतिहै॥ सवैया॥ रहीखसिथ पतें सारीसुरंगसम्हारेनहीं जकजूटतिहै॥ छलसों अवलोकति नंदलालाहिलगीरहेरेनु अछूटतिहै॥ उछरैकबरी छलकैछबि पीठमेंडीठि महासुखलूटतहै॥ चमकैंमृगलोचनकेलिभरी लचकैंकटयैं जनुटूटतिहै॥ ५५२॥ चल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० घनघेरोछुटिगोहरपिचलीचहूंदिशराह।
कियोसुचैनौआइजगशरदसूरनरनाह॥ ५५३॥

यहशरद समयराजनीति प्रसंगकविकीउक्ति॥ कवित्त॥ छुटेगयोव्रजनुचलनु अपमारगको अपनेअपनेसत मारगसमीतिहैं॥ सोहतपरमहंस सरशुभकलानिधि गाईद्विजदेवतानि पूजिवेकोप्रीतिहै॥ केशवरायसबही केहृदयकमल फूलेसोहतशरद कियोआछो राजनीतिहै॥ ५५३॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० अरुणसरोरुहकरचरनदृगखंजनमुखचंद।
समयआयसुंदरशरदकाहिनकरतअमंद ५५४॥

यहशरदसमयकविकीउक्तिहै॥कवित्त॥ सोहतअरुणसरसीरुहचरण करिजिनहि जगतविय तइनगनाबई। कलापरिपूरन सुधानिधिबदनलसै जाकीअद्भुत छबिकहत नआबई॥ देखियत खंजन तरलकजरारे नैन कहैंकविकृष्ण देखिजीवसचुपाबई। समय मुखपुंजसनो सुंदरशरदआई। कौनकेनउरमें अनन्दसरसाबई॥ ५५४॥ कच्छअक्षर ४०गुरु८लघु३२॥

दो० कियोसबैजगकामबसजातोजितेअजेय।
कुसमसरहिसरधनुषकरिअगहनुगहननदेय ५५५

यहहेमंतसमय कामोद्दीपन अधिक होताहै सनायक अथवानायका सखीसोंकहै ऐसेहीसखीको बचनहूंसंभवहै कविकीउक्तिहोय॥कवित्त॥ भृकुटीमेमुनीश मिटुईशशतक्रतुकेमे केतेकीते चिकलगनेयै कहो काहिकाहि॥ मानियतजाकोनउखंड में अखंडधाकुजीते महिमंडलके अजित जितीकआहि॥ कहेकवि कृष्ण जन फूलहीकेआयुधमों कैसेकैसे बली भेदेसाहसुईते कुचाहि। जीतेजिहितीन्योंलोक ऐसोबलीमनमथअगहन नगहनदेतसरचापताहि॥ ५५५॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १५ लघु २०॥

दो० ज्योंज्योंबढ़तबिभाबरीत्योंत्योंबढ़तअनन्त।
ओकओकसबलोकसुखकोसकोसहेमंत॥ ५५६॥

यहहेमंतसमय कविकीउक्ति मुख्यहै संयोगशृंगार में बनै बिप्रलंभहूमं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोऊ कोऊ को संग अन्योक्ति हू जानिये ॥ कवित्त ॥ हिमऋतु आइ भई सीत सरसायु देखि भाजि गई गरमउरोज अचलानमें। वासर की लघुता बिलोकि मुरझात कोल सछिम ह्वै रह्यो तेजतपन केतनमें ॥ कहै कवि कृष्ण ज्यों ज्यों रजनी बढ़ंत त्यों त्यों उमगत मोद अनुरागिन कोमनमें ॥ लोकलोक बाढ़त अपार सुख देखयत सोकहै बियोगी कैकि कोकन कोगणमें ५५६ ॥ मदकल अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० मिलि बिहरति बिछुरत मरत दंपति अति सरलीन।
नूतन बिधि हेमंत सब जबै जुराफा कीन ॥ ५५७ ॥

यह हेमंतसमय सखीकोबचनन यकासी होय तोम नवती और कबकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ दोऊ येकै देखियेदुहुन बीचयेकै प्राणहितकी उमंग नईनईयेगहतहै। अतिरसलीन दोऊमिलैं हीबिहारकरैं कहैं कविकृष्णचित अति उमगतहै बिछुरैन नेकहूतो जीबेको भरोसो नाहि अति अकुलाय मैन बिषान सहत है ॥ और येकदेखो हिमऋतुकीनबलरीति जगतमें सबही जुराफा हूरहतहै ॥ ५५० ॥ पयोधरअक्ष ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० आवत जात न जानियत तेज हित जिसि बरान।
घरहि जमाई लौं घट्यो खरो पूष दिन मान ॥ ५५८ ॥

यहशिशिरसमय दोउनकोहितकाई है सुराचिहीआछोलगतिहैसोसखी दिनकोलघुताकहति है बिरहीहूदिनकी निन्दाकरै ॥ कवित्त ॥ सावन कोडगहू बिभावरीबढ़तज्यों हीत्यों बियोगिनकोहियो अकुलातहै। दम्पति उमंगअनुरागनि फिलतदरएकहू रहतामिल दुहुनकोगातहै ॥ पूषकोदिन घटतलघुमानभयो ऐसेजैसेससुर केघर तेजमाईमकुचातहै। तेजकोनलेशरह्यो शीतल सुभाव गह्योजानतनकोउ कबचायो कबजातहै ५५८ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

दो० रहनसकी सबजगतमें शिशिर शीतके त्रास।
गरम भयो जिगढ़ै भई तिय कुच अचल निवास ५५९ ॥

कवित्त ॥ हरैतनिभाजो बातकातिकमें जबसुनी हिमकी हिमाचलतेंच-मूउतरतिहै। आयेअगहनकोनौ गहन दहनहूकोतितहूतें चलीकहूंधीर

नधरतहै ॥ हिय मेंपरीहैहूलदोरि गहितजितूल अवनिजमलसेनापतिभूमि रतिहै। पूरबमैं तियाके कुचऊंचेकनकाचल नगरमगहौईभई शीतसोंलर-तिहै ॥ ५५६ ॥ वारणअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तपनतेजतपतातपतिअतुलतुलाईमाह।
शिशिरशीतक्योंहुनघटैविनलपटोतियनाह ॥ ५६० ॥

यह शिशिरऋतु सखीकोबचन नायकामें नायक कोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ मोलबिशालकी ओढहूलास दिनेशको तेज इनेपरहोऊ। राख हूछाइनिहालिनुमें तनपावकपुंज अगोटीसंजोऊ ॥ माहकोशीतविहात न कैसेहूकोटिउपायकरो किनकोऊ। जौलगपीवपियास चुपायरहै लपटायन येकहूदोहै ॥ ५६० ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० लगतसुभगशीतलकिरनिनिशिसुखदिनअवगाहि।
माहशशोभ्रमसूरत्यौंरहतचकोरैचाहि ॥ ५६१ ॥

यह शिशिर ऋतु कविकविकी उक्तिमुख्य है ॥ कवित्त ॥ शिशिरमे शशिकोस्वरूप पावैसबितासुघामहू मेंचांदनीको दुतिदमकतिहै। सेनापति हैतशीतलता है सहसगुनीरजनीकीबासर झंझाईझलकतिहै ॥ चाहतचकोर सूरओरहूग छोरकरि चक्रवाकी बातीतजिधार धसकतिहै। चंदके भरम होतुमेदहैकमोदनी कों शशि शंक पंकजनी फूलीपैं रहतिहै ॥ ५६१ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दियोजुपियलखिचखनमेंखेलतफागखियाल।
बाढ़तहूअतिपीरसुनिकाटतबनतगुलाल ॥ ५६२ ॥

सवैया ॥ हरिखेलतफाग वधूगणमेंघसवासवकेशरिरंगसनै। इतचाह भरीवृषभानसुता उमग्यो हरिके उतमोदमनै ॥ जबनैननमें तकि डारयो लला अपने करसों वहरायघनैं। अतिवाढतहै जऊ पीरतऊबहू काढ़तपैन गुलालबनैं ॥ ५६६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पीठदियेहीनैकमुरिकरिघूंघटपटटारि।
भरिगुलालकीमूंठसोंगईमूठिसीमारि ॥ ५६३ ॥

यह होरीखेलनेको समयनायकाकी शोभानायक सखीसों कहतहै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सवैया ॥ मोपैकछूकहते न बनैकरिजैसीदशा बृजनारिगईहै ॥ पीठिदिये होमुरीमनले वहफागन खेलि खिलार गईहै ॥ घूंघटकोपट टारिकैभौंह उसारिकैनैक निहारिगईहै । योंभरि मूठिगुलाल सोंप्यारीअचानक मूठि सीमारिगईहै ॥ ४६३ ॥

दो० ज्योंज्योंपटझटकतिहसतिहठतिनचावतनैन ।
त्योंत्योंनिपटउदारहूफगवादेतबनैन ॥ ५६४ ॥

यहनायका प्रौढ़ाहोरी खेलको समाजनायककीशोभादेखिबेको लोभ लाग्योहैसोसखी सखीसोंकहतिहै ॥ कबित्त । फागुनकेखेलको समाज बनिआयोजैसों तैसोंयेकरसनासों कहतबनैनहैं । सांकरीगलीमें नंदलाल कोपकरीबाल मनभायेकरत बढ़ावैचित चैनहैं ॥ ज्योंज्योंनेहचाह भरि लोचननचाय परु हटकिकहत हसिहंसिमृदु बैनहैं । त्योंत्योंचितलालन कोनिपटउदारतऊं फगवाकौ देबौव्योंहूं मानतुमनैनहै ॥ ५६४ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० छुटतमुठिनसंगहीछुटेलोकलाजकुलचाल ।
लगतदुहुनइकबेरहीचलाचितुनैनगुलाल॥ ५६५ ॥

यहहोरीखेलको समयसखीसखीसोंकहतिहै ॥ कबित्त ॥ होरीको समाजबरसानेको बगरआजुकहा कहौंआलीबनि आयोनीको ख्यालरी । इतयुवतिगणमें राधिकाकिशोरी उतसहितसखान बन्यौमदन गुपालरी ॥ छुटतमुठीके संगछूटतहैयेके बेरगुरुजनउर लोकलाजकुल चालरी । कहैं कबिकृष्णत्योंहीं लागतदुहूकेतन येकैसाथ चावचित लोचन गुलालरी ॥ ५६५ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ज्योंज्योंझुकिझांपतबदनबिहंसतअतिसतराय ।
त्योंगुलालमुठीझुठीझिझकावतप्योजाय ५६६

यह होरी खेलत नायका की चेष्टा देखि नायक रीझ्योहै सोनायक युक्ति करतहै सो सखी सखीसों कहतिहै ॥ कबित्त । आजब्रजदेख्यो होरी खेलको समाज वह शोभामेरे नयनमें रहीहैबिहरिकै ॥ राधाबन मालीको विलासलखिआली सचमघवाके केरिक गुमान जातगारिकै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज्योंज्यों प्यारीझुकिझुकि झांपत बदन बिहंसति सतरातरिसकोसो रुख करिकै ॥ त्योंत्योंछबि देखिछक्यौ कृष्णप्राणप्यारोलाल झिझकाबतगुलाल मूठीझूठीभरिभरिकै ॥ ५६६ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० रिसभिजयेदोऊदुहुनतौटिकरहेटरैन।
छबिसोंछिरकतप्रेमरंगभरिपिचकारीनैन ॥ ५६७.

यह दोउनको परस्परावलोकनहै सोसखीसखीसों होरीके ख्यालकी समतादेकरि कहतिहै ॥ कवित्त ॥ आजबृषभानकी कुंवारी मनमोहन कोनैमनुमेराख्यौ होरीकोसोख्याल करिकै ॥ भरेहितचायकोऊ चूकतन दाइटिकर हैटकलाय कोऊजानत न टरिकै ॥ भिजयेबनाय अतिरसमेंपरस पागेअनुरागके गुलालरंगढरिकै ॥ कृष्णकहैं छिरकत छबिसोंछबीलेदोऊ नैनपिचकारी प्रेमरंगभरिभरिकै ॥ ५६७ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० गिरेकंपकछुकछुरहैंकरुपसीजलपटाय।
लैयोंमुठीगुलालभरिछुटतझुठीहवैजाय॥ ५६८ ॥

यह होरी खेलको समय सखीसखीसों कहतिहै दोउनकेसात्विकभाव कंपनहै ॥ कवित्त ॥ मेरोकह्योमानरी उतालो चलिदेखिनेकु आजब्रज धूमहोरीखेलको अनूठीहै ॥ केधरिसनेरसिकरसीले जहांवरप्रातहांई सब सुखनकीबूढतिहै ॥ यद्यपिपरसपरदोऊमुखमांडिबेकों लेइअतिचायसों गुलालभरिमूंठीहै ॥ कछूकरपंकजपसीजे जपटातकछू कांपैगिरी जाततातें खोलेहातझूठीहै ॥ ५६८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहीरुकीक्योंहूंसुचलिआधिकरातिपधारि।
हरितापसबध्योसकोउरलगियारिबयारि ५६९॥

यह बायु बर्णन कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ ऐसीरही रुकि क्योंहौं आवनेन पायीजाके बिनमिले प्राननकी गति अकुलातीहै॥ लोचनचकित जाकोआगमविलोकबेको चहूं ओरचितवत छातीहैहाततातीहै॥क्योंहूं क्योंहूं चलिकैंअचानकही आधीराति आयगईद्वार जैसे पारिआयीजातिहै॥ हरितपतिसब द्योसकोहियेसों लागिकहैंकबिकृष्ण सुखसिंधुसरसातिहै॥ ५६९ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० चुवतस्वेदमकरंदकणतरुतरुतरबिरमाय।
आवतदक्षिणतेंचल्योंथक्योबटोहीबाय॥ ५७०॥

यह पवन वर्णन कवि की युक्ति॥ कवित्त॥ नीझरतड़ाग जल यंत्रनकेबिमलसलिल परसतऐसेढार सींढरेंढरें॥ कृष्णकहैजहां तहांसीरी छांहदेखिदेख बिरमिरहततरुतरु के तरेंतरें॥ सुमनपराग रजपागिरह्यौ अंगअंगस्वेदकण बृंदमकरंदके धरेंधरें॥ सुरभिसमूहछाक्यो दक्षिणदिशाते वायुयाक्योंमें बटोही चल्यो आवत हरें हरें॥ ५७०॥ यच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० बिकसतनवमल्लीकुसुमनिकसतपरमलपाय।
परसियजारतबिरहहियबरसरहेकीबाय ५७१॥

यह पवन वर्णन बिरहके प्रसंगमें नायका अथवा नायक सखी सों कहै मानके प्रसंगमें सखीनायकसों कहै॥ कवित्त॥ मंजुलता बेलिनुके सघनानिकुंजनितें हरेहरेनिकसत सबहीसुहातहैं॥ सुमनकदंबनिकेसुखद परागसानि जांहिमिलिभौंरनकी पांतिहुलसातिहै। मुकुलितमालिकाके कुसुमसनिबीननुतेनिकसतिसुरभि सहितसरसातिहै॥ बरसिरहेकी सीरी आवतबयार देखौ परसहियेजरतबियोगिनको छातिहै॥ ५७१॥ घयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० रुक्योसांकरेकुंजमगकरतझांझिझुकरात।
मंदमंदमारुततुरंगखूंदिनआवतजातु॥ ५७२॥

यहबायु वर्णन॥ कवित्त॥ सोहतसिंगार बहु भांतिन जरावसाज रंगरंगकुसुम तरलअति अंगुहै। करिका ललित भ्रमरावली लसतिमुख पुहपपरागढक्यों उमंगअनंगुहै॥ झुकत सांकरेनिकुंज मग निरखतु झांझसोकरत करातभरयोरंगु है। खुदीसी करत मंदमंद मलयाचलते आवतपवन कामदेवको तुरंगुहै॥ ५७२॥ चलअचर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० लपटीपुहुपपरागपटसनीस्वेदमकरंद।
आवतनारिनवोढ़लोंसुखदबायगतिमंद ५७३॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहबनबर्णन कविकीउक्ति ॥ सवैया॥ फूलनकीरज अंबरमेंनखते सिखलोंलपटी छबिछावति। खेद लमे मकरंदफुहीलगि नयनन सोछति याहिसिरावति ॥ कृष्णकहैं बहूभांतिनुकै तनसो रस चौहूदिशामहकावति मंदगहैंगति नारिनबोढलोंव्यारिनि कुंजगलीतन आवति ॥ ५०३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० रणितभृंगघंटावलीझरतदानमधुनीर।
मंदमंदआवतचल्योकुंजरकुंजसमीर ॥ ५७४ ॥

यहबायु बर्णनकविकी उक्ति ॥ कबित्त ॥ घंटनकेघबद अखंडतेई सुनियतगुंजत अनंदभरो अलिनकोबृंदहैं। सुमनसमूहनकी धूरमेंधुरेटे गातमदजल उमगिझरत मकरंदहैं ॥ रंगरंग फूलनकीझूलमें झपायेतन जगतबिरनियाकोबिविक्रमअमंदहैं। मानतरुतोरि कोकाआवत गुमानभरो मंदगतिपावनु मनोज कोगयंदहैं॥५०४॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४लघु २० दो चंद्रोदयद्वैजसुधाब्दीधतिकलावहलखिडोठिल्लगाय
मनोअकाशअगस्तियायेकैंकलीलखाय ५७५ ॥

यहचन्द्रोदय बर्णन सखीकोबचन नायकासों अगस्तियाके तरतेंसंकेत स्थलबचनहिजनेमिलबेकी अनधिबूचनुमाधारनै कविकीउक्ति॥ सवैया॥ देखतबैदुतिया कैमयंककी बैसीकला नभजोति जगीहै। सोछबिचाहि चकोरनको अधलोहूलसो हियमोदपगीहै॥ यौनिरखीअकनाईलिये उपमा कबिकेउरमें उमगीहै। मानहुव्योम अगस्तिके रूपहियेककली पहलैहीं लगीहै ५७५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

दो० धनयहद्वैजजहांलख्योतज्योहगनदुखदंद।
तोभागनपूरबउथैअहेअपूरबचंद ॥ ५७६ ॥

यह चन्द्रोदय सखीकोबचन नायकसों प्रयोजन नायका दिखायबो अन्योलहूयाही प्रसंगमें संभवहै ॥ कबित्त ॥ सकलकलानि परिपूरण पियूषनिधिसोहै अकलंक सबसुखनिको कंदहै। जाहिदेखिबारिज बदन और तियनके सकुचिमुदित ऐसी प्रभाको अमंदहै ॥ धनयहद्वैज जहां नीकेकै निरखपायो देखतहीदृग न कोगयेदुखदंदहै। पूरबकीओर तुव

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पूरब सुकृतफलु निरखअपूरब उदितभयोचंदहै ॥ ५७६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० शीशमुकुटकटिकाछनीकरमुरलीउरमाल।
यहिंबानिकमोमनसदाबसौबिहारीलाल ॥५७७॥

यहश्रीकृष्णजूको ध्यानहै क्रियाबानिकसोंमेरेहृदयमें बसो ॥ सवैया छबिसों कबिशीष किरीटबन्यो सुविशाल हियेबनमालसैं। करकंजहि मंजुरलीमुरली कछनीकटि चरुप्रभाव बसैं ॥ कवि कृष्णकहैंलखसुंदर मूरतियोंअभिलाषि हियेसरसैं। बहनंदकिशोर बिहार सदायहबानिक मोहिय माझबसैं ॥ ५०० ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १०लघु २८

दो० मोरमुकटकीचंद्रकनियोंराजतनंदनंद।
मनुशशिशेषरकीअकसाकियशेषरशतचंद ५७८॥

यहश्रीकृष्ण जूकीमुकटकीशोभासखीकोबचन नायकासोंभक्तकोबचन हूसंभवहै ॥ सवैया ॥ आजलख्योब्रजराजकुमार सुदेशसिंगारबनेसिगरेहैं ॥ रूपकीरीझकहीनपरै अवलोकबिलोचन मोदभरेहैं ॥ कविकृष्णकहैंसिर सोहतमोरकिरीट चन्दाछबिपुंजभरेहैं ॥ मानोंअकसशिशेषरसौंहरशेषर चंदअनेककरेहैं ॥ ५०८ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० अधरधरतहरिकेपरतओठदीठिपटजोति।
हरितबांसकीबांसुरीइंद्रधनुषरंगहोति ॥ ५७९ ॥

यहश्रीकृष्णजूकीमुरलीबजावतिशोभाहोतहै सोसखीनायकसोंकहतिहै नायकासखीसोंकहै ॥ सवैया ॥ चलिदेखिरीबानिकसों बनिकैं ब्रजराज कोलाड़िलोआवतहै। मुखचंदकी चारुमरीचनसों बलिनैनचकोरसिरावतहै ॥ जबडीठिकोओठनको पटकौमुसकान को रंगमिलावतहै ॥ तबबांसुरी बांसहरेकीललासुरचापकेरंगदिखावतहै५०९॥पयोधरअक्षर३६ गुरु१२लघु२४

दो० मकराकृतगोपालकेशोभितकुंडलकान।
मनोधरयौहियघरसमरुड्योढीलसतानिसान ॥ ५८० ॥

यहकृष्णजूकोध्यानहै तरुणाई आईहृदय में कंदर्प प्रवेश भयो यह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रयोजन ॥ सवैया ॥ मैंनिरख्योब्रजराजजलजा दुतिपुंजहियेहितसाजिरहे है ॥ कृष्णकहेहगदीरघदेखि प्रभात कैपंकजलाजरहेहैं ॥ मंजुलकानन मेंमकराकृतकुंडलयों छविछाजिरहेहैं ॥ मानोंममोजधर्योहियमंदिरद्वार निसानविराजरहेहैं ॥ ५८० मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० सोहतवोढ़ेपीतपटश्यामसलोनेगात ।
मनोनीलमणिशैलपरआतपुपर्योप्रभात ५८१ ॥

यह श्रीकृष्णजूकोध्यान पीतांवर कीशोभा नायकाको वचनसखीसों सखीको वचननायकासों भक्तकोवचन ॥ सवैया ॥ वनिजा छबिसोंहरि नैननमेंअरुप्राननमेंअबरोहतहै ॥ सखिसुंदर श्यामकलेवरपै पटपीतलसैमनमोहतहैं ॥ समताकहताछबि कोकहियेसुबियौतिहु लोकमें कोहतुहै ॥ मणिनीलकेशैलकेऊपर मानोप्रभातकोआतप सोहतुहै ॥ ५८१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ भक्तकोवचन ॥ उपालंभ ॥

दो० कबकोटेरतदीनरटहोतनश्यामसहाय ।
तुमहूंलागीजगतगुरुजगनायकजगवाय ॥५८२॥

यहभक्तबचन भगवानसों ॥ सवैया ॥ हौंकबकोरटलागिरह्यो गहि दीनसुभावमनोबचकायक । दीनकेबंधुकहावतहौ हरिकाहेतेंहोतनआनि सहायक ॥ काहेनेढील करोकरुणामय कृष्णकहै प्रभु होसबलायक ॥ जानिपरी तुमहूंको कछू अबध्यारलगीजगकी जगनायक ॥ ५८२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० नीकीदईअनाकनीफीकीपरीगुहारि ।
मनोतज्योतारनबिरदबारकबारनतारि ॥ ५८३ ॥

यहभक्तकोबचन भगवानसों ॥ कबित्त ॥ सेवककी संकटनिवारिबे कोसावधानकहत तिहारोवेद बिरदपुकारिकै । कहैंकविकृष्णत्योंहींदेख परतिखसाखदीननुको दीनेहैंअनेकदुख टारिकै । आनाकानीनीकीकरि मेरीरटफीकी परीलगे न गुहारि रहैनिहुरायधारिकै । जानियतुतारिबेको पन अबछाडयोतुम जसजीत्यो येक वेरबाण कोतारिकै ॥ ५८३ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० बंधुभयेकादीनकेकोतास्योरघुराय।
तूठेतूठेफिरतहौंझूठेबिरदकहाय॥ ५८४॥

यह भक्तकोबचन भगवानसों॥ सवैया॥ कोनसेदीनपै कीनीदया अपाराधीकहो जग कौन उधारयो। कौन अनाथकेबंधु भयेप्रभुको तुम दासभये बिनतारयो॥ ऐसेईकैसे प्रतीत करौंकबिकृष्ण कहैहौं पुकारिकै हारयो। तूठेईतूठे निसांकफिरौतुम झूठेईधाकुअना कहपारयो॥५८०॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० थोरेईगुनरीझतेबिसराईवहबानि।
तुमहूकान्हमनोभयेआजकाल्हिकेदानि॥ ५८५॥

यहभक्तको बचनभगवानसों॥ सवैया॥ ह्वैअतिआरतमैं बिनतीबहु बारकरी करुणा रसभीनी। कृष्ण कृपानिधि दीनकेबंधुसुनी असुनीतुम काहेकीकीनी॥ रीझतेरंचकही गुनसोंवहबानि बिसारिमनो अबदीनी। जानिपरीतुमहूं प्रभुजू कलिकालिके दानिनकी गतिलीनी॥ ५८५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० ज्योंहवैहोत्योंहोयगोहोहरिअपनीचाल।
हठिनकरौआतिकाठिनहैमोतारिबोगुपाल॥ ५८६

यहभक्तको वचन है अपनी पापकरिबेको पनु उपालंबसों करत है॥ सवैया॥ हौंउनकी गिनतीनमें हौप्रभुजेतुमतारते आपनींगौहों। कृष्ण कहैगिनतेनबनैकछुपापिनकोपरमाविधहोहो॥ होनी है जोकछूह्वै है वहैगति मेरीयेचाल कुचालनसोहों। खेलन है प्रभुमेरोउधारिबो भूलज कीजैबृथा हटयोंहों॥ ५८६॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० मोहितुमेबाढीबेहसकोजितैब्रजराज।
अपनेअपनेबिरदकोदुहूनिबाहनलाज॥ ५८७॥

यहभक्तको बचन भगवानसों॥ कबित्त॥ तुमजेते तारे तेतेमोतेन पतितभारे मोसौ पूरौपापीकोऊ दूसरोनपेखिये। तुम्हे वानपरी प्रभु अधम उधारिबेकी मेरेयेकपापही टेकअबरेखिये॥ दुहुनकोंलाज आपआपने बिरदकीहैपूरी पैजपारिके निबाहनीविशेषिये। कहैंकबिकृष्ण मोसोंतुम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सोंबहसबाढ़ी कौनचलिजाय अबजीतेकौनदेखिये ॥ ५८७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कौनभांतिरहिहैबिरवअबदेखिबीमुरारि ।
बीधेमोसोंआनिकैगांधेगीधहितारि ॥ ५८८ ॥

यहभक्तको बचनभगवानसों ॥ कबित्त ॥ पतितउधारन कहतसब कोऊमोऊसांच झूंठ अबठहराय गोबनायकै । कहैंकबिकृष्ण जिनऔरके भरमभूलौहौं गरूपापीमन बचअरुकायकै ॥ तारनोहै पखेरू येकगीधतातें गीधेतुमसोही यमराख्यो हैजगत बगरायकै । कौनभांतिराखिहौ बिहारि अबदेखियेजू कठिन बनीहैअबगीधे मोसोंआयकै ॥ ५८८ ॥ मरकट अक्षर ३६ गुरु १० लघु १४ ॥

सो० मोहूंदीजेमोक्षज्योंअनेकअधमनदयौ ।
ज्योंबांधेहीतोपत्योंबांधेअपनेगुनन ॥ ५८९ ॥

यहभक्तको बचनभगवानसों किमुक्तकरौ बांध राखोतो अपनो करि राखो ॥ कबित्त ॥ भांतिभांतिआरतिकी आरतनिबारतहौप्रगट पुकारत निगमगणसाखिये । तातेंकबिकृष्णदीनबंधुदयासिंधुजुसों बारबार बिनती पुकारयहभाखिये ॥ अधमअनेकन को ज्योंहींदीनो मुखलूमत्योंहीमोहूं मोचदेबोचित्तअभिलाषिये । बांध बोईजोपै मनमान्यो महाराज तो जू आपनेहीगुननबनायबांधिराखिये ॥५८९॥ बारण अक्षर३८ गुरु१०लघु२८ ॥

दो० निजकरनीसकुचेहिकतसकुचावतइहचाल ।
मोहूंसेनितबिमुखत्योंसनमुखरहिगोपाल॥ ५९० ॥

यहभक्तको बचनअपनी बिमुखता भगवानकोभक्तिनसोंसन्मुख रहिबे कोपनुसु प्रगटकरतहै ॥ सवैया ॥ जामिपरैनतिहारी प्रभुगति बेदहूनीकै भेदनपावत । संगफिरेब्रज ग्वालनिकेमुनि पावैंनध्यान समाधिलगावत ॥ येकतोहौ अपनीकरतूतनहीं सकुच्योबहुरयो सकुचावत । हूंतुमसो नितहो बिमुखे तुम दीनदयालहो सन्मुख आवत ॥ ५९० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नाहगरजनाहरगरजबोलसुनायोटेरि।
फंसीफौजमेंबंदबिचहंसीसबनतनुहेरि॥ ५९१॥

यह द्रौपदी को समय कविकी उक्ति॥ कबित्त॥ आयुध अघट साजै भटनकी भीर भारीच्योरोवीर बिकटलियेईं जातिघेरिकै। नाहर कीगरजगरूरमें गरजियतताही समैपाछेतेसुनायो बोलटेरिकै॥ याकेअतिबिक्रमकोभाव जियजान्योयह जीतेगोसमर एकएकको निबेरिकै। प्रबलचमूकरीचबंदमें फसीहैतऊउमगि उछाहसी सब तन हेरिकै॥५९१॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० नहिपावसऋतुराजयहतजितरवरमतिभूल।
अपतभयेबिनपाइहैकोनवदलफलफूल॥ ५९२॥

यह अन्योक्ति काहू दताके धोखें सूमपै कछूकोऊ चाहै तहां कहिये झगरेके प्रसंगमेंगढ़हूके प्रसंगमें॥ कबित्त॥ मघवाकेजलसोंउमगिअधिकानोघहु पंछिनकोराख्योते बसायसमुदाईहैं। छोड़िचित भूलिवाभरोसेमतभूलैअब बैसीतोवनिकनीठि नीठिघनिआईहै॥ पावसमजानिऋतुराजकोसमाजयह योंहीकैसे हरित भरितछबिछाईहै। सुनितरवरजौलौं ह्वैहैनअयततौलौं नवदलफूलफलसंपति नपाईहै॥ ५९२॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० कोछूट्योयहजालपरिकतकुलंगअकुलात।
ज्योंज्योंसुरझिभज्योचहतत्योंत्योंउरझतजात५९३

यह अन्योक्ति संसार जाल अथवा प्रेम जाल के बंधन सों कहिये॥ कबित्त॥तबतोनजान्योलगि लालचभुलानौचित अबपरबसपरका हेपछितातहै॥ कहैंकबिकृष्णयाके बंधनकीयहैरीतिनेक अटकत अंगअंगबंधिजात है॥ देख्योतेपखेरूकोऊ छूटयोइजाल परिकाहै कोतेबाथरे कुलंग अकुलातहै॥ ज्योंहीज्योंसुरझि भज्यौचाहतसयानकरि त्योंहीत्यों खरोईखरो उरझतजातुहै॥ ५९३॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०॥

दो० यहद्वेहीमोतीसुगथतूनथगरबिनिसांक।
जेहिपाहिरेजगदृगग्रसतिलसतहसतसीनांक५९४॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहअन्योक्त कोऊ थोरेहूमेधनसों अथवा गुनमेंअधिक सोहत होय तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ सुरनिसमेत नाकयाहीते कहतमुकतनि युत मुकतिपुरीसी दरसतिहै ॥ कहैकविकृष्णमनमोहनके मोहिबेकौं मोहनी कीशिखामानोंशोभा सरसतिहै ॥ तोहिपहिरेते जगनयनग्रसतअति छवि बरसतमानौ नाथिका हंसतिहै ॥ अहेनाथउरमें निसांक तूगरबकरिद्वेही मुकताकेगथ्य सहितलसतिहै ॥ ५९४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु ११ लघु २४

दो० वेसरमोतीधरतितुहिकोपूछैकुलजाति ।
पीबोकरितियअधरकोरसनिधरकादिनराति ५९५ ॥

यह अन्योक्त कोऊअच्छेकुलते भयो लघु मानसऊपर बड़ी ठौर जाय पहुंच्यो तहांकहिये॥सवैया ॥ कौनबिनानकरैकुल जातिकोजीवनआपनोंईजगमेंगनि ॥ हैसबतेबड़भागीतुहीं अरु आईहै तेरीही बातभवीवनि ॥ तैहींलह्योकृत पूरबको फलहैतुहीं वेसरिके मुकताधनि ॥ द्यौसनिशातियको अधरामृत नीकेनिसांकहुवै पीवोकरै किनि ॥ ५९५ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २९ ॥

दो० पाइतरुनिकुचउच्चपदाचिरामिठ्योसबगांउ ।
छुटैठौररहिहैवहैजुहोमोलछबिनांउ ॥ ५९६ ॥

यहअन्योक्त लघु मानसमें बड़ेठिकाने पहुंच्यौ तहांकहिये ॥ सवैया सुसिममोखरटे लघुनामभई उतपतिन उत्तमग्यानी ॥ कौनेहू भागलह्यो घुंघची नवनागरिकैकुच उच्चठिकानो। याहीतेमोह्योसबै जगकोमनवोही गुमानखरो अधिकानो ॥ ठौर छुटे रहिजैहै वहीमुखकालिमारंग बजार बिकानो ॥ ५९६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मोरचंद्रिकाश्यामसिरचढ़िकतकरातिगुमान ।
लखवीपायनपरलुटतिसुनियतराधामान ॥ ५९७ ॥

यह अन्योक्त कोऊलघुमानससों बढ़ीठौरपायगर्ब करेताकोमानभंग ह्वैतोजानियेतहांकहिये ॥ सवैया ॥ घनश्यामने आपनेशीशपै राखी बनायकैचायनसोंधरिहै ॥ जिनयाकोतूजोमैं गुमानकरै अबतोसब जोम लखीपरिहै ॥ कहिकाहेकोमोरकी चन्द्रिका एंडढिढाई केढाररहीढरिहै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥ ब्रषभानकुमारिके मानसमैंतरवान तरेलुटिबौकरिहैं ॥ ५९० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जिनदिनदेखेवेकुसमगईसुबीतबहारि ।
अबअलिरहीगुलाबमेंअपतकटीलीडारि ॥ ५९८ ॥

यहअन्योक्त कोऊधनवान निर्धनभयोहोहि तहांधनकेलोभी जाकमु कौकहैतोभ्रमरके संगकरि गतियौवनहूंको कहिबोसंभवहै ॥ कबित्त ॥ जबहोउदितऋतुराज कोप्रतापतीखोकहै कवि कृष्णजाकी बिक्रम अति अपार । तबहूतबाटिकानदेखे हेसुखदमृदुसरस कुसुमभरेअतुल सुगंधभार ॥ उहीआशजाग्योहूतआवत चल्योक्यों अलिवहतो घितीतभई और सर वहीवहार ॥ गंधमधु मृदुता पराग कौन लेघ रह्योअंबर अपतगुलाबकी कटीलीडार ॥ ५९८ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० बहकिबड़ाईआपनीकतराचतमलिभूल ।
बिनमधुमधुकरकोहियेगड़ेनगुड़हरफूल ॥ ५९९ ॥

यहकोऊगुणहीनहैअरुगर्बअधिक करतहैतासोंगुड़हर केफूलकोप्रसंग करिअन्योक्तसंभवहै ॥ कबित्त ॥ कहाभयोजोपै पायोसहज अरुणरंग उमंगललितछबिरही तनछाइहै । बहकिबहकि चितआपनोबड़ाई में तू काहेकोरचतगुरुवाई यौंनपाइहै । जाहि रसलेवेहीकोचसकौ लग्योहैसो क्योंसुमनसुगंधतजि तोपैमड़राइहै ॥ गुड़हरफूलइतरात क्यो तूफूलिफूलि बिनमकरंदअलिभूलिहून भांइहै ॥५९९॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२

दो० स्वारथसुकृतश्रमवृथादेखिबिहंगबिचारि ।
बाजपरायेपाणिपरतूपंछीहिनमारि ॥ ६०० ॥

यहअन्योक्तकाऊ पराईखुशामद करिअपनेकोबुरोकहै तहांकहिये ॥ ॥ कबित्त ॥ काहेक्योंबिरानेबुरेकरत परायेकाजऐसोखोटो करमबिचारत हैंकाको । येतोभ्रमनाहक शरीरकोतूदेतअरु दोऊलोकआपनेबिगारतहैका हेको ॥ यामेंकछूसुकृत न स्वारथसमुझिदेखि पातकको भारसिरधारतहै काहेको ॥ कहाभयोजोपै आनिबैठयोईपराये पाणिबाजनिज पंछिनतू मारतहैकाहेको ॥ ६०० ॥ चलअक्षर ३० गुरु११ लघु २६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० जनमजलधिपानिपुबिमलभोजगआधुअपार।
रहैगुनीहूवैगरपरयौभलेनमुक्ताहार ॥ ६०१ ॥

यहअन्योक्त कोऊभयातुरहैभलो ठौररहबेलायकअरु छोटीठौर अनादरसोंरहै तहांकहिये ॥ कबित्त ॥ जनम जलधिकुलपानिपुबिमल अतितेरीशुभशोभा जगमतिहिसुहाईहै। सबकोऊ जगतमें चौपकरिचाहै तोहि तैहो बेध कीकत जवाहिर में पाई है ॥ तेरोसंगपाय खितपाल औरबालनिकोकैसोनोकी देखियतरूपको निकाई है ॥ ऐसोतूगुनीहूं गरे परिकै रहतसुनिमुकता केहारयामेंकहाधौं भलाईहै ॥ ६०१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० गहैननेकौगुणगरबहंसोसबैसंसार।
कुचउचपदलालचिरहैंगरेपरेहूहार ॥ ६०२ ॥

यह अन्योक्त कोऊ आछो गुणी अथवा भलोमानसआपनी गंवजानि छोटीहूजगै अनादर सोंरहैताको कहिबो संभवहै ॥ सवैया ॥ छोड़ी बड़ेकुलकीपदवी गुणकीगरवाई नजीमेधरै। क्योंन सबैहंसबोई करीजग पानिपहूनिहूतेनडरै ॥ हाठिनहाठबिकैहहाथ विधायौहियोपनतेनटरै दृग्उरोजनकोसुख्ख लाभरहैहमयातेगरेहूपरै ॥ ६०२ ॥ मरअक्षर ३२ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० अतिअगाधअतिऔथरोनदीकूपसरबाय।
सोताकोसागरजहांजाकीप्यासबुझाय ॥ ६०३

यहअन्योक्त अपनोकार्य्य छोटेहूंतेहोय तहांकहिये ॥ सवैया ॥ कूपतड़ागसरोवर बापीकितीमहिमेंनहीजात बखानी। छोटीनदीक बड़ीसरिता नद जो रचना जगदीशनेठानी ॥ उत्तममध्यम कोऊजलाशयहोहुअगाधिक औथरोपानी। वाकोवहीकबिकृष्णासमुद्रहै जाकीतृषा जिहि ठौर सिरानी ॥ ६०३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिषमब्रषादिककीतृपारहैसबैजलसोधि।
मरुधरपायमतीरहूमारूकहतपयोधि ॥ ६०४ ॥

यहअन्योक्तअपनो प्रयोजनकाहूछोटेते सिद्धभयेअरु बड़े केबहुतसमृद्धि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है अरु अपनेकाम आवै नाहींतहांकहिये ॥ कवित्त ॥ वृषकोतननित-वैविषमकरनि सबसलिल सुकातकहूं औडेईरहतहै ॥ जीवजंतुथल थल प्रबलअबल सबअकलपकल होतकललहतहै ॥ आतपकेताये अतिप्यास केसतायेजल सोधतफिरत प्राणराखिबो कहतहै। ऐसेसमैंपायो काहूभाग तेंमतीरातामें माहलोगजल निधिन्यायहीकहतहै ६०४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० प्यासदुपहरीजेठकेजीयमतीरनुसोधि।
अमितअपारअगाधजलमारौमूड़पयोधि ॥ ६०५ ॥

यहअन्योक्त अपनो कार्य्यसिद्धभये जैसेतैसेसिद्ध भये पाछेसर्व संपति मिलैतहांकहिये ॥ कवित्त ॥ कौनकामजगतमें तासकी बड़ाईभाई जातें कछूगरज सरैनकाहूपनमें। छोटेहोंतेंआपनो सफलहोय काजुतौपै वाको पटतरौर कौनत्रिभुवनमें ॥ जाकेप्राण दारुणनिदाघकी तृषामैंबास तीरे पायबिचेसिय राईभईतनमें ॥ ताकेआगेकहो कोऊसागरकी बातऔंडो सलिलअधार कैसेआवैंताकमनमें ॥ ६०५ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० कोकाहिसकैबड़ेनसोंलखेबड़ीयेभूल।
दीनेदईगुलाबकीविनडारनयेफूल ॥ ६०६ ॥

यहअन्योक्त कोऊप्रवीन महाजन अनजाने अविबेक कोकामकरै तहांकहिये ॥ सवैया ॥ कोयहबात सकैकहिभूलि कैकामकरै करतारनजैसे। येतीकरीमगकी रचनापैबिचार विनानकरै नहिंतैसे ॥ देखि हूंकोनबभासन सासबड़ेजुकरै कछुकामअनैसे ॥ वैसोसकंटक डारगुलाब कोफूलसुगंध दयेमृदुऐसे ६०६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० दिनदसआदरपायकैकरिलेआपबखान।
जौलगकागसराधपखतौलगतौसनमान ॥ ६०७ ॥

यह अन्योक्तकोऊ थोडेदिननु को बड़वार गर्वकरै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ धूसरकंठकठोरमहा सखरयेकहो लोचनरंगुहैकारो ॥ नीच कहावतपंछिनमें अरुअच्छको साजुकुचालनिहारो ॥ आदर पाय दिनादसकोअभिमान निसांकधनोचित धारो ॥ बायसजोलो सराध को पाख

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैतोलगिहै जगआघतिहारी ॥६०७॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० मरतप्यासपिंजरापरयौसुवासमयकेफेर।
आयसुदैदैबोलियतबायसबलकीबेर ॥ ६०८ ॥

यहअन्योक्त भलेमानस कोदुखदीजैअरुनीच को आदरहोय तहाँ कहिये ॥ सवैया ॥ दोषसमैके प्रभावकोभाव भयोजगकोगुनहीं को रिझोवा। बूझगई गुण वृंदन की प्रगटे अव क्रूर कुरूप अगोवा॥ प्यासो मरैपिंजरामें परयोसुकहैमृदु बैननिकोज कहोवा। आदरकै बलिदेवै की बेरबुलैयतचाहकेचायनों कोवा॥६०८॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० यहैआसअटक्योरहैअलिगुलाबकेमूल।
ऐहैंफेरबसंतऋतुइनडारनवेफूल ॥ ६०९ ॥

यहअन्योक्त जानैजहांकछू पायोहै तहांवैसाई आसालायोरहै तहां कहियेकाकध्वनितैं यहहोय किवाहीभरोसे क्योंरहै ॥ सवैया ॥ वेइन डारन फूलहुनैजिनकेरसने सबदुक्खभुलानो। बीतिबहार गई तिनकी कुसमावलि चित्रबुभैनहि आनो ॥ ऐहैबसंतबहार तबैयहवांसुख सौरभ हीकोठिकानो। आसयहैजियमेंधरि भौरगुलाबके मूलरहैमड़रानो॥६०९॥ नरअक्षर ३१ गुरु १४ लघु १८

दो० पटपाखेंभखुकाकरैंसपरसराईसंग।
सुखीपरेवापुहिमिमेयेहैतुहीबिहंग ॥ ६१० ॥

यहअन्योक्त जोकोऊपराधीनअरुपरदेशीनाहीतहांकहिये॥ सवैया॥ भोजनकांकर बीनकरैनकरै जोअधीनहुँकाहूकीसेवा। पाखनहीकेबनेपटु चारुबिसारुको जानतभाव न भेवा॥ नीकेरहैं गृहिनीक सदासंगपूरव पुन्यनको फललेवा। कौनहू भांतिनआसपराई सुखीअबनीपै तुहीहैपरेवा॥ ६१० नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० करिलैसूंघिसराहिहूंसबैरहैगहिमौन।
गंधीगंधगुलाबकोगवईगाहककौन ॥ ६११ ॥

यहअन्योक्तकोंगुनकोबूझनकरैतहांकहिये॥ कबित्त ॥ राख्योहैबयार

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेंअमोलिकअतर आगेजाकेमृदु गंधसों महकिरह्योभौनहै । औड़औड़ हायसबहीनै लियो देखिबेको सूंघिसूंघिसबनि सराहगह्योमौनिहै ॥ मोलसुनैसबही नै हंसिहंसिमचाईकूक पंथगहि अवतू करतक्योनगौन है अरेगंधीआंधरेहियेमें बेतोचेतकर गाहकगुलाबकोगबेलेगांवकोनहै ॥ ६११

नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० वेनयहांनागरबढ़ेजिनआदरतोआव ।
फूल्योअनफूल्योभयोगवईगांवगुलाब ॥ ६१२ ॥

यह अन्योक्त अप्रवीनलोगनको समुदाय होय गुणकीबूझ कोऊनकरै तहांकहिये ॥ सवैया ॥ चायमेंआयरु तेरो करोअरु तोहीसोंराखेहियो अनुकूल्यो । तोमृदुसौरभकोतुरले जिनके मनमोद रहैअतिफूल्यो ॥ कीमत तेरी बढावै धनी रिझावन वही जिनकोतुक भूल्यो । ऐसे गंवारनुके बसि वासमैफूलगुलाबभयो अनफूल्यो ॥ ६१२ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गोधनतूहरष्योहियेनिधरकलेहुपुजाय ।
समझपरैगीशीषपरपरतपशुनकेपाय ॥ ६१३ ॥

यहअन्योक्तकोऊकाहूकोद्रव्यखातहोयअरुपीछे देबोआवैतहीं कहिये ॥सवैया॥ सुनिकोलमुखीकलिगावतगीत जेकोकिलकंठ सुभायनसों ॥ बहुभांतिनके पकवान बनाय मनावैसबैसत भायनसों ॥ अबगोधन तूमृदु म निहियेबहु भांतिपुजायलै चायनुसों । परिहैसुधि तोहि सबैतबहीपशु खूवहिगेतन पायनसों ॥ ६१३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नागरिबेबिधिविलासतजिबसीगवेलिनमाह ।
मूढ़नमेंगनबीकितूहूठ्योदैइठलाह ॥ ६१४ ॥

यहअन्योक्तजहां सबएकसेहोहितिन मेंयेकऔरभांति चलैतहांकहिये॥ कबित्त ॥ रूपगुन आगरी बेनागरी होहिइहां आदरलहत बहुभांजि जिनतीनुमें ॥ चारुचतुराईके बिलासबेदुरावे रहिपरगटकाहे कोकरतइन तीनुमें ॥ अबतोभयोई बासछांगवारनुमें याहीतै सिखावत होकरिबिन तीनमें । हूढ्योदैकै इनकीसी भांति इठलाहनातौ मूढ़निमें अबगनियो गोनिनतीनमें ॥ ६१५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४लघु २० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० चल्योजाहुह्यांकोकरैहाथनकोव्यापार।
नहिजानतइहपुरबसतधोबीऔरकुंभार ॥ ६१५॥

यहअन्योक्तकोऊनीचनकेबासमेंकोऊभलाईकीबात कहैतहांकहिये॥ कवित्त ॥ आनिबूझिकाहे कोतूचरचाकरत इत बनकदली कीनिकट थरीनकी। रचिपचि बंदन सों कछेकोबनाये कुंभकाहेकोये झूल झल कायेहैं जरीनकी ॥ चल्योकिनजायवृथा वासरगवा है जिनगाहकी करै कोमद मोबलकरीनकी। बसतकुंभार औड़धोबीइहगाइयेतोकरतखरी-दखासा खरबोखरीनकी ॥ ६१५ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चपकरिरेगंधीचतुरअतरदिखावतकाहि।
करिफुलेलकोआचमनमीठोकहतसराहि ॥ ६१६ ॥

यहअन्योक्तमूर्ख जानिवासोंचतुराई जितावेतासोंकहिये॥ कवित्त ॥ नगरके बगरतें तेरोऊचीटेरसुनि चौंपसोबुलाय लीनों कहीआगें आवरे। बैठारयो निकट अतिप्रीतसों हुकमकीनोसोधे बेसकीमती को हमहिंदि-खावरे ॥ आचनकरिकै फूलेलकों कहत मीठोतैन अजौंजान्यो सुघराईको प्रभावरे। काहे कों उघारत गुलाबको अतर गंधोकहां गईतेरी चतुराई अबबावरे ॥ ६१६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

॥ राजाजयसिंहकोबचनबर्णन ॥

दो० प्रतिबिंबतिजयसाहिद्युतिदीपतिदरपणधाम।
सबजगजीतनकोकियौकायव्यूहमनकाम॥६१७॥

यह राजाकी सुंदरताबर्णन कविकी उक्ति सखीको बचन नायकसों नायकाकोबचन सखीहूसोंहोय ॥सवैया ॥ राजतदरपण मंदिरमें महि मंडनु श्रीजयसिंहसवाई। त्यौंप्रतिबिंबनिकी अवलीचहूंवोरलसें अतिही छबिछाई ॥ कैधौं अनेक सरूपधरे रविराजतमंडली मंडसुहाई। मानहु जीतवेको जगमें रचना बपुव्यूहकोकाम बनाई॥ ६१७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चलतपायानिगुनीगुनीधनमनमुतियनमाल।
भेटभयेजयशाहसोंभागचाहियतुभाल ॥ ६१८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह राजाकी दानकबिउक्ति॥ कबित्त॥ दीजतमंगायकै तुरंगरंग रंगनकेतुरतभंडार सिरपायनसौंभरिये। किम्मतबिशाल शालसुरवनमाल लालहीरामुकताहजवकसडार ढरिये॥ गुनीअनगुनी सबहीकोदुतनिहाल हालयांचिकनीबिपति अनेकभांतिहरिये। भेंटभयेनृपति सवाईजयसाहजूसों हेतबड़भागफलभाग कहाकरिये॥६१८॥पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० रहतनरणजयसाहिमुखलखिलाखनुकीफौज।
यांचिनिराखरहूचलैलैलाखनकीमौज॥ ६१९॥

यहराजाकी सुरतादान कबिकीउक्ति॥ कबित्त॥ क्रूरम सवाईजय सिंहकेअभंग जगमगतदिनेश कोसोतेज अंगअंगमें। लाग्योइरहत नित सरभतिजैको चावदानकारिवे कोचितरहत उमंगमें॥ परदल लाखनको नृपकोबदनलखि सनमुख रहिनसकतरणरंगमें। अखरनजानेसोऊलाखन लहतसचयांवैं सोअयाचीहोत मौजकेप्रसंगमें॥ ६१९॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० सामासैनसयानसुखसवैसाहिकेसाथ।
बाहुबलीजयशाहजूफतेतिहारेहाथ॥ ६२०॥

यहराजाकी जयसिद्धिवर्णन कबिकीउक्ति॥कबित्त॥ जगमग्योदल छत्रपतिकोप्रताप नवखंडमंअखंड दावेअरिनुकेमाथहै॥ तेरेईउदंडभुज दंडकेभरोसेसोऊ रहतनिशंकअब दातयहगाथहै॥ सुभटसमाजसामासयन सयान सुख संचैसबभांतिनृ कोसाहिजूकेसाथहै। रहत सवाईजयसिंह महाराज सदासमर बिजयकी सिद्धिरावरेई हाथहै॥ ६२०॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु१३ लघु २२।

दो० अनीबड़ीउमड़ीलखेअसिवाहकभटभूप।
मंगलकरिमान्योहियेभौमहिमंगलरूप॥ ६२१॥

यह राजाकी शूरताअरु बीररसकबिकीउक्ति॥ कबित्त॥ सांभर देखेतआये उमड़िअमितदल सैंपदसुभट महाबिक्रम निधानहै॥ गरजे गरूरगहैं निपट आपबिकट कुबड़े सांधि बरखतबान है। साहसीसवाई जयसाहिभूप ऐसे समय बीररसाच्यो थिरभयो तिहिथान है॥ उमगि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उछाह महामंगलके मान्योहिये वदनकोरंगभयो मगलसमानहै ६२१ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२ ॥

दो० योंदलकाढ़बलकेतेंतेंजयसिंहभुवाल।
बदरअघासुरकैपरेज्योंहरिगायगुवाल ॥ ६२२ ॥

यहराजाकी शूरतापराक्रम ॥ कबित्त ॥ येकरसनासोमोपै कैसेकहै परैजैसेजेतेबिक्रम अमितकीने नृपति सवाईतें। केशव अघासुरतें राख्यो ब्रजजैसेऐसेंहसन अलीकोदिली व गलाईतें ॥ जेजिया निवारयो दावानल सो प्रबल दुखबलके विपति हिंदुवान कीबहाईतें ॥ कीली ज्योंकुचाली काटिदूरकीनोंमुहकमा कीरति प्रकाश जग आप्यो उजराईतें ॥ ६२२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घरघरतुरकनहिंदनीदेतअशीषसराहि।
पतिनुराखिचादरचुरीकैराखोजैशाहि ॥ ६२३ ॥

यहराजाकीपराक्रम सवपैउपकार कविकीउक्ति ॥ कबित्त ॥ आयो इतउमड़ि अजीतसिंह ऐडायलसंगलै विकट सुभटन के समाजको। कहैकविकृष्ण इतदिल्लीके प्रबलदल निकसेसकलसजैं समरके साजको ॥ ऐसेसमैंवीर विष्णुनेश केअजिनबाहु राखोतेंदुहुनकी लाजकरिकेइलाजको। घरघरतुरकनि हिंदुनीदुनीमेंसबदेत हैं अशीषयजशाह महाराज को ॥ ६२३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

हास्यरसवर्णन ॥

दो० रविबंदौंकरजोरिकैंसुनेश्यामकेबैन।
भयेहंसोहैसबनकेअतिअनखोहैंनैन ॥ ६२४ ॥

यहहास्यरस चीरहरण कोममयसखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ गोपबधूनके चीरचुरायकदंब पैधायचढ्यो हरिज्योंहीं। हायसों गातछिपाय कैवेसकुचोंसतरायकैंमागतत्योंहीं ॥ देवदिवाकर कोकरजोरि प्रणाम करौं कहीबातरसोंहीं। योंसुनिकैबिहसी सोंहींभईसबकी अखियांजहुती अनखोहीं ॥ ६२६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० परतियदोषपरानसुनिमुलकिहंसीसुखदानि।
कसुकरिराखीमिश्रहूमुहआईमुसकानि ॥ ६२५ ॥

यहहास्यरसपौराणिक कोपरिहासकविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ पंडित राजसमाजमें बैठिकथा योप्रसंगपुराणमें भाषी। जातनिरेपदबीस बिसेपर दारसोंजोहितको अभिलाषी ॥ सोसुनिकैमुलकी मृगलोचनि जामोंहींडीठ मिलायकैराषी ॥ भट्टभुवाहिविनोकतही उमगीमुसकानि मरूकरिराखी ॥ ६२५ ॥ चलअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६

दो०चितपितमारकयोगगुनिभयोभयेसुतसोग ॥
फिरहुलस्योजियजोतगीसनइयोजारतजागे ॥ ६२६ ॥

यहहास्य रसजोतिजाके परिहास्यकविउक्ति ॥ सवैया ॥ पूतभयो इकजोतिषि गृह शोधतसोचितमें हुलमानों ॥ डीठपरोपितघातक योग बिचारहियेअति होत्रकुलानों ॥ जारजयोगलख्यौ तबही मुलक्यौवरमानि हुलासमयानों ॥ भूलिगयोदुखफूल उठयोमुख आनदपुंजहियेअधिकानों ॥ ६२६ मरालअक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

दो०बहुधनलैअहिसानकैपारोदेतसराहि।
बैदबधूहंसभेदसोंरहीनाहमुखचाहि ॥ ६२७ ॥

हास्यरसबैद्यकेपति हासुकबिकीउक्ति ॥ सवैया ॥ विज्ञचिकित्साकेभेदन मेंइकबैदहुतौं पुरुषारथहीनों ॥ काहुनपुंसककी बहकायधनोंधन लैबहुतें यहदीनों ॥ पारोप्रचंडबडावतहैं चितकेलि कलोलको चावनवीनों। एक तियासुनिवाकीतिया पतिकेमुख वोरतितैहसिदीनों ॥ ६२७ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० देवरफूलहनैजुसुउठेहरषअंगफूलि।
हंसीकरतऔषधिअलिनुदेहबदोरनभूलि ॥ ६२८॥

यहनायकासुरतादेवरसों आशक्तिहैसखीको बचनसखीसों हर्ष अरु हास्यसंचारी ॥ सवैया ॥ खेलमेंदेवरके करकेवेजहींजहीं फूललगेनवला तन ॥ आनंदपुंजउमंग तहँतहींफलउठे अतिकोमलगातन ॥ देहददोरन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भूलिअलीउपचार करैलहैभेदकीबातन। जानतहोंजियकी बतियांरसविज्ञ तियाहंस हेरतबातन ॥ ६२८ ॥ मर लअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० औरसबैहरषीहसातिगावतभरीउछाह।
तूहीबहुबिलषीफिरैक्योंदेवरकेब्याह ॥ ६२९ ॥

यहनायका परकीयागुरुजन कोवचनदेवरमों प्रीतियहव्यंग ॥ सवैया येसबसाजेअनेक सिंगारवनीठनी डोलैंहुलासटमाहैं। गावैं हंसैंहरषैंबरषैं सुखकाहूकोषंक धरेचितनाहैं ॥ भोनमंगलसाजे भरेबहुसोईलहैं सब जोचितचाहैं। देवरकेइहब्याह बहूबिलखीसी तुही लखिये कहिकाहैं ॥ ६२९ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० सेमैंपलटिपलटैप्रकृतिकोनतजैनिजुचाल।
भोअकूरकरनाकरोयहकुपूतकलिकाल ॥ ६३० ॥

यहपरसताव मेसंभवहैकलि युगकोवर्णन ॥ सवैया ॥ कामेंपुकार करोंविनती इकसारभयो सगरोजगजोऊ। जातिसमैंपलटे प्रकृत्योंफिरक्यों नसुभावतजोसबकोऊ ॥ आरतसिंधुदया कोसमुद्रअनाथको नाथकहावत होऊ। ह्वैगयोदेखेमहानिरदै कलिकालकुपूतहि आवतसोऊ ॥ ६३० ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० दीरघसासनलेहिदुखसुखसाईनहिंभूल ॥
दईदईक्योंकरतहैदईदईसकबूल ॥ ६३१ ॥

यहकरुणारस भक्तकोबचन अपनेमनसों ॥ कवित्त ॥ जोदुखलहै तोतुजिनअकुलाय लैलैदीरघउसासचितचिन्तामेंनडुलरे। सुखजोलहैतोसब भांतिसावधान रहिसंपति मगनह्वैकै हरषिफूलरे ॥ थिरनरहतयेतोसुख दुखहैतजात कृष्णकरुना मयीकी मूरति न भूलरे। काहेको करतअति आतुरह्वैदईदई जोदईदईसोभली भांतिसोंकबूलरे ॥ ६३१ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० दयौसशीशचढायलैआछीभांतिअबेर।
जापैसुखचाहतलह्योताकेदुखाहिनफेर ॥ ६३२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहभक्तकोवचन अपनेमनमें ॥ सवैया ॥ राखनवाको विश्वासहियेश्रुतिजाहिसदा परिपरणरै । रंक रावकरे पलयेकमंजोवह नैकक्रपाकर फेरै ॥ जोकछुतोहिदयो जगदीशसुशीस चढायकेक्योंनअयेरै । जोपैलये सुखचाहतहै अबताकेदये दुखकोंजिनफेरै ॥ ६३२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरू १४ लघु २०

दो० कोजेचितसोईतिरौजेहपातीतिनकेसाथ ।
मेरेगुणऔगुणसबैगिनोनगोपीनाथ ॥ ६३३ ॥

भक्तकोवचन भगवानसों ॥ कवित्त ॥ तोमोंयेकतुही औरटूसरोन राजारम तेरेहीरेहैलोक सुरनरनागरे । मोईबीतरागजिन कीनेतपजप जाप सोईबड़भागजाको तोमोंअनुरागरे ॥ आपतनुदेखिये नदेखोकरतूत मेरीअधमउधारबे कीतेरेसिरपागरे । मोमे अपराधी हैंनतोमेहैंसहनहार मोसेनिरगुणीहैंन तोसेगुनआगरे ॥ ६३३ ॥ मरकटअक्षर ३१ गुरू १० लघु १४

दो० भजनकह्योतातेभज्योभज्योनयेकोबार ।
दूरभजनतातेंकह्योसोतोंभज्योगंवार ॥ ६३४ ॥

यहभक्तकोवचन अपनेमनमें ॥सवैया ॥ मेरीतोसीखसुनो असुनी करिनेमनचैरै सतौउनियोरे । मैंकहोवाहिभली बिधिमोंभजिनूतिहतैं भजूरभयोरे ॥ जोनेकहीअतिदूरिभज्योरहिसोतोभज्योहितसाजनयोरे ॥ कृष्णकहैंयहस्यानपतैं सबयेकहीवैरकहावितयोरे ॥ ६३४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

सो० मैंसमइयोनिरधारयहजगकाचौकाचसौ ।
येकैंरूपअपारप्रतिबिंबितलखियेजहां ॥ ६३५ ॥

कवित्त ॥ निपटअसारदुख दुंदकोअगार अरुभांतिभांतिभरयो भय भ्रमनिकेभारहै ॥ सांचेकोसोढारयोताते सांचोसोनिहारियतु जोलौंलखि यतमोसोनाहिंथिरनारहै ॥ मैतोमनमांझमेंतौ समझ्योबिचारकरि यहजग काचऐसोकाचोनिरधारहै ॥ जितततितपूररह्योपूरन पुरुषबह्ययेकैरूपतहांप्रति बिंबतअपारहै ॥ ६३५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० मैंतपायत्रैतापसोंराख्योहियोहमाम ।
मतकबहूंआहैयहांपलकपसीजैश्याम ॥ ६३६ ॥

यह भक्तको वचन॥ कवित्त॥ गावेंगुणशेषजाकोध्यावत महेशमुनि साधतसमाधिवहु भांतिचितलायकै ॥ ऐसोकोऊ विधिमे पै आवतनबनि जातेंबसकरो त्रिभुवनपतिको रिझायकै ॥ येकबात उरधरिअपने हियेमें करिराख्योखेहमामतिहु तापमोतचायकै ॥ वहकरुणामयो कहावतहैदीन बंधुमतिकहूंपुलकि पसीजेइतआयकै ॥ ६३६॥ चलअक्षर ३० गुरु १५ लघु २६

दो० व्रजबासिनकोउचितधनुजोधनरुचितनकोइ ।
सुचितनआयोसुचितईकहोकहातेंहोइ ॥ ६३७

यह भक्तको वचन प्रयोजनयहै कि बिना श्रीकृष्णध्यान सुचिताई नाहीं ॥ कवित्त॥ जाकीतनशोभनवनीरद सोदेखियतपीतपट दामिनि दमकिछबिछाईहै॥ लोचनललितलसैं रसभरेतामर सकुचित अलक अलि-अवलिसुहाईहै ॥ ऐसोव्रजबासिनकों उचितहैधनतातें दीनतें न गनुमति विषपरचाईहै॥ कोनभांतिहोतसुचिताईजियतोलोंजोलों रूपकीनिकाईवह जीयतेंनआईहै ॥ ६३० ॥ करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० लोपैंकोपैंइंदुलोंरोपैंप्रलयअकाल ।
गिरिधारीराखेंसबैगोगोपीगोपाल ॥ ६३८ ॥

यहबीररस श्रीकृष्णने गोवरधनधरिके व्रजवासीसबराखे॥ कवित्त॥ लोप्योबलिभाग सुनिकोप्योअति सुरपतिप्रभु ताके उमगि गुमानमनुआये हैं। आहिकरि कहीबारिवह सबयेकतहै व्रजको बहावो ऐसो चलनचला येहैं ॥ मंढ़िगोराधार बरषतबिकराल घनमानों महा प्रलयकेसाथ चलि आयेहैं। ऐसेसमयनंदके सुवनकरगिरि धरि गोपीग्वाल गाय बच्छसबही बचायेहैं ॥ ६३८ ॥ चलअक्षर ४७ गुरु ३ लघु ४२ ॥

दो० प्रलयकरनबरसनलगेजुरिजलधरइकसाथ ।
सुरपतिगरबहरयोहरषिगिरधरिगिरिधरहाथ ६३९

यहबीररस गोवरधनकोसमय ॥ कबित्त ॥ प्रलयघुमंडि घनआये व्रजमंडलपैमंडिकै अखंड धारलायोझरअतिको ॥ निरखिबिकलभये गोपी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गायग्वालसबकाहूके हियेमेंरह्योधीरजनरतिको ॥ ताहीसमय यशुदाको लालऐसोहालदेख हरषिहरैयाभये व्रजकी विपतिको ॥ पातलों उठाय राख्योगिरिवरपाणि र टूरकीनोंसरवगरवसुरपतिको ॥ ६३६ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

दो० कहतनिदेवरकीकुमतिकुलतियकलहडराय ।
पंजरगतिमंजारढिगसुकलौंसूकतजाय ॥ ६४०॥

यह भंवर सुदेवरकी धृष्टता सखीको बचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ देवरचपलचितउरमें कुभावधारकहत अनैसीबात यासोंदिनरात है ॥ कहैं कबिकृष्णयहपरमसुशीलबाल सकुचिसकुचिमनमेंहों अकुलात है ॥ काहिन सकतकाहू आनसोंहियेको भेदकुलतियकुटुंबकेकलहडरातिहै । निकट बिलाव केपखेरुपिंजरा को जैसेतेसे यह बालनिशदिन सूकी जातहै ॥ ६४० ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

दो० मोहनमूरतिश्यामकीअतिअद्भुतगतिजोय ।
बसतसुचतअंतरतऊप्रतिबिंबितजगहोय॥ ६४१

यहअद्भुतरस भगवानकी व्यापकताबर्णन भक्तकोवचन ॥ सवैया ॥ ऐसीनआरातहूं पुरमेंछबिजेसीबानंद किशोरमेंपेखी । ताहिबिलोकिमनोज कीमूरतिकोबरनै अतिरूपबिशेषी ॥ औरकहाकहौं सुंदरश्यामकीअद्भुत रीतिखरीअवरेखी । अंतरराखिबसाय हियेकेऊजगमे प्रतिबिंबितदेखी ॥ ६४१ ॥ बारणअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० तियकतकमनैतीपढीबिनजिहभौंहकमान ।
चलचितबेड़ोचुकतिनाहिबंकाबिलोकनिवान६४२॥

यहअद्भुतरससखी औरनायककोवचननायकासोंसखीहूंसंभवहै ॥ कबित्त ॥ ऐसी तू कहातें अति अद्भुतगति यह तेरीकमनैती बरनत नबनतिहै । कहैं कबिकृष्ण येतौप्रगट बिलोकियत भृकुटी कमानजिह बिनाईंतनतिहैं ॥ तिनतेंकढै अडोठिकुटिलकटाच्छ शरचूकत नचलचित बेझेकोहनतहै । तेरीया बिलोकनिकी निरखीअनोखीरीति मेरीमतिअति हित कौतिकसनतहै ॥ ६४२ ॥ कच्छअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० दृगउरझतटूटतकुटुंबजुरतचतुरचितप्रीति।
परतगांठदुरजनाहयेदईनईयहरीति ॥ ६४३॥

यह अद्भुतरसद्रप्तानुराग नायक अथवानायकाको वचनसखीसों॥ सवैया ॥ लागीरहैमनमें दिखसाधदई यहरीतिनई दुहुघातों। लोचन पीतमकी छविमोंटरझेसब टूटेकुटंबकोनातो ॥ कृष्णकहैंकति चौपकेचाय जुरे हियको हितुहैतनहांतो। बैरिनके उरमेपरे गांठिअनोखी निहारौ सनेहकोनातो ६४३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो0 तोलखिमोमनजोलहीसोगतिकहीनजाति।
ठोडीगाडगड्योतऊउड्योरहैंदिनराति ॥ ६४४॥

यह अद्भुतरसहै द्रप्तानुरागनायककोवचननायकासों ॥ कवित्त ॥ तेरे तनराजै ब्रषभानकी कुंवरिजेऐसे छविपुंजतिहूं पुरमेनहतहै। तामें और अद्भुतरीतिअबरेखी ताहीसुमरिसुमरि अचरज उमहतहै॥ येक रसनामांमो पै कहतबनैन क्योंहूं ताहि लखिमेरोमन जोगति लहतहै। यद्यपि अगम ओडीठोडी गाड़गड्यो मन तऊदेखो आठौयाम उड्योई रहतुहै ॥ ६४४ । मरालअक्षर ३४ गुरु १५ लघु २० ॥

दो० याअनुरागीचित्तकीगतिसमझेनाहिंकोय।
ज्योंज्योंबूडेश्यामरंगत्योंत्योंउज्जलहोय ॥६४५॥

यहअद्भुतरस भक्त कोवचनसखी सखीहूमोंकहै तासंभवहै ॥ सवैया॥ नैननमांभरहो खुभिकैवहनंदकिशोर कीऊठीसुहाई। प्राननमें तऊसालत हैकविकृष्णकहै सुधिआनभुलाई॥ याअनुरागपगे चितकीकछुअद्भुतरीति कहीनाहिजाई। बूडतीरहैरंगश्यामसें ज्योंहींज्योंत्यों त्योंगहैरति उज्जल ताई ॥ ६४५ ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु २६ ॥

दो० जमकरिमुहतरहरपर्योयहधरिहरिचितलाय।
बिषयतृषापरहरिअज्योनरहरिकेगुणगाय॥६४६॥

यहशांतरसभक्त कोबचनमनमें भयसंचारी ॥ कवित्त ॥ दसहूदिशान मांझ्यापिरह्यो जाकोधाकुकहो वाकेबिक्रमको कहालौं मावरे। तिनू कालों रेतीनों लोकनेमकलबालि कोऊपैनबचोवहै कीयेहू उपावरे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसे कालकरिकै परयोतमुहतरहरि कृष्णकहैं यहधारे हरिचितलावरे। हारिमानिविषय चिखानपरिहरि मननरहरिदेवके समुझिगुणगावरे॥ ६४६ मरालअक्षर३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोऊकोरिकसंग्रहैकोऊलाखहजार।
मोसम्पतियदुपतिसदाबिपतिबिडारनहार॥ ६४७

यहप्रांतरस भक्तकोवचन ॥ सवैया ॥ संग्रहकोऊकरोरिकरोरिभरो कोऊलाखके लच्छभंडारो। कोऊहजारक जोरिधरो बहुभांतिलहैमन मेमृदुभारो॥ कृष्ण कृपानिधि दीनकेबंधु सुरद्रुमदानि प्रताप उज्यारो। संपतिमेरेवहीयदुपति विपतिसदाजु बिदारनवारो॥ ६४७॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ।

दो० जातजाताचितहोतहैज्योंचितमेंसंतोष।
होतहोतज्योंहोयतोहोयघरीमेंमोष॥ ६४८॥

यहपरमतात्र कविकोउक्ति ॥ कवित्त ॥ सुरतकेअंतसमैं जैसोयाको मनमवटोरते मिमिटिरहेज्ञानही कीटेकमें। ऐसोमनसदा जोपैरहैयेकसर तौपैकाहेकोभ्रमत फिरै चौरासी अनेकमें॥ संपतिकेजातु जात जैसो याको चितढारि आवतहै समझि संतोषके विवेकमें। कहैंकविकृष्ण ऐसोहोत हैइनोपैहोय अनयाहीमही मुक्तिघरीयेकयेकमें॥ ६४८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यहबिरयोंनहिऔरकोतूकरियावहिसोधि।
पाहननावचढ़ायजिहकोनैपारपयोधि॥ ६४९॥

यहप्रांतरस भक्तकोवचन मनमें ॥ कबित्त ॥ जहांकामक्रोध मद दारुनतिमंगलहै मूझतनक्योंहूं परपरबेकोदाउरे। सोचभरयोसलिललहर तामे लोककी तृष्णा बिकराल भारीभौरनको भावरे॥ कृष्णकहैं परयो तूविकटभवसागरमें अबकछू औरन उपावचितलावरे। मेरोकह्योमानयाहि सुखहोतरोगोपत वारोकरिमाला हरिनावैकरिनाउरे॥ ६४९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० हरिकीजततुमसोंयहैबिनतीबारहजार ।
जिहतिहभांतिडर्योरह्योपर्योरहोदरबार६५०॥

यहभांतरस भक्तको बचनभगवानसों ॥ सवैया ॥ दीसतचोरनकोऊ दयानिधितेरई एकभरोसोगहों । वेदपुराणनकी सुनिसाखिहिये धरिआप हुलासलहों ॥ दीनउधारन बारहीबारयहै बिनतीकरजोरकहों । जैसेहूं तैसेहूं डर्योहूं पर्यो दरबार मुरारि तिहारे रहों ॥ ६५० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मनमोहनसोंमोहकरितूघनश्यमनिहारि ।
नेहबिहारीसोंबिहरिगिरिधारीउरधारि ॥६५१॥

यहभक्तकोबचनमनसों अरुमानावतीनायकासों सखीकोवचन कहिये तोसंभवहै ॥ कवित्त ॥ मेराकह्योमानि मनमोहनसों मोहकरिसुंदररतन घनश्यामकोसम्हारिलै । ब्रजबनकुंजके बिहारसोंविहारकरि गिरवरधारी सुखकारीउर धारिलै ॥ भूलिकहूंकै चितवृथाबादमें रचावैमतिकहै कवि कृष्णयहसुमतिबिचारिलै ॥ थिरनरहतधनयौवनभवन तनजानिब्रजजीवन सोसाचोपनपारिलै ॥ ६५१ ॥ मंडूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० जपमालाछापातिलकसरैनयेकोकाम ।
मनकाचैनाचैवृथासांचेराचैराम ॥ ६५२ ॥

यहखरापरसतावीक जोलोंमनमें कचाईहैतोलों ऊपरकोस्वांगकाम नाहीआवत ॥ सवैया ॥ टीकेमनोहर भालबनायकैमालधरो उरमेंकिन सोंलों । छापनसोंतनमंडितकै अरुध्यानलगायकहो किनकोलों ॥ नाचत नाचबृथाकबिकृष्ण कचाईरहोउरमें भरितोलों । काजकछूयहभेषसहैनहि सांचरचीमतिनाहिन जोंलों ॥ ६५२ ॥ नरअक्षर ३३. गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० अपनेअपनेमतलगेबादमचावतशोर ।
ज्योंत्योंसबकोसेयबोयेकैनन्दकिशोर ॥ ६५३ ॥

यह भक्तकोबचन अरुसर्बकोअधीश्वर येक श्रीकृष्णहै यहसिद्धांत ॥ सवैया ॥ जगमेंअपनेअपने मतलागिकरै बकबादबृथाभरमें । सबकोवह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सेयवेनंदको नंदनु व्यापकहै जुचराचरमें ॥ बरसोनभतेकिन नीरकहूंसब आनिसमातहै सागरमें । कबिकृष्णकहैं नकरोचित खेदधरो मुरलीधरको धरमें ॥ ६५३ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दूरभजतप्रभुपीठदैगुणबिसतारनकाल ।
प्रगटतनिर्गुणनिकटहीचंगरंगभूपाल ॥ ६५४ ॥

यहभक्तकोबचन जबयाकोगुण अभिमानहैतब यातेंप्रभू दूरिहैं अरु निर्गुण तत्वहै तहीं प्रगटहैं यहरीति कलिकालके राजानको कहियेतो संभवहै ॥ सवैया ॥ कृष्णकहै कबि येकसोरीतिप्रभू अरचंग निवाहत सोऊ । पीठिदै दूरहीदूर भजें गुनको बिस्तार करैं जबकोऊ ॥ नीकैहो क्योंनलच्यो गुणयुक्तहै सोच कैबाद पचौमतिकोऊ ॥ निर्गुणताप्रगटै जबहीं अतिही निकटैप्रगटैंतबदोऊ ॥ ६५४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तोअनेकऔगुणभरीचाहैयाहिबलाय ।
जोपतिसंपतिहूबिनायदुपतिराखेंजाय ॥ ६५५ ॥

यहपरसतावोक संपतिबिना पति नाहीरहति यहव्यंग ॥ सवैया ॥ औगुण पुंजभरी अतिचंचल याहिकहो जियको अभिलाषै । नंदकिशोर कृपाकरिकैंवह संपतिहूबिनजो पतिराषै ॥ याबिनकाज कछूनसरैसबकोऊ यहै निहचैमतभाषै । जानियहैंचित चाहि तियाहि उपायनु के बहुता कतपाषै ॥ ६५५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० याभवपाराबारकेउलंघिपारकोजाइ ।
तियछबिछायागाहणीगहैबीचहीआइ ॥ ६५६ ॥

यह परसतावोक संसार सागरके पारहूवे कोयेक स्त्री अवरोधहै ॥ कवित्त ॥ लोभमोहबासना भयानोभवरजहां अपारमनोज जाकोबिक्रम महतहै । ऐसो भवसागर अपारबिकराल महाकहैंकबि कृष्ण कोउलंघ निवहतुहै ॥ साहस हियेमेंधरि यतनअनेककरिसबकोऊयाहि तरिपारभौ वहतु है ॥ तरुणीकी छबि छायाग्राहणी विकटगहि राखत प्रबलतातें बीचही रहतुहै ॥ ६५६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० जगतजनायोजिहिंसकलसोहरिजान्योनाहिं।
ज्योंआंखिनसबदेखियेआंखिनदेखीजाहिं॥६५७॥

यहशांतरसभक्त कोवचन॥ कबित्त॥ ताहितजिक्योंतू भूल्योभटक बहैरेमनजाते लहियतसब सुखनको गोतहै। मानि अनरुच हरिभजन पियूषछाड़ो जानिबूझिबिषम बिषहिडरभातुहै॥ जिनसबजगत जनायो भलीभांतिवह प्रभूपैनजान्योंऐसो मोहकोटदोतहै। देखोजिनआंखिनहो सबदरसायौतिन आंखिनकोकाहूभांति देखिबोनहोतहै॥ ६५७॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० तोलगयामनसदनमेंहरिआवेंकिहबाट।
बिकटजटेजोलगनिपटखुलेनकपटकपाट॥६५८॥

शांतरस भक्तको वचननिवेद स्थाईभाव॥ कबित्त॥ सरलसुभाव गहिसंतनकेसंग रहिसंग्रहधरम लागिभगतकेघाटरे। छोड़बोटपाइगुणगाय करुणामयके यहसमझायबेसों कहैतूनिराटरे॥ कहैंकबिकृष्णूनहोदेखि धौंबिचारमन मंदिरमेंहरितो लोंआवैकिंहबाटरे। जड़ेहैंविकट बृथाबाद कोजंजीरनसोंजो लोंयेखुलतनाहि कपटकपाटरे॥ ६५८॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० करोकुबतजगकुटिलतातजौनदीनदयाल।
दुखीहोहुगेसरलहियबसतत्रिभंगीलाल॥६५९॥

यहभक्तकोवचन भगवानसों॥ सवैया॥ चाहतहौंअपने हियमांझ बसायोतुम्हेंप्रभु जैमेहूतैसें॥ कौनकुबात करो सिगरोजग मोचित येकहू आवेनवैसें॥ हौंकुटिलाई तजौं न कृपानिधिजानत हौंअपनोजियऐसे॥ दीनदयाल कहावतहो उरमूधोभये बसिहो तुमकैसें॥ ६५९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४।

दो0 कनदेवोसोप्योसगुरबहूथुरहथीजानि।
रूपरहचैढेंलगलग्योमानतुसबजगआनि॥६६०॥

यहपरसतावीक सूमनैकीनीतो सरफाखेंखचर अधिकभयो कविकी उक्ति॥ कबित्त॥ सुंदरसुहाईसुकमार शशिबदनीकी शोभाकी निकाई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कबिक हैकोबखानिकै ॥ ननदजिठानी सासनिरख सिहात सभयअतिहो सराहतहैं याकेबैसवानिकै ॥ ससुरनेसरफाबिचार सुखमानिहिय कनदेवों सौंप्योबहूथुरहथीजानिकै ॥ कहै कविकृष्णवाको रूप अवलोकबेको लोभ लगिमागनजगत लाग्योआनिकै ॥ ६६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० सबैसुहायेईलगतबैससुहायेठाम।
गोरेमुखबैंदीलसैअरुणपीतसितश्याम ॥ ६६१ ॥

यहअन्योक्त आछो ठौरकोप्रभावजो आइ प्राप्तहोय सोआछोही लगै ॥ ॥ सवैया ॥ नीकेकेसंगअनीकोउ नीकोलगै यहबात प्रतच्छनिहारो ॥ ठौरसुहायलसैतेंसुहायलगैं सबहीउमगेछबिभारो ॥ कैसे बढ़ावतमोदहिये नवनागरकेमुख व्याहमें गारी ॥ गोरे लिलार लसै बिंदुलीसितरातो हरी पियरीअरुकारी ॥ ६६१ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० पाइलपायलगीरहैलगीअमौलिकलाल।
भोरुरहूकभासिहैबैंदीभामिनिभाल ॥ ६६२ ॥

यहअन्योक्तनीच है धन हैपैबहनीचीही ठौरर हैगोअरु भलोमानसहैअरु निरधन हैतऊऊंचा ईरहैगो ॥ सवैया ॥ जोजिहठौरकेलायकहै तिहके वसु वासुतिहीथलहूहै है॥ देखो नहारि सिंगारकेभेदमें देखियेबातप्रत्यक्षय हैहैं॥ यद्यपिलालअमौललग्योतऊपायलपाय नहींलगरे हैं॥ हैबहभोडरकीबिदुलो तउ भामिनीभालहीपैछबिपैहै ॥ ६६२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो0 जोचाहैचटकनधटैमेलोहोयनमित्त।
रजराजसुनिछुवाइतोनेहचीकनोचित्त ॥ ६६३ ॥

यहप्रसतावीकमित्रतामें रजोगुणनलाजैतो सुधहैमित्रको वचन ॥ कबित्त ॥ जगतमेंसबहीतें महगीहै प्रीतिएक सांचबिन कोऊताकोलेशहू नदरसै ॥ यहीहै यतन कबिकृष्णयाके पालिबेको मानोंमति दोषजो तू आंखिनहूदरसै॥ जोपैनेहचीकने हियेकोयेकरसराख्यो चाहतचटुकउजराई अतिसरसै ॥ तोपैकाहूभातियाहिमें लोमतिकरे मतऐसेराखिजैसे रजराज मुनिपरसै ॥ ६६३ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० अजोंतरोंनाहींरहतश्रुतिसेवतइकरंग ।
नाकबासबेसरलह्योबसिमुक्तनकेसंग ॥ ६६४ ॥

यहपरसताबीक भक्त कोबचनप्रयोजन यहकिइकरंग श्रुतिसेवतरह्योसु तरयोनाहीं अरुबेसरजोकाहू केसमनाहीं तिननाकवास पायोकाहू ध्वनिकै कहैतैं बंदको दोषदूरहोय श्रुतिकानहू कहियेतो संभवहै ॥ कबित्त ॥ संगलाग्योयेकरंग श्रुतही कोसेवतभरोसो धरिभारीजियऐसो नेमनह्योहै ॥ कहैंकबिकृष्णतासों सबकोऊ करोहितहै अजहूलोंतरयौ नाहितरयोरह्यौ है ॥ प्रेमकेप्रभावकी यहांलों अधिकाईजाके चितआई तिनहींपरम पदु गह्योहै ॥ बिमलसुढार मुकतानिसंगबसि लसिनाककोनिवासु देखोबेसरिहू गह्योहै ॥ ६६४ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० अनियारेदीरघदृगनकितीनतरुणिसमान ।
वहचितवनऔरैकछूजिहबसहोतसुजान ॥ ६६५ ॥

यहपरसताबीकअन्योक्त हूबनैकाविकोउक्ति सखीको बचन नायकासों कबित्त ॥ कीजियेजुहेततो निबाहियेजु हितकीसीहितमें कहाहैबड़ो तहैहितैबेमैं ॥ जानिये सिंगारतोसिंगारियेसबै सम्हारिजोसिर कियेबिनु दतोनकैबैमैं । बोलियेजूबैन मनलैनका समतिहूजैबोलि रिसकीजैतोन लिबोबुलैबेमैं ॥ दीरघभोज येनैनातौरभएकहाभये पीतमकेमोहिबेकी तुरी चितैबेमैं ॥ ६६५ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० जेसिरधरमहिमामहीलहियतराजाराय ।
प्रगटतजड़ताआपनियसुमुकटपहिरतपाय ६६६ ॥

यहअन्योक्त जोआछोमानसहै भलेआदरलायक ताहितातिनिरादर राखेतइंकहिये ॥ सवैया ॥ जोबहुभांति जवाहिरलैबहुभांति रचौ तहीछबिछाई । जाकीजगामग होतप्रभामति जाहिलखैंसबकी लल-ई ॥ जाहिधरैसिर भूपनकीमहिमंडल मेंप्रभुतासरसाई । तासुकटैपगमें रैप्रगटेतबै वाहिकीमुरखताई ॥ ६६६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चितदैदेखिचकोरत्योंतीजैभजैनभूष ।
चिनगीचुगैअंगारकीचुगौकिचंदमयूष ६६७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहअन्योक्त जाकेएकआशयहे यकैबाकी मिलेकेवहीकोअंगीकार करै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जाकोजहांमनलागततांहि सबैतजिबाहीको देखबोभावै ॥ कृष्णकहै बिनु देखेसहै सुबियोग व्यथातऊमोद बढ़ावै ॥ देचितदेखिचकोरकी औरन तोजै उपाय सुधा बहरावै। कैचुगैपावकके कनका कै निशाकर की किरन्यो जबपावै ॥ ६६० ॥ मरल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तूमतमानैमुकतईदियैकपटबितकोटि।
ज्योंगुनहीत्योंराखियेआंखिनमांहिअगोटि ६६८॥

यहपरसतावीक राजनीतिमें संभवहैअरूनायकाभेदमें सखीकोबचन नायकसोंकहिये तुयाहिछाड़िदै मत आंखिनमेंराखि ॥ कबित्त ॥ मुक तईनमानिये निदेईजो कपटबितु कबिकरैतऊछोछिबोन अभिलाषिय। कीजियेहमारोकह्यो दीजियेनजानकहूं बारबारबातसमझाय यहभाषिये कहैकबिकृष्णयही कहतसयानेसब देखोराजनीतिहूंके ग्रंथनमेंसाखियै ॥ जानियेजोगुण होतोआनियेन औरउर नीकेहो अंकोटकरि आंखिनमें राखियै ॥ ६६८ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो0 दुचितैचितहलतनचलतहसतनझुकतविचार।
लखतचित्रपीऊचितैरहीचित्रलोंनारि ॥ ६६९ ॥

यहनायकको चित्रदेखिचकित ह्वैरहीसोसखी सखीसों कहतिहै। सवैया ॥ ठाढ़ीठगीसीहलैनचलै जियसोचगहैबहु भांतिविचारति। मेरे इहैकधौंआनबधूको यहैनिरधारहिये निरधारति। योंचितमें दुचिताव गनैनहसैनझुकैसुनिमेष नटारति ॥ चित्रबिलोकतियों अबलोकि रहीति चित्रलखीसीनिहारति ॥ ६६९ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो0 देहलग्योढिगगेहपतितऊसनेहनिवाहि।
नीचीअखियनहींइतैगईकनखियनुचाहि. ६७०

यहनायकापरकोया की चेष्टानायक सखीसोंकहतुहै ॥ सवैया मोपैकछूकहतेन बनैचितचातुरी जैसीबिहारगईहै। मैंजबतें निरखी तब उरमेंनकशायक मारगईहै ॥ पासजऊपतिदेह लग्योतऊरीत सनेह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पारगईहै ॥ नीचीयेआखिन सोंयहओरकनोखी चितोननिहारगईहै ॥ ६७० ॥ करमअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कैसेछोटेनरनतेंसरतबडनकोकाम।
मढ्योदमामोंजातक्योंकहिंचूहाकेचाम ॥७६१ ॥

यहपरसतावीक छोटेतेंबड़ेकी गरजनसरैकबिकोउक्ति ॥ सवैया ॥ जाकोजिनोजगदीश्वरचयो बलताकेफबैसिरते तोईभारो। वार्ताबिचारयहै अपनेजियकोउ वृथामतसोचबिचारो ॥ छोटेवैं कामबड़ेन सरैवहके तोउ साहसकै पचिहारो। कोटिकरोपै चूहाकेचामसों क्योंहूं मढ़योनहिं जात नगारो ॥ ६७१ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

दो० संपतकेशसुदेशनरनवतदुहुनइकवान।
बिभवसतरकुचनीचनरनरमबिभौकीहान ॥६७२

यहपरसतावीक कबिको उक्ति ॥ कबित्त ॥ केशओ सुदेश नररहैं सदायेकरसकै कबिकृष्णगईं येकसीयेवानहैं ॥ ज्योंज्योंबढ़िबार लहैंत्यों त्योंनवतदोऊसकलप्रवीण यहबातउरआनिहैं ॥ औरदेखोकठिनउरोज अरुनीचनर अकरेरहतकरैं काहूकीनकानहै ॥ संपत लहतत्योंत्योंरहत तनेनेफेरआपुही नरमहोतभयेबिभौहानिहै ॥ ६७३॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु २६ ॥

दो० शीतलतारसबासकीघटेनमहिमामूर।
पीनसबारेज्योंतज्योसोराजानिकपूर ॥ ६७३ ॥

यहअन्योक्त कोऊ आछोगुणीहै भलोमानसहै कोऊ क्रूरने वाकोसत-कार न कियो तहांकहिये ॥ सवैया ॥ जोसबभाँतितचयोगरवो बिध ताकोबढ़ैजगते सोईतोरा। कृष्णकहैबिन जानेअजाने कोपैवहआघलहै नहिं थोरा ॥ पीनसरोगतेकाहूकपूतने छोड़ा कपूरजोजानिकैसोरा। शीतलताई सुगंधघटैयहकोऊकरैंजियमेंजिनभोरा ॥ ६७३॥ चलअक्षर ३० गुरु ११लघु २६

दो० बड़ेनहूतेगुणनबिनबिरदबड़ाईपाय।
कनकधतूरेसोंकहैगहनोगढ्योनजाय ॥ ६७४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहपरसतावीक कबिकोउक्ति ॥ कबित्त ॥ बड़ोजो बनायो जगदीश सोबडोईहै ताहिसबजगचाहै आदरबढ़ायकै। कहैकबिकृष्ण वहतैसोई लहतमोल कंचनकोदेखो क्योंनकईबेर तायकै ॥ छोटेजोपै बड़ेगुणबिन योंहीबड़ोहोत नावकोबड़ाईमहिमंडलमेंपाइकै। तौपै वहकनकधतूरोऊ कहावतहै क्योंनपहरतकोऊगहनो गढ़ायकै ६७४ ॥ मरकटअक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० वहैसदापशुनरनकोप्रेमपयोधपगार।
गिरतेंऊंचेरसिकमनबूड़ेजहांहजार ॥ ६७५ ॥

यहपरसतावीक प्रेमसमुद्रको अधिकाई कबिकोउक्ति ॥ सवया ॥ जाकोप्रमाणकच्छोनपरै कछुआजलों काहूनपारलहा है। कृष्णकहैसुअगाध यहैलगिकैसहूं कोऊनपावतथा है ॥ मेरुतेंऊंचेरसज्जन के मनबूड़ेअनेक अचंभोमहा है ॥ सोपशुपामर लोगनकोवहप्रेमसमुद्र पगारसदा है ६७५ ॥ मदकलअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६

दो० संगतदोषलगैसबनुकहियतसांचेबैन।
कुटिलबंकभ्रुवसंगभयेकुटिलबंकगतिनैन ॥ ६७६

यहपरसतावीक संगतदोषलगेदृष्टांत कबिकोउक्ति ॥सवैया ॥ औरत जैसेईसंगरहैजुगहैसुभली बिधिबानि वहीहैं ॥ संगतदोषलगै सबकोबिधि हैयहआदिअनादिसहीहै ॥ कृष्णकहैजगमें यहवातप्रत्यच्छ प्रवीणनअच्छ चहीहै ॥ बंकभृकुटीनकोपाय कैसंगमनैननहू गतिबंक गहीहै ॥ ६७६ ॥ मरकट अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

दो० संगतसुमतनपावईपरेकुमतिकेधंध।
राखोमेलकपूरमेंहींगनहोयसुगंध ॥ ६७७ ॥

यहपरसतावीक जेदुरबुद्धिकोढारमेंपरत्रो ताकोसंगततेसबुधनाहींहोत ताकोदृष्टांत कबिकोउक्ति ॥ सवैया ॥ औरहोतेज कुपैड़ेचल्योवह संग तेक्योंहूं सुबुद्धिनपावै ॥ संगबुरेके भलोऊरहैतो भलाईसबैततकालकहावै आपनीवानतजैई तजैवहसंगतें क्योंहूंगहैनसुभावै। राख्यो बसाय कपूरके मध्यमेहींगहींक्योंहूं सुगन्धनआवै ॥ ६७७॥ शार्दूलअक्षर४२ गुरु६ लघु३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० बढ़तचढ़तसंपतसलिलमनसरोजबढ़जाय।
घटतघटतसुनिकरघटैबरसमूलकुंभिलाय॥६७८॥

कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ सदनसरोवरमें मुखकीहिलोरन सोंसंपत सलिलज्योंही ज्योंहीसरसातहै ॥ यहतोप्रगट सबजगत बखानतहै मनहूं सरोजत्योंहीत्योंही अधकातहै ॥ जबआनिपरैकोऊ आपदाअदिनतबजल कोप्रमाणफिरनिघटतजातहै ॥ घटतघटतफिरनाहिंघटै गति यहबरु वह सहितसमूल कुंभिलातहै ॥ ६७८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० समैंसमैंसुंदरसबैरूपकुरूपनकोय।
मूनकीरुचिजेतीजितैतितेतीरुचिहोय ॥६७९॥

यह परसतावीक कविकीउक्ति नायकाभेदमें सखीकोवचन सखीसों॥ सवैया ॥ सुंदररूपकहौं किहकामहैजोअपने चितमेंनाहिंआवै ॥ जोचित मांझकुरूपबुझ्योतो बहैउरकोअतिमोद बढ़ावै ॥ होतसमैंई समैंसब सुंदरि रूपकुरूपनकोई लखावै ॥ जाकोजितोजिहिंठौरबढ़ै रुचिसोतिह ठौरतितो रुचिपावै ॥ ६७९ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० मूड़चढ़ायैहूंरहैपरयोपीठकचभार।
रहैगरेपरराखिबोतऊहियेपरहार ॥६८०॥

यह परसतावीक कविकीउक्ति॥ सवैया ॥ काहूकेमूड़ चढ़ौरहिये न यहैगहिये चितमेंचतुराई ॥ नीकोमतो रहियेजुगरेहूपै तोलहियेअरुकी गरवाई ॥ मूड़चढ़ेहूपरेरहैपाछेकोबंधनकीगति क्षीनपाई ॥ देखोरत्नोजो गरेहूपरै औबिहारकरै छतियांपहराई ॥ ६८० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भावआनभावरभैरकरोकोटिबकबाद।
अपनीअपनीटेवकोछुटैनसहजसुबाद ॥६८१॥

यह परसतावीक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ काहूबुरोलगैोकाहूभलो लगैखोटीखरीजियमेंधरौसोऊ ॥ लाखनक्योंनकरो बक बादअलौकिकालोक जोहोयसोहोऊ ॥ औरतेंजाको परयोहुस्वभाव सुभाववहै निबहैजगजोऊ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आपनीआपनी टेवकी सिदु सवादछुटैन कितौकरोकोऊ ॥ ६८१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जेतीसंपतिकृपणकेतेतीसूमतिजोर।
बढ़तजातज्योंज्योंउरजत्योंत्योंहोतकठोर ६८२ ॥

यह परसतावीक कृपणिकेजितनीसंपति तितनीये कृपणताताको दृष्टांत कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ कौनहूंभागप्रभायते दायसोंसूमनेजोकहू संपति पाई ॥ त्योंवह होतखरोई कठोर बिलोकियेतू मतिकीसरसाई ॥ ताहिनिहारिकह्यो चहियेकछुबातयहै कविकेजियआई ॥ ज्योंज्योंउरोज बढ़ैतिय केउरत्योंत्योंगे अतिहीकठिनाई ॥ ६८२ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु ४

दो० पियबिछुरनकोदुसहदुखहरषजातप्योसार।
दुरयोधनलोंदेखियततजैप्रानउहिबार ॥ ६८३॥

यह परसतावीक हरषदुखहोययेकत्र कविकीउक्ति नायकाभेदमेंसखी कोवचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नेहलग्योमनभावनसों बसिबोससुरारिको जीयतुहानों ॥ नैहरतेकोऊआयोचलावन ताहीसमैसुनि ज्योंअकुलानों ॥ योंबिछुरेदुख होतमहा सुखमायकेकौचित सोचसमानों ॥ प्रातको पंकज भीतियकोमुख फूल्यो कछूक कछू कुंभलानों ॥ ६८३ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

॥ लोभकीअधिकाईबर्णन ॥

दो० घरघरडोलतदीनहवैजनजनयाचतजाय।
दियोलोभचस्माचखनुलघुपुनिबड़ोलखाय ६८४॥

यह लोभकी अधिकाई परसतावीक कविकीउक्ति सवैया ॥ ठौरहीठौरघिघात फिरैलघुता जितहीतित आपप्रकासै। यांचतहैसबहीं परजाय बढ़ायहिये बहुभांतिदुरासै ॥ लोभकोऐसोधरैचसमानरनैननमेंभटकैचहुंपासै। यद्यपिहै अतिसूक्षमहू वह याहितऊ अतिदीरघ भासै ॥ ६८४ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० कालबूतदूतीबिनाजुरैनआनउपाय ।
फिरताकैटारैलसैयाकेप्रेमलगाय ॥ ६८५

यहपरसतावीक नित्यप्रेमकेकरिबेको उपायकविकीउक्ति ॥ कवित्त॥ मंदिरलदावकोबनायो चाहैकोऊसोतो बिनाकालबूतक्योंहूं बनतनबानिहै। त्योंहीप्रेममंदिरको कालबूतदूतै ताहि बीचदियेंबिनुकहै। कैसेठिकठानिहै। कहैकविकृष्णापर पकहैहिदाऊ तबसकलप्रवीण यहबातउरआनिहै । कालबूतदूतीबिच राखियेनयेकआंकटारियेनजोलौंतोलौं सुखहीकिहानि है ॥ ६८५ । पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

दो० वहकिनइहिवहिनापुलीजबतबबीरबिनासु ।
बचैनबड़ीसबीलहूचीलहघोंसवामासु ॥ ६८६ ॥

यहपरसतावीकसखी कोबचननायकसों ॥ कवित्त ॥ अम्बरहीनित हीलड़ाईयेकरत कहाअरुसंपतमों जवारोजातजान्योहै । पातकरबीछूकोऊ आनतहैपातपर रावरेसयाननु हमारेमनमान्योहै ॥ तेहीकरबोयेबेजबे को हरुवोपाउवादि वहिनायोया परोसिनसोंठान्योहै । काहेहोतमसौमन तबहींकछुकहोही यहैमेहीकोमोंकाटो वेहीलावकाजआन्योहै ॥ ६८६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४

दो० पियमनरुचहवैबोकंठिनतनरुचिहोतसिंगार ।
लाखकरौआंखिनबढ़ैबढ़ैबढ़ायेवार ॥ ६८७ ॥

यहपरसतावीक नायकाकोबचन सखीसोंसेतिको सिंगारदेखियाकै गर्वभयो सोईषी सोंकहतहैऔरसखो याकेचितकोभ्रम निवारण कहै तो संभवहै॥ कवित्त ॥ बैठयोकुंजसदन बिलोकतहैनुवमग तेरोनाममोहन रटतबारबारही । उठिचलिहिलिमिलिमानिरंगरली मेरोकछोमानि मान वतोहूंकहांरही ॥ पियमनबसिकरबोईहैकठिनअरु तनदुतिसरसति साजै हूंसिंगारही । कहैकविकृष्णा कीजैलाखनयतनतऊंलोचनबढ़ात न बढ़ायें बढ़ैबारही ॥ ६८७ ॥ मंडूकअक्षर ३० गुरू १८ लघु १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नीचहियेहुलस्योरहतगहैगेंदकोपोत।
ज्योंज्योंमाथेमारियतत्योंत्योंऊंचोहोत ॥ ६८८ ॥

यहकविकोअन्योक्त ॥ कवित्त ॥ जनमतेंकबहूं भलाईसोंनभेटभई जगतमें कोटिकधिक्कार धारियतहै। सहजसुभायपर काजलैबिगारडारै अवगुणगहैनगुण पुंजटारियतहै ॥ नीचनरयेपै हियेमेंहुलस्योईरहै गेंद केसुभायगहैयों निहारियतहै। जितहीनिचाईदेखि तितहोढुरकिजाहि ऊंचेहोतत्योंत्योंज्योंज्यों माथेमारियतहै ॥ ६८८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० कोटियतनकोऊकरौपरैनप्रकृतिहबीच।
नलबलजलऊंचोचढ़ैअंतनीचकोनीच ॥ ६८९ ॥

यहअन्योक्तकविकी उक्तिजाकोस्वभाव नीचहोयताको बटवारीहूहोय पैस्वभावनछूटै ॥ सवैया ॥ औरतेजैसोंसुभाव परयोवहचौरप्रकार नकैसे छूट्यो है। कोटिकयोंनउपायकरौकविकृष्ण कहैं निरधार्यहैहै ॥ सोजग मेंलखियेप्रत्यक्ष करोंजलयंत्रन सो निहचैहै। केतोऊऊंचोचढ़ै नलके बल वीर तऊढरि नीचोई ऐहै ॥ ६८९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० जाकेयेकतहीकहूंजगव्यवसायनकोय।
सोनिदाघफूलैफलैआकडहडहोहोय ॥ ६९० ॥

यहअन्योक्तकाहूके धनबढवारबहुतहै औरकाहूकेकामनाहींआवैंतहां कहिये ॥ सवैया ॥ छांइनकाहूके बैठबेजोगन छीरअचैकोऊपेटभरै। फूलनतेफलतें दलतेंजगमेंनहीं काहूकोकाजसरै ॥ भौंरनमूलिभ्रमें उहि बोरयखेरुन कोऊबिरामकरै। हेतहरयोयह आकनिकाम निदाघसमैबहु फूलेफरै ॥ ६९० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गुनीगुनीसबकोकहैनिगुनीगुनीनहोत।
सुन्योंकहूतरुअर्कतेंअर्कसमानउदोत ॥ ६९१ ॥

यहपरसतावोक्त है कछूगुननाहीं अरुसबकोऊ वासोंभलैकहै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ विनुकरतूतभूठो पदबीलहीतौ बनहीकौन लगत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उपहासपेखियत है। गुनीगुनी सबकोऊ कहतपुकारि काहूगुनीगुनीन मांझनेखेनेखियत है॥ जगतबिदित जासोंमोटोकहियत सोईनिपटबिषम बिषअरेखियत है। जऊपेड आक को कहावतअरक तऊअरक समान को उदातदेखियत है॥ ६९१॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० मीतननीतगलीतहवैजोधरियेधनजोरि।
खायेखरचेजोजुरैतोजोरियेकरोरि॥ ६९२॥

यहपरसतावीक जोसमहूकेधन जोगिरैतो उचितनाहीं यातेंखायो खरचबोमुख्यहै॥ सवैया॥ जोपैगलितभयेहो जुरैधनतो यहजोरिबो काहूनभावै। नामसुनेसब भीतहू भाजतक्योंजगमें अतिसूमकहावै॥ मीतमतौ जियमेंधरिकेयह जोरिकरोरेलो जोबनिआवै। खायेदियै खरचे जुजुरैकछु सोअतिमोद हियेउमगावै॥ ६९२॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० यद्यपिसुन्दरसुघरऊसगुनोदीपकदेह।
तउपरकाशकरैतितौभरियेजितौसनेह॥ ६९३॥

यहपरसतावीक नायकाभेदमें अरूसखीकोभेद नायकमांसखीकहैकि तेरो सुंदरतनहै गुनहसतहै पैनेहचाहियतुहै ऐसेंनायक हूमे सखीकोबचन संभवहै॥ सवैया॥ यद्यपिचारुगहै चिकनाइसुढार ढरयोसुघरोपुन ढोऊ। रूपाकहैबहुमंडितकैं गुनजोतजगाय धरैकिनमोऊ॥ हैयहबात प्रसिद्धसबै जगएकसीरीत निबाहतदोऊ। नेहभरयोबिन दीपकदेहप्रकाश करैनकितोकरोकोऊ॥ ३९३॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० अरेपरेखोकोकरैतुहीबिलोकिबिचारि।
किहनरकिहसररासियेखरेबढ़ेपरपारि॥ ६९४॥

यहपरसतावीक संसारव्योहारपै अतिबढ़तेमरयाद छूटैहीछूटैकविकी उक्ति॥ सवैया॥ केतेभयेनर केतेभयेसर जात कछूगणनानहिंभाषी। जोलोंबढ़ैटन मानगहैमरयादरहै तबहींलगपाषो॥ कौनकोकौनपरेखो करैपरमानकहा परतत्वकोसाषी। पैअतिकीबढ़वारभये अपनोप्रपारिकहो किनराषी॥ ६९४॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० जोन्हनहींयहतुमवहैकियेजुजगतनिकेतु ।
होतउदोशशिकोभयोमानोंशशिहरिसेतु ॥६९५॥

यहचन्द्रवर्णन बियोगीकोवचन कबिहूकोउक्ति ॥ सवैया ॥ पूरिरह्यो अधऊरधबेधर अंबरलोंजिनदेवठयो है । आहिबिलोक बियोगीडरैं अनुरागन कोमनमोद पियो है ॥ होयनजोन्हवहैतमहै यहजानैसबैजगछायलयो है । होतउदोतलख्यो शशिको गहिसंकमनो तनस्वेतभयो है ॥ ६९५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

दो० चटकनछोंड़तघटतहूसज्जननेहगभीर ।
फीकोपरैनबरफटैरंग्योबोलरंगचीर ॥ ६९६ ॥

यहपरसतावीक कबिकोउक्ति ॥ सवैया ॥ सज्जन जेजगदीश्वरचेतिन कोइकबान दसानिबटै । शीलसुभावगहैंसहजे अनुरागसमूहहियेउबटै ॥ नेहकरै सुखरोगहरो उनहूंकेघटैसुनक्यों घटै ॥ चोलकेरंग निचोलरंग्यो सुनकीकोपरै फटनेहूघटै ॥ ६९६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० कनककनकतेसौगुनोमादिकताअधिकाय ।
वहखायेबोराइयेवहपायेबौराय ॥ ६९७ ॥

यहपरसतावीक कबिकोउक्ति ॥ कबित्त ॥ कनकधतूरोसोनों दोऊ येकहावतहैं सोनेकोधतूरेते प्रभाव सरसतुहै ॥ कहैकबिकृष्णबाही चाहतुनकोईयाहि निरखि निरखि जोइसोइतरसतुहै ॥ सोनेमाँझसौगुनो धतूरतेंसरसमद यहतोप्रतक्षसब कोऊदरसतुहै ॥ वाहि जबखायतबबौराय प्रकाश होत बावरो तुरतयाहि जोईपरसतुहै ॥ ६९७ मदकल अक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

दो० इकभीजेचहुलेपरेबूड़ेबहैहजार ।
कितेनऔगुनजगतकरबैनेचढ़तीबार ॥ ६९८ ॥

यहपरसतावीक कबिकोउक्तिअन्योक्तिहू संभवहै ॥ सवैया ॥ एकपरेत फंसे चहुले एकभीजि रहेएकबूड़िगये हैं । येकवहैं तिनकोनलही सुधयेकन धीरज छोड़िदयेहैं ॥ वोरदईपहली मरयादबिलोक कितेभयभीतभयेहैं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बैसनदीचढ़तो बिरयांजगऔगुन कीनै किनेकनयेहै ॥ ६९८ ॥ नर अक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० सुखसौंबीतीसबनिसामानसोयेइकसाथ।
मूकामेलिगहेसुछिनुहाथनछोड़ेहाथ ॥ ६९९ ॥

यहपरसतावीक कविकीउक्ति नायकाभेदमैं परकीयाको हाथपरी कोसुमान्योंसाहसो रात्रिवैमेहोवोती सखीसखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ रैनबितीतभई सिगरी अतिचायचढ़े चितपैनअहूटै ॥ दीऊनकैमन मोंद बढ़े अभिलाखन केदृढ़बंधनखूटै ॥ सोयेमनोंमिलिकै इकसाथहीयों बहु भांतिहियेसुखलूटै ॥ मूकामेलगहैइक वारसुहाथतैं हाथछिनों नहीं-छूटै ॥ ६९९ ॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरू ९ लघु ३०

दो० जोनयुगतपियामिलनकीदूरिमुक्तमुहदीन।
जोलहियेतौसजनसुखधरकनरकहूलीन ॥ ७०० ॥

यह परसतावीक अनुरागी को बचन ॥ कवित्त ॥ बैठोरनी को जहांमिलवोहैपीको मातय हैमतठीक मेरेजीकोअवदातहै ॥ पयोडोमुक्त पदरस्योनप्राणप्यारो सरस्योअधिक दुखदेख्योन सुहातहै ॥ कहतबनैन क्योंहूंजातना अनेकभाँतिजातैं भांतिभांतिनको त्रासअधिकातहै ॥ रहि-बोबनेजोमनभावन सौंमिलितौपैनरकनिवासहूतौमनन सकातहै ॥ ७०० ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० गढ़रचनाबरनीअलकाचितवनभौंहकमान।
आधबुकाईहीबढ़ैतरुनितरंगमतान ॥ ७०१ ॥

यहपरसतावीक कविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ गढ़नोबनायबांको हैय तोबड़ाईपावै ग्रंथनमेंबातयहैबरनी प्रमानकी ॥ अधिकाईदेखिये निकाई कीबंकाईहूतें अलकाचितोनभौंह बरनकमानकी ॥ कहैकवि कृष्णरीत जानतप्रवीनत्योंहीं तरुनी कीतुककीतुरंगम कीतानकी ॥ बांकीहीतैं पालकीकेबांसकोंबढ़त मोलबांकी रजपूतीलहै कीरति अपानकी ७०१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० बसैबुराईजासतनताहीकोसनमान।
भलोभलोकरछांड़ियेखोटेग्रहजपदान॥ ७०२॥

यहपरसतावीक कविकीउक्ति॥ सवैया॥ जातनमांझबुराई बसै कछूसौजगमैंसनमानहों पावै॥ वाहीकोंजोनें सबैडरमानत देखोदुनीमैं-प्रतछभावै॥ योतिषीजोग्रह भाषैभलोतो-लेहोभलेकहिकैं बहरावै॥ जोपै वहै ग्रह खोटो सुनैतबदान करै असजाप करावै॥ ७०२॥ वारन अछर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० पतिऋतुऔगुनगुनबढ़तमानमाहकोसीत।
जातकठिनहवैअतिमृदोरवनीमिनुनवनीत॥ ७०३

यहपरसतावीक कविकीउक्ति नायकाभेदमैं सखीकोबचन नायककी सखीसोंकिनायकके औगुणतैंनायकाको मनकठिनहोतहो है॥ कवित्त॥ ऐसेपति औगुणतें बढ़त है मानजैसेकछु गुणसिसिरकोसीत सरसातहै। मान केभयेतें तियमनकठिनात त्योंहीसीतकेभयेतें नवनीतकठिनातहै॥ दोउन कोजऊ अतिमृदु हैसुभाव तऊ औरभांतिप्रकृति कोभावदरसातहै। कहै कविकृष्णरीतजानत प्रवीनयहविनयततताई तेंतुरतपघिलातहै॥ ७०३॥ मरालअछर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० कहतसबैश्रुतिस्मृतिहूसबैपुरातनलोग।
तिनदवावेनीसकैपातकुराजारोग॥ ७०४॥

यहपरसतावीक कविकीउक्ति॥ कवित्त॥ कहैयहैश्रुतिअरु स्मृति पुरानेलोगसकल पुरानमेंसनेयेईहेत है। कहैकविकृष्णयह जगतविदित बातजानतसकल जेसुसमतिनिकेत है॥ जहांदेखेबलुतहां करेनुकमलजहां देखेनिबलाईये तहांई दुखेत है। पातकराजारोज दानमें बिचारियेन करतबलाईकरै सबलअचेत है॥ ७०४॥ करभअछर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० ओछेबड़ेनहवैसकैलग्योसतरहवैगैन।
दीरघहोयननेकहूफारिनिहारेनैन॥ ७०५॥

यहपरसतावीक कविकीउक्ति॥ सवैया॥ जेजगदीश्वरबेजिहिभाय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वेतैसेईदीसेंघटैंनबढ़ैना। धीरहियेधरिमंदगहैंगतिपैवगुहंसकोमोललहैना। आछेमोकैमेहूंहोत बड़ेनवेकाइउंचाई गहैंकानिगैना। फारिनिहारोंकितौ करिहारोंपैदीरघ होहिंनकैमेहूंनैना ॥ १०५ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरू १४ लघु २०

दो० मोमिसहीसोंयौंसमझमुहचूम्योंढिगजाय ॥
हंस्योंखिसानीगलुगह्योंरहीगरेलपटाय ॥ १०६ ॥

यहप्रस्तावीक कविकीउक्तिनायकाकी वचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ कुंवरकन्हाईसुखदाई चतुराईकरिपौढ़ि रह्योमिसभूठीरिस कोबनायकैं। हित अधिकाई कीटमंगबढ़िआईजियमैंतोसोंयोजानि मुंह चूम्योंढिगजायकैं। आरसिमेंढारति नुरंचतिउघरिनैन नाइदीनोबांहगरेउहिमुसकायकैं। कहाकहौंआलीहूतो हंसिहूंसिखाई तब औरनबसाय रहीगरेलपटायकै ॥ १०६ ॥ चलअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६

दो० नयेबिससियेलखिनयेदुरजनदुसहसुभाय।
आंटेपरिप्राननुहरतकांटेलौंगाड़िजाय ॥ १०७ ॥

यहप्रस्तावीक नायककोबचनसखीसों विरसनायकाअधीरा खंडिता नायकराजनीतके प्रसंगहूमैंसंभव है ॥ कवित्त ॥ ऊपरतोदेखियतअधिक भलाईभरेअंतरकेदुसह बुराईकोनिकेतु है। कहैकविकृष्णबहु बातन बनाय कहैदाउपरैजैसेबनै तैसेदुखदेतहै ॥ देखतहैंनयेतऊ मानतविरोधीनये भूलत नक्योंहूंजे बिचारमेंसुचेतहै। कांटेकोसीरोतेदुरजन केसुभाइनकी आंटेपरैंपायनहूं लागिप्रानहेतुहै ॥ १०७ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० तंत्रीनादकवित्तरससरसरागरतिरंग।
अनबूड़ेबूड़ेतिरेजेबूड़ेसबअंग ॥ १०८ ॥

यहप्रस्तावीक कविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ तंत्रीकीमधुरधुनि ताल कैबिबिधभेदरागजामें सुरनकीबिबिधतरंग है। बचनबिलासचतुराई कैप्रकाशचारुकबिता सुदेशजहांबिरसकोटमंग है ॥ बागकोबहारनव नागरीसोंहिल मिलिबिहरत अंतरितमुदमंग है। जामनमैंबूड़ेहैन बूड़ेहैनबातनमैं तिरेतेई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जेई बूडे इते अंगअंगमैं ॥ ७०८ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० सबैहंसतकरतारिदैनागरिताकेनाउं ।
गयोगरबगुनरूपकोबसेगवांरेगाउं ॥ ७०९ ॥

यहअन्योक्ति प्रस्तावीकहू संभवहैकविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ कोसमझैरसरीतके भेदहिकौनसुनै नृपनीतिउचारै। ज्ञानकीकौनकरै चरचाजहं मूढ़ताकेहित सोंअतिप्यारै ॥ नागरताईकौनाम सुनैसबदैकरतार हंसैकिलकारै। दूरगुमानगयोगुनरूपकोबासभयो जबगांवगवांरै ॥ ७०९ बारनअक्षर ३८ गुरु १४ लघु १८

दो० दुसहदुराजप्रजानकोक्योंनबढ़ैदुखदुंद ।
अधिकअंधेरोजगकरतामिलिमावसराबिचंद ॥ ७१०

यहप्रस्तावीक कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ येकरजाईसमैप्रभु ह्वैसुत मोगुनकोबहु भांतिबढ़ावत। ह्वैतमहादुखदुंद प्रजानकोऔर सबैशुभकाज घकावत ॥ कृष्णकहैदिननाथ निरंकरएकही मंडलमैंजबआवत। देखोप्रतच्छ अमावसको अंधियारोकितौ जगमेंसरसावत ॥ ७१० ॥

दो० हूंबिनऊंसबकविनुकेचरणाकमलशिरनाय ।
प्रगटकरीतिहुंलोकमैंकबिताबहुजिनभाय ॥ ७११

दो० सोकबिताद्वैभांतिकैआरषपौरषजानि ।
आरषसुरअरुमुनिनकृतनरकृतपौरषमान ॥ ७१२ ॥

दो० पौरषकबितात्रिबिधहैकबिसबकहतबखानि ।
प्रथमदेवबानीबहुरिप्राकृतभाषाजानि ॥ ७१३ ॥

दो० देशभेदसेहोतसोभाषाबहुतप्रकार ।
बरनतहैतिनसबनमैंग्वारपरीरससार ॥ ७१४ ॥

दो० व्रजभाषाभाषतसकलसुरबानीसमतूल ।
ताहिबखानतसकलकबिजानिमहारसमूल ॥ ७१५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० व्रजभाषाबरनीकाबिनबहुबिधिबुद्धिबिलास।
सबकोभूषनसतसयाकरीबिहारीदास ॥ ७१६ ॥

दो० जोकोऊरसरीतिकोसमझ्योचाहैसार।
पढ़ैबिहारीसतसईकबिताकोइंटगार ॥ ७१७ ॥

दो० उदैअस्तलौंअवनियेसबकोयाकीचाह ॥
सुनतबिहारीसतसईसबहीकरतसराह ॥ ७१८ ॥

दो० भांतिभांतिकेअरथबहुयामेंगूढ़अगूढ़।
जाहिसुनैरसरीतिकोमगसमझतअतिमूढ़ ॥ ७१९ ॥

दो० बिबिधनायकाभेदअरुअलंकारनृपनीति।
पढ़ैबिहारीसतसईजानैकाबिरसरीति ॥ ७२० ॥

दो० रघुबंशीराजाप्रगटउहिमैंधर्म्मअवतार।
बिक्रमबिधिजयसायरिपुदंडाबिहंडनहार ॥ ७२१

दो० सुकबिबिहारीदाससोंतिनकीनोअतिप्यार।
बहुतभांतिसनमानकरिदौलतदईअपार ॥ ७२२

दो० राजाश्रीजयसिंहकेप्रगट्योतेजसमाज।
रामसिंहगुनरामसमनृपतिगरीबनिवाज ॥ ७२३

दो० कृष्णसिंहतिनकेभयेकेहरिराजकुमार।
बिष्णुसिंहतिनकेभयेसूरजकोअवतार ॥ ७२४ ॥

दो० महाराजबिश्नेशकेधर्मधुरन्धरधीर।
प्रगटभयेजयसाहनृपसुमतिसवाईबीर ॥ ७२५

दो० प्रगटसवाईभूपकेमंत्रीमानिसुखसार।
सागरगुनसुतशीलकोनागरपरमउदार ७२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० आयामल्लअखंडतपजगसोहतजसताहि ।
राजाकीनोकरिकृपामहाराजजैसाहि ॥ ७२७ ॥
दो० मनक्रमबचसांचोभगतहरिभक्तनकोदास ।
बेदबचननिजधरमकौजाकेदृढ़बिश्वास ७२८ ॥
दो0 क्षत्रीफलक्षितिपैभयेबैरीजगबिख्यात ।
परदुखबैरीखंडनोखंडनगुनअवदात ॥ ७२९ ॥
दो० लालदासअतिललितगुनप्रगटभयेतिहबंश ।
रामचंद्रतिनकेभयेनिजकुलकेअवतंश ॥ ७३० ॥
दो० महाराजातिनकेभयेजिनकोयशअवदात ।
रायपंजाबसपूतमतिउपजेतिनकेतात ॥ ७३१ ॥
दो० तिनकेप्रगटेतीनसुतबिक्रमबुद्धिनिधान ॥
रक्षकब्राह्मनगायकेनिपुनदानकरबान ७३२ ॥
दो० राजाआयामल्लजगबिदितरायशिवदास ।
लसतनरायनदासयशपूरनपुहमिप्रकास ॥ ७३३
दो0 लीलायुगलकिशोरकीरसकोहोयनिकेतु ।
राजाआयामल्लकौताकबितासोंहेतु ॥ ७३४ ॥
दो० माथुरबिप्रककोरकुलकह्योकृष्णकबिनांउ ।
सेवकहौंसबकबिनकोबसतमधुपुरीगांउ ॥ ७३५
दो० राजामलकबिकृष्णपरिढ़ग्योकृपाकेढार ।
भांतिभांतिबिपताहरीदीनीलक्षिअपार ॥ ७३६
दो० एकदिनाकबिसोंनृपतिकहीकहिकोजात ।
दोहादोहाप्रतिकहोकबितबुद्धिअवदात ॥ ७३७॥
दो0 पहिलेहूमेरेयहैहियमेंहुतोबिचार ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

213

करौंनायकोभेदकाग्रंथसुबुधिअनुसार ॥७३८॥

दो० जेनीकेपूरबकबिनुसरसग्रंथसुखदाय।
तिनहिछांडमेरेकबितकोपढ़िहैमनलाय ७३९॥

दो० जानियहैअपनेहियेकियोनग्रंथप्रकास।
नृपकोआयसुपाइकैंहियमैंभयोहुलास॥७४०॥

दो० करेसातसैदोहरासुकबिबिहारीदास।
सबकोऊतिनकोपढ़ैगुनैंसुनैंसबिलास॥७४१

दो० बड़ोभरोसोजानिमैंगह्योआसरोआय।
यातेइनदोहानसंगदीनोंकबितलगाय॥७४२

दो० उक्तियुक्तिदोहानकीअक्षरजोरिनबीन।
करेसातसैकबितमैंपढ़ैसुकबिपरबीन॥७४३

दो० मैंअतिहीढीठ्योकरीकबिकुलसरलसुभाय।
भूलचूककछुहोयसोलीज्योसमुझिबनाय॥७४४

इति श्री बिहारीलाल कबि कृत सतसई सटीक उदाहरण सहित समाप्त॥

इति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
क़िस्सहातिमताई	ज्ञानखरोदय	पत्रवारियोंकीपुस्तक	संस्कृतभ-टी-स०
नानार्थीसंग्रहावली	ज्ञानसार	४ भाग	अमरकोश
ब्रह्मसार	ज्ञानजाल	संस्कृतकीपुस्तकें	याज्ञवल्क्यस्मृति
शिवसिंहसरोज	ज्ञानप्रकाश	सिद्धान्तचन्द्रिका	सन्ध्यापद्धति
भक्तमाल	ज्ञानचिन्तकीकथा	लघुकौमुदी	व्रतार्क
रामाभिषेकनाटक	ज्ञानमाला	अमरकोशतीनोंकांड	भगवद्गीताटीकाहरिहर
बूंदसभा	गोपीचंदभरतरी	पंचमहायज्ञ	भगवद्गीताभाषाटीका
विक्रमविलास	कथाश्रीगंगाजी	निर्णयसिन्धु	गीतगोविन्द
वैतालपच्चीसी	ज्ञानबोध	संग्रहशिरोमणि	कथासत्यनारायण
सिंहासनबत्तीसी	भरतरीगीत	भगवद्गीतासटीक	यात्राविधान
पद्मावतीखंड	दानलीलाव्रजबोली	दुर्गापाठसटीक	ज्ञानदीपकगोहिना
शुकबहत्तरी	दोहावलीवरमावली	विष्णुभागवत	पातञ्जलीस-
बकावलीसुमन	गोकर्णीमाहात्म्य	भविष्योत्तरपुराण	शीघ्रबोध
चहारदरवेश	श्रीगोपालसहस्रनाम	अपराधभंजनस्तोत्र	लघुजातक
क़िस्साहातिमताई	कथासत्यनारायण	दुर्गास्तोत्र	षट्पंचाशिका
अपूर्वकथा	हनुमानबाहुक	कायस्थकुलभास्कर	सामुद्रिक
क़िस्सागुलबसनोबर	जनकपच्चीसी	कायस्थधर्मनिरूपण	सरिश्तेतालीमकी
सहस्रजनीचरित्र	ज्ञानन्दाऽमृतवर्षिणी	तथा दोटा	पुस्तकें
रविसन्क्रोमोकादूती	बनयात्रा	मथुरासभा	संस्कृत
हास	कायस्थवर्णनिर्णय	ज्योतिष	ऋजुपाठ २भाग
वैद्यक	बिहारबिन्द्रावन	मुहूर्तगणपति	तथा ३ तथा ३ भाग
अमृतसागर	कल्पभाष्य	मुहूर्तचन्द्रोदय	पात्रबोध
निघण्टभाषा	दरसी	मुहूर्तचिंतामणिस	नागरीवर्णमालाहा
अमरविनोद	अक्षरावली	मुहूर्तमार्तण्डस-	वर्णमाला
वैद्यजीवन	स्वयम्बोध	मुहूर्तदीपक	तथा कैथीफ़ारसी
औषधिसंग्रहकल्प	ज्ञानचालीसी	वृहज्जातकस-	नागरीहरूफ़मुक़र
वल्ली	दोहावली	जातकाभरण	दात
वैद्यमनोत्सव	बालाबोध	होरामकरंद	अक्षरारम्भ
ज्योतिष	विद्यार्थीकीप्रथमपु०	संस्कृतउर्दूटीकास-	वर्णोच्चारणशिक्षा २भा
जातकचन्द्रिका	किताबजंत्री	मनुस्मृति	तथा २भाग
जातकालंकार	गणितकामधेनु	विष्णुहारीत	सूरजपुरकीकहानी
दैवज्ञाभरण	लीलावती	महिम्नस्तोत्र	धर्मसिंहकावृत्तांत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
शिक्षावली	गणित क्रिया	१८५९ ई०	मग़रबी व शिमाली
शिशुबोध	क्षेत्र प्रकाश	इंडियन पिनल-	१९ सन १८७३ ई०
पत्रहितैषिणी	क्षेत्र चंद्रिका २भा·	कोड	तरमीम मजमूआ
पत्रदीपिका	सकील हायरा	मजमूआ ज़ाबिता	ज़ाबिता फ़ौजदारी
विद्या-चक्र	रेखागणित १भा·	फ़ौजदारी ऐक्ट २५	१२ सन १८७४ ई०
विद्याकर	तथा २ भाग	सन १८६० ई०	तक़ावी के क़ायदे
पदार्थविद्यासार	बीजगणित १भा·	ऐक्ट स्टाम्प १० स-	सरकूलर गवर्न्-
पदार्थविज्ञानविटप	तथा २भाग	न १८६२ ई०	मेण्ट नम्बर ८०
राजनीति	रामायण तुलसी	ऐक्ट रजिस्ट्री २०	(अलिफ़) सन
भोजप्रबंधसार	कृत सातों कांड	सन १८६६ ई०	१८७७ ई०
भाषाव्याकरण	बालकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदा-	सवाल व जवाब
१ भाग तथा २भा·	अयोध्याकाण्ड	लत २६ सन १८६७	पुलिस
भाषातत्वदीपिका	आरण्यकांड	ई०	अवध रुहेलखंड
भाषाचंद्रोदय	किष्किन्धाकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अव-	रेलवे का दस्तूरु-
भूगोलतत्व	सुन्दरकाण्ड	धलगान १८ सन	ल अमल
भूगोलदर्पण	लंकाकाण्ड	१८६८ ई० पुरत्ना-	कैथी
इतिहासतिमिरनाश	उत्तरकाण्ड	री २६ सन १८६६	पटवारियों के क़ा-
क १भाग २व ३ भा·	गुटका	ई० वग़ैरा	यदे
अवध देशीय भूगोल	हितोपदेश भाषा सु-	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावे	उर्दू कैथी महाजनी
इंग्लिस्तान का वृत्ते	कविसार	ज़ात १८ सन १८५९	टेक्स के स्लाइसे-
हाल	पशुपक्षिकिस्सा	ई०	न सका ऐक्ट २
भारतवर्षीय इतिहास	पटावरवत कैथी	ऐक्ट नाज़ुकेदारा-	सन १८७८ ई०
हितोपदेश	क़ानूनियात अवध	न मक़रूज़ अवध	पंजाब मग़रबी
बाला भूषण	कैथी	२४ सन १८७० ई०	व शिमाली व
पद्य संग्रह	रजिस्टर दारिवल्स	ऐक्ट चौधायों की	अवध
भाषाकाव्यसंग्रह	खारिज	बदारिवल्स बेजा	
कवित्तरत्नाकर	रजिस्टर हाज़िरी	का १ सन १८७१	दुनि
२ भाग तथा ३ भाग	पाठशाला	ई०	
मंगलकोश	क़ानून	मजमूआ ज़ाबिता	
अंक प्रकाश	नागरी	फ़ौजदारी १० स-	
गणित प्रकाश १भा·	ऐक्ट लगान मग़रबी	न १८७२ ई०	
तथा २ स· ३ स· ४ भा·	व शिमाली १० सन	ऐक्ट माल गुज़ारी	

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6525.

Price R.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri